सत्यमेव जयते

सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार

Ministry of Information and Broadcasting
Government of India

69वें

राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार 2021
National Film Awards 2021

आधिकारिक विवरणिका | THE OFFICIAL CATALOGUE

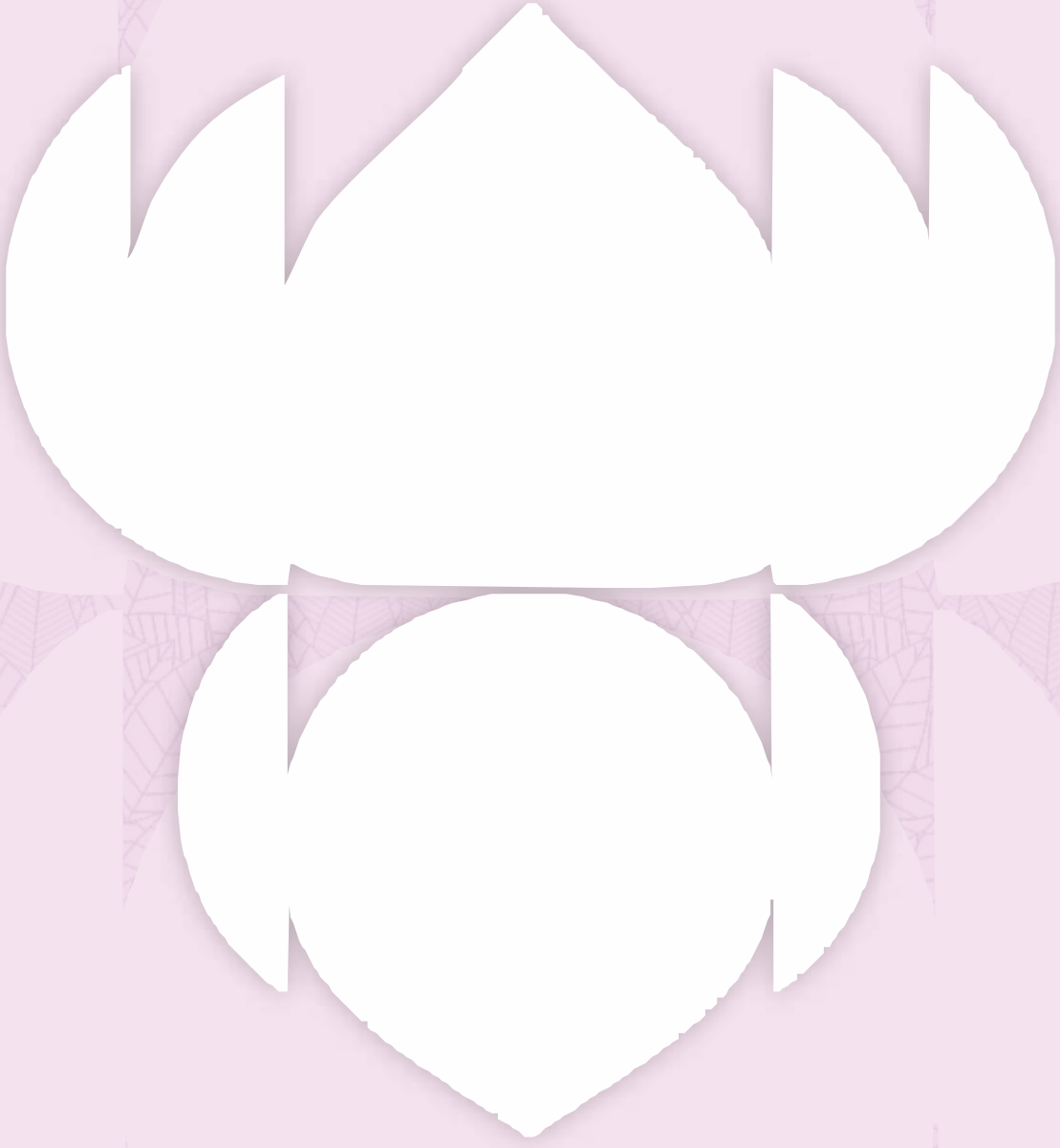

आधिकारिक विवरणिका

THE OFFICIAL CATALOGUE

इंद्राणी बोस (उप निदेशक, राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार)
Indrani Bose (Deputy Director, National Film Awards)

सम्पादक: **नंदिता छिब्बर** (अंग्रेजी), **पंकज रामेंदु** (हिन्दी)
Editors: **Nanditta Chibber** (English), **Pankaj Ramendu** (Hindi)

सहयोग: **अनूप कुमार, दीपू कुमार**
Assisted by: **Anup Kumar, Deepu Kumar**

संयोजन: **चेवियन ए क, मो. काशिफ एजाज, प्रदीप एस, राजिम अलताफ, विष्णु अनिल़**
Co-ordination: **Chevviyan A. K., Md. Kashif Ejaz, Pradeep S., Raazim Althaf, Vishnu Anil**

डिज़ाइन: **इम्बोस, डिज़ाइन एण्ड प्रिंट स्टूडियो**
Design: EMBOSS, design and print studio

कला निर्देशक: **मुकेश चंद्रा**
Creative Director: **Mukesh Chandra**

प्रकाशक: **के.सं.ब., सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय**
Publisher: **CBC, Ministry of Information and Broadcasting**

© Ministry of Information and Broadcasting, Government of India except the film related material.

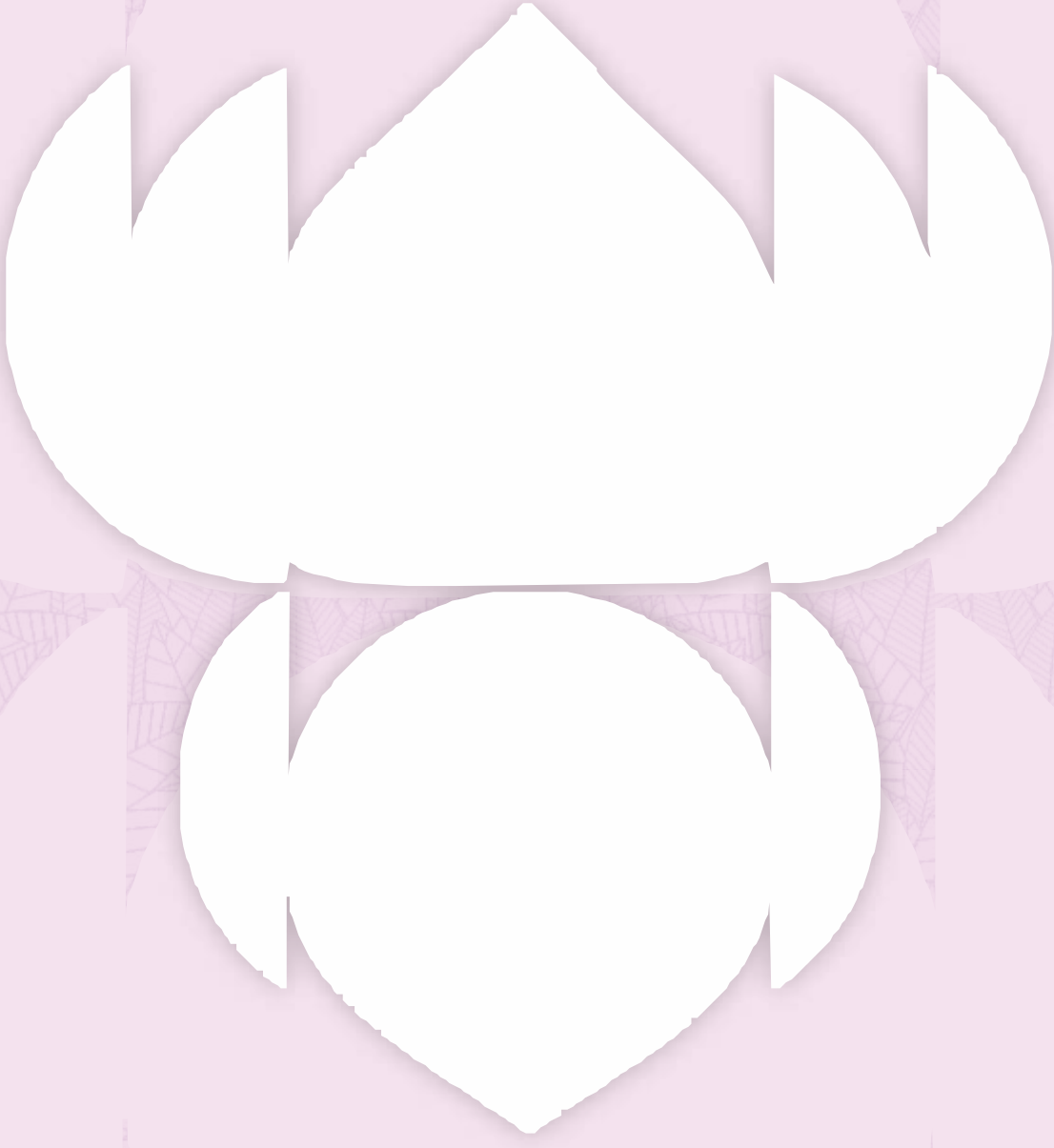

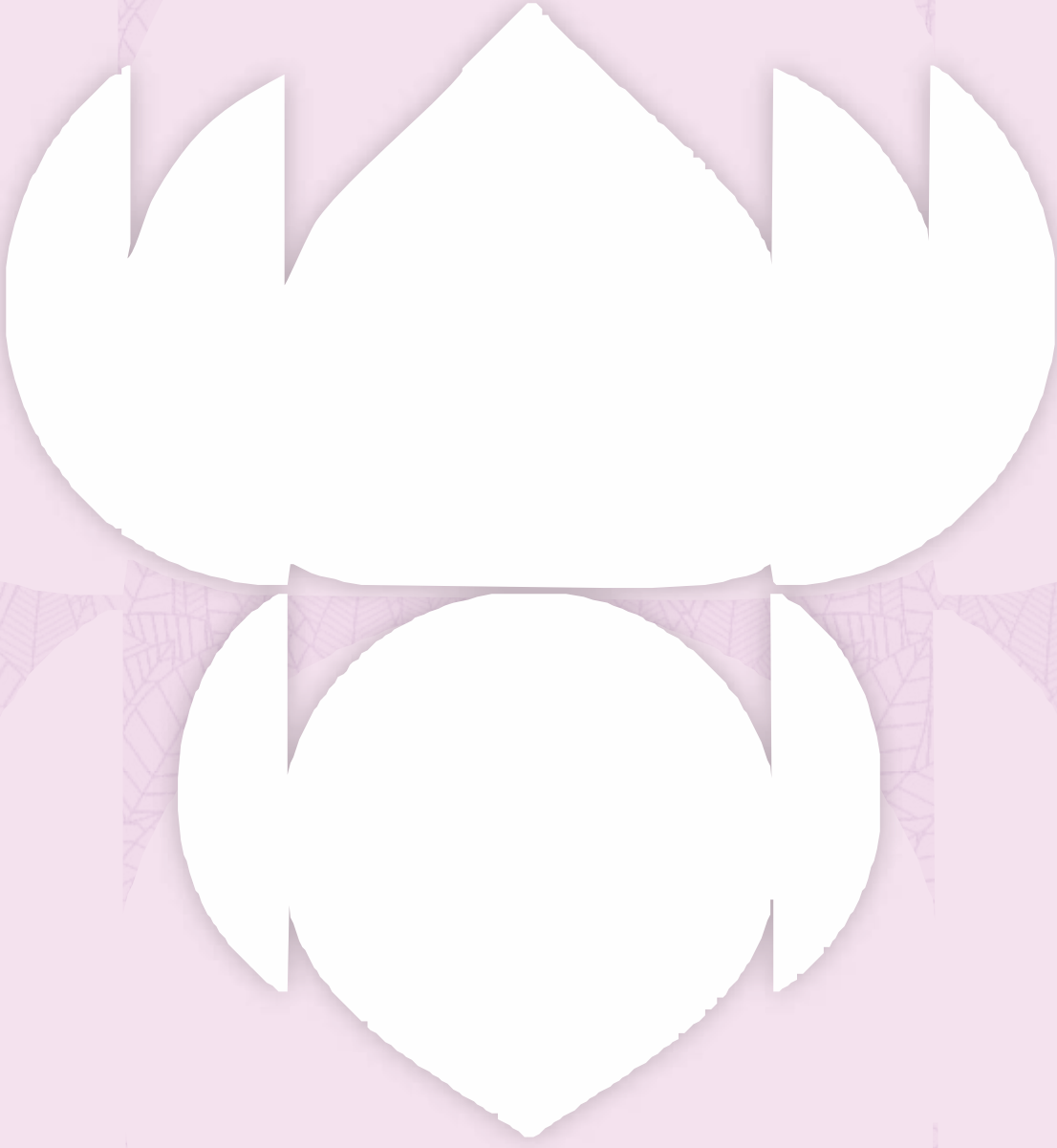

विषय सूची | CONTENTS

दादासाहब फ़ाल्के पुरस्कार
DADASAHEB PHALKE AWARD 009

दादासाहेब फ़ाल्के पुरस्कार के विषय में
About Dadasaheb Phalke Award 011

दादासाहेब फ़ाल्के पुरस्कार : अब तक सम्मानित
Dadasaheb Phalke Award Past Recipients 013

पुरस्कार चयन समिति
Award Committee 018

वहीदा रहमान – प्रोफाइल
Waheeda Rehman — Profile 023

निर्णायक मंडल (फ़ीचर फ़िल्म)
Feature Film Jury 027

निर्णायक मंडल (गैर–फ़ीचर फ़िल्म)
Non-Feature Film Jury 034

निर्णायक मंडल (सिनेमा पर सर्वश्रेष्ठ लेखन)
Best Writing on Cinema Jury 038

प्रादेशिक निर्णायक मंडल (फ़ीचर फ़िल्म)
Regional Feature Film Jury 040

फ़ीचर फ़िल्में
FEATURE FILMS 047

फ़ीचर फ़िल्में - एक नज़र में
Feature Films - At a Glance 048

सर्वश्रेष्ठ फ़ीचर फ़िल्म
Best Feature Film 050

इन्दिरा गांधी पुरस्कार: निर्देशक की पहली सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म
Indira Gandhi Award for Best Debut Film of a Director 052

लोकप्रिय एवं स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करने वाली सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म
Award for Best Popular Film Providing Wholesome Entertainment 054

राष्ट्रीय एकता के लिए सर्वश्रेष्ठ फीचर फिल्म का नरगिस दत्त पुरस्कार
Nargis Dutt Award for Best Feature Film on National Integration 056

सामाजिक मुद्दों पर सर्वश्रेष्ठ फिल्म
Best Film on Social Issues 058

पर्यावरण संरक्षण / परिरक्षण पर सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म
Best Film on Environment Conservation/Preservation 060

सर्वश्रेष्ठ बाल फ़िल्म
Best Children's Film 062

सर्वश्रेष्ठ असमिया फ़िल्म
Best Assamese Film 064

सर्वश्रेष्ठ बंगाली फ़िल्म
Best Bengali Film 066

सर्वश्रेष्ठ गुजराती फिल्म
Best Gujarati Film 068

सर्वश्रेष्ठ हिन्दी फ़िल्म
Best Hindi Film 070

सर्वश्रेष्ठ कन्नड़ फ़िल्म
Best Kannada Film 072

सर्वश्रेष्ठ मैथिली फिल्म
Best Maithili Film 074

सर्वश्रेष्ठ मलयालम फ़िल्म
Best Malayalam Film 076

सर्वश्रेष्ठ मणिपुरी फिल्म
Best Manipuri Film 078

सर्वश्रेष्ठ मराठी फ़िल्म
Best Marathi Film 080

सर्वश्रेष्ठ उड़िया फिल्म
Best Odia Film 082

सर्वश्रेष्ठ तमिल फ़िल्म
Best Tamil Film 084

सर्वश्रेष्ठ तेलुगू फ़िल्म
Best Telugu Film 086

सर्वश्रेष्ठ मिशिंग फिल्म
Best Mishing Film 088

विषय सूची | CONTENTS

निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार
Special Jury Award 090

सर्वश्रेष्ठ निर्देशन
Best Direction 092

सर्वश्रेष्ठ अभिनेता
Best Actor 093

सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री (साझा)
Best Actress (Shared) 094

सर्वश्रेष्ठ सह अभिनेता
Best Supporting Actor 096

सर्वश्रेष्ठ सह अभिनेत्री
Best Supporting Actress 097

सर्वश्रेष्ठ बाल कलाकार
Best Child Artist 098

सर्वश्रेष्ठ पार्श्व गायक
Best Male Playback Singer 099

सर्वश्रेष्ठ पार्श्व गायिका
Best Female Playback Singer 100

सर्वश्रेष्ठ छायांकन
Best Cinematography 101

सर्वश्रेष्ठ पटकथा (मौलिक)
Best Screenplay (Original) 102

सर्वश्रेष्ठ पटकथा (रूपांतरित) (साझा)
Best Screenplay (Adapted) (Shared) 103

सर्वश्रेष्ठ पटकथा (संवाद) (साझा)
Best Screenplay (Dialogues) (Shared) 104

सर्वश्रेष्ठ प्रोडक्शन ध्वनि आलेखक
(लोकेशन / सिंक साउंड)(साझा)
Best Production Sound Recordist
(Location/Sync Sound)(Shared) 105

सर्वश्रेष्ठ ध्वनि आलेखन (साउंड डिज़ाइनर)
Best Audiography (Sound Designer) 106

सर्वश्रेष्ठ ध्वनि आलेखन
(अंतिम मिक्स्ड ट्रैक का पुनः ध्वनि आलेखक)
Best Audiography
(Re-Recordist of the Final Mixed Track) 107

सर्वश्रेष्ठ सम्पादन
Best Editing 108

सर्वश्रेष्ठ प्रोडक्शन डिज़ाइन
Best Production Design 109

सर्वश्रेष्ठ वेशभूषा डिज़ाईनर
Best Costume Designer 110

सर्वश्रेष्ठ मेकअप कलाकार
Best Make-up Artist 111

सर्वश्रेष्ठ संगीत निर्देशन (गीत)
Best Music Direction (Songs) 112

सर्वश्रेष्ठ संगीत निर्देशन (बैकग्राउंड स्कोर)
Best Music Direction (Background Score) 113

सर्वश्रेष्ठ गीत
Best Lyrics 114

सर्वश्रेष्ठ स्पेशल इफैक्ट
Best Special Effects 115

सर्वश्रेष्ठ नृत्यकला
Best Choreography 116

सर्वश्रेष्ठ एक्शन निर्देशन (स्टन्ट कोरियोग्राफी)
Best Action Direction Award (Stunt Choreography) 117

विशेष उल्लेख
Special Mention 118

कथासार
Synopsis 122

ग़ैर फ़ीचर फ़िल्में
NON-FEATURE FILMS 127

ग़ैर फ़ीचर फ़िल्में - एक नज़र में
Non-Feature Films - At a Glance 128

सर्वश्रेष्ठ ग़ैर फ़ीचर फ़िल्म
Best Non-Feature Film 130

विषय सूची | CONTENTS

निर्देशक की पहली सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म
Best Debut Non-Feature Film of A Director 132

सर्वश्रेष्ठ मानवशास्त्रीय फ़िल्म
Best Anthropological Film 134

सर्वश्रेष्ठ जीवनी फ़िल्म (साझा)
Best Biographical Film (Shared) 136

सर्वश्रेष्ठ कला एवं सांस्कृतिक फ़िल्म
Best Arts and Cultural Film 140

सर्वश्रेष्ठ वैज्ञानिक एवं तकनीकी फिल्म
Best Science and Technology Film 142

सर्वश्रेष्ठ प्रोत्साहन देने वाली फिल्म
Best Promotional Film (to cover tourism, exports, crafts, industry, etc.) 144

सर्वश्रेष्ठ पर्यावरण फिल्म
Best Environment Film Including Agriculture 146

सामाजिक मुद्दों पर सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म (साझा)
Best Film on Social Issues (Shared) 148

सर्वश्रेष्ठ शैक्षणिक फ़िल्म
Best Educational Film 152

सर्वश्रेष्ठ खोजी फ़िल्म
Best Investigative Film 154

सर्वश्रेष्ठ एनीमेशन फिल्म
Best Animation Film 156

सर्वश्रेष्ठ लघु कल्पित फ़िल्म
Best Short Fiction Film 158

पारिवारिक मूल्यों पर सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म
Best Film on Family Values 160

निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार
Special Jury Award 162

सर्वेश्रेष्ठ निर्देशन
Best Direction 163

सर्वश्रेष्ठ छायांकन
Best Cinematography 164

सर्वश्रेष्ठ संगीत आलेखन
(अंतिम मिश्रित ट्रैक के पुनः ध्वनि आलेखक)
Best Audiography
(Re-recordist of the final mixed track) 165

सर्वश्रेष्ठ प्रोडक्शन साउंड रिकॉर्डिस्ट
(लोकेशन / सिंक साउंड)
Best Production Sound Recordist
(Location/Sync Sound) 166

सर्वश्रेष्ठ संपादन
Best Editing 167

सर्वश्रेष्ठ संगीत निर्देशन
Best Music Direction 168

सर्वश्रेष्ठ प्रकथन / वॉइस ओवर
Best Narration/ Voice Over 169

विशेष उल्लेख
Special Mention 170

कथासार
Synopsis 174

सिनेमा पर सर्वश्रेष्ठ लेखन
BEST WRITING ON CINEMA 177

सिनेमा पर सर्वश्रेष्ठ पुस्तक
Best Book on Cinema 178

सर्वश्रेष्ठ फिल्म समीक्षक
Best Film Critic 180

विशेष उल्लेख - समीक्षक
Special Mention - Critic 181

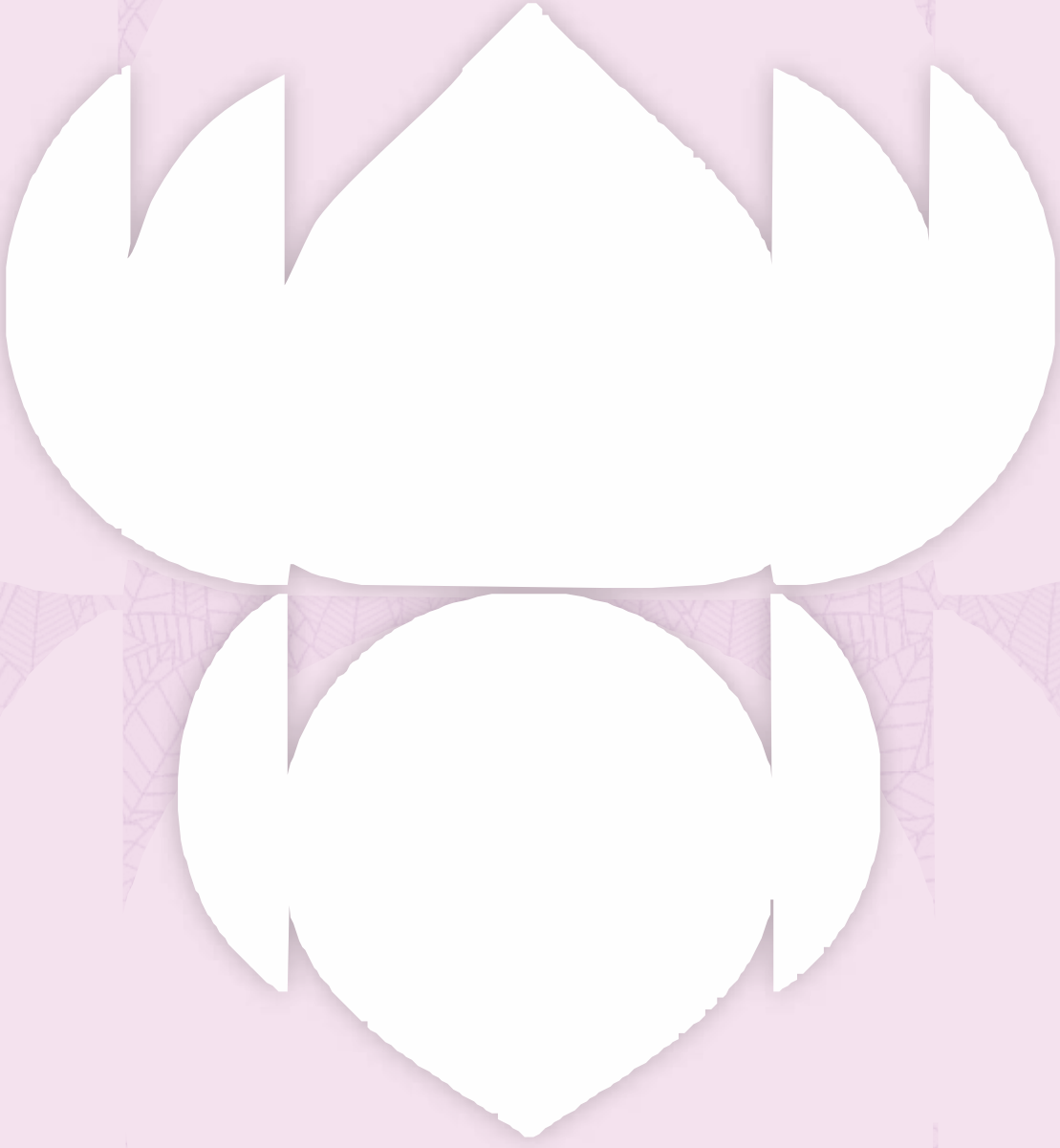

राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार 2021

NATIONAL FILM AWARDS 2021

दादासाहेब फ़ाल्के पुरस्कार

भारतीय सिनेमा के संवर्धन और विकास में अप्रतिम योगदान के लिए किसी एक फ़िल्मी व्यक्तित्व को दिया जाता है। इसके अंतर्गत पुरस्कार स्वरूप स्वर्ण कमल, ₹10,00,000/– प्रशस्ति पत्र तथा शॉल प्रदान किया जाता है। भारत सरकार ने वर्ष 1969 में भारतीय सिनेमा के जनक, धुंडिराज गोविन्द फ़ाल्के के सम्मान में इसे स्थापित किया था।

The Dadasaheb Phalke Award

is given to a film personality for his / her outstanding contribution to the growth and development of Indian Cinema. The Award comprises a Swarna Kamal, a cash Prize of ₹10,00,000/- (Rupees Ten Lakh) and a shawl. The award was instituted in 1969 by the government in honour of the father of Indian cinema, Dhundiraj Govind Phalke.

दादासाहेब फ़ाल्के पुरस्कार
DADASAHEB PHALKE AWARD

भारतीय सिनेमा के जनक धुंडिराज गोविंद फाल्के या दादासाहेब फाल्के (1870–1944) ने 1913 में भारत की पहली फ़ीचर फिल्म *राजा हरिश्चंद्र* के द्वारा एक विलक्षण नवोन्मेषी फिल्मी जीवन की शुरुआत की। निर्माता, निर्देशक और पटकथा लेखक के रूप में उन्होंने अपनी कंपनी हिंदुस्तान फिल्म्स के द्वारा सिर्फ 15 सालों में 95 फ़ीचर फिल्मों और 26 लघु फिल्मों का निर्माण किया। उनकी महत्त्वपूर्ण फिल्मों में *मोहिनी भस्मासुर* (1913), *सत्यवान सावित्री* (1914), *लंका दहन* (1917), *श्री कृष्ण जन्म* (1918) और *कालिया मर्दन* (1919) शामिल हैं।

तेजी से बदलता कैरियर, हठी स्वभाव और विदेश यात्राएं, 20वीं सदी के उषाकाल में एक पारिवारिक व्यक्ति के बजाए उन्हें 21वीं सदी के किशोर के ज्यादा नजदीक ले आते हैं। मुद्रण व्यवसाय में प्रवेश करने से पहले उन्होंने फ़ोटोग्राफ़ी स्टुडियो से अपना कार्य शुरू किया। फिर कला की शिक्षा प्राप्त की और वे एक जादूगर और मंच कलाकार भी बने। चित्रकार राजा रवि वर्मा से प्रेरित होकर उन्होंने लीथोग्राफ़ी और ओलियोग्राफ़ी में दक्षता हासिल की। बाद में उन्होंने अपना प्रिंटिंग प्रेस स्थापित किया। आधुनिकतम प्रौद्योगिकी और मशीनरी के बारे में सीखने के लिए उन्होंने जर्मनी की यात्रा भी की। हालांकि अपने भागीदार के साथ विवाद होने पर उन्होंने मुद्रण व्यवसाय छोड़ दिया। एक मूक फिल्म *दि लाइफ ऑफ क्राइस्ट* से गहरे रूप में प्रभावित होने पर उन्होंने फ़िल्म बनाने का निर्णय लिया। उन्होंने लंदन से एक कैमरा, प्रिंटिंग मशीन, परफ़ोरेटर और कच्चा माल खरीदा। उन्होंने वहीं पर फिल्म बनाने का क्रैश कोर्स भी किया। इसके बाद उन्होंने भारत की पहली फ़ीचर फ़िल्म *राजा हरिश्चंद्र* बनायी। इस फ़िल्म को 1913 में बंबई के कोरोनेशन सिनेमा में प्रदर्शित किया गया और उसे अपार सफलता मिली। प्रथम विश्वयुद्ध के कारण भयंकर वित्तीय और कच्चे माल का संकट पैदा हो गया था, फिर भी उनका हौसला पस्त नहीं हुआ। उन्होंने लघु, वृत्तचित्र, शिक्षाप्रद, ऐनिमेशन और हास्य फ़िल्में बनायीं। जल्दी ही उन्होंने पाँच व्यावसायिकों की भागीदारी में एक फ़िल्म कंपनी हिंदुस्तान फ़िल्म्स की स्थापना की, जिसमें एक स्टूडियो था और प्रशिक्षित टेक्नीशियन और अभिनेता भी थे। एक बार फिर वे अपने भागीदारों के साथ संकट में फंस गये और उन्होंने कंपनी छोड़ दी।

फाल्के ने कुछ और फ़िल्मों का निर्देशन किया लेकिन वे अब अवरोध महसूस करने लगे थे। 1931 के बाद उनकी मूक फ़िल्में सवाक फ़िल्मों के साथ प्रतिद्वंद्विता नहीं कर पा रही थीं। उनकी अंतिम फ़िल्मों में *सेतु बंधन* (1932) और सवाक फिल्म *गंगावतरण* (1937) थीं। 1944 में उनका देहावसान हो गया। दादा साहब फाल्के ने फिल्मों की एक महान परंपरा का सूत्रपात किया। उन्होंने कई विपत्तियों और निजी त्रासदियों को झेला और ऐसे भारतीय फ़िल्म उद्योग की बुनियाद रखी जो आज विश्व में सर्वाधिक सफल और वैविध्यपूर्ण फ़िल्म उद्योग है।

दादासाहेब फ़ाल्के पुरस्कार
DADASAHEB PHALKE AWARD

Dhundiraj Govind Phalke or Dadasaheb Phalke (1870-1944) is regarded as the father of Indian cinema. He directed India's first feature film, *Raja Harishchandra,* in 1913, flagging off a remarkably inventive career. A producer, director and screenwriter, he is believed to have made 95 feature films and 26 short films - a significant number - that his company Hindustan Films made in barely 15 years. His amazing body of films include *Mohini Bhasmasur* (1913), *Satyavan Savitri* (1914), *Lanka Dahan* (1917), *Shri Krishna Janma* (1918) and *Kaliya Mardan* (1919).

His rapid career switches, headstrong nature and trips abroad, more closely characterise a teenager in the 21st century, than a family man at the dawn of the 20th century. Starting out in a photography studio, he studied art, was a magician and stage performer, before joining the printing business. Inspired by the painter Raja Ravi Varma, Phalke specialised in lithographs and oleographs. Later, he started his own printing press, and even travelled to Germany to learn more about the latest technology and machinery. However, following a dispute with his partners, he quit the printing business. Greatly impressed by a silent film, *The Life of Christ,* he decided to make a film. He sailed London and bought a camera, printing machine, perforator and raw stock, and even got a crash course in film making. He soon made *Raja Harishchandra,* on a righteous king who sacrifices his family and kingdom to fulfil a vow and uphold the truth. India's first feature film *Raja Harishchandra* was exhibited at Bombay's Coronation Cinema in 1913, and was a grand success. Undeterred when World War I brought a severe financial and raw stock crunch, he made shorts, documentary features, educational, animation and comic films. Soon he established a film company, Hindustan Films, in partnership with five businessmen, with a studio, and trained technicians and actors. Again he ran into trouble with his partners and quit.

Phalke directed a few more films, but felt constrained. More-over, his silent films were unable to cope with competition from the talkies after 1931. Among his last films were *Setu Bandhan* (1932) and a talkie, *Gangavataran* (1937). He died in 1944. Dadasaheb Phalke leaves behind a pioneer's legacy, not only of his astonishing films, but a joyous inventiveness, and a resilient, unbowed spirit that weathered many reverses and personal tragedies. Little did he know then that he was laying the foundation for the Indian film industry, today the most prolific and diverse in the world.

पूर्ववर्ती दादासाहेब फ़ाल्के पुरस्कार विजेता
DADASAHEB PHALKE AWARD PAST RECIPIENTS

01
देविका रानी रोरिच
Devika Rani Roerich
■ 1969 ■

02
बी.एन. सरकार
B.N. Sircar
■ 1970 ■

03
पृथ्वीराज कपूर
Prithviraj Kapoor
■ 1971 ■

04
पंकज मल्लिक
Pankaj Mullick
■ 1972 ■

05
सुलोचना (रूबी मेयर्स)
Sulochana (Ruby Myers)
■ 1973 ■

06
बी.एन. रेड्डी
B.N. Reddy
■ 1974 ■

07
धीरेन गांगुली
Dhiren Ganguly
■ 1975 ■

08
कानन देवी
Kanan Devi
■ 1976 ■

09
नितिन बोस
Nitin Bose
■ 1977 ■

10
आर.सी. बोराल
R.C. Boral
■ 1978 ■

11
सोहराब मोदी
Sohrab Modi
■ 1979 ■

पूर्ववर्ती दादासाहेब फ़ाल्के पुरस्कार विजेता
DADASAHEB PHALKE AWARD PAST RECIPIENTS

12

पी. जयराज
P. Jairaj
■ 1980 ■

13

नौशाद अली
Naushad Ali
■ 1981 ■

14

एल. वी. प्रसाद
L.V. Prasad
■ 1982 ■

15

दुर्गा खोटे
Durga Khote
■ 1983 ■

16

सत्यजीत राय
Satyajit Ray
■ 1984 ■

17

वी. शांताराम
V. Shantaram
■ 1985 ■

18

बी. नागी रेड्डी
B. Nagi Reddy
■ 1986 ■

19

राज कपूर
Raj Kapoor
■ 1987 ■

20

अशोक कुमार
Ashok Kumar
■ 1988 ■

21

लता मंगेशकर
Lata Mangeshkar
■ 1989 ■

22

ए. नागेश्वर राव
A. Nageswara Rao
■ 1990 ■

पूर्ववर्ती दादासाहेब फ़ाल्के पुरस्कार विजेता
DADASAHEB PHALKE AWARD PAST RECIPIENTS

23
बी.जी. पेंठारकर
B.G. Pendharkar
■ 1991 ■

24
डॉ. भूपेन हज़ारिका
Dr. Bhupen Hazarika
■ 1992 ■

25
मज़रूह सुल्तानपुरी
Majrooh Sultanpuri
■ 1993 ■

26
दिलीप कुमार
Dilip Kumar
■ 1994 ■

27
डॉ. राजकुमार
Dr. Rajkumar
■ 1995 ■

28
शिवाजी गणेशन
Shivaji Ganesan
■ 1996 ■

29
कवि प्रदीप
Kavi Pradeep
■ 1997 ■

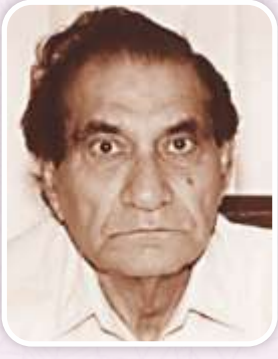
30
बी.आर. चोपड़ा
B.R. Chopra
■ 1998 ■

31
ऋषिकेश मुखर्जी
Hrishikesh Mukherjee
■ 1999 ■

32
आशा भोंसले
Asha Bhosle
■ 2000 ■

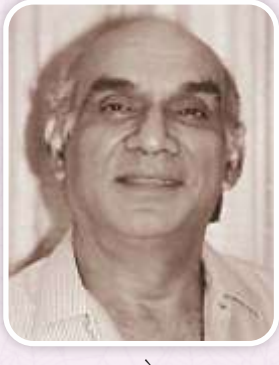
33
यश चोपड़ा
Yash Chopra
■ 2001 ■

पूर्ववर्ती दादासाहेब फ़ाल्के पुरस्कार विजेता
DADASAHEB PHALKE AWARD PAST RECIPIENTS

34

देव आनंद
Dev Anand
■ 2002 ■

35

मृणाल सेन
Mrinal Sen
■ 2003 ■

36

अडूर गोपालाकृष्णन
Adoor Gopalakrishnan
■ 2004 ■

37

श्याम बेनेगल
Shyam Benegal
■ 2005 ■

38

तपन सिन्हा
Tapan Sinha
■ 2006 ■

39

मन्ना डे
Manna Dey
■ 2007 ■

40

वी.के. मूर्ति
V.K. Murthy
■ 2008 ■

41

डी. रामानायडू
D. Ramanaidu
■ 2009 ■

42

के. बालाचंदर
K. Balachander
■ 2010 ■

43

सौमित्र चटर्जी
Soumitra Chatterjee
■ 2011 ■

44

प्राण
Pran
■ 2012 ■

पूर्ववर्ती दादासाहेब फ़ाल्के पुरस्कार विजेता
DADASAHEB PHALKE AWARD PAST RECIPIENTS

45

गुलज़ार
Gulzar
■ 2013 ■

46

शशि कपूर
Shashi Kapoor
■ 2014 ■

47

मनोज कुमार
Manoj Kumar
■ 2015 ■

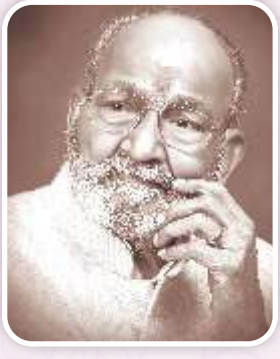

48

के विश्वनाथ
K Viswanath
■ 2016 ■

49

विनोद खन्ना
Vinod Khanna
■ 2017 ■

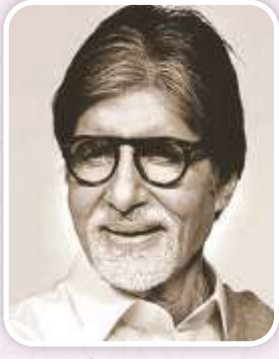

50

अमिताभ बच्चन
Amitabh Bachchan
■ 2018 ■

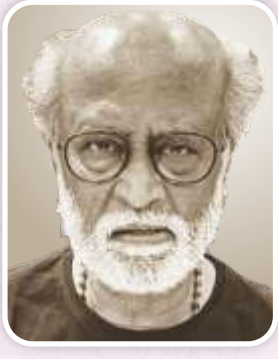

51

रजनीकांत
Rajinikanth
■ 2019 ■

52

आशा पारेख
Asha Parekh
■ 2020 ■

दादासाहब फ़ाल्के पुरस्कार समिति

DADASAHEB PHALKE AWARD COMMITTEE

आशा पारेख (Asha Parekh)

आशा पारेख सुप्रसिद्ध भारतीय फ़िल्म अभिनेत्री, निर्देशक, निर्माता और प्रशिक्षित भारतीय शास्त्रीय नर्तक हैं। इन्होंनें अपने वक्त के शीर्ष फिल्मकारों और अभिनेताओं के साथ करीब 95 फ़िल्मों में अभिनय किया, अपनी ब्लॉकबस्टर फ़िल्मों की बदौलत इन्हें हिंदी फ़िल्म जगत की 'हिट गर्ल' के नाम से पहचान मिली। कटी पंतग के लिए इन्हें 1971 में सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री के फ़िल्मफेयर अवार्ड, और 2002 में फ़िल्मफेयर लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड, 2020 में 68 वें राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार में दादासाहेब फाल्के पुरस्कार और फ़िल्मों में इनके अतुलनीय योगदान के लिए 1992 में इन्हें पद्म श्री से नवाजा गया। इसके अलावा यह 1998–2001 तक केंद्रीय फ़िल्म प्रमाणन बोर्ड की प्रमुख भी रह चुकी हैं।

Asha Parekh is a renowned Indian film actress, director, producer, and an accomplished Indian classical dancer. She has worked in over 95 films with some of the top Indian filmmakers and actors, giving many superhits and came to be known as the "Hit Girl". She won the Filmfare Award for Best Actress for 'Kati Patang' (1971) and was conferred with the Filmfare Lifetime Achievement Award (2002), the Dadasaheb Phalke Award at the 68th National Film Awards 2020 and the prestigious Padma Shri by the Government of India (1992) for her notable contributions to cinema. She also Chaired the Censor Board of Film Certification (1998-2001).

शेखर कपूर (Shekhar Kapur)

शेखर कपूर एक अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त, पुरस्कार विजेता भारतीय फ़िल्म निर्देशक, निर्माता और अभिनेता हैं। इन्हें, दुनिया भर में समीक्षकों द्वारा सराही गई फ़िल्मों जैसे 'एलिजाबेथः द गोल्डन एज' (2007), 'एलिजाबेथ' (1998), 'बैंडिट क्वीन' (1994), 'मिस्टर इंडिया' (1987) और 'मासूम' (1983) जैसी चर्चित फ़िल्मों के लिए जाना जाता है। जिसकी बदौलत इन्हें बाफ्टा पुरस्कार, राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार, राष्ट्रीय समीक्षा बोर्ड पुरस्कार, तीन फ़िल्मफेयर पुरस्कार और साथ ही गोल्डन ग्लोब पुरस्कार के लिए नामांकन सहित कई प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय पुरस्कार मिले। भारत के चौथे सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार (2002) पद्म श्री से सम्मानित शेखर कपूर ने 63वें कान्स फ़िल्म महोत्सव में निर्णायक मंडल की भूमिका निभाई और वह भारतीय फ़िल्म और टेलीविजन संस्थान (2020–23) के अध्यक्ष भी रह चुके हैं।

Shekhar Kapur is an internationally acclaimed award-winning Indian film director, producer and actor. He is known for his critically acclaimed films like 'Elizabeth: The Golden Age' (2007), 'Elizabeth' (1998), 'Bandit Queen' (1994), 'Mister India' (1987) and 'Masoom' (1983) that have won him several prestigious international and national accolades, including BAFTA Awards, National Film Awards, National Board of Review Awards, three Filmfare Awards, as well as a nomination for the Golden Globe Awards. A recipient of the Padma Shri, India's fourth highest civilian award (2002), he served as Jury at the 63rd Cannes Film Festival and was President of the Film and Television Institute of India (2020-23).

चिरंजीवी (Chiranjeevi)

भारतीय सिनेमा के इतिहास में सबसे सफल और प्रभावशाली अभिनेताओं में से एक माने जाने वाले **चिरंजीवी**, एक प्रसिद्ध भारतीय फ़िल्म अभिनेता, निर्माता और पूर्व राजनीतिज्ञ हैं। इन्होंने प्रमुख रूप से तेलुगु में 150 से अधिक फ़ीचर फ़िल्मों में काम किया है। आंध्र प्रदेश के सर्वोच्च फ़िल्म पुरस्कार – रघुपति वेंकैया पुरस्कार, राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार, तीन नंदी पुरस्कार, नौ फ़िल्मफेयर पुरस्कार दक्षिण, जिसमें एक लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार भी शामिल है, से सम्मानित चिरंजीवी, को उनके भारतीय सिनेमा में दिए योगदान के लिए भारत के तीसरे सबसे बड़े नागरिक पुरस्कार पद्म भूषण (2006) से नवाजा जा चुका है। 53वें भारतीय अंतर्राष्ट्रीय फ़िल्म महोत्सव (2022) में इन्हें इफ्फी इंडियन फ़िल्म पर्सनैलिटी ऑफ द ईयर का सम्मान हासिल हुआ।

Chiranjeevi is a celebrated Indian film actor, producer and a former politician. Regarded as one of the most successful and influential actors in the history of Indian cinema, he has worked in over 150 feature films predominantly in Telugu. A recipient of Andhra Pradesh's highest film award - the Raghupathi Venkaiah Award, National Film Awards, three Nandi Awards, nine Filmfare Awards South, including a Lifetime Achievement Award, he was conferred with the Padma Bhushan, India's third-highest civilian award for his contributions to Indian cinema (2006) and received the IFFI Indian Film Personality of the Year Award at the 53rd International Film Festival of India (2022).

प्रोसेनजीत चटर्जी (Prosenjit Chatterjee)

प्रोसेनजीत चटर्जी बंगाली सिनेमा के एक प्रतिष्ठित भारतीय अभिनेता और निर्माता हैं। इनका फ़िल्मी सफर बतौर बाल कलाकार ऋषिकेश मुखर्जी की फ़िल्म "छोट्टो जिज्ञासा" से शुरू हुआ, इस फ़िल्म के लिए इन्होंनें बंगाली फ़िल्म जर्नलिस्ट असोसियेशन का– साल का सर्वाधिक उत्कृष्ट कार्य का पुरस्कार (1969) जीता। तब से अब तक वह 345 फ़िल्मों का हिस्सा रहे हैं और बंगाली फ़िल्म उद्योग को पुनर्जीवित करने में अहम भूमिका निभाई है। उन्होंने अपनी सुपरस्टार वाली शख्सियत के साथ एक अभिनेता की संवेदनशीलता का सफलतापूर्वक तालमेल बैठा कर, फ़िल्म जगत ही नहीं लोगों के दिल में भी एक जगह बनाई है। इन्होंनें अपनी फ़िल्मों के लिए कई सर्वश्रेष्ठ अभिनेता पुरस्कार जीते हैं, जिनमें 'दोसर' (2007) और शंखचिल (2016) के लिए दो राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार भी शामिल हैं।

Prosenjit Chatterjee is a renowned Indian actor and producer working predominantly with Bengali cinema. He began his acting career as a child actor in Hrishikesh Mukherjee's 'Chotto Jigyasa', for which he won the Bengal Film Journalists' Association – Most Outstanding Work of the Year Award (1969). Since then, he has been part of 345 films and has been instrumental in reviving the Bengali film industry. He has carved a niche for himself by successfully blending the sensitivity of an actor with his superstar persona and has won numerous Best Actor Awards for several of his films, including two National Film Awards for 'Dosar' (2007) and 'Shankhachil' (2016).

परेश रावल (Paresh Rawal)

परेश रावल एक भारतीय अभिनेता, हास्य अभिनेता, फ़िल्म निर्माता और राजनीतिज्ञ हैं। उन्होंने 240 से अधिक फ़िल्मों में काम किया है और विभिन्न मंचो पर सराहना बटोरी है। 1994 में, इन्होंने दो फ़िल्मों 'वो छोकरी' और 'सर' के लिए सर्वश्रेष्ठ सहायक अभिनेता का राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार जीता। इन्हें 'सर' के लिए नकारात्मक भूमिका में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए अपना पहला फ़िल्मफेयर पुरस्कार भी मिला। फ़िल्म 'सरदार' (1993) में स्वतंत्रता सेनानी वल्लभभाई पटेल के रूप में उनके प्रदर्शन को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सराहना मिली। इन्हें भारत सरकार (2014) द्वारा चौथे सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार पद्म श्री से सम्मानित किया गया है।

Paresh Rawal is an Indian actor, comedian, film producer and politician. He has worked in over 240 films and is the recipient of various accolades. In 1994, he won the National Film Award for Best Supporting Actor for two films, 'Woh Chokri' and 'Sir'. He also received his first Filmfare Award for Best Performance in a Negative Role for 'Sir'. His performance as freedom fighter Vallabhbhai Patel in the film 'Sardar' (1993) garnered national and international acclaim. He has been honoured with the Padma Shri, the fourth highest civilian award by the Government of India (2014).

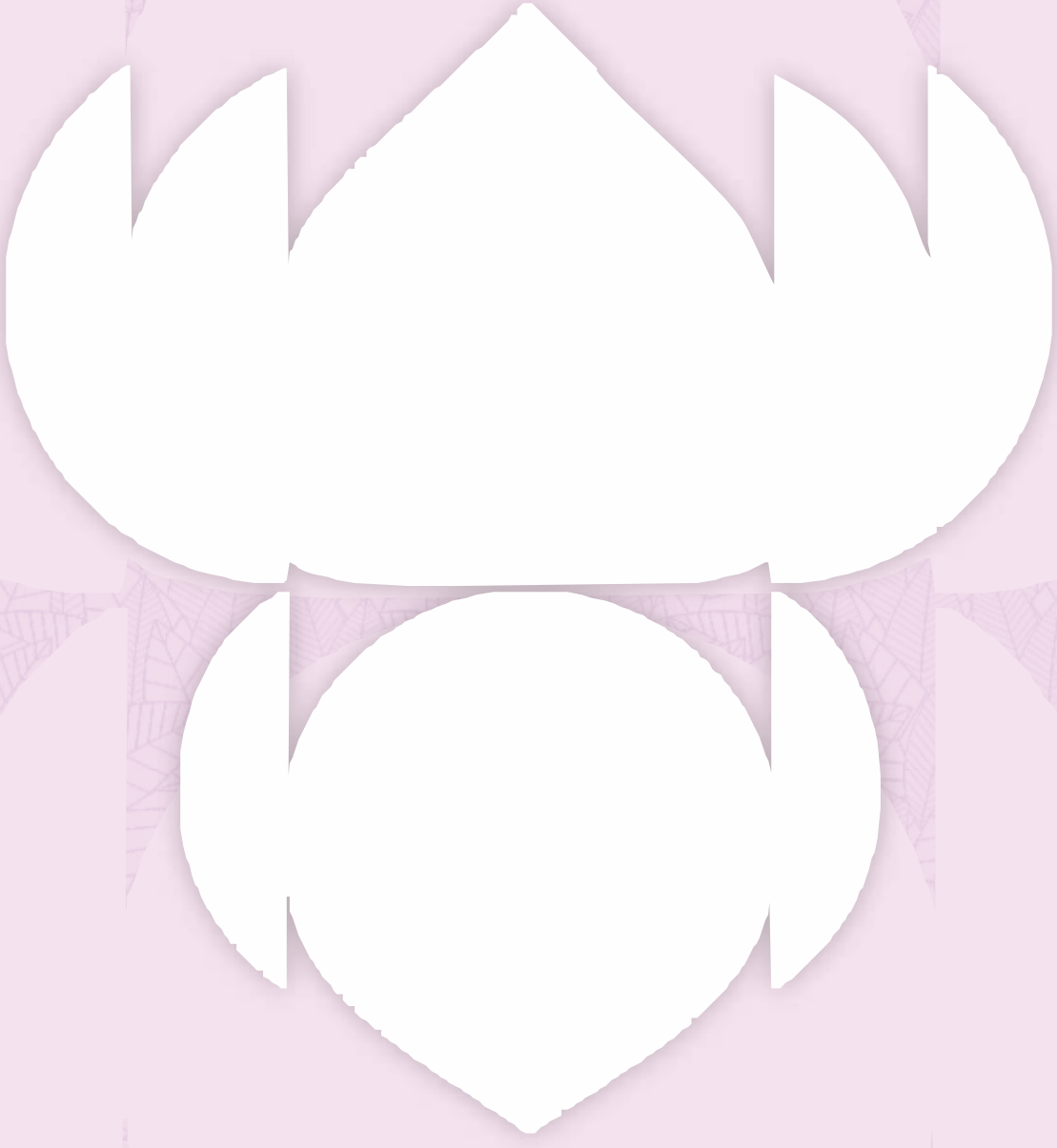

दादासाहेब फ़ाल्के पुरस्कार विजेता परिचय
DADASAHEB PHALKE AWARD WINNER PROFILE

वहीदा रहमान
दादासाहेब फ़ाल्के पुरस्कार विजेता, 2021

वहीदा रहमान भारत की सबसे सम्मानित और बेहतरीन अदाकाराओ मेंशुमार हैं। अपने 6 दशक लंबे फ़िल्मी सफर में, इन्होंनें 90 से ज्यादा फ़िल्मों में काम किया और अपनी बहुमुखी अभिनय से सिनेमा जगत पर राज किया। वह एक अभिनेत्री और नर्तक के तौर पर अपनी खूबसूरती, शिष्टता और कुशलता के लिए जानी जाती हैं। इन्होंनें भारत की कुछ अत्यंत सराही गई और व्यवसायिक रूपसे सफल फ़िल्मों में नायिका की भूमिका निभाई है। भारतीय सिनेमा में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए, उन्हें कई पुरस्कारों और सम्मानों से सम्मानित किया गया है, जिनमें भारत के सर्वोच्च नागरिक और सिनेमा पुरस्कार; पद्म श्री (1972), पद्म भूषण (2011), और दादा साहब फ़ाल्के लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड (2023) शामिल हैं।

तेलुगु फ़िल्म 'रोजुलु मरायी' (1955) से अभिनय की शुरुआत करने के बाद, अभिनेता–निर्देशक गुरु दत्त की 'प्यासा' (1957), कागज के फूल (1959), चौदहवीं का चांद (1960) साहिब बीबी और गुलाम (1962) जैसी फ़िल्मों में मुख्य भूमिका निभाकर प्रसिद्धि हासिल की, जिन्हें भारतीय सिनेमा की महान क्लासिक्स माना जाता है। 20वीं सदी के महानतम फ़िल्म निर्माताओं में से एक माने जाने वाले सत्यजीत रे के साथ इन्होंने फ़िल्म 'अभिजान' (1962) में काम किया और महान अभिनेता–फ़िल्म निर्माता देव आनंद के साथ भी,'सी.आई.डी.' (1956), 'सोलवा साल' (1958), 'काला बाजार' (1959) और कल्ट क्लासिक रोमांटिक ड्रामा 'गाइड' (1965) में नायिका की भूमिका निभाई, जिसके लिए इन्हें सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री का पहला फ़िल्मफेयर पुरस्कार प्राप्त हुआ। 'नील कमल' (1968) के लिए इन्होंनें फिर से फ़िल्मफेयर पुरस्कार जीता, और अभिनेता सुनील दत्त के साथ 'रेशमा और शेरा' (1971) के लिए सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री के राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार से नवाज़ी गईं।

1960 के दशक में अपने करियर के चरम पर,वह सबसे अधिक भुगतान पाने वाली अभिनेत्रियों में शुमार थीं। गुज़रे ज़माने के सभी बड़े अभिनेताओ, जैसे दिलीप कुमार, देव आनंद, राजेन्द्र कुमार, राजेश खन्ना, धर्मेन्द्र और अमिताभ बच्चन के साथ इन्होंनें काम किया और

सिनेमा जगत के सबसे यादगार गाने इन पर फ़िल्माए गए. विविधता से भरे इनके अभिनय का जादू आगे भी जारी रहा और नए दौर के अभिनेता और निर्देशकों के साथ भी इन्होंनें कई यादगार फ़िल्में की जैसे, 'कभी–कभी' (1976), 'चांदनी' (1989), 'लम्हे' (1991), 'रंग दे बसंती' (2006) और 'दिल्ली 6' (2009)। 1994 में इन्हें फ़िल्मफेयर लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित किया गया। अभिनेत्री के अलावा इन्हें समाज कल्याण से जुड़े कार्यों, और कई सामाजिक मुद्दों मे इनके अहम योगदान के लिए भी जाना जाता है।

Waheeda Rehman

Dadasaheb Phalke Award Winner, 2021

Waheeda Rehman is regarded as one of India's most accomplished and honoured actresses. In a career spanning over six decades, she has worked in more than 90 feature films and has reigned the silver screen with her versatile performances. Known for her beauty, grace and finesse as an actor and a dancer, she has played leading roles in some of India's most critically acclaimed and commercially successful films. For her stellar contributions to Indian cinema, she has been bestowed with several awards and accolades, including India's highest civilian and cinema awards; the Padma Shri (1972), the Padma Bhushan (2011), and the Dadasaheb Phalke Lifetime Achievement Award (2021).

She made her acting debut with the Telugu film 'Rojulu Marayi' (1955) and rose to prominence playing the lead in actor-director Guru Dutt's films like 'Pyaasa' (1957), 'Kaagaz Ke Phool' (1959), 'Chaudhvin Ka Chand' (1960) and 'Sahib Bibi Aur Ghulam' (1962), all considered as the great classics of Indian cinema. She collaborated with Satyajit Ray, regarded as one of the greatest filmmakers of the 20th century for the film 'Abhijan' (1962) and also starred in several films with legendary actor-filmmaker Dev Anand, including 'C.I.D.' (1956), 'Solva Saal' (1958), 'Kala Bazar' (1959) and the cult classic romantic drama 'Guide' (1965) for which she won her first Filmfare Award for Best Actress. She won the Filmfare Award again for Neel Kamal (1968), and the National Film Award for Best Actress for 'Reshma aur Shera' (1971) opposite actor Sunil Dutt.

As she continues to work as an actor, she is also recognised for her philanthropic work and her contribution as an advocate and ambassador for several social causes.

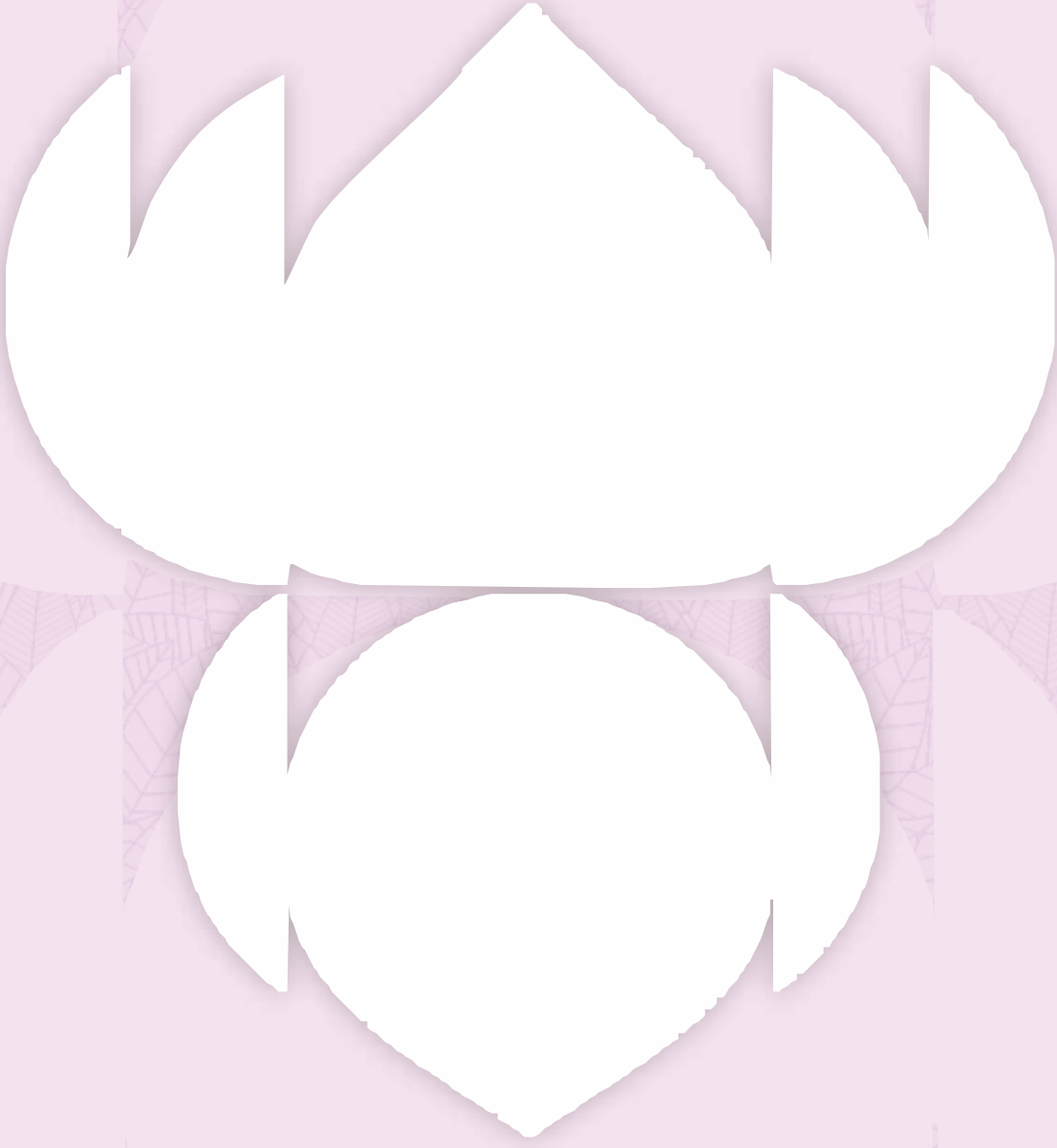

69वें

राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार 2021

NATIONAL FILM AWARDS 2021

राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार तीन वर्गों में दिये जाते हैं–फ़ीचर फ़िल्म, गैर–फ़ीचर फ़िल्म तथा सिनेमा पर सर्वश्रेष्ठ लेखन। प्रत्येक वर्ग के लिए अलग निर्णायक मण्डल होता है।

57वें राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कारों से फ़ीचर फ़िल्म श्रेणी में विजेताओं का चयन द्वि–स्तरीय समिति द्वारा किया जाता है। ये हैं पाँच प्रादेशिक समितियाँ और एक केन्द्रीय समिति। चयन समिति के सदस्य सिनेमा, संबद्ध क्षेत्रों और मानवीय शास्त्रों से जुड़े हुए प्रतिष्ठित लोग होते हैं। चयन प्रक्रिया के दौरान विचार–विमर्श पूर्ण रूप से गोपनीय होते हैं जिससे सदस्यों को बाहरी प्रभावों से दूर रखने में मदद मिलती है और पूरी स्वतन्त्रता, निष्पक्षता के साथ पुरस्कार विजेताओं का चयन किया जाता है।

The National Film Awards are given in three sections, viz., Feature Films, Non-Feature Films and Best Writing on Cinema. Each section has a different jury.

Since the 57th National Film Awards, the awards in the feature film section are decided through a two-tier selection process comprising five regional panels and a central jury. The juries are distinguished persons in the field of cinema, other allied arts and humanities. The jury deliberations are confidential, which provides an enabling environment to insulate the jurors from external influences, and also facilitates selection with impartiality, freedom and fairness.

फ़ीचर फ़िल्म केन्द्रीय ज्यूरी

FEATURE FILMS CENTRAL JURY

केतन मेहता (अध्यक्ष) Ketan Mehta (Chairperson)

केतन मेहता अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त एक पुरस्कार विजेता फ़िल्मकार हैं. इनकी फ़िल्में जैसे 'दि राइजिंग– मंगल पांडे', 'मिर्च मसाला', 'माया मेमसाब', 'सरदार', 'होली' और 'भवानी भवाई' को कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय फ़िल्म समारोह में प्रदर्शित हो चुकी है और पुरस्कार प्राप्त कर चुकी हैं। माया डिजिटल स्टूडियो प्राइवेट लिमिटेड के संस्थापक केतन मेहता ने दूरदर्शन, फ़िल्म महोत्सव निदेशालय, भारत के लिए सलाहकार के रूप में भी काम किया है, और वर्तमान में यह एनएफडीसी (भारतीय राष्ट्रीय फ़िल्म विकास निगम) में निदेशक मंडल के सदस्य हैं। इसरो (भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन) के लिए एक कंटेट निर्माता के तौर पर, यह उनकी उपग्रह परियोजनाओं में सक्रिय रूप से शामिल रहे हैं।

Ketan Mehta is an internationally acknowledged and award-winning Indian filmmaker. His films have been shown at film festivals across the world with films like 'The Rising - Ballad of Mangal Pandey', 'Mirch Masala', 'Maya Memsaab', 'Sardar', 'Holi' and 'Bhavni Bhavai' garnering several national and International awards. A promoter of Maya Digital Studios Pvt. Ltd, he has also served as a consultant for Doordarshan, Directorate of Film Festivals, India and is currently a member of the Board of Directors at NFDC (National Film Development Corporation of India). As a Content Producer for ISRO (Indian Space Research Organisation), he has been actively involved in their satellite projects.

फ़ीचर फ़िल्म केन्द्रीय ज्यूरी
(FEATURE FILMS CENTRAL JURY)

शांतनु गणेश रोडे (सदस्य) Shantanu Ganesh Rode (Member)

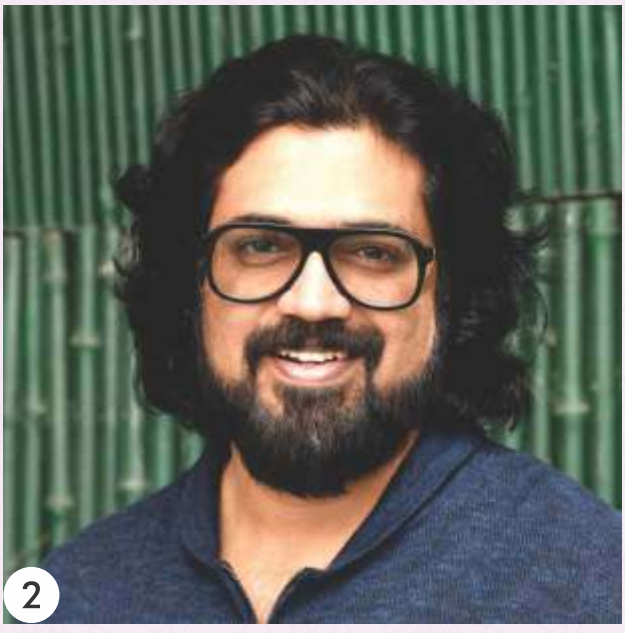

शांतनु गणेश रोडे मराठी और हिंदी फ़िल्म जगत के राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार विजेता लेखक, निर्देशक और निर्माता हैं। उन्हें 'गोश्ता एका पैठानिची', 'कैरी', 'हनुमान', 'बाबू बैंड बाजा', 'अगदबम', 'जयजयकर', 'हरि ओम विठ्ठला', 'तिन्हिसनजा' जैसी कई फ़िल्मों के लिए जाना जाता है। उनकी फ़िल्म 'गोश्त एका पैठानिची' ने 68वें राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार में सर्वश्रेष्ठ मराठी फ़िल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार जीता ।

Shantanu Ganesh Rode is a National Award winning writer, director and producer of Marathi and Hindi films. He is known for his films like 'Goshta Eka Paithanichi', 'Kairee', 'Jayjaykar', 'Hanuman', 'Babu Band Baaja', 'Agadbam', 'Jayjaykar', 'Hari Om Viththala', 'Tinhisanja' and many more. His film, 'Goshta Eka Paithanichi' won the National Award for the Best Marathi Film at the 68th National Film Awards.

सुनील कुमार देसाई (सदस्य) Sunil Kumar Desai (Member)

सुनील कुमार देसाई सुप्रसिद्ध पुरस्कार विजेता, फ़िल्म निर्देशक, निर्माता और पटकथा लेखक हैं। इनकी फ़िल्म जैसे "तारका", "उत्तकर्ष", "निष्कर्ष", "प्रथ्यार्थ", "मर्म", "स्पर्श", "बेलाडिंगला बाले बेला" सहित कई अन्य फ़िल्मों ने कर्नाटक राज्य पुरस्कार में सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म, सर्वश्रेष्ठ पटकथा, सर्वश्रेष्ठ संवाद, सर्वश्रेष्ठ संपादन, सर्वश्रेष्ठ ध्वन्यांकन और सर्वश्रेष्ठ ध्वनि संपादन श्रेणी में कई पुरस्कार प्राप्त किये हैं। वह कर्नाटक राज्य फ़िल्म पुरस्कार (2011) के लिए समिति के अध्यक्ष, 13वें बेंगलुरु अंतर्राष्ट्रीय फ़िल्म महोत्सव (2022) में एशियाई सिनेमा प्रतियोगिता के लिए जूरी सदस्य, चित्तारा स्टार अवार्ड्स (2023) के लिए जूरी प्रमुख थे, और 69वें राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार के लिए उन्होंने जूरी सदस्य के रूप में भी काम किया।

Sunil Kumar Desai is well known award-winning Kannada film director, producer and screenplay writer. His films like 'Tarka', 'Uttkarsha', 'Nishkarsha', 'Prathyartha', 'Marma', 'Sparsha', 'Beladingala Baale Bella' and many more have won him several Karnataka State Awards in the categories of Best Film, Best Screenplay, Best Dialogues, Best Editing, Best Audiography and Best Sound Editing. He was the Committee Chairman for the Karnataka State Film Awards (2011), Jury member for the Asian Cinema Competition in the 13th Bengaluru International Film Festival (2022), Jury Head for Chittara Star Awards (2023), and also served as a Jury member for the 69th National Film Awards.

फ़ीचर फ़िल्म केन्द्रीय ज्यूरी
(FEATURE FILMS CENTRAL JURY)

पापिया अधिकारी (सदस्य) Papia Adhikary (Member)

पापिया अधिकारी एक जानी–मानी बांग्ला फ़िल्म, टेलिविजन और रंगमंच अभिनेत्री हैं। इन्होंनें विभिन्न भाषाओं की करीब 75 से ज्यादा फ़िल्मों में काम किया जिसमें, बंगाली, उड़िया, हिंदी और तमिल भाषा की फ़िल्में जैसे,'सोनार संसार', 'अविसार', 'ओधिकार', 'आगोमोन', 'शोरनोमायरी ठिकाना', 'शंका', 'प्रतिशोध', 'गंगा हमार माई' (भोजपुरी), 'जननी' (तमिल), 'मिछा माया संसार' (ओड़िया), और 'दि गोल्डन फिंगर' (अंग्रेजी) शामिल हैं। यह केंद्रीय फ़िल्म प्रमाणन बोर्ड (सीबीएफसी) की कार्यकारी सदस्य, कई बार कोलकाता अंतर्राष्ट्रीय फ़िल्म महोत्सव की जूरी सदस्य, 69वें राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार (2021) में केंद्रीय पैनल की सदस्य, पश्चिम बंगाल में भारतीय जनता पार्टी राज्य समिति की सदस्य भी हैं।

Papia Adhikary is a well-known Bengali film, television and theatre actor. She has worked in over 75 films across multiple languages, including Bengali, Oriya, Hindi, and Tamil in popular films like 'Sonar Sansaar', 'Avisar', 'Odhikar', 'Agomon', ' Shornomayeer Thikana', 'Shanka', 'Protishodh', 'Ganga Hamar Mai' (Bhojpuri), 'Janani' (Tamil), 'Michha Maya Sansaar' (Oriya) and 'The Golden Finger' (English). An Executive Member of the Central Board of Film Certification (CBFC), a jury member of the Kolkata International Film Festival several times, a Central Panel Member at the 69th National Film Awards (2021), she is also a State Committee Member of the Bharatiya Janata Party in West Bengal.

एस मुत्थु गणेश (सदस्य) S Muthu Ganesh (Member)

एस मुत्थु गणेश फ़िल्मों, टेलीविजन विज्ञापनों, वृत्तचित्रों, संगीत वीडियो और सामाजिक रूप से जागरूक परियोजनाओं के क्षेत्र में एक चर्चित सिनेमेटोग्राफर हैं। फ़िल्म और टेलीविजन संस्थान, तमिलनाडु के पूर्व छात्र रह चुके गणेश ने श्याम बेनेगल, गिरीश कर्नाड, अशोक मेहता और राजीव मेनन जैसी प्रतिष्ठित हस्तियों के साथ एक सहयोगी सिनेमेटोग्राफर के तौर पर काम करके अनुभव प्राप्त किया। वह 'पुधिया मुगम', 'पासमलरागा', 'कलूरी वासल' और 'नेताजी' जैसी उल्लेखनीय तमिल फ़ीचर फ़िल्मों के लिए फोटोग्राफी के निदेशक (डीओपी) थे। वह श्री फाइन फ्रेम्स प्रोडक्शंस के संस्थापक हैं, उन्होंने माल्मो और टीएसएफ फ्रांस में अंतरराष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा दिया है, और भारत में मीडिया और फ़िल्म स्कूलों के भीतर साझेदारी शुरू करने और तकनीकी प्रगति को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

S. Muthu Ganesh is a well-known cinematographer for films, television commercials, documentaries, music videos and socially conscious projects. An alumnus of the Film and Television Institute, Tamil Nadu, he garnered experience as an associate cinematographer working with eminent figures like Shyam Benegal, Girish Karnad, Ashok Mehta, and Rajiv Menon. He was the Director of Photography (DOP) for notable Tamil feature films like, 'Pudhiya Mugam', 'Paasamalraga', 'Kaloori Vaasal' and 'Netaji'. Founder of Shri Fine Frames Productions, he has fostered international collaborations in Malmo and TSF France, and has played an intrumental role in initiating partnerships and driving technical advancements within media and film schools in India.

फ़ीचर फ़िल्म केन्द्रीय ज्यूरी
(FEATURE FILMS CENTRAL JURY)

जी.सुरेश कुमार (सदस्य) G Suresh Kumar (Member)

जी. सुरेश कुमार प्रसिद्ध मलयालम फ़िल्म निर्माता और अभिनेता हैं. इन्होंनें रेवती कलामंदिर के बैनर तले 33 मलयालम फ़ीचर फ़िल्मों का निर्माण किया और यह 28 फ़िल्मों में अभिनय भी कर चुके हैं। इन्होंने विभिन्न फ़िल्म निकायों में कई नेतृत्व पदों पर काम किया है, जिसमें राज्य सांस्कृतिक कल्याण बोर्ड, दक्षिण भारतीय फ़िल्म चौंबर ऑफ कॉमर्स, अदूर गोपालकृष्णन समिति और केरल राज्य चलचित्र अकादमी के कार्यकारी सदस्य होने के साथ–साथ, केरल फ़िल्म प्रोड्यूसर्स एसोसिएशन और केरल फ़िल्म चौंबर ऑफ कॉमर्स के अध्यक्ष, फ़िल्म फेडरेशन ऑफ इंडिया के उपाध्यक्ष, केरल फिल्म प्रोड्यूसर्स एसोसिएशन के महासचिव का पद शामिल है।

G. Suresh Kumar is a well-known Malayalam film producer and actor. He has produced more than 33 Malayalam feature films under the banner Revathy Kalaamandhir and has acted in 28 films. He has held several leadership positions with various film bodies serving as President for the Kerala Film Producers Association and the Kerala Film Chamber of Commerce, Vice-President for the Film Federation of India, General Secretary for the Kerala Film Producers Association, Chairman of the Kerala State Cultural Welfare Board, along with being an Executive Member of the South Indian Film Chamber of Commerce, Adoor Gopalakrishnan Committee and the Kerala State Chalachitra Academy.

वी एन आदित्य (सदस्य) V N Aditya (Member)

वी.एन. आदित्य एक पुरस्कार विजेता फ़िल्म निर्देशक, निर्माता, और पटकथा लेखक हैं, जिन्हें तेलुगु सिनेमा में उनके उल्लेखनीय काम के लिए जाना जाता है। इनकी फ़िल्म 'मानसंथा नुव्वे' और 'नेनुन्नानु' जैसी कई अन्य फ़िल्में शानदार हिट रही हैं और विभिन्न प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय फ़िल्म समारोहों में प्रदर्शित की गई हैं, जिन्होंने सर्वश्रेष्ठ फ़ीचर फ़िल्म के लिए नंदी पुरस्कार सहित विभिन्न श्रेणियों में पुरस्कार जीते हैं। वह दोनों तेलुगु राज्यों का प्रतिनिधित्व करते हुए 68वें भारतीय राष्ट्रीय पुरस्कार (2022) के लिए निर्णायक मंडल के सदस्य हैं, वह 53वें भारतीय अंतर्राष्ट्रीय फ़िल्म महोत्सव (2022) में भारतीय पैनोरमा के लिए निर्णायक मंडल का हिस्सा थे और बंगलुरू अंतर्राष्ट्रीय फ़िल्म महोत्सव (2023) के लिए केंद्रीय निर्णायक मंडल जूरी सदस्य हैं।

V.N. Aditya is an award-winning film director, producer and screenplay writer known for his work in Telegu cinema. His movies like 'Manasantha Nuvve' and 'Nenunnanu' amongst many others have been stupendous hits and have been screened at various prestigious international and national film festivals, winning awards across categories, including the Nandi Award for Best Feature Film. He is served as Jury member for the 68th Indian National Awards (2022) representing both Telugu states, was part of the Jury for Indian Panorama at the 53rd International Film Festival of India (2022) and is a Central Jury Member for the Bangalore International Film Festival (2023).

फ़ीचर फ़िल्म केन्द्रीय ज्यूरी
(FEATURE FILMS CENTRAL JURY)

सब्यसाची मोहपात्रा (सदस्य) Sabyasachi Mohapatra (Member)

सब्यसाची मोहपात्रा ओडिया फ़िल्म जगत के एक चर्चित, पुरस्कार विजेता फ़िल्म निर्माता, निर्देशक और पटकथा लेखक हैं, इन्हें अपने फ़िल्मी सफर में अब तक 40 से ज्यादा राष्ट्रीय–अंतर्राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं। इन्हें अपनी फ़िल्म, 'आदिम विचार' (2014), और 'पाहाड़ा रा लुहा' (2015) के लिए लगातार दो साल और बाद में इनकी फ़िल्म, 'साला बुढ़हार बदला' (2021) को प्रतिष्ठित राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार से नवाजा गया. संबलपुरी में उनके निर्देशन की पहली फ़िल्म 'भूखा' (1989) ने गिजोन फ़िल्म फेस्टिवल, स्पेन में अंतर्राष्ट्रीय जूरी पुरस्कार जीता और मेगा–बजट 'जय जगन्नाथ' (2006) 15 भारतीय भाषाओं में रिलीज हुई थी। उड़िया सिनेमा में उनके योगदान को मान्यता देते हुए, संबलपुर विश्वविद्यालय ने उन्हें डॉक्टरेट की मानद उपाधि से सम्मानित किया।

Sabyasachi Mohapatra is an award-winning film producer, director and screenplay writer. Well-known in Odia cinema, he has been awarded with more than 40 International and National awards. He won the prestigious National Film Awards for two consecutive years for his films 'Aadim Vichar' (2014) and 'Pahada Ra Luha' (2015), and later for 'Sala Budhar Badla' (2021). His directorial debut 'Bhukha' (1989) in Sambalpuri won the International Jury Award at the Gijon Film Festival, Spain and the mega-budget 'Jai Jagannatha' (2006) was released in 15 Indian languages. In recognition to his contribution to Odia cinema, Sambalpur University concurred him with an honorary Doctorate degree.

मलय राय (सदस्य) Malay Ray (Member)

मलय राय एक सुविख्यात छायाकार (सिनेमेटोग्राफर) हैं, जिन्होंनें फ़ीचर फ़िल्म, वृत्तचित्र, विज्ञापन और लघु फ़िल्मों में अपनी कला का प्रदर्शन किया है। इसके साथ ही वह फ़िल्मों के लिए पोस्ट क्रियेटिव निर्देशक और पोस्ट प्रोडक्शन कन्सलटेंट के रूप में भी जुड़े हैं। भारतीय फ़िल्म एवं टेलिविजन संस्थान, पुणे के छात्र रह चुके मलय का फ़िल्मी सफर 30 साल पुराना है, इस दौरान इन्होंनें 'मोक्ष' (1996), 'द्रोहकाल' (1994) और 'मिडनाइट सॉन्ग' (2021) जैसी फ़िल्मों से ख्याति अर्जित की, इनकी फ़िल्म 'मोक्ष' को 48 वें राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार में सर्वश्रेष्ठ छायांकन के पुरस्कार से नवाजा गया था।

Malay Ray is a well-know cinematographer for feature films, documentaries, advertisements and short films. He also collaborates as a post production consultant and post creative director for films. An alumnus of the Film and Television Institute of India, Pune, he has had a career spanning 30 years and is known for films like 'Mokshya' (1996), 'Droh Kaal' (1994) and 'Midnight Song' (2021). His film 'Mokshya' won the Best Cinematography Award at the 48th National Film Awards.

फ़ीचर फ़िल्म केन्द्रीय ज्यूरी
(FEATURE FILMS CENTRAL JURY)

परेश वोरा (सदस्य) Paresh Vora (Member)

परेश वोरा एक युवा रंगमंच अभिनेता, लेखक और फ़िल्म निर्माता हैं। इनकी फ़िल्म, 'रेवा– ए जर्नी विदइन' (2018) समीक्षकों को द्वारा सराही गई और 66 वे राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार में सर्वेश्रेष्ठ गुजराती फ़िल्म का पुरस्कार जीत चुकी है। यह कई पुरस्कार विजेता नाटकों का हिस्सा रहे हैं जिसमें 'कोराट', 'मंछा', 'मारा असत्य ना प्रोयोगो', 'हैप्पी दिवाली' और 'स्टाप' शामिल हैं। इन नाटकों ने पूरे भारत भर में ख्याति अर्जित की है। यह गुजरात राज्य फ़िल्म पुरस्कार के निर्णायक मंडल के सदस्य हैं और केंद्रीय फ़िल्म प्रमाणन बोर्ड, मुंबई के सलाहकार पैनल सदस्य का हिस्सा हैं। अपने आभूषण व्यवसाय के साथ–साथ यह एक प्रोडक्शन कंपनी ब्रेनबॉक्स स्टूडियो के भी मालिक हैं।

Paresh Vora is a young theatre actor, writer and film producer. His film 'Reva: A Journey Within' (2018) was critically acclaimed and won the Best Feature Film in Gujarati at the 66th National Film Awards. He has been part of several award winning theatre plays like 'Korat', 'Manchha', 'Mara Asatya na Prayogo', 'Happy Diwali' and 'Stop' staged at prestigious venues across India. He is a Jury member for the State Film Awards - Gujarat and is part of the Advisory Panel Member of the Central Board of Film Certification, Mumbai. Along with his jewellery business he also owns Brainbox Studios, a production company.

मानस चौधरी (सदस्य) Manas Choudhury (Member)

मानस चौधरी फ़िल्म, टेलिविजन और वृत्तचित्रों में प्रोडक्शन साउंड मिक्सर और साउंड डिजाइनर हैं, फ़िल्मों में इनके किए गए कार्य को कई बार सम्मान प्राप्त हो चुका है। इन्होंनें करीब 50 से ज्यादा फ़िल्मों के लिए प्रोडक्शन साउंड मिक्सिंग का काम किया है। जिसमें हिट फ़िल्म जैसे 'पठान' (2021) और 'चक दे इंडिया' में सर्वश्रेष्ठ ध्वनि के लिए इन्हें अप्सरा प्रोड्यूसर गिल्ड अवार्ड, वी.शांताराम पुरस्कार, और सर्वश्रेष्ठ साउंड रिकॉर्डिंग के लिए आईफा अवार्ड प्राप्त हो चुका है। 'फिराक' (2009) फ़िल्म के लिए इन्हें सर्वश्रेष्ठ साउंड डिजाइन के लिए फ़िल्मफेयर पुरस्कार प्राप्त हुआ था। इसी तरह कथांतर (2006) के लिए इन्हे सर्वश्रेष्ठ साउंड का ओडिशा राज्य पुरस्कार हासिल हुआ। इन्होंनें दूरदर्शन के सदाबहार सीरियल जैसे 'चित्रहार', 'देख भाई देख', 'वागले की दुनिया' सहित कई कार्यक्रमों के लिए साउंड डिजाइन किया है।

Manas Choudhary is an award-winning film, television and documentary production sound mixer and sound designer. He has worked on the production sound mixing of more than 50 feature films; several hits like 'Pathaan' (2021) and 'Chak De India' (2006) that won him the V. Shantaram Award and the Apsara Producers Guild Award for Best Sound, and the IIFA Award for Best Sound Recording. He won the Filmfare Award for the Best Sound Design for 'Firaaq' (2009) and the Odisha State Award for the Best Sound for 'Kathantara' (2006). He also designed sound for popular television series like 'Chitrahaar', 'Dekh Bhai Dekh', 'Wagle Ki Duniya' and many more.

गैर-फ़ीचर फ़िल्म केन्द्रीय ज्यूरी

NON-FEATURE FILMS CENTRAL JURY

वसंत एस साइ (अध्यक्ष) Vasanth S Sai (Chairperson)

वसंत एस साइ तमिल फ़िल्म जगत के एक जाने माने फ़ीचर फ़िल्म, विज्ञापन फ़िल्म, लघु फ़िल्म और वेब सीरिज निर्देशक हैं. इनकी खासियत यथार्थवाद पर इनकी पैनी नजर है। यथार्थवादी संजीदगी के लिए पहचान रखने वाली इनकी फ़िल्मों न कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार जीते हैं। इनकी दो लघु फ़िल्मों ने राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार जीते हैं जिसमें 'थक्कायिन मेथु नानकु कंगल' (2005) को सर्वश्रेष्ठ लघु फिक्शन फ़िल्म के लिए और सामाजिक मुद्दों पर सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म के लिए 'सनथ' (2016) को यह पुरस्कार प्राप्त हुआ है। इनका तीसरा राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार फ़िल्म 'शिवरंजिनियम इन्नम सिला पेंगलम' (2021) के लिए था, जिसने तमिल में सर्वश्रेष्ठ फ़ीचर फ़िल्म का पुरस्कार भी जीता था।

Vasanth S Sai is a well-known director of feature films, ad films, short films and web series in the Tamil film industry. His forte is his keen eye on realism. His films have always been singled out for their realistic gravitas winning him many national and international awards. Two of his short films have won National Film Awards; 'Thakkayin Methu Naanku Kangal' (2005) for Best Short Fiction Film and 'Sanath' (2016) for Best Film on Social Issues. His third National Film Award was for the film 'Sivaranjiniyum Innum Sila Pengalum' (2021) which won the Best Feature Film in Tamil.

गैर–फ़ीचर फ़िल्म ज्यूरी
(NON-FEATURE FILMS JURY)

बोरुन थोकचोम (सदस्य) Borun Thokchom (Member)

2

बोरुन थोकचोम एक राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता फ़िल्मकार और टीवी पत्रकार हैं। आंदोलनकारी इरोम शर्मिला पर मैतेई भाषा में बनी इनकी पहली फिल्म, 'साइलेंट पोएट' को नॉन फ़ीचर फ़िल्म श्रेणी में सर्वश्रेष्ठ निर्देशक (2011) का राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार प्राप्त हुआ था, इसके अलावा इसने विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय फ़िल्म समारोह में सम्मान और पुरस्कार अर्जित किए। एनएचके वर्ल्ड के लिए बनाई गई इनकी वृत्तचित्र श्रंखला, बैटल ऑफ इंफाल और फ़िल्म डिवीजन द्वारा निर्मित इनके वृत्तचित्र, आई राइज ने मुंबई में समीक्षकों की सराहना बटोरी और कई पुरस्कार जीते। कहानी कहने, दृश्य कला और निर्माण में इनकी विशेषज्ञता जटिल विषयों को भी इस तरह जीवंत बना देते हैं कि दुनिया भर के दर्शकों बहुत ही सहजता के साथ विषय से जुड़ जाते हैं।

Borun Thokchom is a national award-winning filmmaker and a television journalist. His debut film 'The Silent Poet' in Meitei on the activist Irom Sharmila received the National Film Award for Best First Non-Feature Film of a Director (2011) and additionally went on to win multiple international film festival accolades and awards. His documentary series for NHK World, 'Battle of Imphal' and his documentary film 'I RISE', produced by Films Division, Mumbai garnered critical acclaim and numerous awards. His expertise in storytelling, visual arts, and production has a unique ability to bring complex subjects to life and engage audiences across the globe.

कामाख्या नारायण सिंह (सदस्य) Kamakhya Narayan Singh (Member)

3

कामाख्या नारायण सिंह एक पुरस्कार विजेता फ़िल्मकार, लेखक और ग्लोबल ट्रेवल चैनल, ट्रैवल एक्सपी के क्रियेटिव डायरेक्टर हैं. इन्होंनें 400 से ज्यादा ट्रेवल, लाइफस्टाइल, और संस्कृति आधारित वृत्तचित्रों की संकल्पना से लेकर उनके प्रसारण तक में योगदान दिया । 50 से अधिक देशों के साथ–साथ भारत में बड़े पैमाने पर यात्रा और फ़िल्मांकन करते हुए, इन्होंने उनके इतिहास, संस्कृति और सुंदरता को विस्तार से प्रदर्शित किया है। इनके वृत्तचित्र 'जस्टिस डिलेड बट डिलीवर्ड' ने 68वें राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार में सामाजिक मुद्दों पर सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म का पुरस्कार जीता। इन्हें इनकी फ़िल्म 'भोर' (2019) के लिए जाना जाता है, जो विश्व स्तर पर 28 से अधिक फ़िल्म समारोहों में गई और पुरस्कार और प्रशंसा हासिल की।

Kamakhya Narayan Singh is an award-winning filmmaker, writer and the Creative Director of the global travel channel, Travelxp. He has created over 400 travel, lifestyle and culture-based documentaries from conception to telecast. While travelling and filming in over 50 countries as well as extensively in India, he has featured their history, culture and beauty in detail. His documentary 'Justice Delayed but Delivered' won the Best Film on Social Issues at the 68th National Film Awards. He is best known for his film 'Bhor' (2019) which went to over 28 film festivals globally, garnering awards and accolades.

गैर–फ़ीचर फ़िल्म ज्यूरी
(NON-FEATURE FILMS JURY)

अमोल वसंत गोले (सदस्य) Amol Vasant Gole (Member)

अमोल वसंत गोले एक सुप्रसिद्ध पुरस्कार विजेता सिनेमेटोग्राफर, फोटोग्राफर, निर्देशक, लेखक और निर्माता हैं. इन्होंनें चर्चित और समीक्षकों द्वारा सराही गई फ़िल्में जैसे, 'तारे जमीन पर', 'रंग दे बसंती', 'मकबूल', 'स्टेनली का डब्बा', 'एलिजाबेथ एकादशी', 'सुमी' जैसे कई फ़िल्मों के लिए छायाकार की भूमिका निभाई है। इनके पहले वृत्तचित्र, 'नीरोज गेस्ट' (2012) को वैश्विक स्तर पर पहचान मिली है। यह उन शुरूआती लोगों में से हैं जिन्होंनें 'स्टेनली का डब्बा' (2012) डीएसएलआर कैमरों के जरिये डिजिटल फ़िल्म निर्माण की शुरुआत की। इनकी तीन मराठी फ़िल्मों ने विभिन्न श्रेणियों में प्रतिष्ठित राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार जीते हैं। इन्वेस्टमेंट 2013 – सर्वश्रेष्ठ मराठी फ़ीचर फ़िल्म 'एलिजाबेथ' एकादशी (2014) – सर्वश्रेष्ठ बच्चों की फ़िल्म, और 'सुमी' (2022) – सर्वश्रेष्ठ बच्चों की फ़िल्म और सर्वश्रेष्ठ बाल कलाकार।

Amol Vasant Gole is a well-known award-winning cinematographer, photographer, director, writer and producer. He has shot popular as well as critically acclaimed films like 'Taare Zameen Par', 'Rang De Basanti', 'Maqbool', 'Stanley Ka Dabba', 'Elizabeth Ekadashi', 'Sumi' and many more. His first documentary 'Nero's Guests' (2012) received global recognition. He pioneered digital filmmaking through DSLR cameras with 'Stanley Ka Dabba' (2012). Three of his Marathi films have won the prestigious National Film Awards in various categories.

पंचकशारी सी.ई (सदस्य) Panchakshari C.E. (Member)

पंचकशारी सी.ई टेलिविजन निर्माता, निर्देशक और पटकथा लेखक हैं जों कई पुरस्कारों से नवाजे जा चुके हैं। फ़िल्म 'प्रकृति' के लिए उनकी पटकथा को ना सिर्फ कई राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय और कर्नाटक राज्य में प्रशंसाएं प्राप्त हुई बल्कि 61वें राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कारों में सर्वश्रेष्ठ पटकथा (अनुकूलित) का पुरस्कार भी हासिल हुआ। वह 46वें भारतीय अंतर्राष्ट्रीय फ़िल्म महोत्सव में निर्णायक मंडल और केंद्रीय फ़िल्म प्रमाणन बोर्ड के सदस्य थे। इन्होंने रेलवे बोर्ड, भारत संचार निगम लिमिटेड और भारतीय खाद्य निगम के सदस्य के रूप में भी काम किया है।

Panchakshari C.E. is an award-winning film and television producer, director and screenplay writer. His screenplay for the film 'Prakruti' won him the Best Screenplay (Adapted) Award at the 61st National Film Awards along with garnering numerous national, international and Karnataka state accolades. He was a Jury member at the 46th International Film Festival of India and was a member of the Central Board of Film Certification. He has also served as a member of the Railway Board, Bharat Sanchar Nigam limited and the Food Corporation of India.

गैर–फ़ीचर फ़िल्म ज्यूरी
(NON-FEATURE FILMS JURY)

शंखजीत डे (सदस्य) Shankhajeet De (Member)

शंखजीत डे एक फ़िल्मकार, शोधार्थी और पटकथा लेखक हैं, जो विशेषतौर पर नृवंशविज्ञान (एथिनोग्राफी) से जुड़ी रहती है. इन्हें खासतौर पर मूर्त और अमूर्त सांस्कृति विरासत जैसे कलात्मक प्रथाएँ, ज्ञान, प्रदर्शन परंपराएँ और कथात्मक अभिव्यक्तियों में दिलचस्पी है। इनके निर्देशन में ओडिशा में रावण छाया कठपुतली परंपरा पर बना पहला वृत्तचित्र, 'इन दि शैडो ऑफ टाइम' 64वे राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार में कला और संस्कृति पर बनी सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म के पुरस्कार से नवाजा जा चुका है। वह कशिश मुंबई इंटरनेशनल क्वीर फ़िल्म फेस्टिवल (2020) के लिए 48वें भारत अंतर्राष्ट्रीय फ़िल्म महोत्सव में निर्णायक मंडल का हिस्सा थे और नियमित रूप से कला और प्रदर्शन प्रथाओं पर लिखते रहते हैं।

Shankhajeet is a filmmaker, researcher and scriptwriter with an ethnographic intent. His area of interest lies in the tangible and intangible cultural heritage such as artistic practices, knowledge, performing traditions and narrative expressions. His directorial debut was a feature length documentary 'In the Shadow of Time' on the Ravana Chhaya shadow puppetry tradition in Odisha. It won the Best Film on Art and Culture at the 64th National Film Awards. He was part of the Jury at the 48th International Film Festival of India, for KASHISH Mumbai International Queer Film Festival (2020) and regularly contributes to publications on arts and performing practices.

हरि प्रसाद (सदस्य) Hari Prasad (Member)

साउंड डिजाइनर से फिल्मकार निर्माता बने **हरि प्रसाद** की तमिल–इंडी फ़िल्म, 'दे पेबल्स' (2021) ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर काफी सराहनीय बटोरी थी. यह मुख्यधारा सिनेमा के साथ पिछले डेढ़ दशक से जुड़े हुए हैं। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सराही गई तमिल फ़िल्म, 'कारपारा' (2023) प्रोडक्शन के तौर पर इनका पहली फ़िल्म थी , जिसके बाद इन्होंनें फ़िल्म उद्योग को कई इंडी फ़िल्में देकर आभार प्रदर्शन किया। इनकी दिलचस्पी उन कहानियों में ज्यादा होती है, जिसमें ग्रामीण कच्चापन, तमिल परिदृश्य की जिंदगी और मिट्टी की खुशबू होती है।

Hari Prasad, a sound designer turned film producer, is known for his part in the internationally acclaimed Tamil Indie film 'The Pebbles' (2021). He has been part of the mainstream movie industry for over one and a half decades. The internationally acclaimed Tamil film 'Karparaa' (2023) was his first venture into production, post which he decided to give back to the film industry by producing more Indie films. He is more inclined to stories that sound rustic, are flavorful of nativity and visualise the day-to-day scenes of Tamil landscape.

सिनेमा पर सर्वश्रेष्ठ लेखन ज्यूरी

BEST WRITING ON CINEMA JURY

यतीन्द्र मिश्रा (अध्यक्ष) Yatindra Mishra (Chairperson)

यतीन्द्र मिश्रा प्रसिद्ध कवि, लेखक और संगीत व सिनेमा के विद्वान हैं। इन्हें उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार, भारतीय ज्ञानपीठ फेलोशिप, भारत भूषण अग्रवाल स्मृति पुरस्कार और भारतीय भाषा परिषद युवा पुरस्कार सहित कई प्रतिष्ठित सम्मान प्राप्त हो चुके हैं। इनकी पुस्तक 'लता– सुर–गाथा' को सिनेमा पर सर्वश्रेष्ठ लेखन (2016) के लिए 64 वें राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार सहित 6 सम्मान हासिल हुए हैं। यह संगीत नाटक अकादमी के पत्रिका "संगना" (2019–21) के संपादक और 66वे राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार और 52 वे भारत के अंतर्राष्ट्रीय फ़िल्म समारोह (इफ्फी) के सदस्य थे।

Yatindra Mishra is a celebrated poet, author and a scholar of music and cinema. A recipient of many prestigious awards, including the Uttar Pradesh Sangeet Natak Akademi Puraskar, Bharatiya Jnanpith Fellowship, Bharat Bhushan Agarwal Smriti Puraskar and the Bharatiya Bhasha Parishad Yuva Puraskar amongst others, his book 'Lata: Sur-Gatha' won six awards, including the 64th National Film Award (2016) for Best Writing on Cinema (Swarna Kamal). He served as Cultural Advisor to Prasar Bharati (2014-16), Editor to Sangeet Natak Akademi's journal 'Sangana' (2019-21) and was a Jury Member for the 66th National Films Awards and the 52nd International Film Festival of India.

सिनेमा पर सर्वश्रेष्ठ लेखन ज्यूरी
BEST WRITING ON CINEMA JURY

डॉ पी आर रामदास नायडू (सदस्य) Dr. P R Ramadasa Naidu (Member)

डॉ. पी आर रामदास नायडू एक पुरस्कार विजेता फिल्म निर्देशक, निर्माता और कई अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सराही गई कन्नड़ फ़िल्मों जैसे 'हेज्जेगलु', 'अमारा मधुरा प्रेमा', 'अपरिचिता', 'ओन्डू ओरिना काथे', 'मुसांजे' और कई अन्य फ़िल्मों के पटकथा लेखक हैं। इन्हें विभिन्न श्रेणियों में नौ राज्य के पुरस्कारों से नवाजा जा चुका है। 58वें राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार में इनकी फ़िल्म 'हेज्जेगलु' ने सर्वश्रेष्ठ बाल फ़िल्म का पुरस्कार जीता। इन्होंने कर्नाटक में फ़िल्म और टेलीविजन स्टूडियो की स्थापना की है, यह कर्नाटक फ़िल्म प्रोड्यूसर्स एसोसिएशन के संस्थापक सदस्य थे, और कई अंतरराष्ट्रीय और राज्य फ़िल्म समारोहों के निर्णायक मंडल में रहे हैं। इनके खाते में सिनेमा और कन्नड़ सिनेमा पर गहन शोध कर लिखी गई किताबें भी हैं।

Dr. P R Ramadasa Naidu is an award-winning film director, producer and screenplay writer of several internationally well-received Kannada films like 'Hejjegalu, 'Amara Madhura Prema', 'Aparichita', 'Ondu Oorina Kathe', 'Mussanje' and many more. He is a recipient of nine state awards in various categories. His film 'Hejjegalu' won the Best Children's Film at the 58th National Film Awards. He has established film and television studios in Karnataka, was a Founder Member of the Karnataka Film Producers Association, has been on the jury of several international and state film festivals and has authored well-researched books on world cinema and Kannada cinema.

वीजे साई (सदस्य) Veejay Sai (Member)

विजय साई एक पुरस्कार विजेता लेखक, संपादक, जीवनी लेखक, अनुवादक और एक संस्कृति समीक्षक हैं। इन्होंने भारतीय शास्त्रीय संगीत, शास्त्रीय नृत्य, रंगमंच, भारतीय अध्ययन, भोजन और यात्रा पर व्यापक स्तर पर लिखा और प्रकाशित किया है। यह कई प्रमुख समाचार पत्रों और पत्रिकाओं के एक वरिष्ठ स्तंभकार रह चुके हैं, इनके नाम पर कई अकादमिक शोध पत्र हैं, यह भारत में और देश के बाहर भारतीय शास्त्रीय प्रदर्शन कला पर कई समारोह का आयोजन कर चुके हैं। कई विश्वविद्यालय और सरकारी समितियों में कला और संस्कृति के लिए सेवाएं दी हैं। इन्होंने टेलीविजन श्रृंखला 'उत्सव–ए सेलिब्रेशन ऑफ इंडियन म्यूजिक' की पटकथा और दो किताबें, 'ड्रामा क्वींसरू वीमेन हू क्रिएटेड हिस्ट्री ऑन स्टेज' (2017) और 'द मेनी लाइव्स ऑफ मंगलमपल्ली बालमुरलीकृष्ण' (2022) लिखी है।

Veejay Sai is an award-winning writer, editor, biographer, translator and a culture critic. He has written and published extensively on Indian classical music, classical dance, theatre, Indic studies, food and travel. A senior columnist with many leading newspapers and magazines, he has published numerous academic research papers, curated several festivals on Indian classical performing arts in and outside India, and has served on many university and government committees on art and culture. He scripted the television series 'Utsav - A celebration of Indian Music' and has authored two books, 'Drama Queens: Women Who Created History on Stage' (2017) and 'The Many Lives of Mangalampalli Balamuralikrishna' (2022).

फ़ीचर फ़िल्म ज्यूरी | पूर्व पैनल
FEATURE FILMS JURY | EAST PANEL

परेश वोरा (अध्यक्ष) Paresh Vora (Chairperson)

परेश वोरा एक युवा रंगमंच अभिनेता, लेखक और फिल्म निर्माता हैं । इनकी फ़िल्म, रेवा–ए जर्नी विदइन (2018) को समीक्षको से काफी सराहना मिली और इसने 66 वें राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार में गुजराती में सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म का पुरस्कार प्राप्त किया । यह भारत भर में कई प्रतिष्ठित मंचो पर मंचित हो चुके पुरस्कार विजेता नाटकों जैसे, कोराट, मंछा, मारा असत्य ना प्रयोगो, हैप्पी दिवाली, और स्टॉप का हिस्सा रह चुके हैं। यह राज्य फ़िल्म पुरस्कार – गुजरात के जूरी सदस्य हैं, केंद्रीय फ़िल्म प्रमाणन बोर्ड, मुंबई के सलाहकार पैनल के सदस्य हैं और प्रोडक्शन कंपनी ब्रेनबॉक्स स्टूडियो इनका है।

Paresh Vora is a young theatre actor, writer and film producer. His film 'Reva: A Journey Within' (2018) was critically acclaimed and won the Best Feature Film in Gujarati at the 66th National Film Awards. He has been part of several award winning theatre plays like 'Korat', 'Manchha', 'Mara Asatya na Prayogo', 'Happy Diwali' and 'Stop' staged at prestigious venues across India. He is a Jury member for the State Film Awards – Gujarat, is an Advisory Panel Member of the Central Board of Film Certification, Mumbai and owns Brainbox Studios, a production company.

जयश्री भट्टाचार्य (सदस्य) Jayasree Bhattacharyya (Member)

जयश्री भट्टाचार्य बंगाली फ़िल्म जगत में, नई पीढ़ी की पुरस्कार विजेता फ़िल्म और रंगमंच निर्देशक हैं। यह कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्यातिप्राप्त फ़िल्मों की कास्टिंग डायरेक्टर भी रह चुकी हैं। इनकी फ़िल्म, मादुर, और बिनिसुतोर माला को दो अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं, और यह पहली फ़िल्मकार हैं, जिन्होंनें डिस्लेक्सिया पर फ़िल्म बनाई है। बंगाल और झारखंड राज्यों में आदिवासी सांस्कृतिक आंदोलनों और फ़िल्मों से गहराई से जुड़ी होने के अलावा, यह कलकत्ता विश्वविद्यालय के तहत विभिन्न कॉलेजों में फ़िल्म अध्ययन संकाय का भी हिस्सा रही हैं।

Jayaree Bhattacharyya is a new generation award-winning film and theatre director in the Bengali film industry. She has also been a casting director for many national and internationally benchmarked films. Her films, 'Madur' and 'Binisutor Mala' have won two international awards, and she is one of the first filmmakers to make a film on Dyslexia. Deeply involved in tribal cultural movements and films in the states of Bengal and Jharkhand, she has also been part of the faculty of film studies at various colleges under University of Calcutta.

रूना आशीष भुतड़ा (सदस्य) Runa Ashish Bhutda (Member)

रूना आशीष भुतदा एक मल्टीमीडिया पत्रकार, एंकर और यूट्यूबर हैं। यह आजतक, न्यूज नेशन और जी न्यूज जैसे न्यूज चैनल और मुंबई मिरर और वेब दुनिया जैसे डिजिटल प्लेटफॉर्म में काम कर चुकी हैं। इनका 'खिचड़ी' नाम से अपना यूट्यूब चैनल है और यह मीठीबाई कॉलेज और टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज (टीआईएसएस) में विजिटिंग फैकल्टी भी हैं। इन्होंने 17वें भारतीय टेलीविजन अकादमी (आईटीए) पुरस्कारों के लिए निर्णायक मंडल की भूमिका निभाई और इन्हें भाषाई पत्रकारिता महोत्सव द्वारा ब्रॉडकास्ट जर्नलिज्म (2011) के लिए वुमन यूथ आइकन से सम्मानित किया गया।

Runa Ashish Bhutda is a multimedia journalist, an anchor and a YouTuber. She has worked with television channels like AajTak, News Nation and Zee News, and with print and digital publications like Mumbai Mirror and WebDunia. She has her own YouTube channel 'Khichdi' and is also a Visiting Faculty at Mithibai College and at the Tata Institute of Social Sciences (TISS). She served as Jury for the 17th Indian Television Academy (ITA) Awards and was awarded the Woman Youth Icon for Broadcast Journalism (2011) by Bhashai Patrakarita Mahotsav.

शिलादित्य मौलिक (सदस्य) Shieladitya Moulik (Member)

शिलादित्य मौलिक एक निर्देशक और पटकथा लेखक हैं, जिन्हें समीक्षकों द्वारा सराही गई फ़िल्म जैसे, मिसेज स्कूटर (2015), और स्वेटर (2019) के लिए जाना जाता है। बतौर क्रियेटिव डायरेक्टर इन्होंनें जेडब्ल्यूटी, ओगिल्वी, लोव लिंटास और डेंटसु जैसी एजेंसियों के साथ काम करते हुए, पेप्सी, थम्सअप, नोकिया, हीरो होंडा, एयरटेल और कई अन्य ब्रांडों के लिए विज्ञापन लेखन और निर्देशन किया, इससे इनके व्यावसायिक लेखन कौशल में निखार आया और यह फ़िल्मी दुनिया से रूबरू हुए। इनकी लघु फ़िल्में जैसे 'भरम' (2020), 'लूडो' (2018) और 'नो मून कमिंग सून' (2018) को कई अंतरराष्ट्रीय फ़िल्म समारोहों में खूब सराहा गया है।

Shieladitya Moulik is a director and screenwriter known for critically acclaimed films like 'Mrs. Scooter' (2015) and 'Sweater' (2019). His experience as a Creative Director with agencies like JWT, Ogilvy, Lowe Lintas and Dentsu writing and directing commercials for brands like Pepsi, ThumsUp, Nokia, Hero Honda, Airtel and many more, honed his commercial writing skills and introduced him to the world of films. His short films like 'Bharam' (2020), 'Ludo' (2018) and 'No Moon Coming Soon' (2018) have been well received at several international film festivals.

डॉ. बॉबी शर्मा बरुआ (सदस्य) Dr Bobby Sarma Baruah (Member)

डॉ. बॉबी शर्मा बरुआ एक राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता भारतीय फिल्मकार, और भारत सरकार (2014) के संस्कृति मंत्रालय की वरिष्ठ फैलोशिप प्राप्तकर्ता हैं। इनकी फिल्मों में, अदोम्य (2014), सोनार बारन पाखी (2016), मिशिंग (2018), और सिकाइसाल (2022) शामिल हैं. यह नेटवर्क फॉर द प्रमोशन ऑफ एशियन सिनेमा (एनईटीपीएसी) की सदस्य हैं, इन्होंने केरल के अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव (2022), 8वें भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान फिल्म महोत्सव (2018), 14वें ढाका अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव (2016) में निर्णायक मंडल के तौर पर काम किया है।

Dr Bobby Sarma Baruah is a national and International award winning Indian filmmaker, and a Senior Fellowship Awardee by the Ministry of Culture, Government of India (2014). Her filmography includes films like, 'Adomya' (2014), 'Sonar Baran Pakhi' (2016), 'Mishing (2018) and 'Sikaisal' (2022). A member of the Network for the Promotion of Asian Cinema (NETPAC), she has served as Jury at the International Film Festival of Kerala (2022), 8th National Science Film Festival of India (2018), the 14th Dhaka International Film Festival (2016), amongst others.

फ़ीचर फ़िल्म ज्यूरी | उत्तर पैनल
FEATURE FILMS JURY | NORTH PANEL

वी एन आदित्य (अध्यक्ष) V N Aditya (Chairperson)

तेलुगु सिनेमा में अपने काम के लिए पहचाने जाने वाले ,**वी.एन. आदित्य** एक पुरस्कार विजेता फ़िल्म निर्देशक, निर्माता और पटकथा लेखक हैं। उनकी 'मानसंथा नुव्वे' और 'नेनुन्नानु' जैसी कई फ़िल्में शानदार हिट रही हैं और विभिन्न प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय फ़िल्म समारोहों में प्रदर्शित की गई हैं, इन्हें सर्वश्रेष्ठ फ़ीचर फ़िल्म के लिए नंदी पुरस्कार सहित विभिन्न श्रेणियों में पुरस्कार प्राप्त हुए है। इन्होंने 68वें भारतीय राष्ट्रीय पुरस्कार (2022), 53वें भारतीय अंतर्राष्ट्रीय फ़िल्म महोत्सव में भारतीय पैनोरमा के लिए (2022), बैंगलोर अंतर्राष्ट्रीय फ़िल्म महोत्सव (2023) निर्णायक मंडल के रूप में काम किया है और केंद्रीय सेंसर बोर्ड सलाहकार सदस्य (2021–23) थे।

V.N. Aditya is an award-winning film director, producer and screenplay writer known for his work in Telugu cinema. His movies like 'Manasantha Nuvve' and 'Nenunnanu' amongst many others have been stupendous hits and have been screened at various prestigious international and national film festivals, winning awards across categories, including the Nandi Award for Best Feature Film. He has served as Jury for the 68th Indian National Awards (2022), the Indian Panorama at the 53rd International Film Festival of India (2022), the Bangalore International Film Festival (2023) and was a Central Censor Board Advisory Member (2021-23).

आनंद कुमार सिंह (सदस्य) Anand Kumar Singh (Member)

आनंद कुमार सिंह फ़िल्म और टेलीविजन निर्माता हैं जिनके खाते में 'नंबर 1 की दुनिया', 'अपने रंग हजार', 'तलाश हमसफर की', 'कहते हैं इसे जिंदगी' और 'फ़िल्मी दीवाने' जैसे कई लोकप्रिय कार्यक्रमों हैं। इसके साथ ही इन्होंनें 'रामायण श्रीकृष्ण', 'जय गंगा मैया', 'अलिफ लैला', 'चंद्रकांता', 'घरवालरू उपरवाल', 'आर्यमान', 'ब्रह्मांड का योद्धा' जैसे हिट कार्यक्रमों के रिपीट शो अधिकार भी हासिल किए। इन्होंनें ऑस्कर मूवीज भोजपुरी (2012) और पसंद टीवी (2021) जैसे कई क्षेत्रीय टेलीविजन चौनल लॉन्च किए हैं, और सबरंग फ़िल्म अवार्ड्स, भोजपुरी फ़िल्म अवार्ड्स और ग्रीन सिनेमा अवार्ड्स में निर्णायक मंडल का हिस्सा रहे हैं।

Anand Kumar Singh is a film and television producer of several popular programmes like 'Number 1 Ki Duniya', 'Apne Rang Hazar', 'Talash Humsafar Ki', 'Kehte Hain Ese Zindagi' and 'Filmy Deewane'. He also garnered the repeat shows rights of hit programmes like 'Ramayan Shrikrishna', 'Jay Ganga Maiya', 'Alif Laila', 'Chandrakanta', 'Gharwal: Uparwal', 'Aaryamaan', 'Brahmand Ka Yoddha', amongst others. He has launched many regional television channels like Oscar Movies Bhojpuri (2012) and Pasand TV (2021), and has been part of the Jury at Sabrang Film Awards, Bhojpuri Film Awards and Green Cinema Awards.

मुर्तजा अली ख़ान (सदस्य) Murtaza Ali Khan (Member)

मुर्तजा अली ख़ान एक पुरस्कार विजेता फ़िल्म पत्रकार, लेखक, अनुवादक और पटकथा लेखक हैं, इन्होंनें, दि हिंदु, हफपोस्ट, दि संडे गार्डियन, और कई प्रतिष्ठित प्रिंट और डिजिटिल प्रकाशन के लिए मनोरंजन, कला–संस्कृति के लिए काम किया। श्री कृष्ण गोपाल रिछारिया मेमोरियल जर्नलिज्म अवार्ड (2020) से सम्मानित मुर्तजा, 14वें बेंगलुरु अंतर्राष्ट्रीय फ़िल्म महोत्सव (2023) के लिए चयन समिति और इंडिया हैबिटेट अंतर्राष्ट्रीय फ़िल्म महोत्सव की फ़िल्म स्क्रीनिंग कमेटी का हिस्सा थे। इन्होंने कई फ़िल्म समारोहों और पूर्वव्यापी कार्यक्रमों का भी संचालन किया है, और विभिन्न दूतावासों और उच्चायोगों के लिए मीडिया की रणनीतिक बनाई है।

Murtaza Ali Khan is an award-winning film journalist, author, translator and a screenplay writer covering art, culture and entertainment for leading print and digital publications like The Hindu, HuffPost, The Sunday Guardian, and many more. Bestowed with the Shri Krishna Gopal Richhariya Memorial Journalism Award (2020), he was part of the selection committee for the 14th Bengaluru International Film Festival (2023) and the film screening committee of the India Habitat International Film Festival. He has also curated several film festivals and retrospectives, and strategized media for various embassies and High Commissions.

आर.वी. रमानी (सदस्य) R.V. Ramani (Member)

आर.वी.रमानी एक पुरस्कार विजेता फ़िल्मकार, छायाकार, और शिक्षक हैं। इनकी लघु फ़िल्म, सा(1991) कंटेंट और रूप के तौर पर एक प्रयोगात्मक रचना थी, जिसमें वह ग्रामीण और शहरी लय के तालमेल के साथ अपनी खुद की लय को खोजते दिखते हैं। रमानी की फ़िल्म इस विचार पर टिकी होती हैं, कि एकमात्र मुद्दा है, भाव अभिव्यक्त करने की जरूरत और भावों तक पहुंचना। वह भारत के अग्रणी वृत्तचित्र फ़िल्म निर्माताओं में से एक हैं, जिनकी कई फिल्में और पूर्वव्यापी फ़िल्में विभिन्न प्लेटफार्मों पर प्रस्तुत की गई हैं। उनकी हालिया डॉक्यूमेंट्री फ़िल्म 'ओह दैट भानु' ने 68वें राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार में सर्वश्रेष्ठ निर्देशन का पुरस्कार जीता था।

R.V. Ramani is an award-winning filmmaker, cinematographer and a teacher. His first short film, Saa (1991) was an experiment with form and content, exploring his own rhythm, in the flux of rural and urban rhythms. Ramani's films are based on the premise, 'the only issue is the need to express and to reach an expression'. He is amongst the leading documentary filmmaker in India with many of his films and retrospectives presented at various platforms. His recent documentary film, 'Oh That's Bhanu', won the Best Direction award at the 68th National Film Awards.

शिवम छाबड़ा (सदस्य) Shivam Chhabra (Member)

शिवम छाबडा एक युवा मीडिया उद्यमी और राजनीतिक कार्यकर्ता हैं. वह एमएच वन टीवी नेटवर्क प्रा.लि. के निदेशक और भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय मीडिया पैनलिस्ट हैं। वह 17वें मुंबई अंतर्राष्ट्रीय फ़िल्म महोत्सव (2022) में स्क्रीनिंग कमेटी के सदस्य, 53वें भारतीय अंतर्राष्ट्रीय फ़िल्म महोत्सव की पूर्वावलोकन समिति के सदस्य रहे, और सिक्किम फ़िल्म बोर्ड द्वारा आयोजित नॉर्थ ईस्ट फ़िल्म फेस्टिवल (2023) और राष्ट्रीय फ़िल्म विकास निगम (एनएफडीसी) में भी सेवाएं दी ।

Shivam Chhabra is a young media entrepreneur and a political activist. He is the Director of MH One TV Network Pvt Ltd and a National Media Panelist of the Bharatiya Janta Party (BJP). He was a member of the Screening Committee at the 17th Mumbai International Film Festival (2022), a member of the Preview Committee of the 53rd International Film Festival of India and served at the North East Film Festival (2023) organised by the Sikkim Film Board and the National Film Development Corporation (NFDC).

फ़ीचर फ़िल्म ज्यूरी | दक्षिण - I पैनल
FEATURE FILMS JURY | SOUTH-1 PANEL

सब्यसाची मोहपात्रा (अध्यक्ष) Sabyasachi Mohapatra(Chairperson)

सब्यसाची मोहपात्रा, उड़िया फ़िल्म जगत के एक पुरस्कार विजेता फ़िल्म निर्माता, निर्देशक और पटकथा लेखक हैं। इन्हें अपनी फ़िल्म, आदम विचार (2014), पहाड़ा रा लुहा (2015), और साला बुडहार बदला (2021) के लिए प्रतिष्ठित राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार सहित, विभिन्न राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर 40 से ज्यादा पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं। इनके निर्देशन में बनी पहली संबलपुरी फ़िल्म, भूखा (1989) ने स्पेन के जिजोन फ़िल्म महोत्सव में अंतर्राष्ट्रीय जूरी अवार्ड जीता था। और इनकी मेगा बजट फ़िल्म, जय जगन्नाथ (2006) 15 भारतीय भाषाओं में रिलीज हुई थी। उड़िया सिनेमा में इनके योगदान को ध्यान में रखते हुए संबलपुर विश्वविद्यालय इन्हें डॉक्टरेट की मानद उपाधि से सम्मानित कर चुकी है ।

Sabyasachi Mohapatra is an award-winning film producer, director and screenplay writer in Odia cinema. He has been awarded with more than 40 International and National awards, including the prestigious National Film Awards for his films 'Aadim Vichar' (2014), 'Pahada Ra Luha' (2015), and 'Sala Budhar Badla' (2021). His directorial debut 'Bhukha' (1989) in Sambalpuri won the International Jury Award at the Gijon Film Festival, Spain and the mega-budget 'Jai Jagannatha' (2006) was released in 15 Indian languages. In recognition to his contribution to Odia cinema, Sambalpur University concurred him with an honorary Doctorate degree.

सुकुमार नंदलाल जटानिया (सदस्य) Sukumar Nandlal Jatania (Member)

सुकुमार नंदलाल जटानिया, फीचर फ़िल्म और विज्ञापन फ़िल्मों से बतौर डायरेक्टर ऑफ फोटोग्राफी जुड़े हुए हैं। इन्होंने लो लिंटास, क्लेरियन, एफसीबी उल्का और रिडिफ्यूजन जैसी विज्ञापन एजेंसियों के लिए 400 से अधिक टेलीविजन विज्ञापनों पर काम किया है, साथ ही सीमेंस, होचस्ट, फाइजर और हिंदुस्तान यूनिलीवर जैसी कंपनियों के लिए कॉर्पोरेट फ़िल्में भी बनाई हैं। यह 'इस रात की सुबह नहीं' (1996), 'स्प्लिट वाइड ओपन' (1999), 'संसार' (2001), 'असंभव' (2004), 'वैली ऑफ फ्लावर्स' (2006) 'फैसलो मंजूर से' (2012) और 'तर्पण' (2018) जैसी समीक्षकों द्वारा सराही गई फ़िल्मों के डीओपी रह चुके हैं। और 58वें राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार में निर्णायक मंडल का हिस्सा थे।

Sukumar Nandlal Jatania is a Director of Photography (DoP) for feature and ad films. He has shot over 400 television commercials for advertising agencies like Lowe Lintas, Clarion, FCB Ulka and Rediffusion amongst others, as well as corporate films for companies like Siemens, Hoechst, Pfizer and Hindustan Unilever. He was the DoP for critically acclaimed films like 'Is Raat Ki Subah Nahi' (1996), 'Split Wide Open' (1999), 'Samsara' (2001), 'Asambhav' (2004), 'Valley Of Flowers' (2006), 'Faislo Manjoor Se' (2012) and 'Tarpan' (2018) and was part of the jury at the 58th National Film Awards.

एम गीता गुरप्पा (सदस्य) M Gita Gurappa (Member)

एम गीता गुरप्पा एक विख्यात भारतीय साउंड डिजाइनर और मिक्सिंग इंजीनियर हैं जो कन्नड़, तमिल, तेलुगु और हिंदी फ़िल्म उद्योग से जुड़ी हुई हैं। इनके खाते में 200 से अधिक फ़िल्मों और 100 विज्ञापनों का डीटीएस साउंड डिजाइन और फाइनल मिक्स है, यह भारत की पहली डॉल्बी एटमॉस मिक्स साउंड इंजीनियर 'शोले 3डी' (2019) भी हैं । इन्होंनें जॉर्ज हैरिसन, जॉन कैजान नेपच्यून, पंडित रविशंकर, विक्कू विनायकराम और जाकिर हुसैन जैसे कई अंतर्राष्ट्रीय संगीत कलाकारों के साथ भी काम किया है, और कर्नाटक संगीत प्रदर्शन पर बनी फ़िल्म 'मार्गाजी रागम' (2008) के फाइनल मिक्स पर भी काम किया है।

M Gita Gurappa is a renowned Indian sound engineer and mixing engineer in the Kannada, Tamil, Telugu and Hindi film industry. Credited with the DTS sound design and final mix of more than 200 films and 100 commercials, she is also the first Dolby Atmos Mix sound engineer in India for her work in 'Sholay 3D' (2019). She has also collaborated with many International music artists like George Harrison, John Kaizan Neptune, Pandit Ravi Shankar, Vikku Vinayakram and Zakir Hussain, and on the final mix of 'Margazhi Raagam' (2008); the Carnatic music performance film.

साजिन बाबु (सदस्य) Sajin Babu (Member)

केरल के **साजिन बाबु** एक राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता लेखक–निर्देशक हैं । इनकी फ़िल्म, बिरियानी–फ्लेवर ऑफ दि फ्लैश (2020) दुनिया भर के करीब 150 फ़िल्म महोत्सवों में प्रदर्शित की जा चुकी है, और 67 वें राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार समारोह में, विशेष उल्लेख पुरस्कार सहित कई सम्मान अर्जित कर चुकी है, जिसमें, नेटवर्क फॉर दि प्रमोशन ऑप एशिया–पेसिफिक अवार्ड, केरल राज्य फ़िल्म पुरस्कार, केरल फ़िल्म समीक्षक पुरस्कार और कई पुरस्कार शामिल हैं। इनकी फ़िल्में धर्म, लिंग, जाति और मानवीय विशिष्टताओं के विषयों पर सामाजिक टिप्पणियां होती हैं। इन्होंने कई प्रतिष्ठित फ़िल्म समारोहों में निर्णायक मंडल सदस्य के रूप में भी काम किया है।

Sajin Babu is a National and International award-winning writer-director from Kerala. His movie 'Biriyaani - Flavours of the Flesh' (2020) was screened at more than 150 film festivals across the world and won several accolades including a 'Special Mention' award at the 67th National Film Awards, Network for the Promotion of Asia-Pacific Cinema Award, Kerala State Film Award, Kerala Film Critics Award and many more. His movies are social commentaries around the themes of religion, gender, caste and human idiosyncrasies. He has also served as jury member at several prestigious film festivals.

जी.काला (सदस्य) G. Kala (Member)

जी.काला एक विख्यात नृत्य निर्देशक, कोरियोग्राफर और प्रशिक्षित कत्थक नर्तक हैं। इन्होंनें तमिल, तेलुगु, मलयालम, कन्नड़, हिंदी, उड़िया, बंगाली, अंग्रेजी, इतालवी, और जापानी सहित विभिन्न भाषाओं में करीब 400 से ज्यादा गानों का नृत्य निर्देशन किया है, इसके साथ ही यह दुनियाभर में करीब 500 से ज्यादा मंचो पर नृत्य निर्देशन कर चुकी हैं। इन्हें अपने कार्य के लिए विभिन्न मंचो पर सराहना और और पुरस्कार प्राप्त हो चूका हैं, जिसमें फ़िल्म 'कोचू कोचू संथोशंगल' के लिए सर्वश्रेष्ठ कोरियोग्राफी (2000) के लिए राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार भी शामिल है। यह 52वें भारतीय अंतर्राष्ट्रीय फ़िल्म महोत्सव और कई अन्य फ़िल्म महोत्सवों में निर्णायक मंडल सदस्य भी रह चुकी हैं ।

G. Kala is a renowned dance director, choreographer and a trained Kathak dancer. She has choreographed more than 4000 songs in various languages including Tamil, Telugu, Malayalam, Kannada, Hindi, Oriya, Bengali, English, Italian and Japanese, and has also choreographed more than 500 stage shows across the world. She is a recipient of several accolades and awards, including the National Film Awards for Best Choreography (2000) for the film 'Kochu Kochu Santhoshangal'. She has served as a jury member for the 52nd International Film Festival of India and for several other film festivals.

फ़ीचर फ़िल्म ज्यूरी | दक्षिण - II पैनल
FEATURE FILMS JURY | SOUTH-II PANEL

मानस चौधरी (अध्यक्ष) Manas Choudhury (Chairperson)

मानस चौधरी फ़िल्म, टेलिविजन और वृत्तचित्र प्रोडक्शन, के लिए साउंड मिक्सर और साउंड डिजाइनर है, इनकी किए गये कामों ने कई पुरस्कार जीते हैं। यह 50 से ज्यादा फ़ीचर फ़िल्मों के लिए काम कर चुके हैं, जिनमें, पठान (2023) और चक दे इंडिया (2007) जैसी कई सुपरहिट फ़िल्में शामिल हैं। इन फ़िल्मों ने सर्वश्रेष्ठ साउंड के लिए वीं. शांताराम पुरस्कार और अप्सरा प्रोड्यूसर गिल्ड पुरस्कार और सर्वश्रेष्ठ साउंड रिकॉर्डिंग के लिए आईफ पुरस्कार भी जीता है। इसके साथ ही इन्होंने फिराक (2008) के लिए सर्वश्रेष्ठ साउंड डिजाइन का फ़िल्मफेयर पुरस्कार और 'कथानतारा' (2007) के लिए सर्वश्रेष्ठ साउंड का ओडिशा राज्य पुरस्कार जीता। इन्होंने चित्रहार, देख भाई देख और कई अन्य लोकप्रिय टेलीविजन श्रृंखलाओं के लिए भी साउंड डिजाइन की है।

Manas Choudhary is an award-winning film, television and documentary production sound mixer and sound designer. He has worked on more than 50 feature films; several hits like 'Pathaan' (2023) and 'Chak De India' (2007) that won him the V.Shantaram Award and the Apsara Producers Guild Award for Best Sound, and the IIFA Award for Best Sound Recording. He won the Filmfare Award for Best Sound Design for 'Firaaq' (2008) and the Odisha State Award for Best Sound for 'Kathantara' (2007). He has also designed the sound for popular television series like Chitrahaar, Dekh Bhai Dekh and many more.

एम.एन.स्वामी (सदस्य) M.N.Swamy (Member)

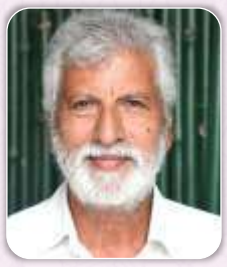

एम.एन.स्वामी एक विख्यात निर्देशक और एडिटर हैं और कॉस्ट्यूम डिजाइनर हैं। इन्होंने कन्नड़, तमिल, हिंदी, अंग्रेजी और संस्कृत भाषा में फ़िल्मों की एडिटिंग की है। इन्हें 'मर्डर (1994), 'तबराना काथे' (1986), 'माने' (1989) और उनकी नवीनतम 'चौकी' (2022), जैसी फ़िल्मों और साथ ही वृत्तचित्र के लिए भी जाना जाता है। 'तबराना काथे' ने उन्हें सर्वश्रेष्ठ संपादन के लिए कन्नड़ गोल्डन लोटस स्टेट पुरस्कार दिलाया और कन्नड़ फ़िल्म 'हसीना' के लिए इन्हें सर्वश्रेष्ठ पोशाक का राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार प्राप्त हुआ।

M.N. Swamy is a renowned director-editor for films and documentaries, and a costume designer. He has edited films in Kannada, Tamil, Hindi, English and the Sanskrit language, and is known for his films like 'Murder (1994), 'Tabarana Kathe' (1986), 'Mane' (1989) and his latest 'Chowki' (2022), as well as documentaries. 'Tabarana Kathe' won him the Kannada Golden Lotus State Award for Best Editing and the Kannada film 'Haseena' awarded him the National Film Award for the Best Costume.

बलभद्रपत्रुनि रमानी (सदस्य) Balabadhrapatruni Ramani (Member)

बलभद्रपत्रुनि रमानी तेलुगु थिएटर, सिनेमा, रेडियो और टेलीविजन में एक प्रसिद्ध पुरस्कार विजेता साहित्यकार, उपन्यासकार, पटकथा लेखक, संवाद लेखक और फ़िल्म समीक्षक हैं। यह 30 बेस्टसेलर उपन्यास की लेखक हैं, और इनकी जटिल मानवीय भावनाओं से लेकर ऐतिहासिक घटनाओं और सामाजिक–सांस्कृतिक मुद्दों तक विभिन्न विषयों पर आधारित 300 से अधिक कहानियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं। इन्होंने फ़िल्म 'मधुमासम' (2007) के लिए सर्वश्रेष्ठ कहानीकार का नंदी पुरस्कार जीता और भारतीय सेंसर बोर्ड सहित कई फ़िल्म संघों के सदस्य और 66वें राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार सहित कई फ़िल्म पुरस्कारों के लिए निर्णायक मंडल के सदस्य की भूमिका निभाई।

Balabhadhrapatruni Ramani is a well-known award-winning litterateur, novelist, screenwriter, dialogue writer and a film critic in Telugu theatre, cinema, radio and television. She has authored 30 bestselling novels and has had more than 300 stories published based on themes ranging from complex human emotions to historical events to social-cultural issues. She won the Nandi Award for Best Story Writer for the film 'Madhumasam' (2007) and has served as member of several film associations, including the Censor Board of India and as Jury member for many film awards, including the 66th National Film Awards.

एम एम श्रीलेखा (सदस्य) M M Sreelekha (Member)

एमएम श्रीलेखा एक प्रसिद्ध पार्श्व गायिका और तेलुगु सिनेमा की एकमात्र महिला संगीतकार हैं। उन्होंने संगीत निर्देशक के रूप में 80 से अधिक फ़िल्मों के लिए संगीत तैयार किया है, तेलुगु, तमिल, कन्नड़, मलयालम और हिंदी सहित पांच भाषाओं में पार्श्व गायिका के रूप में लगभग 3000 गाने गाए हैं, साथ ही सैकड़ों भक्ति गीत भी गाए हैं। कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय प्रशंसाओं और पुरस्कारों की विजेता, श्रीलेखा को आंध्र प्रदेश सरकार द्वारा प्रतिष्ठित कला रत्न पुरस्कार (2018) से सम्मानित किया जा चुका है। इसके साथ ही यूके संसद ने 2014 में एक महिला संगीतकार के रूप में उनकी उपलब्धियों की भी सराहना की।

MM Sreelekha is a renowned playback singer and the only woman music composer in Telugu cinema. She has composed music for more than 80 films as a music director, sung around 3000 songs as a playback singer in five languages including Telugu, Tamil, Kannada, Malayalam and Hindi, along with hundreds of devotional songs. A recipient of many national and international accolades and awards, she was conferred the prestigious Kala Ratna Award (2018) by the Government of Andhra Pradesh. The UK Parliament also felicitated her achievements as a Lady Music Composer in 2014.

सूर्यपाल सिंह (सदस्य) Suryapal Singh (Member)

सूर्यपाल सिंह फ़िल्म और टेलिविजन जगत के पुरस्कार विजेता पटकथा लेखक, संवाद लेखक और गीतकार हैं। संवाद लेखक के तौर पर इनकी पहली फिल्म 'टर्टल' (2018) राजस्थान के अंदरूनी इलाकों में जल संकट पर आधारित थी, जिसने 66वें राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार में सर्वश्रेष्ठ राजस्थानी फ़िल्म का पुरस्कार जीता। संवाद लेखक के साथ साथ पटकथा लेखक के तौर पर इनकी पहली फ़िल्म 'द केरला स्टोरी' (2023) काफी चर्चा में रही और इस पर टेलीविजन समाचार कक्षों में काफी बहस हुई। उन्होंने एयरटेल, टाटा नैनो और लाइफबॉय जैसे कई कॉर्पोरेट ब्रांडों के लिए विज्ञापन जिंगल के लिए गीतकार के रूप में भी काम किया है।

Suryapal Singh is an award-winning screenwriter, dialogue writer and lyricist for films and television. His first film 'Turtle' (2018) as dialogue writer based on the water crises in the interiors of Rajasthan won the Best Rajasthani Film at the 66th National Film Awards. His first film as screenplay writer along with being the dialogue writer for the film 'The Kerala Story' (2023) was much debated across television newsrooms. He also has worked as a lyricist for ad jingles for several corporate brands like Airtel, Tata Nano and Lifebuoy, amongst others.

फ़ीचर फ़िल्म ज्यूरी | पश्चिम पैनल
FEATURE FILMS JURY | WEST PANEL

मलय राय (अध्यक्ष) Malay Ray (Chairperson)

मलय राय एक सिनेमेटोग्राफर हैं ,जिन्होंनें कई फ़िल्मो, वृत्तचित्रों, विज्ञापन फ़िल्मों और लघु फ़िल्मों के लिए सिनेमेटोग्राफी की है, और पुरस्कार जीते हैं। वह फ़िल्मों के लिए पोस्ट प्रोडक्शन सलाहकार और पोस्ट क्रियेटिव डायरेक्टर के तौर पर भी काम करते हैं। इन्हें 'द्रोह काल' (1994), 'मोक्ष' (1995) और 'मिडनाइट सॉन्ग' (2021) जैसी फ़िल्मों के लिए जाना जाता है, 'मोक्ष' ने उन्हें उड़िया (1995) में सर्वश्रेष्ठ फीचर फ़िल्म का राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार दिलाया था।

Malay Ray is an award-winning cinematographer for many films, documentary films, advertisement films and short films. He also works as a post-production consultant and post creative director for films. Known for his films like 'Droh Kaal' (1994), 'Moksha' (1995) and Midnight Song (2021), 'Moksha' won him the National Film Award for Best Feature Film in Odia (1995).

ओलिविया दास (सदस्य) Olivia Das (Member)

साउंड डिजाइन में पारंगत **ओलिविया दास** एक वृत्तचित्र फ़िल्मकार हैं। फ़िल्मों, टेलिविजन और रेडियो जगत में एक दशक से ज्यादा का अनुभव रखने वाली ओलिविया की साउंड डिजाइन में तकनीकी विशेषज्ञता के साथ कहानी को बुनने की काबिलियत के जरिये कहानी कहने और भावों की अभिव्यक्ति की अनोखी कला, फ़िल्म जगत में उनकी अलग पहचान बनाती है। अक्सर सामाजिक रूप से प्रासंगिक विषयों पर ध्यान केंद्रित करते हुए, उनका काम हाशिये पर पड़े समुदायों, पर्यावरणीय मुद्दों और मानवीय अनुभवों पर प्रकाश डालता है। उन्हें नई संस्कृतियों, परंपराओं और सामाजिक गतिशीलता की खोज करने में आनंद आता है, जो अक्सर उनकी परियोजनाओं का विषय बन जाते हैं ।

Olivia Das is a documentary filmmaker with a specialization in sound design. With over a decade of experience in the film, television and radio industry, her ability to blend storytelling with technical expertise in sound design has garnered the reputation of her unique storytelling with the ability to capture emotions through her films. Often focusing on socially relevant subjects, her work sheds light on underrepresented communities, environmental issues, and human experiences. She enjoys exploring new cultures, traditions, and social dynamics, which often become the subject of her projects.

भाउराव करहडे (सदस्य) Bhaurao Karhade (Member)

भाउराव करहडे मराठी फ़िल्म जगत के एक चर्चित, पुरस्कार विजेता, अभिनेता, निर्माता, और पटकथा लेखक हैं । इनकी फ़िल्म, 'ख्वादा' (2015) को मिली व्यापक प्रशंसा की बदौलत, स्पेशल जूरी मेंशन और सिंक साउंड के लिए दो प्रतिष्ठित राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार मिले। यही नहीं फ़िल्म ने, सर्वश्रेष्ठ डेब्यू फ़िल्म निर्माण, सर्वश्रेष्ठ ग्रामीण फ़िल्म, सर्वश्रेष्ठ पोशाक डिजाइन, सर्वश्रेष्ठ ग्रामीण निर्देशक और सर्वश्रेष्ठ मेक–अप के लिए पांच राज्य पुरस्कार भी जीते। इनकी एक्शन–ड्रामा फ़िल्म 'बाबन' (2018) ने जहां बॉक्स–ऑफिस पर धूम मचाई, वहीं इनकी नवीनतम फ़िल्म 'टीडीएम' (2023), जो एक रोमांटिक एक्शन ड्रामा है, उसने आलोचकों और दर्शकों दोनों के बीच समान रूप से तारीफ बटोरी।

Bhaurao Karhade is a well-known award winning filmmaker, actor, producer and scriptwriter in Marathi cinema. His film 'Khwada' (2015) garnered widespread acclaim and won him two prestigious National Film Awards -- for Special Jury Mention and Sync Sound. The film also won five State Awards for Best Debut Film Production, Best Rural Film, Best Costume Design, Best Rural Director and Best Make-Up. His action-drama film 'Baban' (2018) was a box-office juggernaut and his latest film 'TDM' (2023), a romantic action drama, captivated both critics and audiences alike.

प्रितेश सोढ़ा (सदस्य) Pritesh Sodha (Member)

प्रितेश सोढ़ा एक रंगमंच निर्देशक, निर्माता, लेखक और लाइट डिजाइनर हैं। बतौर टेड एक्स वक्ता,यह, बीईंग के थियेटरप्रेन्योर, शीर्षक पर अपनी बात रख चुके हैं। यह व्यवसायिक और वैकल्पिक रंगमंच के लिए चार भाषाओं (गुजराती, मराठी, अंग्रेजी, और हिंदी) में 30 से ज्यादा नाटकों का मंचन कर चुके हैं। इसके साथ ही विभिन्न ओटीटी प्लेटफार्म पर भी इन्होंनें पांच नाटकों का मंचन किया है। इनका मराठी नाटक, टी.... (2018), जिसके निर्माता और निर्देशक यह खुद ही थे, को भारत के संस्कृति मंत्रालय के तत्वावधान में राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय (एनएसडी) द्वारा आयोजित थिएटर ओलंपिक के लिए चुना गया था।

Pritesh Sodha is a theatre director, producer, writer and light designer. As TEDx Speaker, he presented a talk titled 'Being a Theatreprenuer'. He has directed more than 30 plays in four languages (Gujarati, Marathi, English and Hindi) for commercial and alternate theatre arenas, as well as five plays for various OTT platforms. The Marathi play 'Tee…' (2018), produced and directed by him was selected for the Theatre Olympics organized by the National School of Drama (NSD) under the aegis of the Ministry of Culture, India.

मंदार तलाउलिकर (सदस्य) Mandar Talauliker (Member)

मंदार तलाउलिकर एक फ़िल्मकार हैं जिन्हें कहानी कहने और विजुअल डिजाइन की गहरी समझ है। मीडिया में उनका अनुभव, छायांकन, प्री–विजुलाइजेशन, मल्टी–मीडिया, से लेकर वृत्तचित्रों और विज्ञापन फ़िल्मों के लिए वीडियो एडिटिंग तक विभिन्न क्षेत्रों में रहा है. इन्होंने खुद की प्रोडक्शन कंपनी क्वांटम लीप फ़िल्म्स है, जिसके जरिये यह विज्ञापन फ़िल्में, कॉर्पोरेट वीडियो, डॉक्यूमेंट्री फ़िल्में और चुनाव अभियानों का निर्माण और निर्देशन करते हैं। यह 49वें और 52वें भारतीय अंतर्राष्ट्रीय फ़िल्म महोत्सव और मुंबई अंतर्राष्ट्रीय फ़िल्म महोत्सव (2019) के निर्णायक मंडल में थे। 48वें भारतीय अंतर्राष्ट्रीय फ़िल्म महोत्सव में प्रदर्शित इनकी डॉक्यू–ड्रामा जुजारी (फाइटर) ने कई प्रशंसाएँ अर्जित कीं।

Mandar Talauliker is a filmmaker with a deep understanding of storytelling and visual design. His experience in media is diverse ranging from photography, pre-visualization, multi-media, video editing to documentaries, ad films and corporates. He started his own production company Quantum Leap Films through which he produces and directs ad films, corporate videos, documentary films and election campaigns. He served as a jury at the 49th and 52nd International Film Festival of India and at the Mumbai International Film Festival (2019). His docu-drama 'Zuzari' (Fighter) screened at the 48th International Film Festival of India earned many accolades.

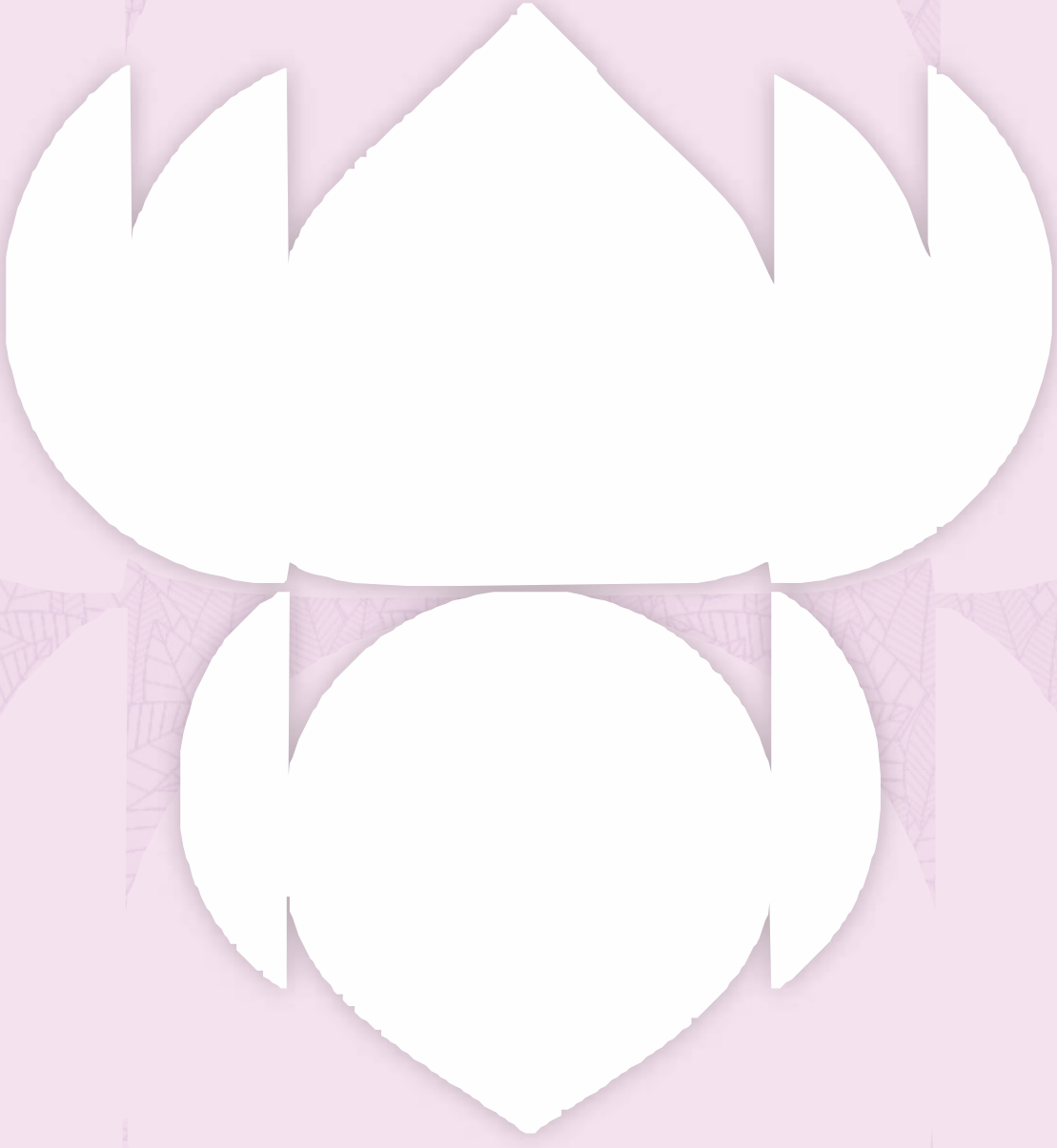

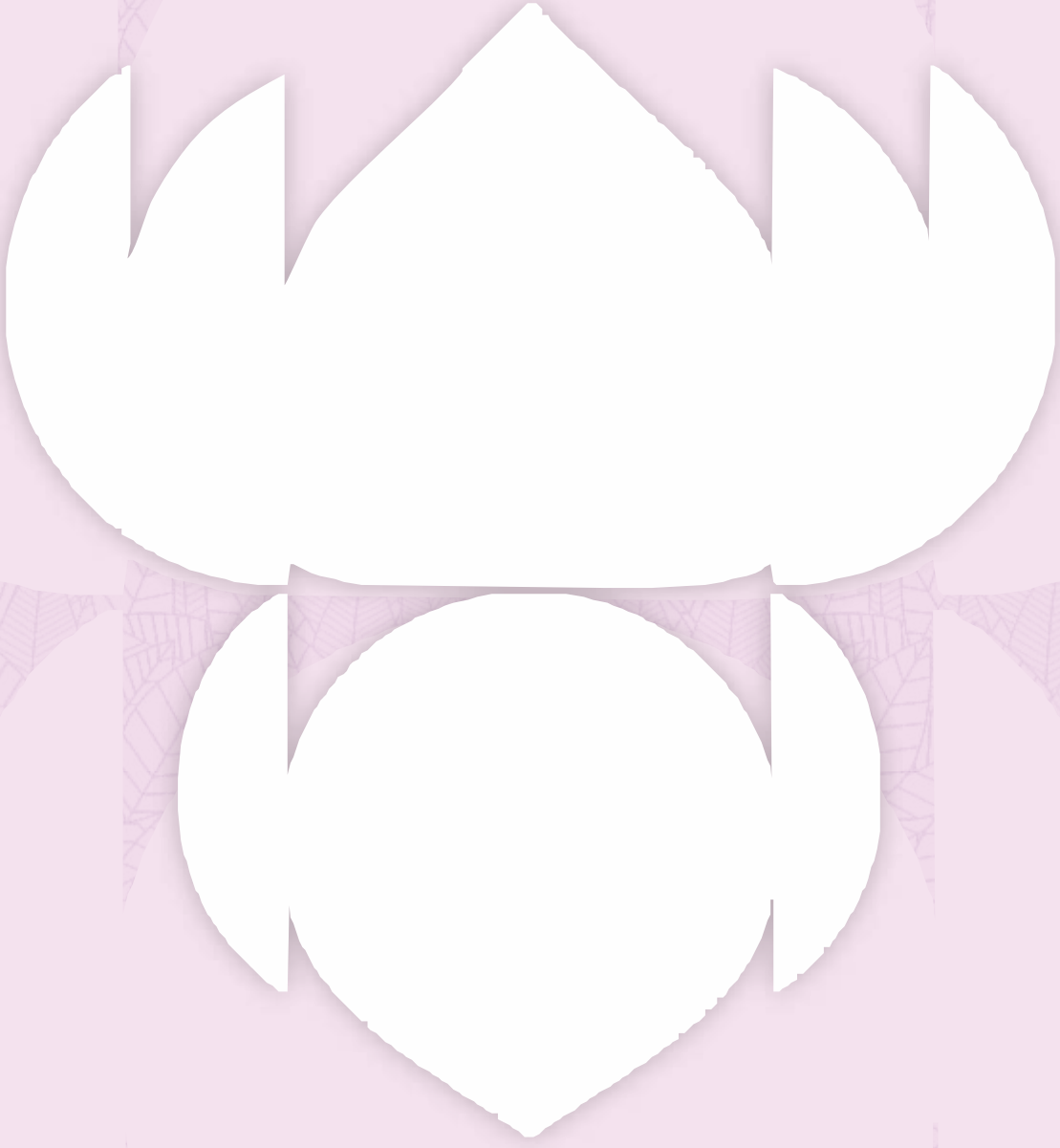

राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार 2021

NATIONAL FILM AWARDS 2021

35 मि.मि. या बड़े गेज या डिजिटल प्रारूप में बनी किन्तु फ़िल्म प्रारूप अथवा वीडियो / डिजिटल प्रारूप में जारी किसी भी भारतीय भाषा में बनी और केन्द्रीय फ़िल्म प्रमाणन बोर्ड द्वारा फ़ीचर या फ़ीचरेट के रूप में प्रमाणीकृत फ़िल्म फ़ीचर फ़िल्म श्रेणी के लिए पात्र है।

Films made in any Indian language, shot on 35 mm or in a wider gauge or digital format but released on a film format or video/digital format and certified by the Central Board of Film Certification as a feature film or featurette are eligible for feature film section.

फ़ीचर फ़िल्में । एक नज़र में

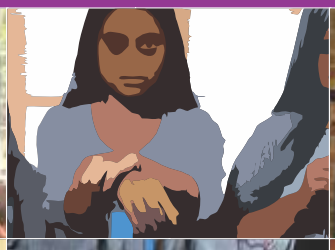

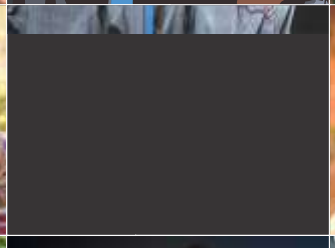

- **रॉकेट्री: दि नंबी इफेक्ट (हिंदी)**
  सर्वश्रेष्ठ फ़ीचर फ़िल्म
  Rocketry: The Nambi Effect (Hindi)
  Best Feature Film

- **मैप्पडियन (पर्सन एबव मेन्शन्ड) (मलयालम)**
  इंदिरा गाँधी पुरस्कार: निर्देशक की पहली सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म
- **Meppadiyan (Person Above Mentioned) (Malayalam)**
  Indira Gandhi Award for Best Debut Film of a Director

- **आर आर आर (तेलुगु)**
  लोकप्रिय एवं स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करने वाली सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म
  सर्वश्रेष्ठ पार्श्व गायक
  सर्वश्रेष्ठ संगीत निर्देशन (बैकग्राउंड संगीत)
  सर्वश्रेष्ठ स्पेशल इफैक्ट
  सर्वश्रेष्ठ नृत्यकला
  सर्वश्रेष्ठ एक्शन निर्देशन (स्टन्ट कोरियोग्राफी)
- **RRR (Telugu)**
  Award for Best Popular Film Providing Wholesome Entertainment
  Best Male Playback Singer
  Best Music Direction (Background Score)
  Best Special Effects
  Best Choreography
  Best Action Direction Award (Stunt Choreography)

- **दि कश्मीर फाइल्स (हिंदी)**
  लोकप्रिय एवं स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करने वाली राष्ट्रीय एकता के लिए सर्वश्रेष्ठ फीचर फिल्म का नरगिस दत्त पुरस्कार
  सर्वश्रेष्ठ सह –अभिनेत्री
  The Kashmir Files (Hindi)
  Award for Best Popular Film Providing Nargis Dutt Award for Best Feature Film on National Integration
  Best Supporting Actress

- **अनुनाद – दि रेजोनेंस (असमिया)**
  सामाजिक मुद्दों पर सर्वश्रेष्ठ फिल्म
  Anunad - The Resonance (Assamese)
  Best Film on Social Issues

- **आवासव्यूहम् (मलयालम)**
  पर्यावरण संरक्षणध्परिरक्षण पर सर्वश्रेष्ठ फिल्म
  Aavasavyuham (Malayalam)
  Best Film on Environment Conservation/Preservation

- **गाँधी एंड कम्पनी (गुजराती)**
  सर्वश्रेष्ठ बाल फिल्म
  Gandhi & Co (Gujarati)
  Best Children's Film

- **गोदावरी (मराठी)**
  सर्वश्रेष्ठ निर्देशन
  Godavari (Marathi)
  Best Direction

- **पुष्पा (दि राइस पार्ट I) (तेलुगु)**
  सर्वश्रेष्ठ अभिनेता
  सर्वश्रेष्ठ संगीत निर्देशन (गीत)
- **Pushpa (The Rise Part I) (Telugu)**
  Best Actor
  Best Music Direction (Song)

- **गंगूबाई काठियावाड़ी (हिंदी)**
  सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री
  सर्वश्रेष्ठ पटकथा (रूपांतरित)
  सर्वश्रेष्ठ पटकथा (संवाद लेखक)
  सर्वश्रेष्ठ संपादन
  सर्वश्रेष्ठ मेकअप कलाकार
  Gangubai Kathiawadi (Hindi)
  Best Actress
  Best Screenplay (Writer Adapted)
  Best Screenplay (Dialogue)
  Best Editing
  Best Make-up Artist

- **मिमी (हिंदी)**
  सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री
  सर्वश्रेष्ठ सह –अभिनेत्री
  Mimi (Hindi)
  Best Actress
  Best Supporting Actor

- **लास्ट फिल्म शो (छेलो शो) (गुजराती, अंग्रेजी)**
  सर्वश्रेष्ठ बाल कलाकार
  सर्वश्रेष्ठ गुजराती फिल्म
  Last Film Show (Chhello Show) (Gujarati, English)
  Best Child Artist
  Best Gujarati Film

- **इरविन निजल (शैडो ऑफ नाइट) (तमिल)**
  सर्वश्रेष्ठ बाल कलाकार
  सर्वश्रेष्ठ पार्श्व गायिका
  Iravin Nizhal (Shadow of the Night) (Tamil)
  Best Child Artist
  Best Female Playback Singer

FEATURE FILMS | AT A GLANCE

■ **सरदार उधम (हिंदी)**
सर्वश्रेष्ठ छायांकन
सर्वश्रेष्ठ ध्वनि आलेखन (अंतिम मिक्स्ड ट्रैक का पुनः ध्वनि आलेखक)
सर्वश्रेष्ठ प्रोडक्शन डिजाइन
सर्वश्रेष्ठ वेशभूषाकार
सर्वश्रेष्ठ हिन्दी फिल्म

■ **Sardar Udham (Hindi)**
Best Cinematography
Best Audiography (Re-Recordist of the Final Mixed Track)
Best Production Design
Best Costume Design
Best Hindi Film

■ **नायाट्टु (दि हंट) (मलयालम)**
सर्वश्रेष्ठ पटकथा (मौलिक)
Nayattu (The Hunt) (Malayalam)
Best Screenplay Writer (Original)

■ **चवित्टु (मलयालम)**
सर्वश्रेष्ठ ध्वनि आलेखन (लोकेशन साउंड)
Chavittu (Malayalam)
Best Audiography (Location/Sync Sound)

■ **झिल्ली (डिस्कार्ड्स) (बांग्ला)**
सर्वश्रेष्ठ ध्वनि आलेखन (साउंड डिजाइनर)
विशेष उल्लेख
Jhilli (Discards) (Bengali)
Best Audiography (Sound Designer)
Special Mention

■ **कोंडा पोलम (तेलुगु)**
सर्वश्रेष्ठ गीत
Konda Polam (Telugu)
Best Lyrics

■ **शेरशाह (हिंदी)**
निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार
Shershah (Hindi)
Special Jury Award

■ **अनुर – आइज़ ऑन द सनशाइन (असमिया)**
सर्वश्रेष्ठ असमिया फिल्म
विशेष उल्लेख
Anur - Eyes on the Sunshine (Assamese)
Best Assamese Film
Special Mention

■ **कालकोखो – हाउस ऑफ टाइम**
सर्वश्रेष्ठ बांग्ला फिल्म
विशेष उल्लेख
Kalkokkho - House of Time (Bengali)
Best Bengali Film
Special Mention

■ **777 चार्ली**
सर्वश्रेष्ठ गुजराती फिल्म
विशेष उल्लेख
777 Charlie (Kannada)
Best Kannada Film
Special Mention

■ **समानांतर (मैथिली)**
सर्वश्रेष्ठ मैथिली फिल्म
Samanantar (Maithili)
Best Maithili Film

एकदा काय झालं (मराठी)
सर्वश्रेष्ठ मराठी फिल्म
Ekda Kay Zala (Marathi)
Best Marathi Film

होम (मलयालम)
सर्वश्रेष्ठ मलयालम फिल्म
विशेष उल्लेख
Home (Malayalam)
Best Malayalam Film
Special Mention

■ **इखोगी यम (अवर होम)**
सर्वश्रेष्ठ मणिपुरी फिल्म
Eikhogi Yum (Our Home)
Best Manipuri Film

■ **प्रतीक्षा (दि वेट) (उड़िया)**
सर्वश्रेष्ठ उड़िया फिल्म
Pratikshya (The Wait) (Odia)
Best Odia Film

■ **कडैसी विवासयी (दि लास्ट फार्मर) (तमिल)**
सर्वश्रेष्ठ तमिल फिल्म
विशेष उल्लेख
Kadaisi Vivasayi (The Last Farmer) (Tamil)
Best Tamil Film
Special Mention

■ **उप्पेना (वैव) (तेलुगु)**
सर्वश्रेष्ठ तेलुगु फिल्म
Uppena (Wave) (Telugu) (Tamil)
Best Telugu Film

■ **बूम्बा राइड**
सर्वश्रेष्ठ मिशिंग फिल्म
Boomba Ride
Best Mishing Film

रॉकेट्रीः द नंबी इफेक्ट

सर्वश्रेष्ठ फ़ीचर फ़िल्म

Rocketry: The Nambi Effect | Best Feature Film

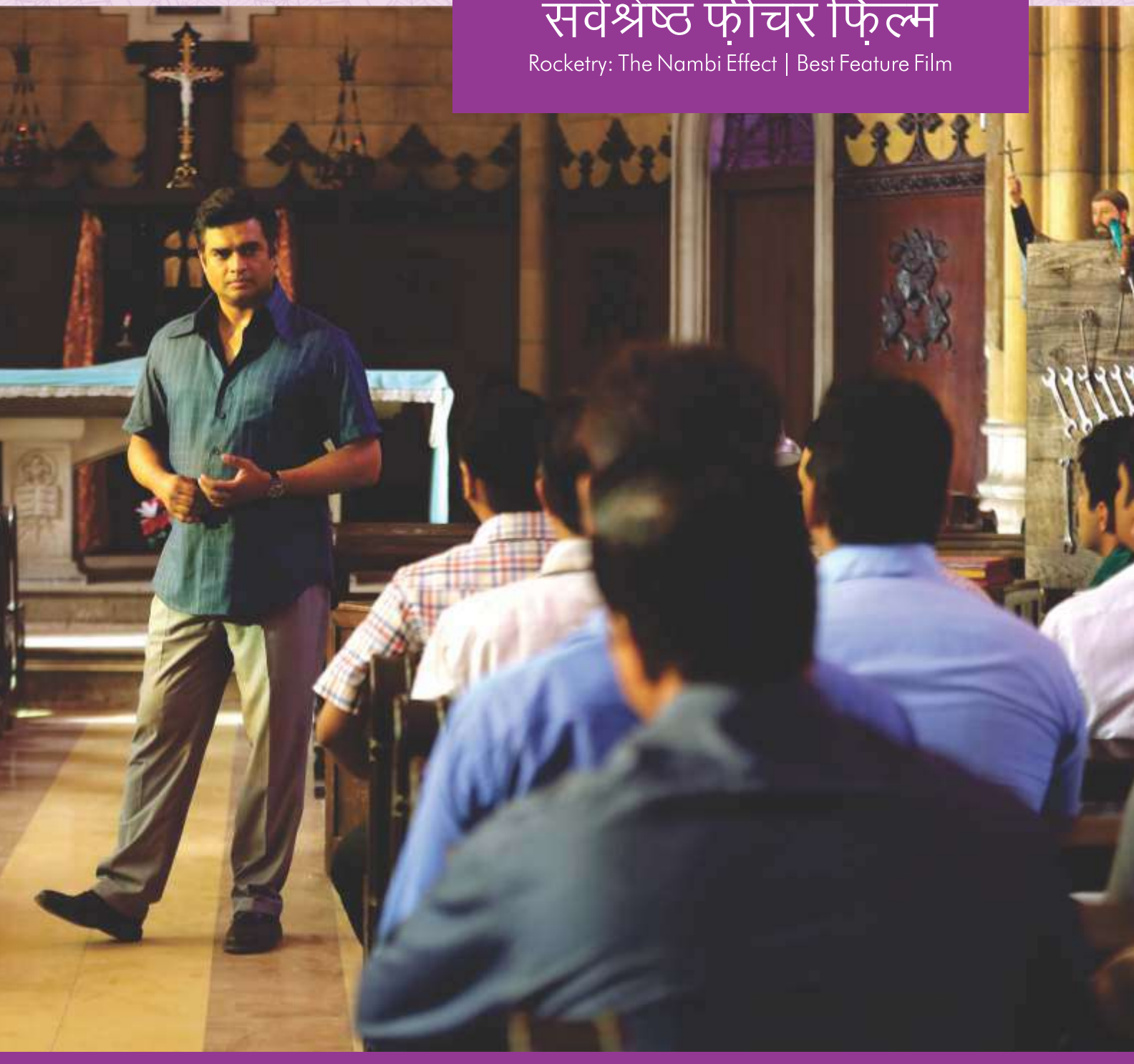

स्वर्ण कमल | SWARNA KAMAL ₹ 2,50,000/-

Hindi | **158 Min** | **Director:** R Madhavan | **Production Company:** Rocketry Entertainment LLP | **DOP:** Sirsha Ray **Music:** Sam C.S. | **Editor:** Bijith Bala | **Screenplay:** R Madhavan | **Sound Design:** Siddarth Dubey | **Costume Designer:** Niharika Bhasin Khan | **Cast:** R Madhavan, Simran, Shah Rukh Khan

कथासार - रॉकेट्री – दि नंबी इफेक्ट, भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन के वैज्ञानिक नंबी नारायणन की कहानी बताती है, जो वह एक टेलिविजन शो के दौरान शाहरुख खान को सुनाते हैं। अन्य महान दिग्गजों की तरह नांबी में भी खामिया हैं, उसकी प्रतिभा और जुनून के चलते उसके कई दुश्मन और आलोचक बन जाते हैं, यह सभी वजहें उसे नए जमाने के नायक की तरह प्रस्तुत करने में कामयाब दिखती है। यह फ़िल्म दर्शकों को उनके विशेष योगदान और को समझने और सम्मानित करने के लिए बाध्य करती है।

Synopsis - Rocketry – The Nambi Effect is a retelling of Nambi Narayanan's life, scientist at the Indian Space Research Organisation, as it unravels in an interview with Superstar Shah Rukh Khan on television. Like many legends, Nambi is deeply flawed, his genius and obsession earning him enemies and detractors, making him a compelling modern protagonist. The film challenges the audience to take up the responsibility of recognising and celebrating these special contributors.

परिचय | PROFILE

आर. माधवन (R. Madhavan)

आर. माधवन तमिल और हिंदी फ़िल्मों के एक पुरस्कार विजेता भारतीय अभिनेता, लेखक, निर्देशक और निर्माता हैं। एक राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार, चार दक्षिण फ़िल्मफेयर पुरस्कार और एक तमिलनाडु राज्य फ़िल्म पुरस्कार सहित इनकी झोली में कई पुरस्कार हैं। उनकी उल्लेखनीय फ़िल्मों में 'अलाई पेयुथे' (2000), 'मिन्नाले' (2001), 'रन' (2002), 'एथिर्री' (2004), 'रंग दे बसंती' (2006), '3 इडियट्सश (2009), 'तनु वेड्स मनु' (2011), 'इरुधि सुत्रु' (2016), 'रॉकेट्री – द नंबी इफेक्ट' (2022), सहित कई फ़िल्में शामिल हैं।

R. Madhavan is an award winning Indian actor, writer, director and producer in Tamil and Hindi movies. A recipient of several accolades including one National Film Award, four Filmfare Awards South and one Tamil Nadu State Film Award. Some of his notable films are 'Alai Payuthey' (2000), 'Minnale' (2001), 'Run' (2002), 'Aethirree' (2004), 'Rang De Basanti' (2006), '3 Idiots' (2009), 'Tanu Weds Manu' (2011), 'Irudhi Suttru' (2016), 'Rocketry – The Nambi Effect' (2022), amongst others.

रॉकेट्री एंटरटेन्मेंट एलएलपी (Rocketry Entertainment LLP)

ROCKETRY
Entertainment LLP

रॉकेट्री एंटरटेनमेंट एलएलपी एक सीमित देयता भागीदारी फर्म है जिसे 17 मार्च 2018 को निगमित किया गया था। यह रजिस्ट्रार ऑफ कंपनीज, मुंबई में पंजीकृत है। रॉकेट्री एंटरटेनमेंट एलएलपी के नामित भागीदार सरिता माधवन और वर्गीस सेबेस्चियन हैं।

Rocketry Entertainment LLP is a Limited Liability Partnership firm incorporated on 17th March 2018. It is registered at the Registrar of Companies, Mumbai. Designated Partners of Rocketry Entertainment LLP are Sarita Madhavan and Varghese Sebastian.

प्रशस्ति – यह फ़िल्म एक वैज्ञानिक के सामने आने वाली चुनौतियों और विवादों पर आधारित है, जो अपने दृढ़ संकल्प, जुझारुपन और सच्चाई की जीत को साबित करता है।

Citation - The film delves into the challenges and controversies faced by a scientist, showcasing his determination, resilience and the triumph of truth.

मैप्पडियन (पर्सन एबव मेन्शन्ड)
निर्देशक की पहली फ़िल्म के लिए इंदिरा गांधी पुरस्कार

Meppadiyan (Person above-Mentioned)
Indira Gandhi Award for Best Debut Film of a Director

स्वर्ण कमल | SWARNA KAMAL ₹ 1,25,000/-

Malayalam | **125 Min** | **Director:** Vishnu Mohan | **Production Company:** Unni Mukundan Films Pvt Ltd **DOP:** Neil D Cunha | **Music:** Rahul Subramanian | **Editor:** Shameer Muhammed | **Screenplay:** Vishnu Mohan **Sound Design:** Tony Babu | **Costume Designer:** Irshad Cherukunnu | **Cast:** Unni Mukundan, Anju Kurian, Kottayam Ramesh, Nisha Sarang, Aju Varghese, Saiju Kurup

कथासार – जयकृष्णन, एक साधारण इंसान है जो रियल एस्टेट का व्यवसाय शुरू करता है । हालाँकि, वह एक ऐसे जाल में उलझता है कि अपना घर और जमीन खो देता है। वह जो जमीन खरीदता है वह एक ऐसी संपत्ति होती है जिसे केंद्र सरकार ने एक रेलवे परियोजना के लिए चिह्नित किया है। वह अमीर लोगों और लालची राजनेताओं के बुने हुए पेचीदा जाल में उलझ जाता है। फिल्म दिखाती है कि कैसे जयकृष्णन जैसा साधारण इंसान एक भ्रष्ट समाज (जहां नौकरशाही और फर्जी योजनाएं ईमानदारी और संवेदना पर जीत हासिल करती हैं।) की चपेट में एक जानवर में बदल जाता है।

Synopsis - Jayakrishnan, a simple man, enters into the real estate business with Varkey. However, it becomes a trap for him and he loses his own home and land. The land that he ends up buying happens to be a property that the Central Government has marked for a railway project. He gets tangled in the intricate network of wealthy men and greedy politicians. The film shows how an easy going person like Jayakrishnan changes in a corrupt society where bureaucracy and deceitful schemes win over honesty and compassion.

परिचय | PROFILE

विष्णु मोहन (Vishnu Mohan)

विष्णु मोहन एक फ़िल्म निर्देशक, लेखक और निर्माता हैं। उन्होंने अपने करियर की शुरुआत व्यावसायिक विज्ञापनों के निर्देशन से की और 2017 के उरी हमले पर आधारित अभिनेता मोहनलाल की देशभक्तिपूर्ण लघु फ़िल्म का निर्देशन से इन्हें प्रसिद्धि हासिल हुई। निर्देशक के रूप में उनकी पहली फ़िल्म 'मेप्पडियन' (2022) व्यावसायिक रूप से सफल और समीक्षकों द्वारा प्रशंसित रही, जिसने कई प्रशंसा और पुरस्कार जीते। इन्होंने 68वें राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार में निर्णायक मंडल सदस्य के रूप में भी काम किया।

Vishnu Mohan is a film director, writer and producer. He started his career directing commercial ads and came to limelight by directing a patriotic short film featuring actor Mohanlal based on the 2017 Uri attack. His debut movie as a director 'Meppadiyan' (2022) was commercially successful and critically acclaimed, winning many accolades and awards. He also served as jury at the 68th National Film Awards.

उन्नी मुकुंदन फ़िल्म्स प्रा. लि (Unni Mukundan Films Pvt Ltd)

उन्नीकृष्णन मुकुंदन नायर, मलयालम सिनेमा के अभिनेता, निर्माता, गायक, गीतकार और सामाजिक मुद्दों पर मुखर रहने के लिए जाने जाते हैं। इन्होंने 17 अगस्त 2020 को एक फ़िल्म निर्माण कंपनी **उन्नी मुकुंदन फ़िल्म्स** लॉन्च की। इसका उद्देश्य कहानी कहने की बेहतरीन कला के साथ सर्वोत्तम तकनीक का संयोजन करके प्रेरणादायक और दृश्यात्मक रूप से असाधारण सिनेमाई अनुभव लाना है।

Unnikrishnan Mukundan Nair, an Indian actor, producer, singer, lyricist and social issues responder predominantly in Malayalam cinema launched **Unni Mukundan Films**, a film production company on 17th August 2020. Its vision is to bring inspiring and visually extravagant cinematic experiences by combining the best of technology with the fine art of storytelling to leverage the best talents available.

प्रशस्ति – एक युवा अच्छा करने की चाहत में लालच और ताकत के जाल में फंस जाता है।

Citation - A young man intends to do good but in the process gets entangled in a web of greed and power.

आर आर आर
मनोरंजन प्रदान करने वाली सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म

RRR

Best Popular Film Providing Wholesome Entertainment

स्वर्ण कमल | SWARNA KAMAL ₹ 2,00,000/-

Telugu | 187 Min | Director: Srisaila Sri Rajamouli | **Production Company:** DVV Entertainments LLP
DOP: KK Senthil Kumar | **Music:** M. M. Keeravaani | **Editor:** A Sreekar Prasad | **Screenplay:** SS Rajamouli
Stunt Choreographer: King Solomon | **Sound Design:** Raghunath Kemisetty | **Costume Designer:** Rama Rajamouli
Cast: Ramcharan, Jr NTR, Alia Bhatt, Ajay Devgn, Shriya Saran, Twinkle Sharma, Samuthirakani

कथासार - 1920 के दशक में ब्रिटिश राज के दौरान, एक अत्याचारी प्रशासक स्कॉट बक्सटन और उसकी पत्नी कैथरीन गोंड जनजाति की एक प्रतिभाशाली कलाकार युवा लड़की मल्ली को जबरदस्ती अपने साथ ले जाते हैं। इससे क्रोधित होकर, जनजाति के संरक्षक कोमाराम भीम छिपते, छिपाते,उसे बचाने के लिए दिल्ली पहुंचता हैं। कैथरीन इससे निपटने के लिए भारतीय इंपीरियल पुलिस के एक महत्वाकांक्षी अधिकारी ए. रामा राजू की सहायता लेती है। और इस तरह एक एक्शन से भरपूर ऐतिहासिक–काल्पनिक ड्रामा शुरू होता है जहां अंत में दोनों अंग्रेजों से लड़ने के लिए एक साथ आते हैं।

Synopsis - Set in the 1920s during the British Raj, a tyrannical administrator Scott Buxton and his wife Catherine forcefully abduct Malli, a young girl with artistic talents from the Gond tribe. Enraged, the tribe's guardian Komaram Bheem embarks to Delhi to rescue her under a guise. Catherine enlists the assistance of A. Rama Raju, an ambitious officer in the Indian Imperial Police to tackle it. And thus starts an action-packed historical-fiction drama where finally they both come together to fight the British.

परिचय | PROFILE

एस एस राजमौली (S S Rajamouli)

एस एस राजमौली राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता निर्देशक है, जिनका नाम भारतीय सिनेमा के कुछ बेहतरीन फ़िल्मकारों में शुमार है। इन्होंने 12 फ़िल्मों का निर्देशन किया है जिसमें ब्लॉकबस्टर फ़िल्म जैसे बाहुबली, ईगा, मगधीरा, आरआरआर जैसी कई फ़िल्में शामिल हैं।

S S Rajamouli is a national award winner and amongst the most accomplished filmmakers in Indian cinema. He has directed 12 films, including blockbusters like 'Baahubali', 'Eega', 'Magadheera', 'RRR' and more

डी वी वी इंटरटेनमेंट (DVV Entertainments)

डी वी वी इंटरटेनमेंट एक प्रोडक्शन हाउस है जिसने अब तक 22 फ़िल्मों का निर्माण किया है जिसमें नायक (2013), 'निन्नु कोरी' (2017), और 'आरआरआर' (2022) जैसी ब्लॉकबस्टर फ़िल्में शामिल हैं।

DVV Entertainments is an Indian film production house producing Telugu movies. They have produced many films till date, giving blockbusters like 'Ninnu Kori' (2017) and 'RRR' (2012)

प्रशस्ति – भारत के औपनिवेशिक शासन के खिलाफ संघर्ष की महाकाव्य गाथा, जिसे आधुनिक किंवदंती के रूप में वर्णित किया गया है।

Citation - An epic saga of India's struggle against colonial rule, narrated as a modern legend.

दि कश्मीर फाइल्स

राष्ट्रीय एकता पर सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म के लिए नरगिस दत्त पुरस्कार

The Kashmir Files

Nargis Dutt Award for Best Feature Film on National Integration

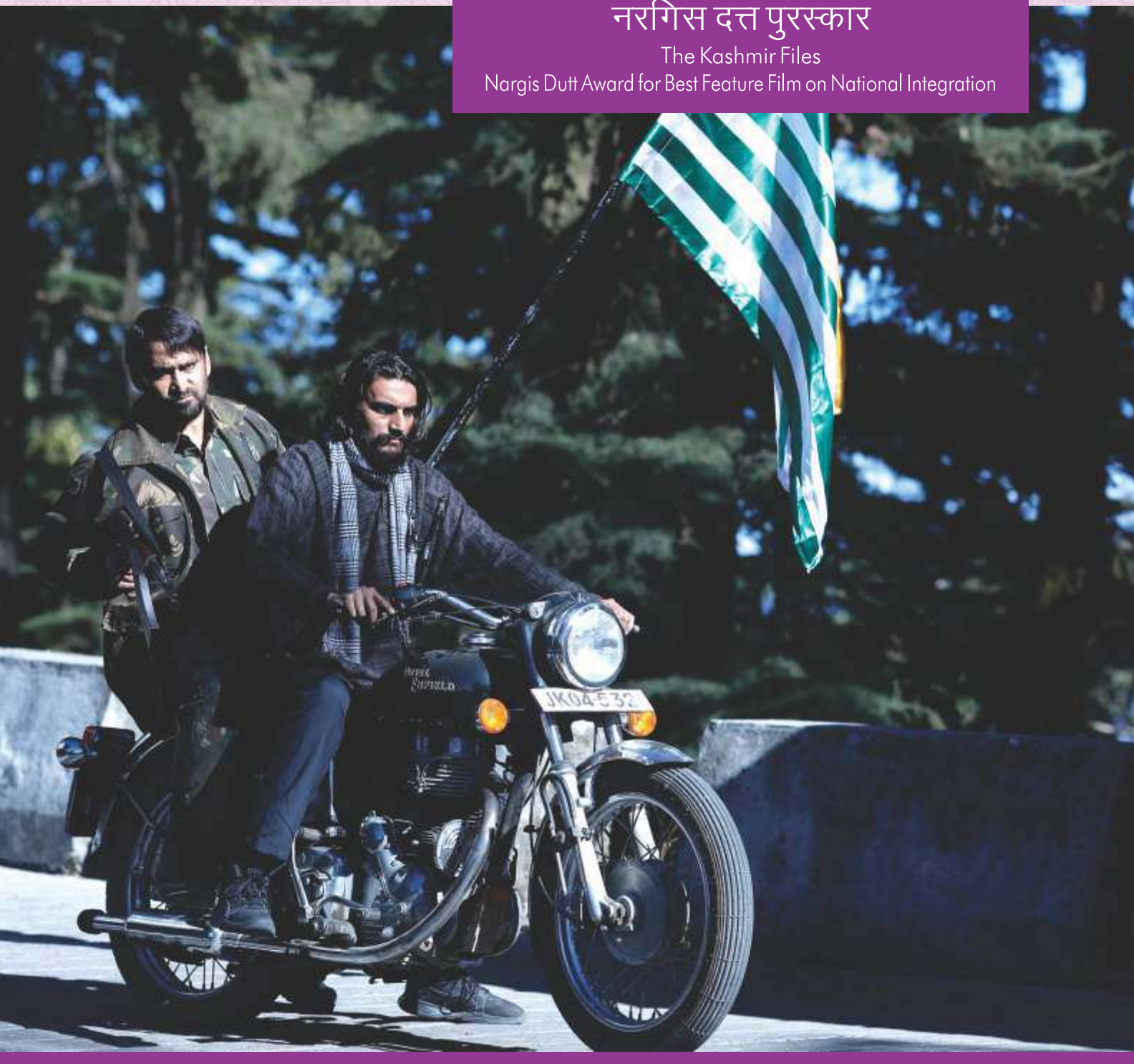

स्वर्ण कमल | SWARNA KAMAL ₹ 2,50,000/-

Hindi | **170 Min** | **Director:** Vivek Ranjan Agnihotri | **Production Company:** Zee Entertainment Enterprises Limited, I Am Buddha Production, Abhishek Agarwal Arts | **DOP:** Uday Singh Mohite | **Music:** Rohit Sharma | **Editor:** Shankh Rajadhyaksha (Mayureshkar Marudkar) | **Screenplay:** Vivek Ranjan Agnihotri | **Sound Design:** Girish Ramteke **Costume Designer:** Khatri Irfan | **Cast:** Anupam Kher, Pallavi Joshi, Darshan Kumar, Chinmay Mandlekar, Bhasha Sumbli, Prithviraj Sarnaik

कथासार - कृष्णा पंडित एक युवा रिफ्यूजी कश्मीरी पंडित है, जो अपने दादा पुष्करनाथ पंडित के साथ रहता है। पुष्करनाथ 1990 में हुए कश्मीरी पंडितों के नरसंहार का गवाह है। पुष्करनाथ कश्मीर से बच निकलते हैं और ताउम्र अनुच्छेद 370 के रद्द किए जाने को लेकर संघर्ष करते हैं। इन बातों से अंजान कृष्णा यह जानता है कि उसके माता–पिता की मौत कश्मीर में एक दुर्घटना में हुई थी। एएनयू के छात्र के रूप में अपनी प्रोफेसर राधिका मेनन से प्रभावित होकर, वह नरसंहार का खंडन करता है और आजाद कश्मीर की लड़ाई लड़ता है। उसे सच्चाई का पता तब चलता है जब उसके दादा जी की मौत हो जाती है। यह फिल्म नरसंहार से पीड़ित पहली पीढ़ी के वीडियो साक्षात्कार से प्रेरित है।

Synopsis - Krishna Pandit is a young Kashmiri Pandit refugee living with his grandfather Pushkarnath Pandit who witnessed the 1990 genocide of Kashmiri Pandits. Pushkarnath had to flee from Kashmir and fought for the revocation of Article 370 all his life. Unaware, Krishna believes his parents died in an accident in Kashmir. As a student of ANU, under the influence of his mentor Professor Radhika Menon, he refutes the genocide and fights for Azad Kashmir, discovering the truth only after his grandfather's death. The film is inspired by video interviews of first generation victims of the genocide.

परिचय | PROFILE

विवेक रंजन अग्निहोत्री (Vivek Ranjan Agnihotri)

विवेक रंजन अग्निहोत्री एक राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता फ़िल्म निर्माता, बेस्ट सेलर पुस्तक के लेखक, बुद्धिजीवी और 'बुद्धा इन ए ट्रैफिक जाम' (2014), 'द ताशकंद फाइल्स' (2019) और 'द कश्मीर फाइल्स' (2022) जैसी फ़िल्मों के निर्माता हैं।

Vivek Ranjan Agnihotri is a national award winning filmmaker, best-selling author and a public intellectual with films like 'Buddha in a Traffic Jam' (2014), 'The Tashkent Files' (2019) and 'The Kashmir Files' (2022).

ज़ी एंटरटेनमेंट एंटरप्राइजेज लिमिटेट–जी स्टूडियो

(ZEE Entertainment Enterprises Limited | ZEE Studios)

ज़ी एंटरटेनमेंट एंटरप्राइजेज (जेडईईएल) एक भारतीय मीडिया समूह है। जी स्टूडियोज इसकी एक अग्रणी भारतीय मनोरंजन कंपनी है जो फ़िल्म, स्ट्रीमिंग, कंटेंट डेवलपमेंट, प्रोडक्शन के साथ–साथ फिल्म मार्केटिंग और वितरण में महारथ रखती है।

Zee Entertainment Enterprises (ZEEL) is an Indian media conglomerate. Its content engine, Zee Studios is a leading Indian entertainment company specialising in film, streaming, content development, production, as well as film marketing and distribution.

आई एम बुद्धा प्रोडक्शन की स्थापना विवेक रंजन अग्निहोत्री और पल्लवी जोशी ने की है।

I am Buddha Production Co-founded by Vivek Ranjan Agnihotri and Pallavi Joshi.

अभिषेक अग्रवाल आर्ट्स एक प्रोडक्शन कंपनी है जिसकी सीपना अभिषेक अग्रवाल ने की है, जो फ़िल्मों को लेकर जुनूनी हैं।

Abhishek Agarwal Arts is a production company founded by Abhishek Agarwal, passionate about cinema.

प्रशस्ति – एक फ़िल्म जो देश की एकता के बारे में सामाजिक रूप से प्रासंगिक विषय से जुड़ी हुई है।

Citation - A film that deals with a socially relevant subject about the integration of the country.

अनुनाद–द रेज़ोनेंस
सामाजिक मुद्दों पर सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म
Anunaad- The Resonance | Best Film on Social Issues

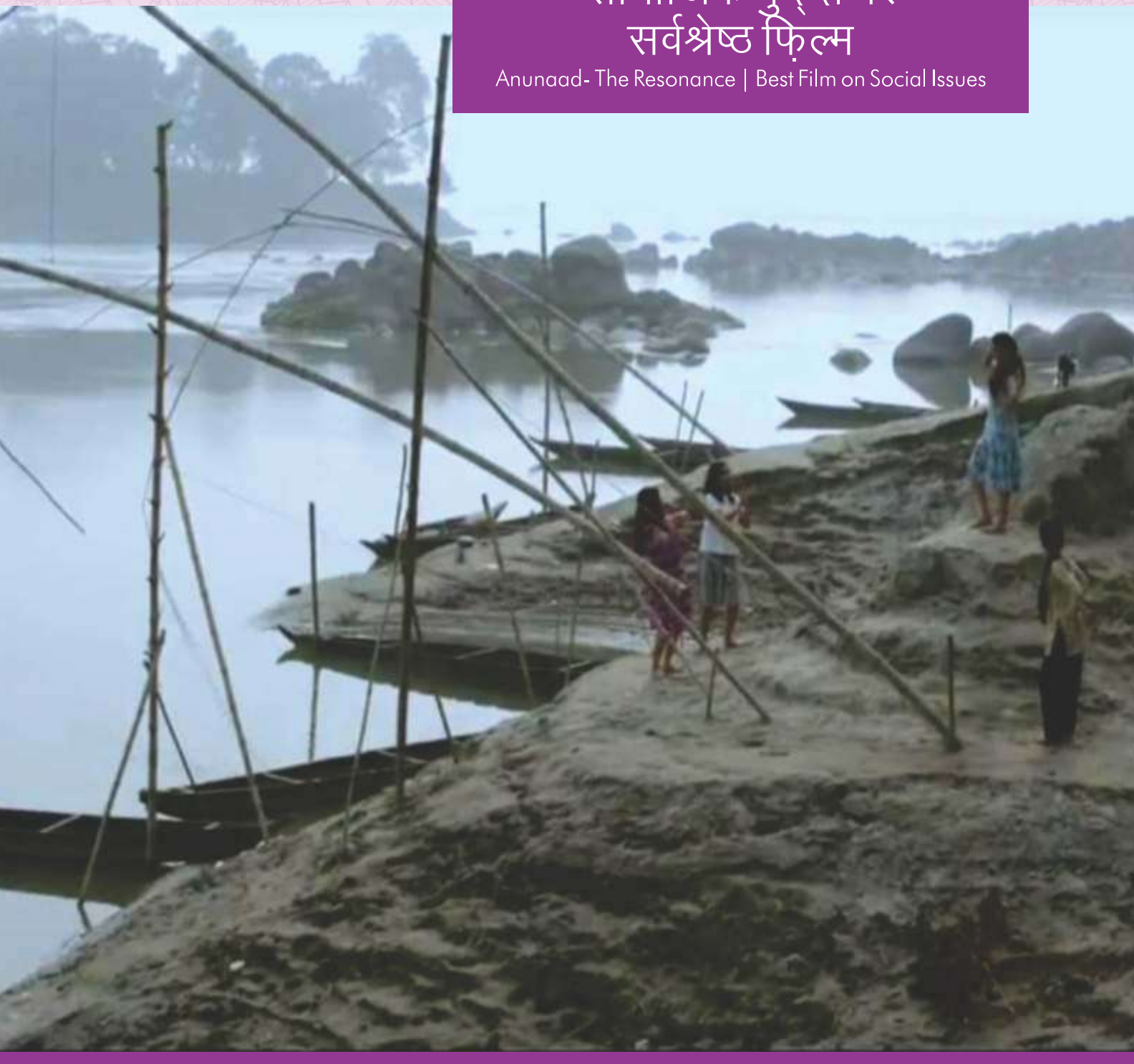

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 1,50,000/-

Assamese | **97 Mins** | **Director:** Reema Borah | **Production Company:** Assam State Film (Finance and Development) Corporation Ltd. | **DOP:** Siddharth Mitragotri, Sandeep Patil | **Music:** Siddhant Sagar | **Editor:** Rantu Chetia **Screenplay:** Reema Borah | **Sound Design:** Boby John | **Costume Designer:** Reema Borah | **Cast:** Urmila Mahanta, Udayan Duarah

कथासार – यह फिल्म जान नामक लड़की की कहानी बयान करती है जिसे मानव तस्करी के जरिए असम से हरियाणा लाया जाता है। फिल्म, भारत के कुछ हिस्सों में कुख्यात दुल्हन दासता के झकझोरने वाले विषय की बात करती है, जहां विषम लिंगानुपात के कारण विवाह योग्य पुरुषों के लिए पर्याप्त महिलाएं नहीं हैं। तस्करी की गई लड़कियां जो खरीदी हुई दुल्हन होती हैं, उन्हें 'पारो' या 'मोल्कि' के नाम से जाना जाता है, और वे लगातार अपमान और हिंसा का शिकार होती हैं। अक्सर परिवार के सभी पुरुष सदस्यों द्वारा उनके साथ बलात्कार किया जाता है और उन्हें बंधुआ मजदूरों की तरह रखा जाता है ।

Synopsis - The film is about Jaan, a girl who is trafficked from Assam to Haryana. It emphasizes the soul tearing topic of bridal slavery practiced in some parts of India where there are not enough women for marriageble men due to a skewed sex ratio. Girls trafficked as purchased brides are known as 'Paro' or 'Molki', and live with constant humiliation and violence. They are often raped by all male members in the family and are treated as bonded laboures.

परिचय | PROFILE

रीमा बोरा (Reema Borah)

रीमा बोरा असम की एक पुरस्कार विजेता निर्देशक और पटकथा लेखक हैं। अकादमिक परियोजनाओं के हिस्से के रूप में इनकी लघु फिल्में विश्व स्तर पर फिल्म समारोहों में प्रदर्शित की गई हैं और उन्होंने कई पुरस्कार जीते हैं, जिसमें 'इकोज ऑफ साइलेंस' (2007) के लिए राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार भी शामिल है। इनकी पहली फ़िल्म 'बोकुल' (2015) को पांच राज्य फ़िल्म पुरस्कारों सहित कई फ़िल्म समारोहों में प्रशंसा मिली। अनुनाद उनकी तीसरी फ़ीचर फ़िल्म है।

Reema Borah is an award winning film director and scriptwriter from Assam, India. A performing artist earlier who studied theatre and film direction, her short films as part of academic projects have been screened at film festivals globally and have won many awards, including a National Film Award for 'Echoes of Silence' (2007). Her debut film 'Bokul' (2015) received accolades at several film festivals, including five State Film Awards. Anunaad is her third feature film.

दि असाम स्टेट फिल्म (वित्त एवं विकास) निगम लि.

(The Assam State Film (Finance and Development) Corporation Ltd.)

असम राज्य फ़िल्म (वित्त और विकास) निगम लिमिटेड की स्थापना 4 सितंबर 1974 को असमिया सिनेमा के विकास और प्रचार के लिए की गई थी। तब से, एएसएफएफडीसी ने 'निशिद्ध नोडी', 'बंधोन', 'राग', 'पानी', 'श्रृंगखाल', 'टीआरपी अरु', 'डिकचो बनत पलाक्स', 'सात नम्बोरोर संधानोट', 'सोनार बरन' पाखीश, 'तुमी अहिबाने', 'मोक्तांग', 'अनुनाद' समेत जैसी कई अन्य कई फ़िल्मों का निर्माण किया है।

The Assam State Film (Finance and Development) Corporation Ltd. was established on 4th September 1974 for the development and promotion of Assamese cinema. Since then, ASFFDC has produced several films like 'Nishiddha Nodi', 'Baandhon', 'Raag', 'Pani', 'Sringkhal', 'TRP Aru', 'Dikchow Banat Palaax', 'Saat Namboror Sandhanot', 'Sonar Baran Pakhi', 'Tumi Ahibaane', 'Moktang', 'Anunaad', amongst several others.

प्रशस्ति – मानव तस्करी जैसे ज्वलंत मुद्दे और इससे समाज में पैदा होने वाले तनाव पर फ़िल्म।

Citation - A film on the burning issue of human trafficking and the stress it creates in society.

आवासव्यूहम्

पर्यावरण संरक्षण | परिरक्षण पर सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म

Aavasavyuham

Best Film on Environment Conservation | Preservation

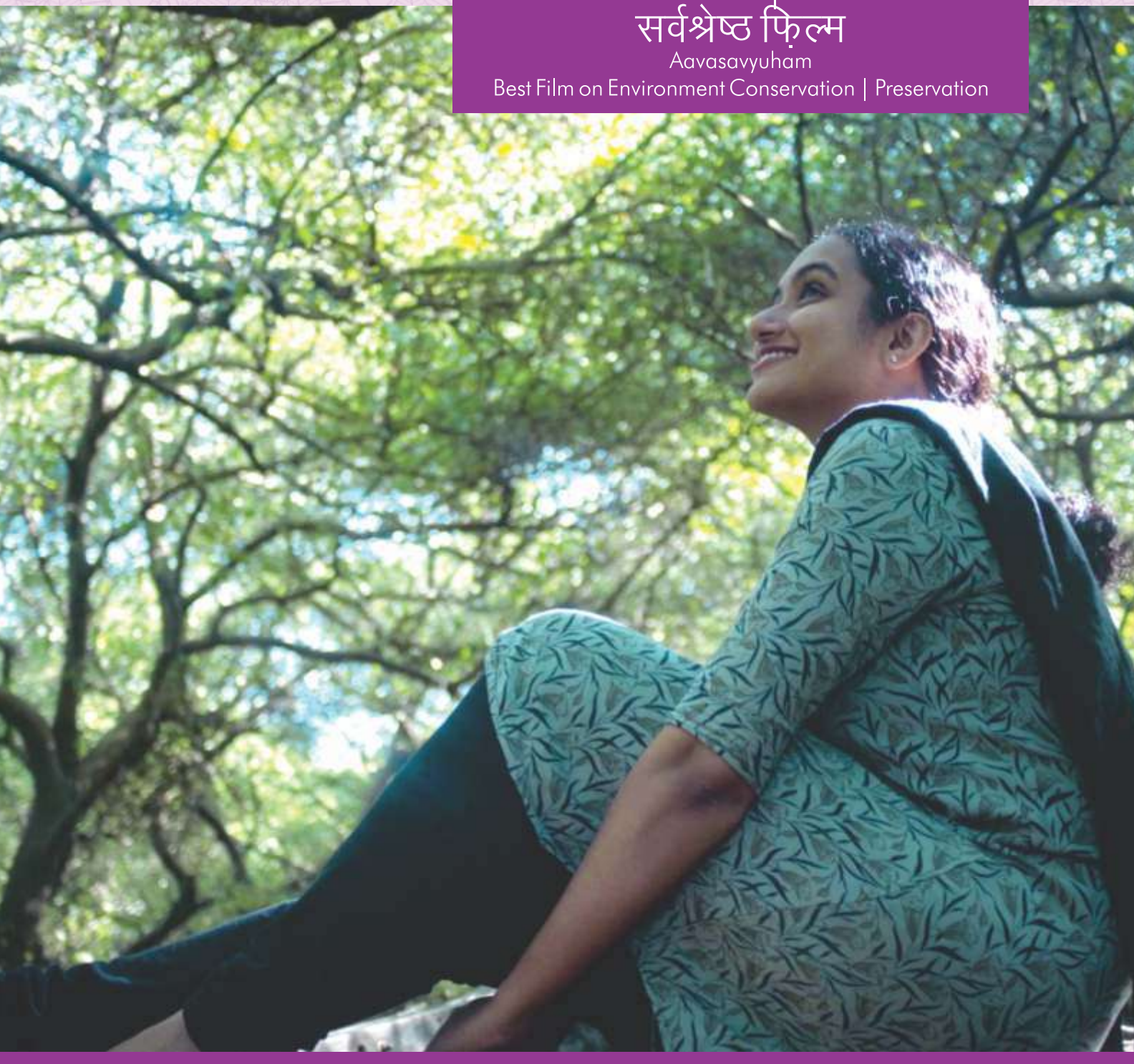

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 1,50,000/-

Malayalam | **116 Min** | **Director:** Krishand R K | **Production Company:** Krishand Films | **DOP:** Vishnu Prabhakar **Music:** Ajmal Hasbulla | **Editor:** Rakesh Cherumadam | **Screenplay:** Krishand R K | **Sound Design:** Prasanth P Menon | **Costume Designer:** Syama Bindu | **Cast:** Rahul Rajagopal, Geethi Sangeetha, Zhins Shan, Nileen Sandra, Sreenath Babu

कथासार – सामाजिक ऊंच नीच का भेदभाव, लिजी और जॉय के प्यार को नहीं स्वीकारते हैं, और वे दोनों भागने को मजबूर हो जाते हैं। अब जॉय के हत्या के मामले में संदिग्ध है, और पुलिस के हाथों से भाग निकलता है, जिसके बाद उसका असल चेहरा सामने आता है। कोचि के छोटे से द्वीप पुथुवाइप के नाजुक पारिस्थितिकी तंत्र, जिसमें प्रवासी पक्षी, मछुआरे और पेट्रोलियम कंपनी से होने वाले खतरे जॉय के बदलाव में बड़ी भूमिका निभाते हैं। सिस्टम, विज्ञान और धर्म मिलकर जॉय के भविष्य को तय करते हैं, और इस तरह हम फ़िल्म में अपने इर्द गिर्द मौजूद अदृश्य और नाजुक पारिस्थितिकी तंत्र के गवाह बनते हैं।

Synopsis - The local social hierarchy doesn't approve of Lissy and Joy's love and they have to elope. Now a murder suspect, Joy is hunted down by the police, escaping only to reveal his true nature. The fragile ecosystem of 'Puthuyvype', a small island in Kochi with the exotic migration of birds, the fisherman and the impending danger of a new petroleum company have contributed to Joy's metamorphosis. System, science and religion merge to make sense of his fate as we discover the invisible and fragile ecosystem that surrounds us all.

परिचय | PROFILE

कृशांत आर के (Krishand R K)

कृष्णानंद आर.के. पुरस्कार विजेता फिल्म निर्माता और आईआईटी बॉम्बे में सहायक एसोसिएट प्रोफेसर भी हैं। उनकी पहली फ़िल्म 'वृथाकृत्यिलुल्ला चतुरम' (2019) ने सर्वश्रेष्ठ बैकग्राउंड संगीत के लिए केरल राज्य पुरस्कार जीता। उनकी दूसरी फ़िल्म 'अवसाव्यूहम' (2021) ने सर्वश्रेष्ठ मलयालम फ़िल्म के लिए NETPAC पुरस्कार और सर्वश्रेष्ठ पटकथा और सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म के लिए केरल राज्य पुरस्कार सहित कई पुरस्कार और सराहनाएं बटोरी। उनकी वेब सीरीज 'क्रय विकार प्रक्रिया' (2022) ने एशिया वेब अवार्ड्स में सर्वश्रेष्ठ ड्रामा का पुरस्कार जीता।

Krishand R.K. is an award winning filmmaker and also an Adjunct Associate Professor at IIT Bombay. His debut film 'Vrithakrithyilulla Chathuram' (2019) won the Kerala State Award for Best Background Music. His second film 'Aavasavyuham' (2021) won many awards and accolades including the NETPAC Award for Best Malayalam Film and the Kerala State Award for Best Screenplay and Best film. His web series 'Kraya Vikraya Prakriya' (2022) won the Best Dramedy at the Asia Web Awards.

कृशांत फ़िल्म्स (Krishand Films)

कृशांत फ़िल्म्स, केरल की एक फ़िल्म प्रोडक्शन कंपनी है जिसकी स्थापना 2013 में हुई थी। इन्होंनें शहरीकरण, मानवीय रिश्तों और मानवीय स्थिति की पेचीदगियों पर काल्पनिक और गैर–काल्पनिक फ़िल्में, और कई लघु फ़िल्में और वृत्तचित्र बनाए हैं। इनकी फ़िल्में विभिन्न अंतरराष्ट्रीय फ़िल्म समारोहों में प्रदर्शित की गई हैं।

Krishand Films, a film production company based out of Kerala was founded in 2013. It has created fiction and non-fiction films on urbanisation, human relationships and intricacies of the human condition, and has made several short films and documentaries. Its films have been screened at various international film festivals.

प्रशस्ति – पर्यावरण पर इंसानों के असर, इसके पारिस्थितिकी संतुलन को बिगाड़ने और इसके परिणामों के बारे में एक समसामयिक कथा।

Citation - A contemporary fable about human impact on the environment, disturbing its ecological balance and its repercussions.

गांधी एंड कम्पनी

सर्वश्रेष्ठ बाल फ़िल्म

Gandhi & Co.
Best Children's Film

स्वर्ण कमल | SWARNA KAMAL ₹ 1,50,000/-

Gujarati | **101 Min** | **Director:** Manish Saini | **Production Company:** MD Media Corp | **DOP:** Swathy Deepak **Music:** Kedar and Bhargav | **Editor:** Manish Saini | **Screenplay:** Manish Saini | **Sound Design:** Nirukt Dave **Costume Designer:** Pauravi Joshi | **Cast:** Reyaan Shah, Darshan Jariwala, Hemang Shah, Hiranya Zinzuwadia

कथासार – 11साल के मिंटू और मित्रा, अपनी शरारतों और बुजुर्ग व्यक्ति भरत भाई के साथ अपनी खास दोस्ती के लिए जाने जाते हैं। जहां वे दोनों चालाक और बेईमान हैं, वहीं बुजुर्ग व्यक्ति महात्मा गांधी की शिक्षाओं को मानने वाले हैं। एक अप्रत्याशित घटना मिंटू को, जो सुपरहीरो जांगो का प्रशंसक है, महात्मा गांधी को अपना आदर्श घोषित करने के लिए प्रेरित करती है। वह गांधी के हाव–भाव की नकल करना तो शुरू कर देता है लेकिन गांधी के मूल्यों से उसका दूर दूर तक का नाता नहीं रहता है। इस वजह से वह मुश्किल में पड़ जाता है । अब भरत भाई इन अनैतिक लड़कों को ईमानदारी और सद्भाव का एक मूल्यवान सबक सिखाने का बीड़ा उठाते हैं।

Synopsis - Mintoo and Mitra are 11-year old boys known for their collective potential towards mischief and their legendary friendship with old man, Bharat Bhai. They are clever but unscrupulous and the old man is an embodiment of Mahatma Gandhi's teachings. An unexpected happening corners Mintoo who is a Superhero Jango fan into proclaiming Mahatma Gandhi as his role model. He starts mimicking Gandhi's behavior but is nowhere close to imbibing Gandhi's values. This pushes him into troubled waters. So Bharat Bhai takes it upon himself to teach these unprincipled boys a valuable lesson in honesty and harmony.

परिचय | PROFILE

मनीष सैनी (Manish Saini)

मनीष सैनी एक पुरस्कार विजेता फ़िल्म निर्देशक, पटकथा लेखक, संपादक और निर्माता हैं। उनकी पहली फ़ीचर फ़िल्म 'धह' (2015) को ना सिर्फ समीक्षकों ने सराहा बल्कि इसका विभिन्न प्रतिष्ठित फ़िल्म समारोहो में प्रदर्शन हुआ इसने राष्ट्रीय पुरस्कार (2018) जीता। गुजराती में उनकी दूसरी फ़िल्म 'गांधी एंड कंपनी' (2020) दुनिया भर के फिल्म समारोहों में प्रशंसा बटोर रही है, जिसमें राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार (2023) भी शामिल है और उनकी लघु फ़िल्म 'गिद्ध' (2023) इस साल अकादमी पुरस्कारों की प्रतिस्पर्धा में है।

Manish Saini is an award winning film director, scriptwriter, editor and producer. His first feature film 'Dhh' (2015) gained critical acclaim, travelled to various prestigious film festivals and went on to win a National Award (2018). His second film 'Gandhi and Co.' (2020) in Gujarati is garnering accolades at film festivals worldwide, including a National Film Award (2023) and his short film 'Giddh' (2023) has qualified to compete at Academy Awards this year.

एम डी मीडिया कॉर्प (MD Media Corp)

एम डी मीडिया कॉर्प महेश दानन्नवर द्वारा स्थापित एक स्वतंत्र फ़िल्म प्रोडक्शन हाउस है और यह विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं, मुख्य रूप से गुजराती में सिनेमा निर्माण के लिए जाना जाता है। इनके प्रोडक्शन 'शू थायु' (2018) ने गुजराती सिनेमा में बॉक्स–ऑफिस पर इतिहास रचा और तीन गुजरात राज्य पुरस्कार जीते। इनके नवीनतम प्रोडक्शन गांधी एंड कंपनी को 69वें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार में सर्वश्रेष्ठ बाल फिल्म के पुरस्कार से नवाज़ा गया है।

MD Media Corp is an independent film production house founded by Mahesh Danannavar and is well known for producing cinematic works in various regional languages, predominantly in Gujarati. Its production 'Shu Thayu?!' (2018) went on to create box-office history in Gujarati cinema and won three Gujarat State Awards. Gandhi & Co. its latest production is the winner of the Best Children's Film at the 69th National Film Awards.

प्रशस्ति – युवा पीढ़ी में सर्वोत्तम नैतिक मूल्यों को आत्मसात करने का प्रयास करते हुए समकालीन समाज में बदलते मूल्यों के बारे में एक फ़िल्म।

Citation - A film about changing values in contemporary society while attempting to imbibe the best ethical values in the younger generation.

अनुर (आइज़ ऑन द सनशाइन)
सर्वश्रेष्ठ असमिया फ़िल्म

Anur (Eyes on the Sunshine)
Best Assamese Film

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 1,00,000/-

Assamese | **162 Min** | **Director:** Monjul Baruah | **Production Company: Producer:** Dr. Gopendra Mohan Das **DOP:** Sumon Dowerah | **Music:** Tarali Sarma | **Editor:** Twenchang | **Screenplay:** Monjul Baruah | **Story:** Anuradha Sharma Pujaree | **Sound Design:** Amrit Pritam Dutta | **Costume Designer:** Garima Saikia Garg | **Cast:** Dr. Jahanara Begum, Rajat Kapoor, Boloram Das, Rajashree Sarmah, Bidya Bharati, Udayan Duara, Aakhya J Kashyap

कथासार – अपने दिवंगत पति की यादों को समटे हुए, अपने घर में अकेली रह रही एक विधवा, एक दिन अपने घर के आंगन में एक अंजान शख़्स को धूप में बैठा हुआ पाती है। पहले पहल तो वह उस घुसपैठिए से घबरा जाती है, लेकिन बाद में उसके दमघोंटू अकेलेपन में वह शख़्स एक ताजगी लेकर आता है। लेकिन कहानी बताती है कि, वह शख़्स कितना भी पढ़ा लिखा और जागरुक क्यों ना हो, क्या अपने अकेलेपन से जूझती एक विधवा औरत के लिए, जो एक मां और दादी भी है, उस तक पहुंचना आसान होगा?

Synopsis - One morning a widow, who lives alone in the house that holds memories of her late husband, finds a gentleman sunning himself on her lawn. Initially fearful of the trespasser, it becomes a welcome intrusion in her claustrophobic loneliness. But however high the education, integrity and social status of the man be, it explores if a woman who is a widow, a mother and a grandmother is allowed to reach out for him to break free from her suffocating lonely widowhood?

परिचय | PROFILE

मोंजुल बरुआ (Monjul Baruah)

मोंजुल बरुआ एक पुरस्कार विजेता असमिया फ़िल्म निर्माता हैं। उनकी फ़िल्में जैसे 'अंतरीन: क्वेस्ट ऑफ सैंक्चुअरी' (2017), 'कानीन: ए सीक्रेट सच' (2019) और 'अनुर: आइज ऑन द सनशाइन' (2023) ने कई राष्ट्रीय और राज्य पुरस्कार और सराहनाएं बटोरी। इन्होंने 'अलोन इन द कॉम्बैट जोन' और 'जेनोफोबिया' जैसी डॉक्यूमेंट्री का भी निर्देशन किया है, जिसे खूब सराहा गया। उनकी नवीनतम डॉक्यूमेंट्री, 'पोरोभट' संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार विजेता, संगीतश्री प्रभात सरमा के जीवन पर आधारित है, जिन्होंने संगीत के माध्यम से असमिया लोक संस्कृति को पुनर्जीवित किया।

Monjul Baruah is an award-winning Assamese filmmaker. His films like 'Antareen: Quest of Sanctuary' (2017), 'Kaaneen: A Secret Search' (2019) and 'Anur: Eyes on the Sunshine' (2023) have won several national and state awards and accolades. He has also directed documentaries like 'Alone in the Combat Zone' and 'Xenophobia' that have garnered appreciation. His latest documentary, 'Porobhat' is on the life of Sangeet Natak Academy Award winner, Sangitshree Prabhat Sarma who revived Assamese folk culture through music.

डॉ. गोपेन्द्र मोहन दास (निर्माता) (Dr.Gopendra Mohan Das (Producer)

डॉ. गोपेंद्र मोहन दास तेजपुर, असम के एक सेवानिवृत्त डॉक्टर हैं। इन्होंने शिवम क्रिएशन के बैनर तले 'कैक्टस' (2016), 'कानीन: ए सीक्रेट सर्च' (2019) और 'अनुर: आइज ऑन द सनशाइन' (2023) जैसी चर्चित और प्रशंसित असमिया फीचर फिल्मों का निर्माण किया है।

Dr. Gopendra Mohan Das is a retired doctor from Tezpur, Assam. He has produced well recieved Assamese feature films like 'Cactus' (2016), 'Kaaneen: A Secret Search' (2019) and 'Anur: Eyes on the Sunshine' (2023) under the banner of Shivam Creation.

प्रशस्ति – एक अकेले घर में भावनाओं और यादों के थपेड़ों के साथ रह रही विधवा की कहानी जिसे प्यार हासिल होता है।

Citation - The story of a widow living alone in a house conflicted with emotions and memories finds love.

कालकोखो – हाउस ऑफ टाइम

सर्वश्रेष्ठ बांग्ला फ़िल्म

Kalkokkho - House of Time
Best Bengali Film

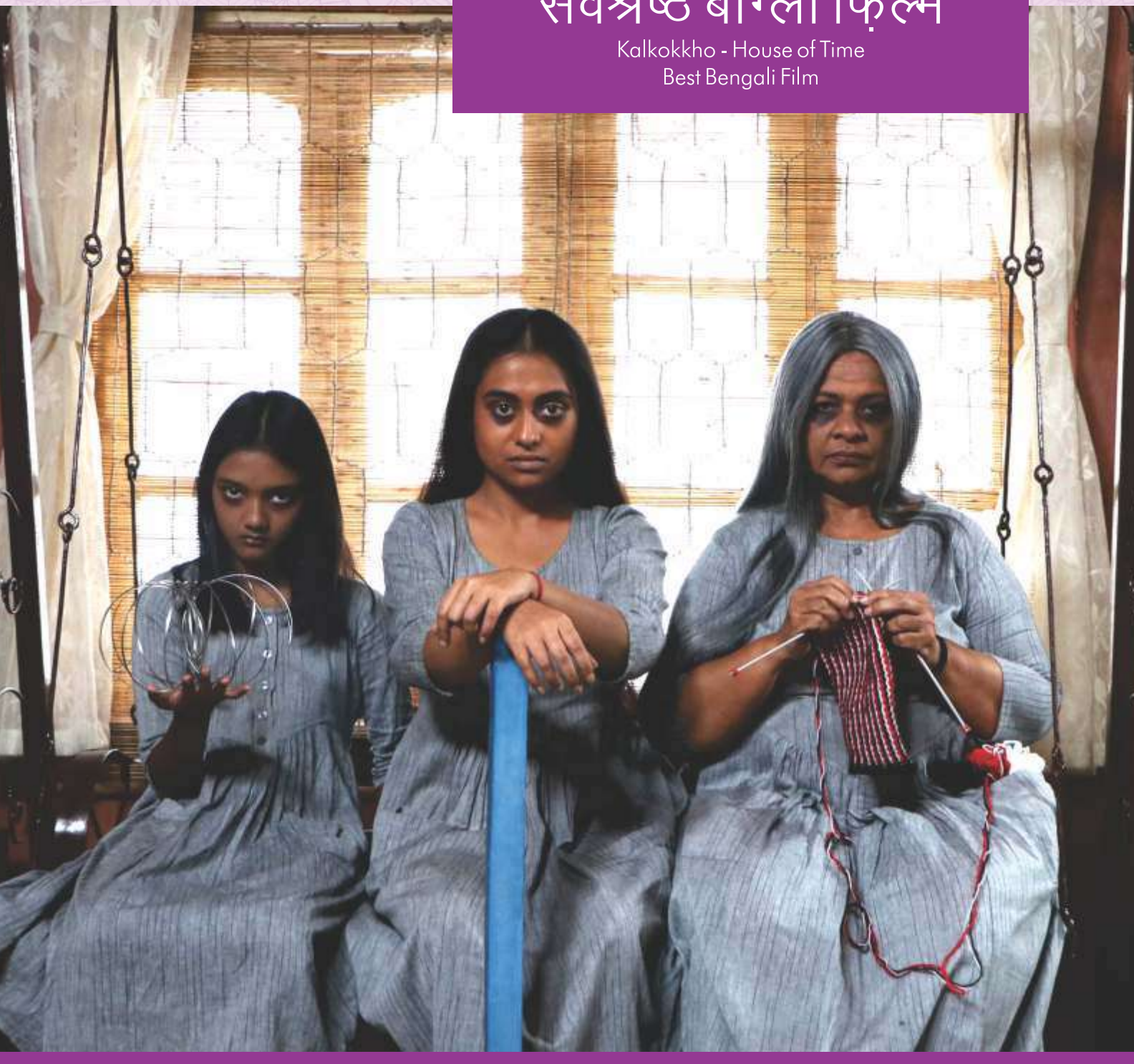

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 1,00,000/-

Bengali | **127 Min** | **Director:** Rajdeep Paul, Sarmistha Maiti | **Production Company:** Aurora Film Corporation Private Limited | **DOP:** Rana Pratap Karforma | **Music:** Avijit Kundu | **Editor:** Sarmistha Maiti & Rajdeep Paul **Screenplay:** Rajdeep Paul, Sarmistha Maiti | **Sound Design:** Adeep Singh Manki & Anindit Roy | **Costume Designer:** Rajdeep Paul, Sarmistha Maiti | **Cast:** Tannistha Biswas, Janardan Ghosh, Sreelekha Mukherji, Amit Saha, Ahana Karmakar

कथासार – एक संक्रामक महामारी के दौरान अपने परिवार को बचाने की जी तोड़ कोशिश में लगी एक युवा महिला एक उदासीन लेकिन कुशल डॉक्टर को बंधक बना लेती है। एक उजाड़ घर जहां पर तीन महिलाएं – एक विक्षिप्त युवा महिला, भूलने की बीमारी से पीढ़ित बूढ़ी महिला और एक अकेली युवा लड़की – रहती हैं, बंधक बनाए गए डॉक्टर को जल्द ही पता चलता है कि हालात अब उसकी समझ और हाथ से बाहर निकल चुके है, और वह उस जगह ही नहीं वक्त के जाल में भी फंस चुका है। फिल्म महामारी के डर को व्यक्त करने के लिए जादुई यथार्थवाद और अस्तित्वगत भय के मेल के साथ समय की बनावट की पड़ताल करती है।

Synopsis - An apathetic but adept doctor is taken hostage by a young woman in a desperate attempt to save her family during a contagious pandemic. Held captive in a desolate house with three women – a paranoid young woman, an amnesic old woman and a lonely young girl, the doctor soon discovers that forces beyond his comprehension are at play and that he might be trapped not only in space but also in time. The film explores the texture of time with a blend of magic realism and existential horror to express the dread of the pandemic.

परिचय | PROFILE

राजदीप पॉल और सरमिष्ठा मैती (Rajdeep Paul and Sarmistha Maiti)

राजदीप पॉल और सर्मिष्ठा मैती एक पुरस्कार विजेता फिल्म निर्माता–जोड़ी हैं, जिन्होंने कई वृत्तचित्र फिल्में, लघु कथा फिल्में, एनीमेशन और नई मीडिया फिल्में लिखी और निर्देशित की हैं। इनकी फिल्में जैसे 'कालकोखो' (2021), वृत्तचित्र जैसे – 'एट द क्रॉसरोड्स – नोंडन बागची लाइफ एंड लिविंग' (2013), 'मृणाल सेन – एन एरा इन सिनेमा' (2016), और जैसी लघु फिल्म जैसे –'कायंतर' (2019) 'मलाई' (2018), 'एंड द रेन्स शैल कम' (2017) और 'द वूमन...एंड द मैन' (2016) ने कई अंतरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय मंचों पर पुरस्कार और प्रशंसाएं जीती हैं।

Rajdeep Paul and **Sarmistha Maiti** are an award-winning filmmaker-duo who have written and directed several documentary films, short fiction films, animation and new media films. Their films like 'Kalkokkho' (2021), documentaries like 'At the Crossroads – Nondon Bagchi Life and Living' (2013), 'Mrinal Sen – An Era in Cinema' (2016), and short fictions like 'Kayantar' (2019) 'Malai' (2018), 'And the Rains Shall Come' (2017) and 'The Woman...and the Man' (2016) have won several international and national awards and accolades.

औरोरा फिल्म कॉर्पोरेशन (Aurora Film Corporation Private Limited)

औरोरा फ़िल्म कॉर्पोरेशन सत्यजीत रे, ऋत्विक घटक और अन्य जैसे दिग्गज फिल्म निर्माताओं की फ़िल्मों के निर्माण और वितरण के लिए जाना जाता है। राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता निर्देशक अंजन बोस इसके प्रमुख हैं।

Aurora Film Corporation is known for producing and distributing films of legendary filmmakers such as Satyajit Ray, Ritwik Ghatak and others. It is headed by National Award-winning director Anjan Bose.

प्रशस्ति – एक संक्रामक महामारी के दौरन, एक डॉक्टर को एक महिला द्वारा बंधक बना लिया जाता है और वह खुद को वक्त और खालीपन के बीच फंसा हुआ पाता है।

Citation - During a contagious pandemic, a doctor is taken hostage by a young woman and finds himself trapped in space and time.

लास्ट फ़िल्म शो (छेल्लो शो)
सर्वश्रेष्ठ गुजराती फ़िल्म

Last Film Show (Chhello Show)
Best Gujarati Film

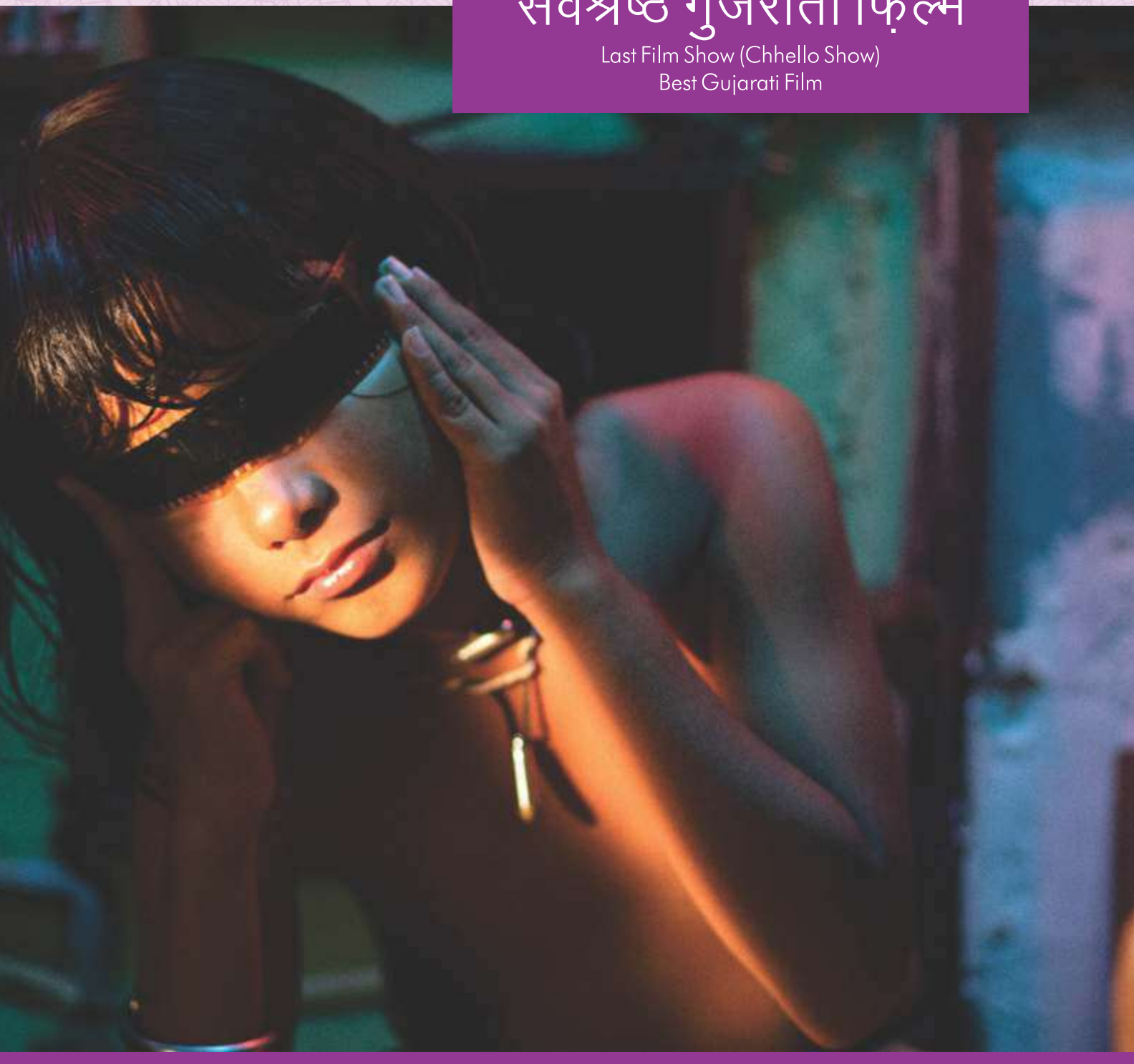

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 1,00,000/-

Gujarati | **112 Min** | **Director:** Pan Nalin | **Production Company:** Jugaad Motion Pictures | **DOP:** Swapnil Sonawane | **Music:** Cyril Morin | **Editor:** Pavan Bhat & Shreyas Beltangdy | Screenplay: Pan Nalin **Sound Design:** Gilles Benardeau & Mikael Barre | **Costume Designer:** Sia Seth | **Cast:** Bhavin Rabari, Richa Meena, Bhavesh Shrimati, Dipen Raval, Rahul Koli, Vikas Bata, Vijay Mer, Kishan Parmar, Shoban Malwa

कथासार – 9 साल का समय, अपने परिवार के साथ भारत के दूरदराज के गांव में रहता है, वह पहली बार जब फ़िल्म देखता है और पूरी तरह से उसी में खो जाता है। अपने पिता की इच्छा के खिलाफ, वह रोज सिनेमाघर जाकर फिल्म देखने लगता है, बल्कि प्रोजेक्टर चलाने वाले से भी दोस्ती गांठ लेता है, जो उसे मुफ्त में फ़िल्म दिखाने लगता है। वह जल्दी इस नतीजे पर पहुंचता है कि कहानियां रोशनी बनती हैं, रोशनी फ़िल्म बनाती है, और फ़िल्म सपने। समय और उसके दोस्त 35 एमएम फ़िल्म के प्रोजेक्शन को हासिल करने के लिए रोशनी को पकड़ने के लिए धरती आकाश एक कर देते हैं, लेकिन जल्दी ही उन्हें ऐसा विकल्प चुनने को मजबूर होना पड़ता है जिससे सब का दिल टूट जाता है ।

Synopsis - Samay, a 9-year-old boy living with his family in a remote village in India discovers films for the first time and is absolutely mesmerized. Against his father's wishes, he returns to the cinema hall day after day to watch more films, and even befriends the projectionist, who lets him watch movies for free. He quickly figures out that stories become light, light becomes films, and films become dreams. Samay and his friends move heaven and earth to catch and project light to achieve a 35mm film projection but soon are forced to make heartbreaking choices.

परिचय | PROFILE

पैन नलिन (Pan Nalin)

पैन नलिन (उर्फ नलिन पंड्या) एक पुरस्कार विजेता फिल्म निर्माता हैं, जो 'समसारा' (2001), 'वैली ऑफ फ्लावर्स' (2006), 'एंग्री इंडियन गॉडेसेस' (2015) और छैलो शो (2021) जैसी आकर्षक फिल्मों के लिए जाने जाते हैं। 'समसारा' दुनिया भर में एक बड़ी व्यावसायिक और आलोचनात्मक सफलता थी जिसने उन्हें तीस से अधिक अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार दिलाए। उनकी नवीनतम फ़िल्म, 'छेल्लो शो' विश्व स्तर पर आलोचकों की प्रशंसा और सराहनाएं बटोर रही है, जिसमें 69वें राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कारों में दो राष्ट्रीय पुरस्कार भी शामिल हैं।

Pan Nalin (aka Nalin Pandya) is an award winning filmmaker known for his eclectic and visually striking films like 'Samsara' (2001), 'Valley of Flowers' (2006), 'Angry Indian Goddesses' (2015) and Chhello Show (2021). 'Samsara' was a massive commercial and critical success worldwide that won him thirty-plus international awards. His latest film, 'Chhello Show' is garnering critical acclaim and numerous accolades globally, including two National Awards at the 69th National Film Awards.

जुगाड़ मोशन पिक्चर्स (Jugaad Motion Pictures)

जुगाड़ मोशन पिक्चर्स एक पूरी तरह से एकीकृत वैश्विक मीडिया और संचार कंपनी है जो फ़िल्म, टेलीविजन, डिजिटल प्लेटफार्मों के लिए सामग्री और कहानियां तैयार करती है। मूल रूप से यह फिक्शन फ़िल्मों और संगीत वीडियो पर अपने काम के लिए जाने जाते हैं, अब यह मीडिया के सभी प्लेटफार्मों पर पुरस्कार विजेता सामग्री तैयार करता है। इनके कुछ उल्लेखनीय प्रोडक्शन में 'थ्री एंड अ हाफ', 'भाऊ' और 'छेल्लो शा' हैं, जिसने कई पुरस्कार और प्रशंसाएं हासिल की हैं।

Jugaad Motion Pictures is a fully integrated global media and communications company producing content and stories for film, television, digital platforms as well as immersive experiences and events. Originally known for their work on narrative fiction films and music videos, the now produces award-winning content across all platforms of media. Some of their notable productions like 'Three and a Half', 'Bhau' and 'Chhello Show' have garnered several awards and accolades.

प्रशस्ति – एक दूरदराज के गांव में रहने वाले छोटे लड़के की कहानी जो फिल्म का इस कदर शौकीन है कि वह खुद का प्रोजेक्टर बनाने का संकल्प लेता है।

Citation - The story of a young boy in a remote village passionate about films and determined to make his own projector.

सरदार उधम
सर्वश्रेष्ठ हिन्दी फ़िल्म
Sardar Udham | Best Hindi Film

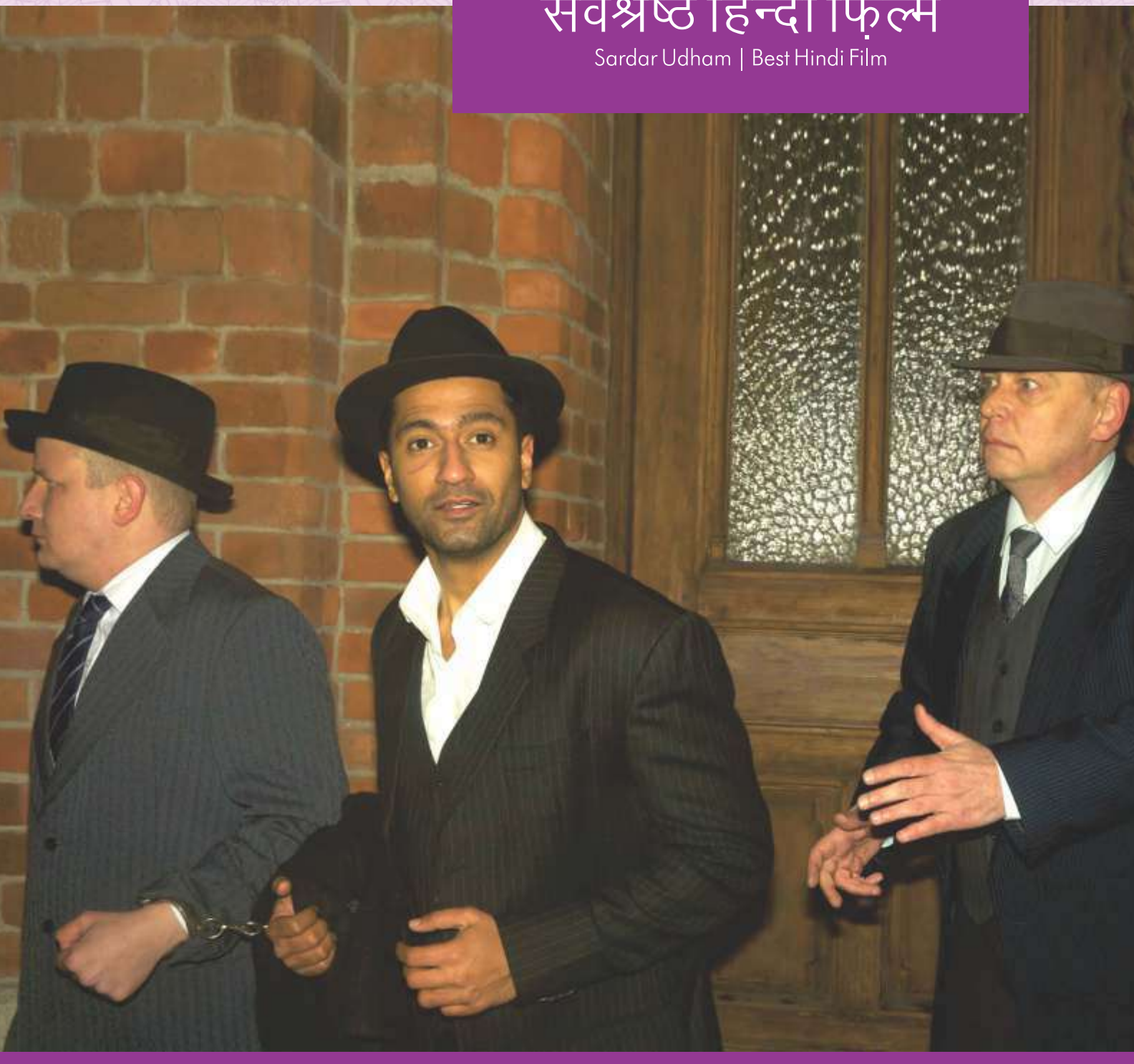

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 1,00,000/-

Hindi | **164 Min** | **Director:** Shoojit Sircar | **Production Company:** Rising Sun Films, Kino Works **DOP:** Avik Mukhopadhayay | **Music:** Shantanu Moitra | **Editor:** Chandrashekhar Prajapati | **Screenplay:** Suvendu Bhattacharjee & Ritesh Shah | **Sound Design:** Dipankar Jojo Chaki & Nihar Ranjan Samal | **Costume Designer:** Veera Kapur Ee | **Cast:** Vicky Kaushal, Shaun Scott, Stephen Hogan, Amol Parashar, Kirsty Averton

कथासार - जब जनरल डायर ने 13 अप्रैल 1919 को ब्रिटिश राज के खिलाफ जलियांवाला बाग में एक शांतिपूर्ण सभा में 20,000 निहत्थे लोगों पर 1650 राउंड गोलियां चलाकर खून खराबा कर दिया, तो इस घटना से 20 वर्षीय युवा उधम को गहरा आघात लगता और वह बदला लेने का संकल्प लेता है। फ़िल्म उधम सिंह की कहानी बताती है, जिन्होंने 21 साल बाद मार्च 1940 में लंदन में माइकल ओश्डायर को गोली मारकर जलियांवाला बाग नरसंहार का बदला लिया था। अपने मकसद के साथ अकेले ही जूझते हुए, उन्होंने खुशी–खुशी अपने प्राणों की आहुति दे दी।

Synopsis - A young 20-year-old Udham was deeply scarred and resolved revenge when General Dyer created a blood bath on 13th April 1919 by opening 1650 rounds of fire on 20,000 unarmed people at a peaceful assembly at Jallianwala Bagh against the British Raj. The film narrates the story of Udham Singh who avenged the Jallianwala Bagh massacre 21 years later by shooting Michael O'Dwyer in London, in March 1940. With a single minded pursuit, he gladly sacrificed his life.

परिचय | PROFILE

शूजित सरकार (Shoojit Sircar)

शूजीत सरकार एक राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता भारतीय फ़िल्मकार,, निर्देशक और निर्माता हैं जिन्हें, यहां (2005), विक्की डोनर (2012), मद्रास कैफे (2013), पीकू (2015), अक्टूबर (2018), गुलाबो सिताबो (2020) और सरदार उधम (2021) जैसी फिल्मों के लिए जाना जाता है। इन्होंनें क्षेत्रीय फ़िल्मों का भी निर्माण किया है और इन्हें टाइम्स ऑफ इंडिया समूह के लिए कान्स पुरस्कार विजेता 'लीड इंडिया कैंपेन' जैसी पुरस्कार विजेता विज्ञापन फ़िल्मों के साथ–साथ गुजरात टूरिज्म, एयरटेल, कोका–कोला और टाटा स्काई के अभियानों के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिली है।

Shoojit Sircar is a national and international award-winning Indian filmmaker, director and producer best known for his films like Yahaan (2005), Vicky Donor (2012), Madras Café (2013), Piku (2015), October (2018), Gulaboo Sitabo (2020) and Sardar Udham (2021). He has also produced regional films and is recognized internationally for award winning ad films like the Cannes award-winning 'Lead India Campaign' for the Times of India group as well as campaigns for Gujarat Tourism, Airtel, Coca-Cola and Tata Sky.

राइजिंग सन फ़िल्मस (Rising Sun Films)

फ़िल्मकार **शूजीत सरकार** और निर्माता **रोनी लाहिरी** द्वारा स्थापित राइजिंग सन फ़िल्म्स, विज्ञापन फ़िल्मों और फ़ीचर फ़िल्मों में विशेषज्ञता रखने वाला एक प्रोडक्शन हाउस है। इसने 400 से अधिक विज्ञापन फ़िल्में और कई पुरस्कार विजेता फ़ीचर फ़िल्में बनाई हैं, और मनोरंजन उद्योग में प्रशंसा अर्जित की है।

Rising Sun Films, founded by filmmaker Shoojit Sircar and producer **Ronnie Lahiri**, is a production house specialising in ad films and feature films. It has produced over 400 ad films and several award-winning feature films, earning accolades in the industry.

किनो वर्क्स एक प्रोडक्शन हाउस है जिसे सिनेमा के माध्यम से कहानी कहने का जुनून है। यह दर्शकों को प्रेरित और मनोरंजन करने वाली फिल्में बनाने और वितरित करने के लिए राइजिंग सन फिल्म्स और शील कुमार के बीच एक साझेदारी है।

Kino Works is a production house with a passion for storytelling through cinema. It is a partnership between Rising Sun Films and Sheel Kumar to create and distribute films that inspire and entertain audiences.

प्रशस्ति – सरदार उधम सिंह के जीवन से प्रेरित फ़िल्म, जो जलियावांला बाग का बदला लेने वाले स्वतंत्रता सेनानी की मार्मिक कहानी बयान करती है।

Citation - The biographical film chronicles the inspiring life of Sardar Udham Singh, a freedom fighter seeking reprisal of the Jallianwala Bagh Massacre.

777 चार्ली
सर्वश्रेष्ठ कन्नड़ फ़िल्म

777 Charlie
Best Kannada Film

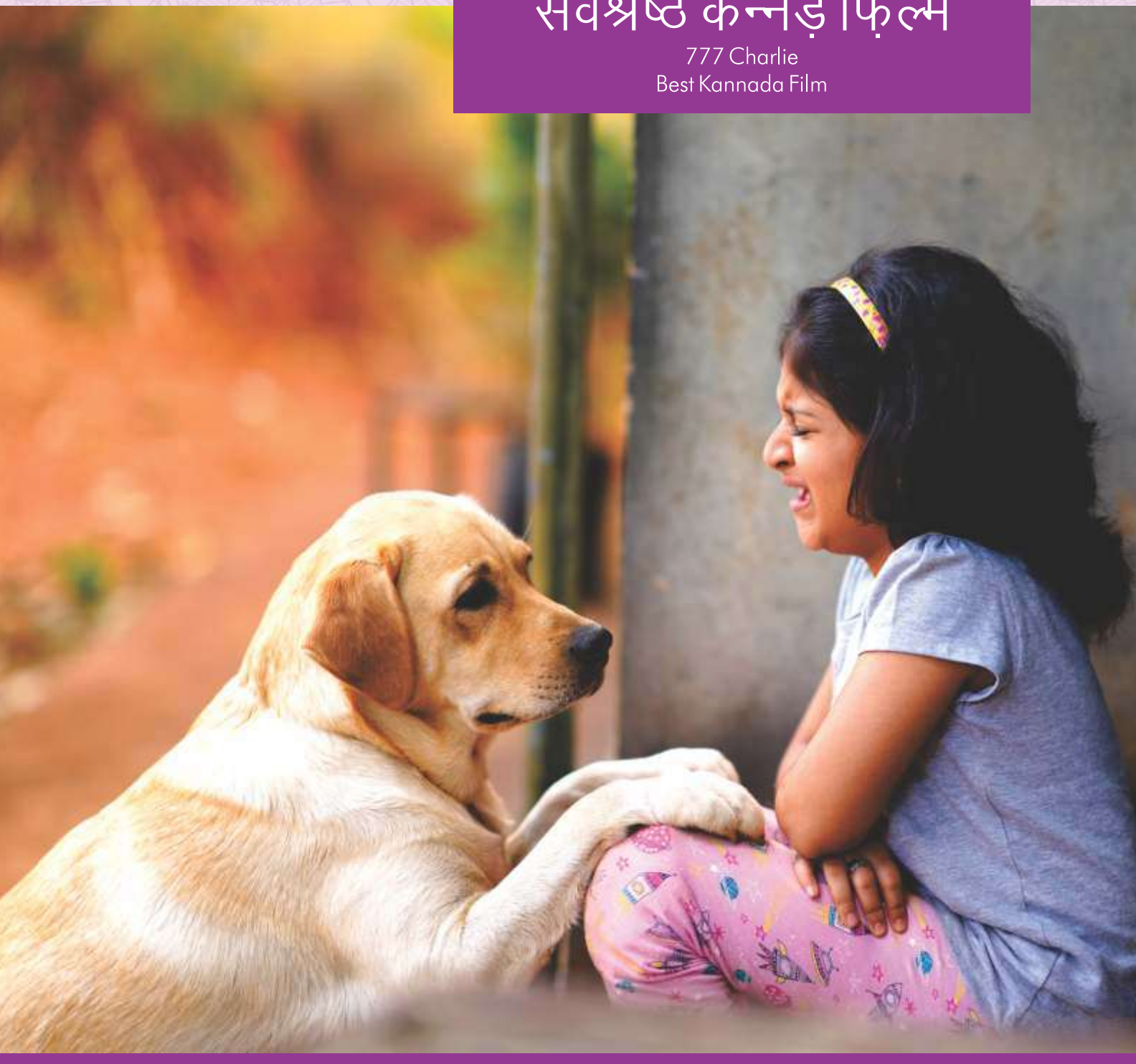

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 1,00,000/-

Kannada | **166 Min** | **Director:** Kiranraj K | **Production Company:** Paramvah Studios Pvt Ltd | **DOP:** Arvind S Kashyap | **Music:** Nobin Paul | **Editor:** Pratheek Shetty | **Screenplay:** Kiranraj K | **Sound Design:** M R Rajakrishnan **Costume Designer:** Pragathi Rishab Shetty | **Cast:** Rakshit Shetty, Sangeetha Sringeri, Raj B Shetty, Bangalore Nagesh, H G Somashekhar Rao, Bobby Simha, Gopalakrishna Deshpande, Mime Ramdas, Abhijith Mahesh, Vijay V Singh, Danish Sait, Bhargavi Narayan, Harini Shreekanth, Sharvari V, Praanya P Rao, Skanda Tejas

कथासार – धर्मा अनाथ और अकेला है, जो एक फैक्ट्री में काम करता है । वह लड़ता है, सिगरेट–शराब पीता है और पूरा दिन टीवी पर चार्ली चौप्लिन को देखता रहता है, वह अपनी नकारात्मक जिंदगी में फंसा हुआ है। चार्ली नाम का एक लैब्राडोर कुत्ते का बच्चा अपने ब्रीडर के घर से भाग निकलता है, क्योंक वहां पर कुत्तों को पिंजरे में रखा जाता है और यातनाएं दी जाती हैं, चार्ली बचता हुआ धर्मा के घर पहुंच जाता है। चार्ली धर्मा के विपरीत बहुत शरारती और ऊर्जा से भरा हुआ है। धर्मा की जिंदगी में आकर चार्ली उसे जिंदगी का नया नजरिया देता है, इसके बाद आगे होता है, दोनों का एक रोमांचक सफर ।

Synopsis - Dharma is an orphan and a loner who works in a factory. He fights, smokes, drinks and watches Charlie Chaplin on television all day, and is stuck in a rut in his negative and lonely lifestyle. A labrador puppy named Charlie who escapes from the house of a breeder where many dogs are caged and tortured lands up in his colony and in his home. Charlie is naughty and energetic; a complete contrast to Dharma's character. Charlie enters Dharma's life giving him a completely new perspective towards it and what follows is a roller coaster adventure for both.

परिचय | PROFILE

किरणराज.के (Kiranraj K.)

किरणराज के. एक भारतीय फिल्म निर्देशक और वृत्तचित्र फिल्म निर्माता हैं, जो कन्नड़ सिनेमा में अपने काम के लिए जाने जाते हैं। उन्होंने 'कावला', 'कनासु', 'कबीना हाल' और 'द यक्षगान पपेट्स' जैसी लघु फ़िल्मों, वृत्तचित्रों और संगीत एल्बमों का निर्देशन किया है। इनके निर्देशन में बनी पहली फ़ीचर फ़िल्म '777 चार्ली' (2022) पूरे भारत में पांच भाषाओं में रिलीज हुई थी और इसे आलोचकों और दर्शकों दोनों से शानदार प्रशंसा मिली, साथ ही कई अंतरराष्ट्रीय फ़िल्म समारोहों में भी पहचान मिली।

Kiranraj K. is an Indian film director and documentary filmmaker known for his work in Kannada cinema. He has directed short films, documentaries and music albums like 'Kaavala', 'Kanasu', 'Kabbina Haalu' and 'The Yakshagana Puppets'. His directorial debut, the feature film '777 Charlie' (2022) was released in five languages across India and received superlative accolades from both critics and audiences, as well as garnered recognition at several international film festivals.

परमवाह स्टूडियोज़ (Paramvah Studios)

परमवाह स्टूडियोज़ मूवी प्रोडक्शन हाउस है जिसकी स्थापना 2015 में प्रतिष्ठित दक्षिण भारतीय अभिनेता रक्षित शेट्टी ने की थी। जो अपने समीक्षकों द्वारा प्रशंसित और व्यावसायिक रूप से सफल फ़िल्मों के लिए जाना जाता है, जिन्होंने पुरस्कार और प्रशंसाएं जीती हैं, इसने बॉक्स ऑफिस पर 'किरिक पार्टी', 'हंबल पॉलिटिशियन नोगराज', 'काथियोंडु शूरुवागिडे', 'भीम सेना नाला महाराजा', 'सकुटुंबा समेथा' और '777 चार्ली' जैसी हिट फ़िल्में बनाई हैं।

Paramvah Studios is a movie production house founded in 2015 by the distinguished South Indian actor Rakshit Shetty. Known for its critically acclaimed and commercially successful movies that have won awards and accolades, it has produced box office hit films like 'Kirik Party', 'Humble Politician Nograj', 'Katheyondu Shuruvaagide', 'Bheema Sena Nala Maharaja', 'Sakutumba Sametha' and '777 Charlie'.

प्रशस्ति – नकारात्मक और एकाकी जिंदगी जी रहे व्यक्ति को जीवन में तब मायने मिलते हैं जब उसके जीवन में एक कुत्ते का छोटा बच्चा आता है।

Citation - A man stuck in a negative and lonely lifestyle finds meaning in life when a pup comes into his life.

समानान्तर
सर्वश्रेष्ठ मैथिली फ़िल्म

Samanantar (The Parallel)
Best Maithili Film

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 1,00,000/-

Maithili | **103 Min** | **Director:** Niraj Kumar Mishra | **Production Company:** Anirati Films | **DOP:** Archit Mishra & Pulkit Rathi | **Music:** Abhijeet Hegde Patil | **Editor:** Afzal Shaikh | **Screenplay:** Niraj Kumar Mishra | **Sound Design:** Aroon Jyoti Sarmah | **Costume Designer:** Kundan Kumar Verma & Nitin Koul | **Cast:** Anurag Thakur, Ashok Kumar Verma, Narendra Kumar Tuntun, Shashwat Anand

कथासार – झकझोर कर रख देने वाली चार दार्शनिक और आलौकिक कहानियों का संग्रह, जिसमें प्रत्येक कहानी अपने आप में अलग होकर भी जीवन और कर्म के दार्शनिक सूत्र में बंधी हुई है। प्रत्येक कहानी किसी ना किसी सामाजिक चिंता पर बात करती है, जैसे, बेरोजगारी का मनोवैज्ञानिक प्रभाव, हद से अधिक लालच और झूठ की निरंतरता, बाल शोषण और अत्यधिक गुस्से से उपजा गैरजिम्मेदाराना रवैया। फिल्म अपने नाम के अनुसार दिखाती है कि किस तरह बुरे कर्मों के साथ अज्ञात ताकतों की एक समानान्तर दुनिया खड़ी हो जाती है।

Synopsis - A philosophical and supernatural anthology of four hard-hitting stories, each unique but all entwined with the common and universal philosophy of life and karma. Each story addresses a major social concern like - the extreme psychological impact of unemployment, insatiable greed and constant lies, child abuse, and behavioural irresponsibility as a result of extreme anger. As 'samanantar' means 'the parallel', metaphorically the film explores the concept that with bad karma, the unknown forces of the parallel realms begin to eventuate.

परिचय | PROFILE

नीरज कुमार मिश्रा (Niraj Kumar Mishra)

नीरज कुमार मिश्रा एक स्वतंत्र फिल्म निर्माता हैंय टेलीविजन, वेब श्रृंखला और फिल्मों में एक निर्देशक, पटकथा लेखक हैं। इन्होंने शीर्ष टेलीविजन चैनलों पर 25 से अधिक शो के 2000 एपिसोड किए हैं और 'गांधी: द साइलेंट गन' जैसी पुरस्कार विजेता लघु फिल्में बनाई हैं। इन्होंने फिल्म 'बागी 2' (2018) के साथ एक पटकथा लेखक के रूप में और 'समानांतर' (2021) के साथ एक निर्देशक और निर्माता के रूप में शुरुआत की, जिसने कई पुरस्कार और प्रशंसाएं हासिल की हैं।

Niraj Kumar Mishra is an independent filmmaker; a director, screenplay writer and showrunner across television, web series and films. He has done more than 25 shows canning 2000 episodes across top television channels and made award winning short films like 'Gandhi: The Silent Gun'. He debuted as a screenplay writer with the film 'Baaghi 2' (2018) and as a director and producer with 'Samanantar' (2021) that has garnered multiple awards and accolades.

अनिराति फ़िल्मस (Anirati Films)

अनिराति फ़िल्म्स एक फिल्म और टेलीविजन प्रोडक्शन हाउस है, जिसकी स्थापना फिल्म निर्माता नीरज कुमार मिश्रा ने की थी, जिसका एकमात्र उद्देश्य ऐसे प्रोजेक्ट तैयार करना था जो भारतीय दर्शकों की बदलती संवेदनशीलता को दर्शाने के मामले में मील का पत्थर साबित हों। तब से, यह कई क्लासिक टेलीविजन शो, वेब–सीरीज और फिल्मों के रचनात्मक सलाहकार रहे हैं। 'समानांतर' इनका पहला एकल प्रोडक्शन है जो वर्तमान में फिल्म फेस्टिवल सर्किट का दौरा कर पुरस्कार और प्रशंसा प्राप्त कर रहा है।

Anirati Films is a film and television production house founded by filmmaker Niraj Kumar Mishra with the sole intention of generating landmark projects that reflect the changing sensitivities of the Indian audience. Since then, it has been a creative consultant to several classic television shows, web-series and movies. 'Samanantar' is its first solo production currently touring the film festival circuit garnering awards and accolades.

प्रशस्ति – जीवन और कर्म के बारे में कहानियों का एक दार्शनिक और अलौकिक संकलन।

Citation - A philosophical and supernatural anthology of stories about life and karma.

होम
सर्वश्रेष्ठ मलयालम फ़िल्म

Home
Best Malayalam Film

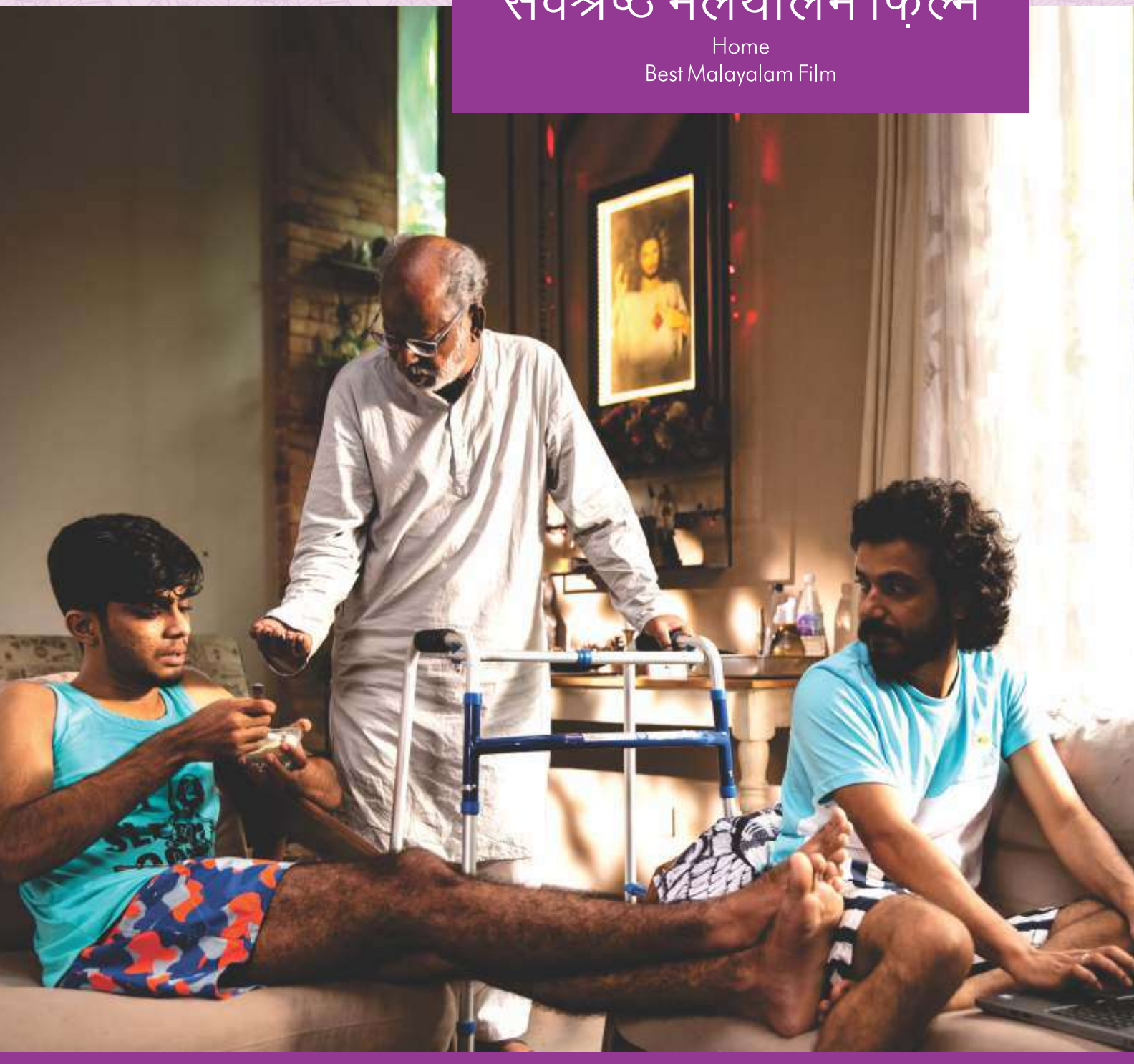

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 1,00,000/-

Malayalam | **161 Min** | **Director:** Rojin Thomas | **Production Company:** Friday Film House Pvt Ltd | **DOP:** Neil D Cunha | **Music:** Rahul Subramanian | **Editor:** Prejish Prakash | **Screenplay:** Rojin Thomas | **Sound Design:** Dhanush Nayanar | **Costume Designer:** Akshaya Premnath | **Cast:** Sreenath Bhasi, Indrans, Manju Pillai

कथासार – ओलिवर ट्विस्ट एक अधेड़ उम्र का शख्स है जिसकी नई तकनीक से दोस्ती नहीं है, वह एक स्मार्टफोन के माध्यम से अपने दो बेटों के साथ एक सार्थक संबंध स्थापित करने की कड़ी कोशिश करता है। हालाँकि, जब वह बुरी तरह विफल हो जाता है, तो वह उनके साथ जुड़ने के लिए अन्य तरीकों की तलाश करने लगता है।

Synopsis - Oliver Twist is a technologically-challenged middle-aged man who tries hard to establish a meaningful connection with his two sons through a smartphone. However, when that fails miserably, he desperately looks for other ways to bond with them.

परिचय | PROFILE

रोजिन तोमस (Rojin Thomas)

रोजिन तोमस मलयालम फिल्म उद्योग के एक पुरस्कार विजेता फिल्म निर्देशक और पटकथा लेखक हैं। निर्देशक के रूप में इनकी पहली फिल्म, 'फिलिप्स एंड द मंकी पेन' (2013) ने दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया और तीन केरल राज्य फिल्म पुरस्कार जीते। इनकी दूसरी फिल्म, 'जो एंड द बॉय' (2015) ने दो केरल राज्य फ़िल्म पुरस्कार जीते और 'होम' (2021) ने व्यापक आलोचनात्मक प्रशंसा और प्रशंसा हासिल की, जिसमें 69वें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार में दो पुरस्कार भी शामिल हैं।

Rojin Thomas is an award winning film director and scriptwriter in the Malayalam film industry. His debut film as a director, 'Philips and the Monkey Pen' (2013) captivated the audiences and won three Kerala State Film Awards. His second film, 'Jo and the Boy' (2015) won two Kerala State Film Awards and 'Home' (2021) has garnered widespread critical acclaim and accolades, including two awards at the 69th National Film Awards.

फ्राइडे फ़िल्म हाउस (Friday Film House)

फ्राइडे फ़िल्म हाउस एक फ़िल्म निर्माण कंपनी है जो 2012 में अपनी स्थापना के बाद से मलयालम फिल्म उद्योग में अच्छी फ़िल्मों की बदौलत सुर्खियां बटोरती रही है। इनके खाते में 18 फ़िल्मों की अहम संख्या है और यह नए निर्देशकों और अन्य अच्छी प्रतिभाओं की खोज और परिचय के लिए जानी जाती है। इनके सिनेमाई प्रयास को इस मुकाम पर पहुंचाने के पीछे फिल्म उद्योग के दिग्गज और दूरदर्शी विजय बाबू हैं।

Friday Film House is a film production company that has been making significant waves in the Malayalam film industry since its inception in 2012. It has delivered a remarkable tally of 18 films and is known for discovering and introducing new directors and other good talent. At the helm of its cinematic endeavour is Vijay Babu, a luminary and visionary in the film industry.

प्रशस्ति – एक अधेड़ उम्र का व्यक्ति एक स्मार्ट फोन के जरिए अपने बेटे के साथ कुछ सार्थक संबंध स्थापित करने की बहुत कोशिश करता है।

Citation - A middle aged man tries hard to establish a meaningful connection with his sons through a smart phone.

इखोगी यम
सर्वश्रेष्ठ मणिपुरी फ़िल्म

Eikhoigi Yum (Our Home)
Best Manipuri Film

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 1,00,000/-

Manipuri | **88 Min**| **Director:** Mayanglambam Romi Meitei | **Producer:** Chingsubam Sheetal, Romi Meitei **DOP:** Ningombam Johni Meitei & Kangabam Bikram Singh | **Editor:** Ningombam Johni Meitei | **Screenplay:** Romi Meitei | **Sound Design:** Debajit Gayan | **Costume Designer:** Sangita | **Cast:** Laishram Priyojit, Ningthoujam Nganthoibi, Sorri Senjam

कथासार – चाओरेन मणिपुर में लोकताक झील की एक पृथक मछुआरा समुदाय से ताल्लुक रखता है, और स्कूल में उत्कृष्ट प्रदर्शन करके अपने विशिष्ट अस्तित्व का सबसे अच्छा उपयोग करता है। स्कूल जाने के लिए वह रोजाना जिस डोंगी का उपयोग करता है, जब उसे उसके पिता की बीमारी के कारण बेचना पड़ता है, तब भी उसका जोश कम नहीं होता है। वह अपनी तैरती हुई झोपड़ी से अपने स्कूल तक की लंबी दूरी तैरकर तय करता है। लेकिन जब सरकार चाओरेन के परिवार को अपना घर छोड़ने की मांग करते हुए एक बेदखली नोटिस जारी करती है, तो उसके सपने एक विस्थापित व्यक्ति की पीड़ा के साथ रह जाते हैं।

Synopsis - Chaoren belongs to an isolated fishing community of the Loktak Lake in Manipur, and makes the best use of his exclusive existence by excelling in school. When the canoe he uses every day to attend school has to be sold because of his father's illness, his spirit is not dampened. He beats the long distance from his floating shanty hut to his school by swimming his way through. But when the Government issues an eviction notice demanding Chaoren's family to leave their home, his dreams are left with an angst of a displaced person.

परिचय | PROFILE

रोमी मैईतेई (Romi Meitei)

रोमी मैईतेई मणिपुरी फ़िल्म जगत के एक चर्चित, पुरस्कार विजेता फ़िल्मकार, निर्देशक और गीतकार हैं। इन्होंने बॉक्स–ऑफिस पर कई हिट फ़िल्में दी हैं और विभिन्न राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय फ़िल्म समारोहों में कई प्रशंसा प्राप्त की हैं, जिनमें प्रतिष्ठित राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार, एफआईपीआरईएससीआई और एनईटीपीएसी पुरस्कार के साथ–साथ कई मणिपुर राज्य फ़िल्म पुरस्कार भी शामिल हैं। यह ममी थावन फाउंडेशन के अध्यक्ष के रूप में कार्य करते हैं जिसका उद्देश्य मणिपुर के कल्याण के लिए काम करना है।

Romi Meitei is an award winning filmmaker; a director and a lyricist in the Manipuri film industry. He has given several box-office hits and is a recipient of many accolades at various national and international film festivals, including the prestigious National Film Awards, FIPRESCI and NETPAC award, along with several Manipur State Film Awards. He serves as the Chairman of Mami Thawan Foundation that aims to work for the welfare of Manipur.

प्रोडक्शन कंपनी (Chingsubam Sheetal)

शीतल चिंगसुबम पेशे से एक इंजीनियर हैं और उन्हें फ़िल्म निर्माता के रूप में कहानी कहने का शौक है। इन्होंने 'योर्स फेथफुली' (2018), 'मोत्सिलाबा मिंगसे' (2020) और 'इखोगी यम' (2022) जैसी कई पुरस्कार विजेता फ़िल्मों का निर्माण किया है, और सार्थक, परिवर्तनकारी फ़िल्मों का निर्माण जारी रखने की इच्छा रखती हैं।

Chingsubam Sheetal is an engineer by profession with a passion for storytelling as a film producer. She has produced multiple award winning films like, 'Yours Faithfully' (2018), 'Motsillaba Mingse' (2020) and 'Eikhoigi Yum' (2022), and aspires to continue producing meaningful, transformative films.

प्रशस्ति – एक पृथक मछुआरा समुदाय के लडके की कहानी जो शिक्षा के लिए बेहद संघर्ष करता है।

Citation - The story of a boy from an isolated fishing community who struggles hard for an education.

एकदा काय झालं
सर्वश्रेष्ठ मराठी फ़िल्म

Ekda Kay Zala | Best Marathi Film

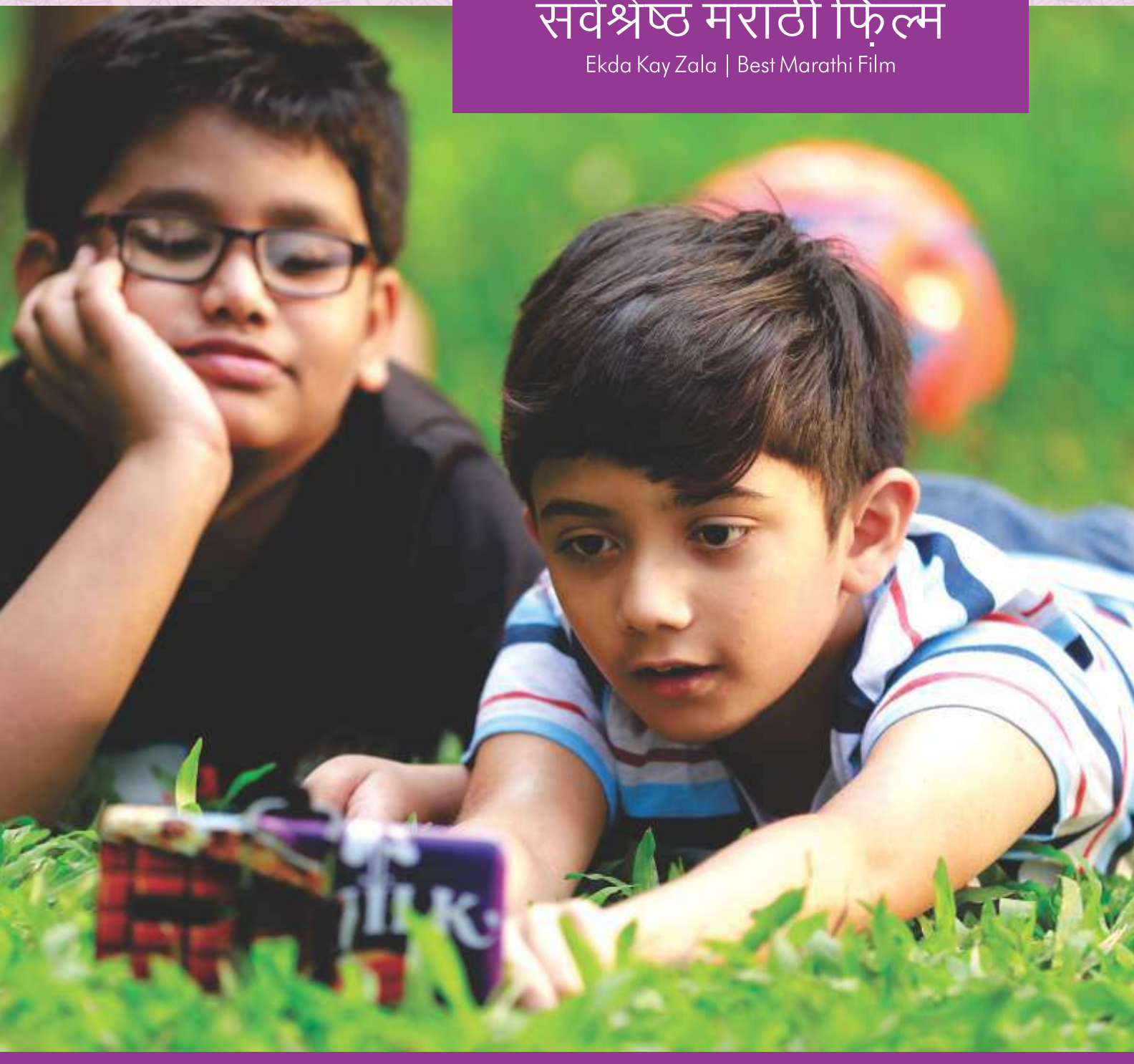

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 1,00,000/-

Marathi | **138 Min** | **Director:** Dr. Saleel Shrinivas Kulkarni | **Production Company:** Gajavadana & Showbox LLP, Dr. Saleel Shrinivas Kulkarni | **DOP:** Sandeep Yadav | **Music:** Soumil Shringarpure | **Editor:** Abhijeet Deshpande & Sandeep Jahagirdar | **Screenplay:** Dr. Saleel Shrinivas Kulkarni | **Costume Designer:** Sachin Lovalekar **Cast:** Sumeet Raghvan, Urmila Kanetkar Kothar, Pushkar Shrotri, Mukta Barve, Arjun Purnpatre, Mohan Aagashe, Suhas Joshi

कथासार – मराठी में जब भी किसी कहानी की शुरूआत करनी होती है तो कहा जाता है, "एकदा काय झालं" । यह फिल्म एक जुनूनी कहानीकार के बारे में हैं जिसकी जिंदगी का फलसफा यह है कि, कहानी किसी भी बात या विचार को दूसरे तक आसानी से पहुंचा सकती है, भले ही वह कितना छोटा या बड़ा हो । वह एक स्कूल चलाता है और सभी विषयों को पढ़ाने के लिए कहानी कहने के तरीके को ही अपनाता है । जब उसकी जिंदगी में एक मुश्किल मोड़ आता है और उसे अपने 8 साल के बेटे को कुछ बताना होता है, तो सभी तरीका आजमाने के बाद, अंत में वह वापस अपने फलसफे के अनुसार कहानी को ही माध्यम बनाता है ।

Synopsis - "Ekda kay zala" is a phrase often used in Marathi to start any story. It is about a passionate storyteller who believes in his philosophy that, "a story can convey any thought under the sky however big or small it is". He runs a school and applies storytelling as a form to teach all subjects. When he comes across a difficult situation in his life and has to convey it to his 8-year old son, after trying all sorts of tricks, he comes back to his own philosophy of conveying it through a story.

परिचय | PROFILE

डॉ. सलील कुलकर्णी (Dr. Saleel Shrinivas Kulkarni)

डॉ. सलील कुलकर्णी 35 फिल्मों के लिए संगीत तैयार कर चुके हैं, दो मराठी बेस्टसेलर पुस्तक 'लापावालेल्या काछा' और 'शाहान्या मानासान्ची फैक्ट्री' के लेखक और वेडिंग छा शिनेमा (2019) और एकदा काय झालं (2022) के निर्देशक भी हैं ।

Dr. Saleel Kulkarni has composed music for 35 films, authored Marathi bestsellers 'Lapavalelya Kacha' and 'Shahanya Manasanchi Factory' and directed Wedding Cha Shinema (2019) and Ekda Kay Zala (2022).

शोबॉक्स एलएलपी गजवदना प्रोडक्शंस (Gajavadana & Showbox LLP)

शोबॉक्स एलएलपी गजवदन प्रोडक्शंस और शोबॉक्स प्रोडक्शंस के बीच एक साझेदारी है। नितिन प्रकाश वैद्य हिंदी और मराठी भाषा में फ़िल्म निर्माण कर चुके है ।

Gajavadan & Showbox LLP is a partnership between Gajavadan Productions and Showbox Productions. Nitin Prakash Vaidya has produced Hindi and Marathi films.

प्रशस्ति – एक कहानीकार जो इस फलसफे को मानता है कि कहानी के जरिये कुछ भी कहा जा सकता है ।

Citation - The story of a storyteller, who believes in the philosophy that anything can be told through a story.

प्रतीक्षा
सर्वश्रेष्ठ उड़िया फ़िल्म

Pratikshya (The Wait)
Best Odia Film

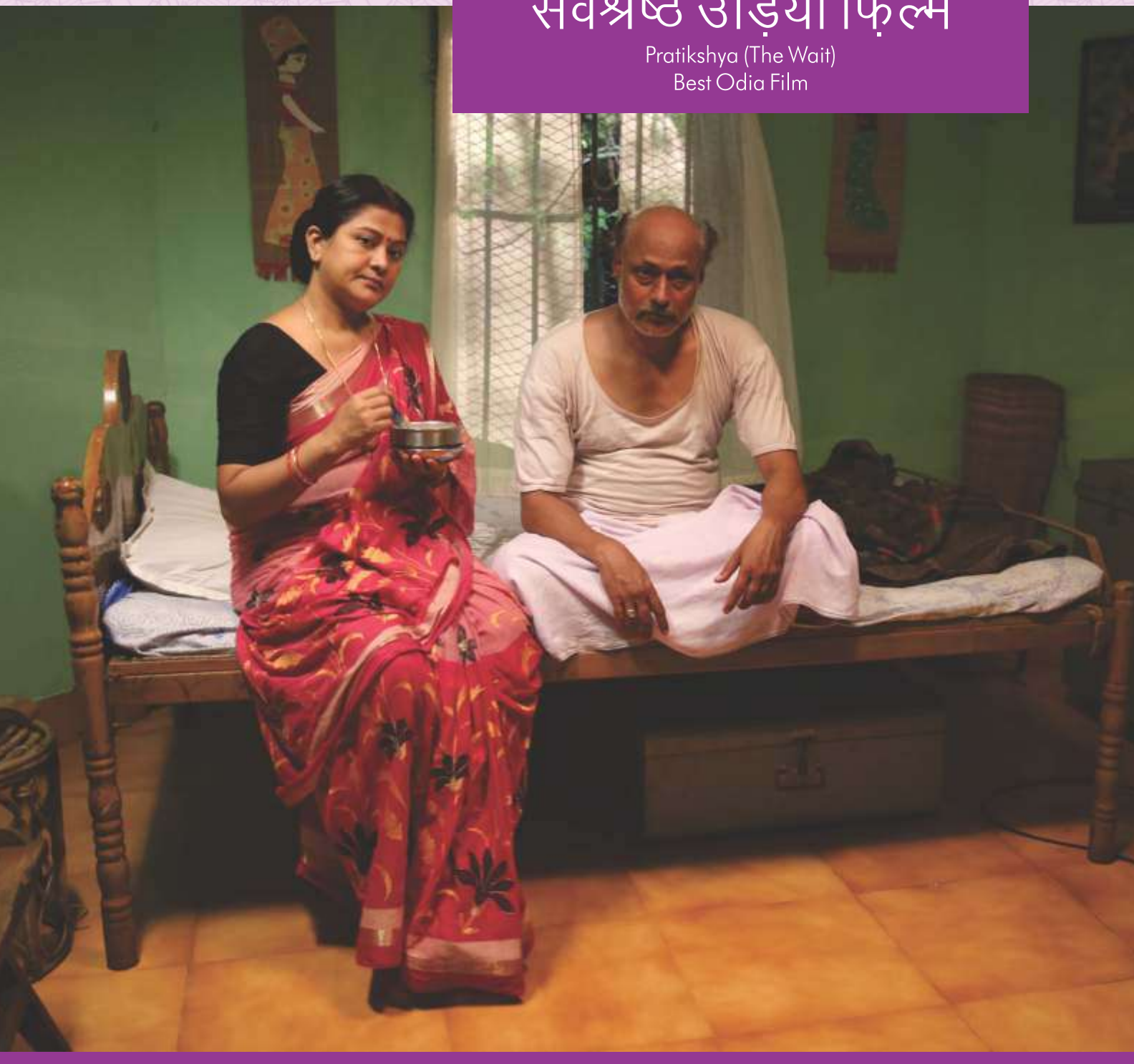

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 1,00,000/-

Odia | **137 Min** | **Director:** Anupam Patnaik | **Production Company:** Amiya Patnaik Productions | **DOP:** Deepak Kumar Gharai | **Music:** Ankesh Anand & Ashish Pradhan | **Editor:** Late. Deven Mishra | **Screenplay:** Roshan Bisoi **Sound Design:** Abhishek Tripathy | **Costume Designer:** Barsha Patnaik | **Cast:** Dipanwit Dashmohapatra, Barsha Patnaik, Choudhury Jayprakash Das

कथासार – भुवनेश्वर में एक सामान्य मध्यम वर्गीय परिवार की कहानी प्रतीक्षा ,सपनों, हताशा और आकांक्षाओं की कहानी है। बेरोजगार स्नातक संजय सरकारी नौकरी पाने पर अड़ा हुआ है। जैसे ही उनके पिता सेवानिवृत्ति के करीब पहुँचे, उन्हें एक लाइलाज बीमारी का पता चलता है । वहीं परिवार पहले से ही संजय की बड़ी बहन की शादी के लिए लिए गए कर्ज के बोझ से दबा हुआ है। संजय को सरकार की अनुकंपा नियुक्ति योजने के बारे में पता चलता है जहां पिता की मौत पर परिवार के सदस्य को नौकरी मिल जाती है। कुंठित संजय अपने पिता की मौत की प्रतीक्षा करने लगता है।

Synopsis - Set in Bhubaneswar around a typical middle class family, Pratikshya is a story about dreams, desperation and aspirations. Sanjay, an unemployed graduate is adamant on finding a government job. As his father nears retirement, he is diagnosed with a terminal illness. The family is already burdened with loans taken for Sanjay's elder sister's wedding. Sanjay gets to know of a Government scheme where the job gets transferred to one's ward in case of death during tenure. A frustrated Sanjay waits for his father's death only to realise his ill mind. However, Bipin doesn't survive to see a changed Sanjay.

परिचय | PROFILE

अनुपम पटनायक (Anupam Patnaik)

अनुपम पटनायक उड़िया फ़िल्म जगत के एक फ़िल्म और टेलीविजन निर्माता और निर्देशक हैं। इन्हें फ़िल्म की कला अपने पिता, राष्ट्रीय स्तर पर प्रशंसित निर्देशक और निर्माता, अमिया पटनायक से विरासत में मिली है। अनुपम की टेलीविजन श्रृंखला, 'हॉरर जोन', और दो लघु फ़िल्में, 'इच्छा–ए साइलेंट अर्ज' और 'स्मृति–मेमोरीज' ने ओडिशा टेलीविजन और फ़िल्म उद्योग में इनका नाम स्थापित करने में मददगार साबित हुई। सामाजिक कार्यकर्ता 'पद्मश्री तुलसी मुंडा' पर उनकी बायोपिक को दुनिया भर के कई फ़िल्म समारोहों में सराहा गया। 'प्रतीक्षया' (2022), इनकी बहुप्रशंसित पहली फिल्म है।

Anupam Patnaik is a film and television producer and director, prominently in Odia. He learnt the craft from his father, the nationally acclaimed director and producer, Amiya Patnaik. Anupam's television series, 'Horror Zone', and two short films, 'Ichha-A Silent Urge' and 'Smruti-Memories', helped establish his name in the Odisha television and film industry. His biopic on social activist 'Padmashri Tulasi Munda' received recognition at several film festivals worldwide. 'Pratikshya' (2022), is his well-received debut film.

अमिया पटनायक प्रोडक्शन्स (Amiya Patnaik Productions)

अमिया पटनायक प्रोडक्शंस ओडिशा का एक प्रसिद्ध प्रोडक्शन हाउस है जो फीचर फ़िल्में, टेलीविजन और डिजिटल सामग्री का निर्माण करता है। इसने उच्च बजट की ब्लॉकबस्टर से लेकर राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता फ़िल्में बनाई हैं। अनुपम पटनायक के नेतृत्व में चल रहे इस प्रोडक्शन हाउस की स्थापना उनके फ़िल्म निर्माता पिता, स्वर्गीय श्री अमिया पटनायक ने 1984 में की थी। इसका पहला प्रोडक्शन था 'हकीम बाबू', जिसने सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म श्रेणी में राष्ट्रीय पुरस्कार जीता था और तब से इन्होंनें पीछे मुड़कर नहीं देखा है।

Amiya Patnaik Productions is a well-known production house in Odisha producing feature films, television and digital content. It has produced high budget blockbusters to national award-winning films. Led by Anupam Patnaik, the production house was founded by his filmmaker father, Late Shri Amiya Patnaik in 1984. Its first production 'Hakim Babu' won a National Award in the Best Film category and since then, there has been no looking back with numerous well-received productions.

प्रशस्ति – एक सामान्य मध्यम वर्गीय परिवार के सपनों, हताशाओं और आकांक्षाओं की कहानी ।

Citation - The story of a typical middle class family's dreams, desperations and aspirations.

कडैसी विवसायी (दि लास्ट फार्मर)

सर्वश्रेष्ठ तमिल फ़िल्म

Kadaisi Vivasayi (The Last Farmer)
Best Tamil Film

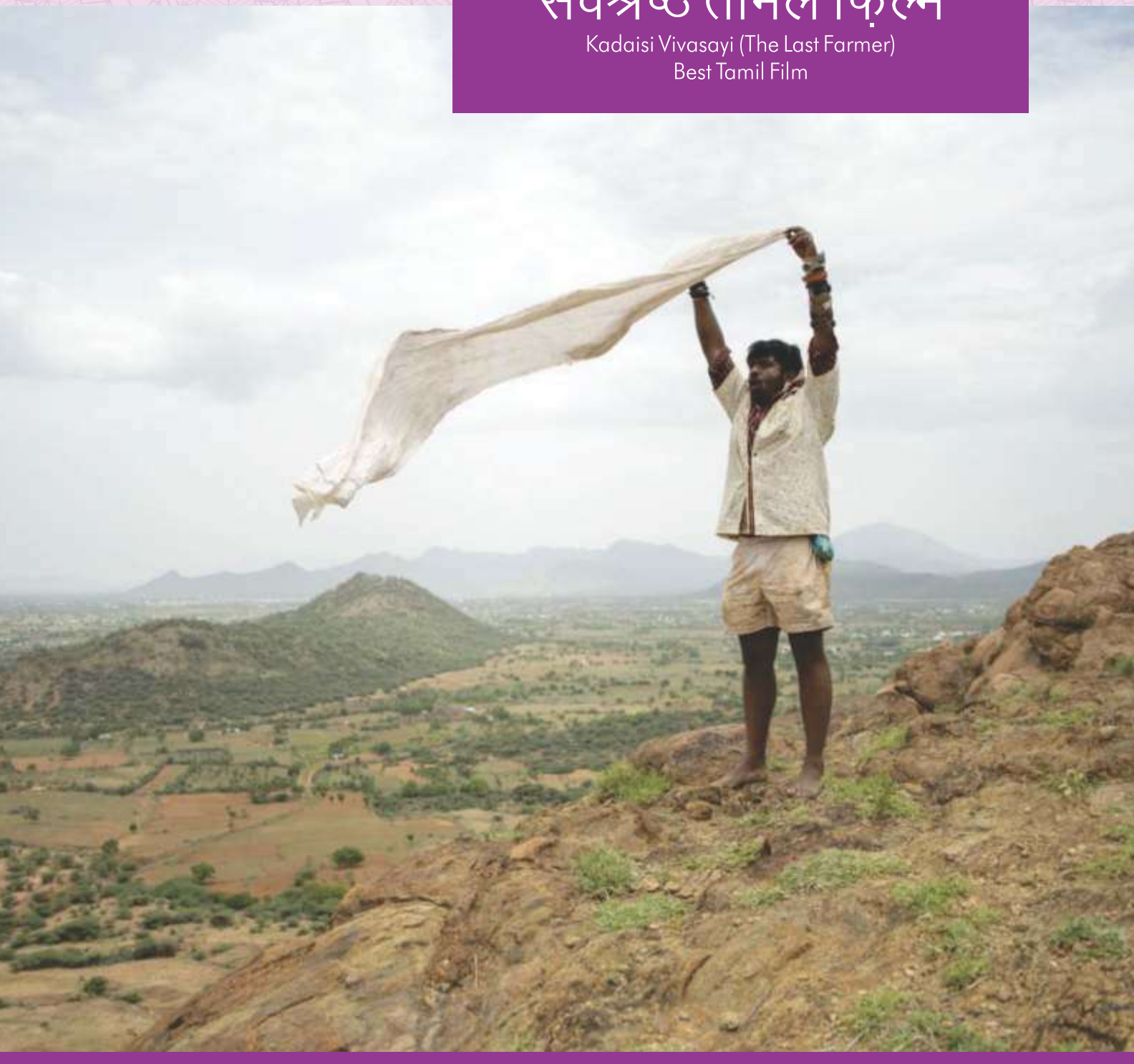

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 1,00,000/-

Tamil | **144 Min** | **Director:** M Manikandan | **Production Company:** Tribal Arts | **DOP:** M Manikandan **Music:** Santhosh Narayanan & Richard Harwey | **Editor:** B Ajith Kumar | **Screenplay:** M Manikandan **Sound Design:** Ajayan Adat & S Radhakrishnan | **Costume Designer:** M Manikandan | **Cast:** Nallandi, Vijay Sethupathi, Raichal Rebbaca

कथासार - 80 साल का मायान्दी, तमिलनाडु के दूरदराज में बसे गांव का किसान है, जो अपने पैतृक खेती, पशुओं और मुर्गी पालन से के साथ संतुष्ट जीवन जी रहा है। उस सूखाग्रस्त गांव में जहां हर कोई खेती छोड़ चुका है, कुछ रियल एस्टेट वाले उसकी जमीन हड़पना चाहते हैं लेकिन वह उसे विचलित नहीं कर पाते हैं। एक दिन उसे अपनी जमीन पर तीन मरे हुए मोर मिलते हैं, वह उनका अंतिम संस्कार करने का फैसला करता है। लेकिन एक पुलिसवाला उस पर राष्ट्रीय पक्षी को दफ्नाने का आरोप लगाता है, और उसे अदालत में पेश करता है। हालांकि न्यायधीश को उसकी बेगुनाही पर यकीन है लेकिन फिर भी वह उसे सजा देने के लिए मजबूर है।

Synopsis - Maayandi, an octogenarian farmer in a remote village in Tamil Nadu, leads a content life tending to his ancestral farmland, cattle, and poultry. In his drought-ridden village where everyone else has given up farming, he is undaunted by real-estate developers trying to usurp his land. One day he finds three dead peacocks on his property and decides to bury them. A policeman soon charges him for the offence of burying the national bird, and produces him before court. Though convinced of his innocence, the magistrate is duty-bound to sentence him to prison time.

परिचय | PROFILE

एम.मणिकनंदन (M. Manikandan)

एम. मणिकंदन एक पुरस्कार विजेता फ़िल्म निर्माता, निर्देशक, पटकथा लेखक, छायाकार और फोटोग्राफर हैं। इनकी लघु फिल्म 'विंड' (2010) को बहुत प्रशंसा मिली थी। इनकी पहली तमिल फीचर फ़िल्म 'काका मुत्तई' ने सराहना के साथ साथ दो राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार भी प्राप्त किए, इसके बाद इनकी फिल्म 'कुट्टरामे थंडानई' और 'आन्डवन कट्टलाई' (2016) ने ना सिर्फ समीक्षकों का दिल जीती बल्कि बॉक्स ऑफिस पर जबरदस्त स हिट रहीं। इनकी नवीनतम फिल्म, कडैसी विवसायी (2022) 69वें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार में समीक्षकों द्वारा प्रशंसित और पुरस्कृत फिल्म है।

M. Manikandan is an award winning filmmaker, director, screenplay writer, cinematographer and photographer. His short film `Wind` (2010) gained acclaim. His debut Tamil feature film `Kaaka Muttai' won many accolades, including two National Film Awards, followed by `Kuttrame Thandanai' and `Aandavan Kattalai' (2016) that were box office hits with rave reviews. His latest film, `Kadaisi Vivasayi' (2022) is a critically acclaimed film winning at the 69th National Film Awards.

ट्राइबल आर्टस (Tribal Arts)

ट्राइबल आर्ट्स फिल्म निर्माता एम. मणिकंदन द्वारा स्थापित एक प्रोडक्शन कंपनी है। इसने कुट्टरामे 'थंडानै', 'अंदावन कट्टलाई' और कदैसी विवासयी जैसी फिल्मों का निर्माण किया है। इस बैनर के तले बनी फिल्म, 'कडैसी विवसायी' ने सर्वश्रेष्ठ तमिल फीचर फिल्म के लिए प्रतिष्ठित 69वें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार जीता।

Tribal Arts is a production company established by filmmaker, M. Manikandan. It has produced his movies like `Kuttrame Thandanai', 'Andavan Kattalai' and Kadaisi Vivasayi. Its production, 'Kadaisi Vivasayi' won at the prestigious 69th National Film Awards for Best Tamil Feature Film.

प्रशस्ति – एक ऐसा सूखाग्रस्त गांव जहां हर कोई किसानी छोड़ चुका है, लेकिन एक किसान ओरगेनिक खेती पर भरोसा रखे हुए है ।

Citation - A farmer living in a drought ridden village where everybody has given up on farming, but who continues to believe in organic farming.

उप्पेना (वेव)
सर्वश्रेष्ठ तेलुगू फ़िल्म

Uppena (Wave) | Best Telugu Film

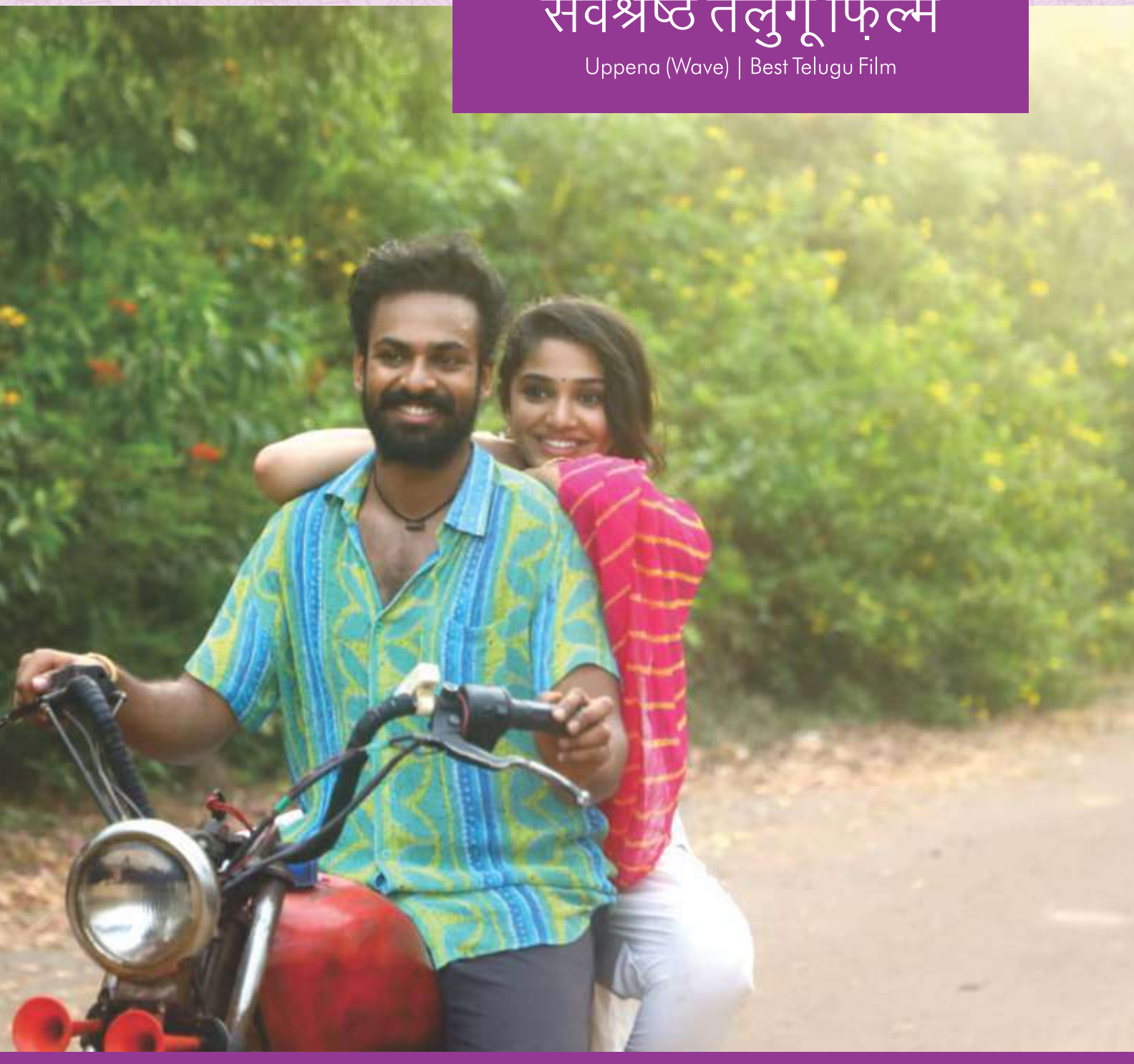

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 1,00,000/-

Telugu | **147 Min** | **Director:** Buchi Babu Sana | **Production Company:** Mythri Movie Makers | **DOP:** Shamdat Sainudeen | **Music:** Devi Sri Prasad | **Editor:** Navin Nooli | **Screenplay:** Buchibabu Sana | **Sound Design:** Raghunath K | **Costume Designer:** Prasanna Dantuluri, Ranjitha Guvvala, Ajay Kumar J, Suma Tripurana | **Cast:** Panja Vaisshnav Tej, Krithi Shetty, Vijay Sethupathi, Sai Chand, Naga Mahesh, Gayatri Jayaraman

कथासार – उप्पाडा में मछली पकड़ने वाले समुदाय के एक युवक को उसी गाँव की एक उच्च वर्ग की अमीर लड़की से प्यार हो जाता है। जब लड़की के पिता को उनके प्यार के बारे में पता चलता है, तो वह समुदाय को धमकाता है। युगल भाग तो जाते हैं, लेकिन अपने बीच की सामाजिक, राजनीतिक, वित्तीय और धार्मिक मतभेदों की खाई को पार करने के लिए उन्हें काफी संघर्ष करना पड़ता है। फिल्म इस बात की पड़ताल करती है कि कैसे वे इन मतभेदों को मिटाकर अभी भी प्यार करते हैं और साथ रहते हैं।

Synopsis - A young man from a fishing community in Uppada falls in love with an upper class girl from the richer part of the same village. When the girl's father gets to know about their love, he threatens the whole fishing community. Undettered, the couple elopes but ends up struggling a lot as they cope with social, political, financial and religious differences between them. The film explores how they nagivate these differences to still love and stay together.

परिचय | PROFILE

बुची बाबु सना (Buchi Babu Sana)

बुची बाबू सना तेलुगु फिल्म जगत के पुरस्कार विजेता फ़िल्मकार, निर्देशक और पटकथा लेखक हैं। इन्हें स्थानीय कहानियों को सार्वभौमिक भावनाओं के साथ सहजता से मिश्रित करने, क्षेत्रीय कथाओं को वैश्विक स्तर पर ले जाने की उनकी क्षमता के लिए जाना जाता है। इनके निर्देशन में बनी पहली फ़िल्म, 'उप्पेना' (2021) प्रशंसा और पुरस्कार बटोर रही है, जिसमें प्रतिष्ठित 69वें राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कारों में सर्वश्रेष्ठ तेलुगु फ़ीचर फ़िल्म का पुरस्कार भी शामिल है।

Buchi Babu Sana is an award winning filmmaker, director and scriptwriter in the Telugu film industry. He is known for his ability to seamlessly blend local stories with universal emotions, elevating regional narratives to a global stage. His directorial debut film, 'Uppena' (2021) is garnering accolades and awards, including the Best Telugu Feature Film Award at the prestigious 69th National Film Awards.

मैत्री मूवी मेकर्स (Mythri Movie Makers)

मैत्री मूवी मेकर्स एक प्रोडक्शन हाउस है, जिसकी स्थापना एक एनआरआई व्यवसायी नवीन येरनेनी ने की थी। 2013 में अपनी स्थापना के बाद से, इसने उत्कृष्टता के प्रति अपने अटूट समर्पण के साथ मनोरंजन उद्योग में एक प्रभावशाली पहचान हासिल की है। बहुत कम समय में, इसने 19 फिल्में बनाई और रिलीज कीं, जिन्होंने कुल मिलाकर काफी अच्छा प्रदर्शन किया, जिनमें से छह ब्लॉकबस्टर हिट रहीं।

Mythri Movie Makers is a production house founded by Naveen Yerneni, an NRI businessman. Since its inception in 2013, it has amassed an impressive recognition in the entertainment industry with its unwavering dedication to excellence. In a short span of time, it has produced and released 19 movies which have done fairly well overall, with six being blockbuster hits.

प्रशस्ति – एक युवा मछुआरे और एक उच्च वर्ग की अमीर लड़की की प्रेम कहानी,जो प्यार, कठोर हकीकत और अहसासों को दर्शाती है।

Citation - A love story between a young fisherman and an upper class rich girl, depicting love, harsh realities and realisations.

बूम्बा राइड
सर्वश्रेष्ठ मिशिंग फ़िल्म

Boomba Ride | Best Mishing Film

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 1,00,000/-

Mishing Language | **78 Min** | **Director:** Biswajit Bora | **Production Company:** Quarter Moon Productions, ML Entertainment | **DOP:** Jiten Bodo, Atul Sargiyari | **Music:** Nayan Mani Barman | **Editor:** Biswajit Bora **Screenplay:** Biswajit Bora | **Sound Design:** Jyoti Chetia | **Costume Designer:** Lopamudra Gogoi Bora **Cast:** Indrajeet Pegu, Sadagar Daw, Hiranya Kumar Pegu

कथासार – ब्रहम्पुत्र नदी का किनारा असम में रहने वाली कई जनजातियों की जीवन रेखा है। यह फिल्म एक प्राथमिक शाला की कहानी बयान करती है, जहां के शिक्षक स्कूल को चलते रहने देना चाहते हैं, जबकि वहां पर केवल एक ही छात्र है, बूम्बा। लेकिन जब स्थितियां अपेक्षा के अनुरूप नहीं होती है और स्कूल मिटने की कगार पर आ जाता है, बोम्बा अपनी बुद्धिमानी से ना सिर्फ स्कूल को बचाता है बल्कि लोगों को यह अहसास भी कराता है कि शिक्षा समाज के लिए क्या कर सकती है।

Synopsis - The banks of the Brahmaputra River are the lifeline of many tribes in Assam. The film is about a lower primary school where the main struggle of the teachers is to keep the school alive as it has only one student, named Boomba. But when things do not go as expected and the school is on the verge of collapse, Boomba with his upright wisdom saves his school and makes everyone realise what education can do to a society.

परिचय | PROFILE

बिस्वजीत बोरा (Biswajit Bora)

बिस्वजीत बोरा एक अंतरराष्ट्रीय स्तर के पुरस्कार विजेता भारतीय फिल्मकार निर्माता, संपादक और लेखक हैं। इन्होंने 'बह्निमन' (2016), 'फेहुजाली: द डॉन' (2017), 'रक्तबीज' (2018) और 'गॉड ऑन द बालकनी' (2020) जैसी व्यावसायिक रूप से हिट और समीक्षकों द्वारा प्रशंसित फिल्में बनाई हैं, जिन्होंने कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार पुरस्कार जीते हैं और सरहानाएं बटोरी हैं। उनकी नवीनतम फिल्म, 'बूम्बा राइड' (2021) 75वें कान्स फिल्म फेस्टिवल (2022) में स्क्रीनिंग के लिए चुनी गई छह भारतीय फिल्मों में से एक थी।

Biswajit Bora is an Internationally acclaimed award winning Indian filmmaker, producer, editor and writer. He has made commercially hit as well as critically acclaimed films like 'Bahniman' (2016), 'Phehujali: The Dawn' (2017), 'Raktabeez' (2018) and 'God on the Balcony' (2020) that have won several national and international awards and accolades. His latest film, 'Boomba Ride' (2021) was among the six Indian films selected for screening at the 75th Cannes Film Festival (2022).

क्वाटरमून प्रोडक्शंस (Quartermoon Productions))

क्वाटरमून प्रोडक्शंस 2007 में फिल्म निर्माता बिस्वजीत बोरा द्वारा स्थापित एक प्रोडक्शन हाउस है। इसने अब तक चार फीचर फिल्मों का निर्माण और सह–निर्माण किया है, जिनमें अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रशंसित 'बूम्बा राइड', 'ए थाउजेंड फायरफ्लाइज स्पार्कल', 'फेहुजली' और 'लखीमी' शामिल हैं।

Quartermoon Productions is a production house founded by filmmaker Biswajeet Bora in 2007. It has produced and co-produced four feature films till now, including the internationally acclaimed 'Boomba Ride', 'A Thousand Fireflies Sparkle', 'Phehujali' and 'Lakhimi'.

एमएल एंटरटेनमेंट एक प्रोडक्शन हाउस है जिसकी स्थापना 2007 में एक असमिया व्यवसायी लुइट कुमार बर्मन ने की थी। इसने ब्लॉकबस्टर संगीत वीडियो, 'दैट टॉय' जैसी लघु फिल्में और 'अनुराधा' और 'बूम्बा राइड' जैसी असमिया फिल्में बनाई हैं।

ML Entertainment is a production house founded in 2007 by Luit Kumar Barman, an Assamese businessman. It has produced blockbuster music videos, short films like 'That Toy' and Assamese movies like 'Anuradha' and 'Boomba Ride'.

प्रशस्ति – एक ऐसे स्कूल की कहानी जिसमें केवल एक छात्र है और उसका यह अहसास कि शिक्षा समाज के लिए क्या कर सकती है ।

Citation - The story of a school consisting of only one student and his realisation of what education can do to a society.

शेरशाह
निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार

Shershaah | Special Jury Award

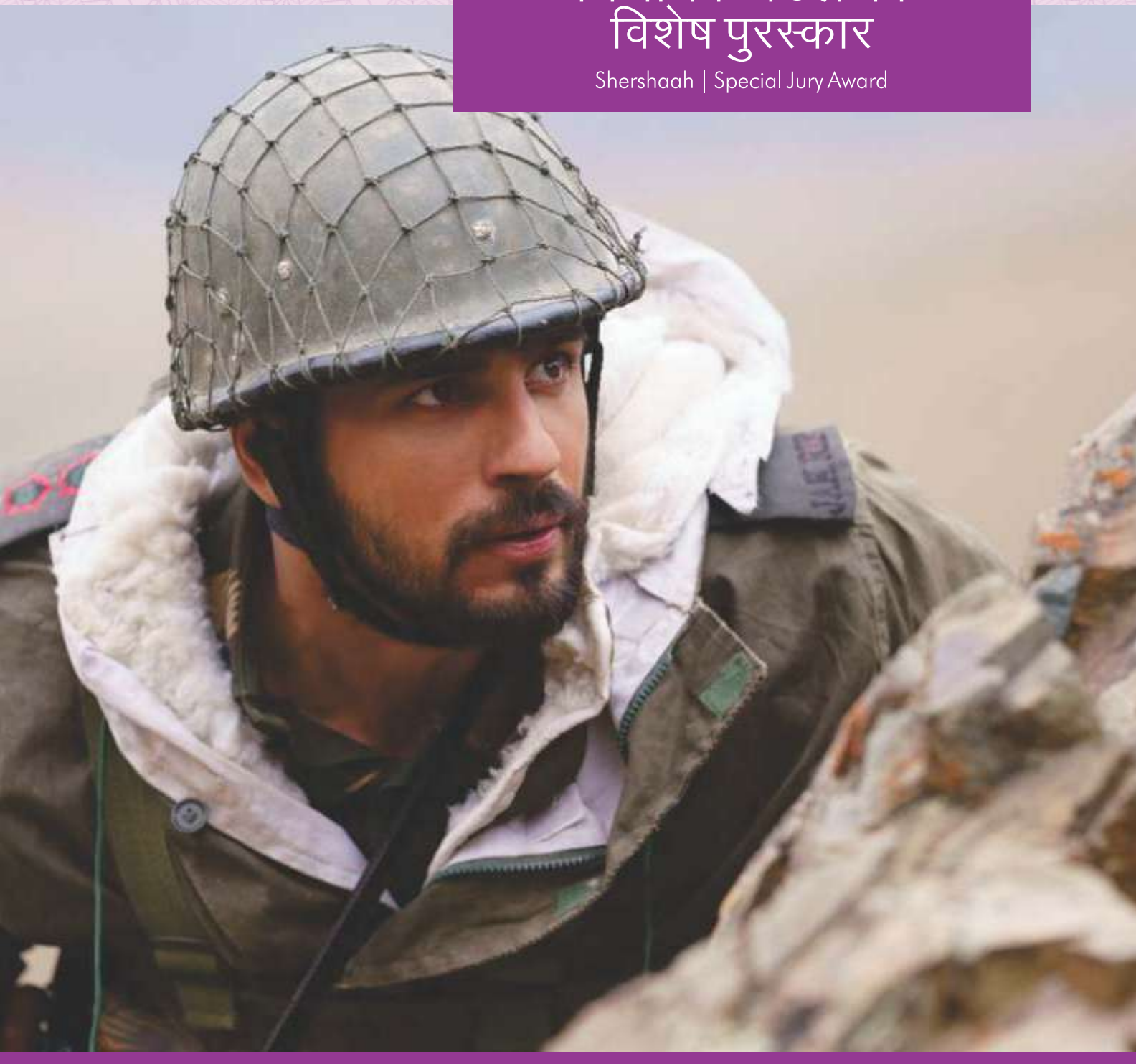

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 2,00,000/-

Hindi | **137 Min** | **Director:** Vishnu Varadhan | **Production Company:** Dharma Productions Pvt Ltd, Kaash Entertainment Pvt Ltd | **DOP:** Kamaljeet Negi | **Editor:** A. Sreekar Prasad | **Screenplay:** Sandeep Shrivastava **Dialogue:** Sandeep Shrivastava | **Production Design:** Amit Ray & Subrata Chakraborty | **Sound Design:** Sohel Sanwari | **Costume Designer:** Eka Lakhani | **Cast:** Sidharth Malhotra, Kiara Advani, Shiv Pandit, Sahil Vaid

कथासार - शेरशाह, परमवीर चक्र पुरस्कार से सम्मानित कैप्टन विक्रम बत्रा की कहानी बयान करती हैय एक बहादुर भारतीय सैनिक जिसे युद्ध के दौरान वीरता के विशिष्ट कार्य प्रदर्शित करने के लिए भारत के सर्वोच्च सैन्य अलंकरण से सम्मानित किया गया। कैप्टन बत्रा जिन्होंने अपनी अदम्य भावना और अदम्य साहस से पाकिस्तानी सैनिकों को भारतीय क्षेत्र से बाहर खदेड़ दिया, जिसका 1999 में कारगिल युद्ध जीतने में बहुत बड़ा योगदान था। फिल्म एक मध्यमवर्गीय लड़के की भारतीय सेना में सैनिक बनने की महत्वाकांक्षा और बलिदान के उस सफर को दिखाती है जो किसी को देशभक्ति का सही अर्थ सिखाता है।

Synopsis - Shershaah narrates the story about a Param Vir Chakra Awardee, Capt. Vikram Batra; a brave Indian soldier honoured with India's highest military decoration for displaying distinguished acts of valour during wartime. Capt. Batra who with his indomitable spirit and unflinching courage chased Pakistani soldiers out of Indian territory, which was an immense contribution in finally winning the Kargil War in 1999. A middle-class boy's ambition to become a soldier in the Indian Army and the sacrifices he had to make along the way displaying fine lessons that teach one the true meaning of patriotism.

परिचय | PROFILE

विष्णु वरधन (Vishnu Varadhan)

विष्णु वर्धन तमिल फिल्म उद्योग में निर्देशक, निर्माता और पटकथा लेखक हैं, जो अपनी बेहद सफल फिल्मों जैसे 'अरिंटुम अरियामलम', 'पट्टियाल', 'पंजा' और 'अररंबम' के लिए जाने जाते हैं। 'शेरशाह' हिंदी सिनेमा में इनके निर्देशन में बनी पहली फिल्म थी।

Vishnu Varadhan is an Indian film director, producer and screenwriter in the Tamil film industry, known for his highly successful films like, 'Arintuum Ariyamalum', 'Pattiyal', 'Panjaa' and 'Arrambam'. 'Shershaah' was his directorial debut in Hindi cinema.

धर्मा प्रोडक्शन्स (Dharma Productions Profile)

धर्मा प्रोडक्शंस भारत के शीर्ष फिल्म प्रोडक्शन हाउस में से एक है, जिसका नेतृत्व फिल्म निर्माता करण जौहर करते हैं। इसने 35 से अधिक फिल्मों का निर्माण किया जिसमें ब्लॉकबस्टर और समीक्षकों द्वारा प्रशंसित फ़िल्मों की एक लंबी सूची शामिल है।

Dharma Productions is one of India's top film production houses, led by filmmaker Karan Johar. It produced more than 35 films which includes a series of blockbusters and critically acclaimed films.

काश एंटरटेन्मेंट (Kaash Entertainment Pvt Ltd)

काश एंटरटेनमेंट फ़िल्म और वेब सीरीज प्रोडक्शन हाउस है, जिसकी स्थापना 2013 में शब्बीर बॉक्सवाला, अजय शाह और हिमांशु गांधी ने की थी। जिनकी फ़िल्में, प्यार की भव्यता, जिंदगी, जीवन और कहानियों का उत्सव मनाती हैं।

Kaash Entertainment is a film and web series production house founded in 2013 by Shabbir Boxwala, Ajay Shah and Himanshu Gandhi that celebrates the grandeur of love, life and stories.

प्रशस्ति – एक नौजवान सैनिक की कहानी जो देश की एकता की खातिर सीमा पर अपना जीवन कुर्बान कर देता है ।

Citation - The story of a young soldier on the border who sacrifices his life for the integrity of the Nation.

गोदावरी (दि होली रिवर)

सर्वश्रेष्ठ निर्देशन

Godavari (The Holy River)
Best Direction

स्वर्ण कमल | SWARNA KAMAL ₹ 2,50,000/-

Marathi | **117 Min** | **Director:** Nikhil Mahajan | **Production Company:** Blue Drop Films Pvt Ltd | **DOP:** Shamin Kulkarni | **Music:** AV Prafullachandra | **Editor:** Hrishikesh Petwe | **Screenplay:** Nikhil Mahajan, Prajakt Deshmukh **Dialogue:** Prajakt Deshmukh | **Cast:** Jitendra Joshi, Gauri Nalawade, Neena Kulkarni, Priyadarshan Jadhav, Vikram Gokhle, Sanjay Mone, Saniya Bhandare, Mohit Takalkar

निखिल महाजन सिडनी के इंटरनेशनल फिल्म स्कूल से शिक्षा प्राप्त हैं. वह दो फीचर फिल्म 'पुणे 52' और 'बाजी' बना चुके हैं और एक जॉम्बी हॉरर श्रंखला नेटफ्लिक्स के लिए निर्देशित कर चुके हैं।

Nikhil Mahajan, a graduate from Sydney's International Film School, has made two feature films, 'Pune 52' and 'Baji', and directed a zombie horror series for Netflix.

प्रशस्ति – जीवन के प्रवाह, और परंपरा व आधुनिकता के बीच संघर्ष को लेकर एक संवेदनशील कहानी।

Citation - A sensitive tale about the flow of life and the conflict between tradition and modernity.

पुष्पा (दि राइस पार्ट 1)
सर्वश्रेष्ठ अभिनेता

Pushpa (The Rise Part 1)
Best Actor

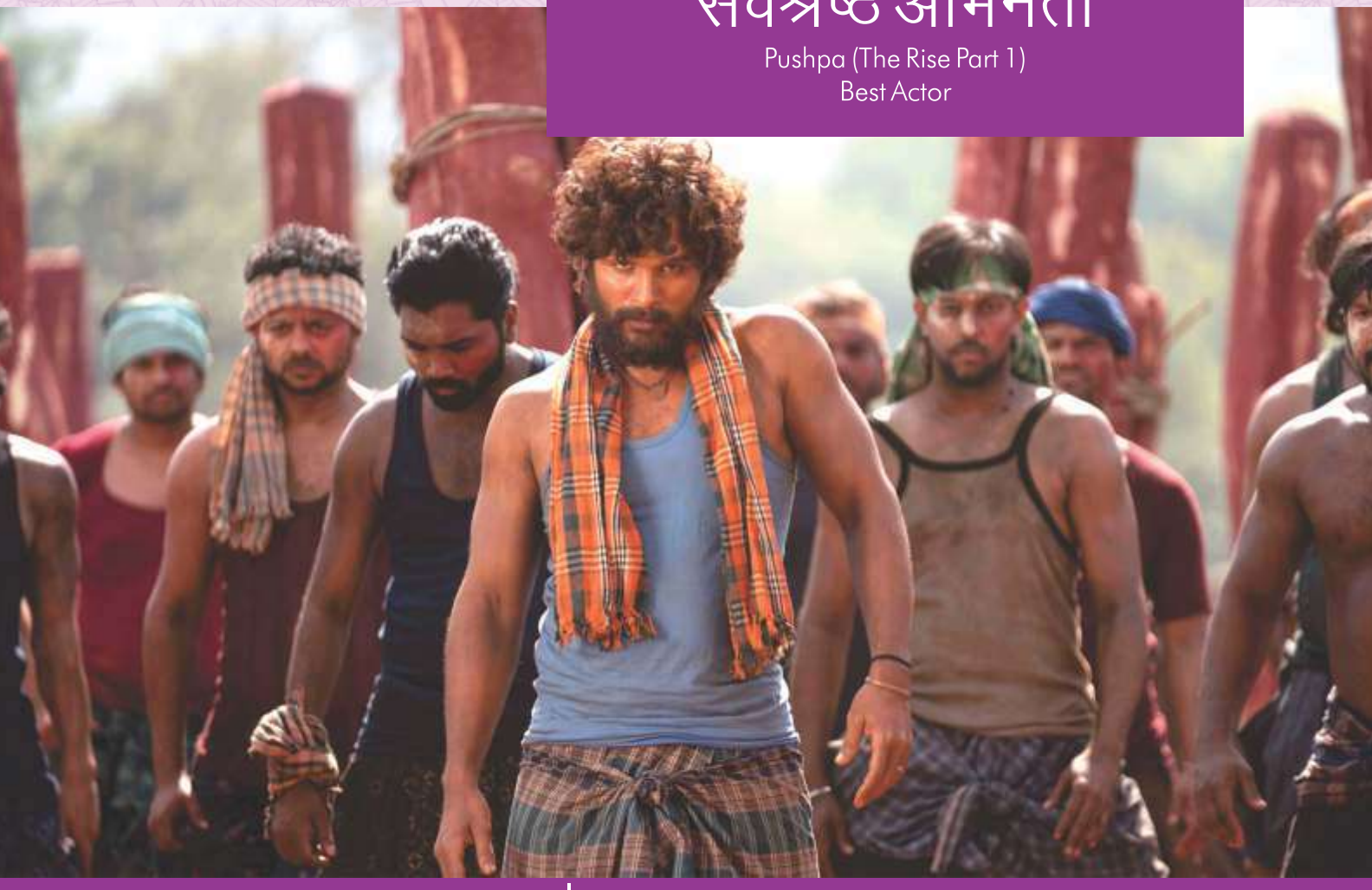

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Telugu | **180 Min** | **Director:** Bandreddi Sukumar | **Production Company:** Mythri Movie Makers | **DOP:** Kuba Miroslaw Brozek | **Music:** Devi Sri Prasad | **Editor:** Karthika Srinivas and Antony L Ruben | **Screenplay:** B Sukumar | **Dialogue:** B Sukumar & Srikanth Vissa | **Cast:** Allu Arjun, Rashmika Mandanna, Jagadeesh Prathap Bandari, Fahadh Fazil, Ajay Ghosh, Sunil, Dhananjay, Anasuya Bharadwaj, Kalpalatha, Dhruvan

अल्लू अर्जुन एक प्रतिष्ठित और पुरस्कार विजेता भारतीय अभिनेता हैं। इनकी प्रसिद्धि का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि इनकी तेलुगु फ़िल्म 'आर्या', 'रेस गुर्रम', 'सर्रेनोडु', 'अला वैकुंठपुरमुलु' और 'पुष्पा' कई भाषाओं में डब की गई है, और भारत ही नहीं अंतर्राष्ट्रीय बाजार में भी इनकी फिल्में हिट हैं। पर्दे पर इनकी करिश्माई प्रस्तुति, इनके नाचने का हुनर, विविधताओं से भरे इनके किरदार जिसके जरिये एक्शन हीरो से लेकर रोमांटिक और कॉमेडी किरदार यह इतनी सहजता से निभाते हैं, जैसे बहता पानी।

Allu Arjun is an iconic and award winning Indian actor. Known for his work in Telugu cinema, his popularity is across Indian and international markets with his blockbuster hits like 'Arya', 'Race Gurram', 'Sarrainodu,' 'Ala Vaikunthapurramuloo' and 'Pushpa' dubbed in several languages. His magnetic on-screen presence, electrifying dancing skills, remarkable versatility in portraying roles where he seamlessly transitions between various genres from action to romance to comedy, have gained him critical and commercial recognition.

प्रशस्ति – संपूर्व भ्रष्ट व्यवस्था को चुनौती देने वाले उपेक्षित व्यक्ति के शानदार करिश्माई प्रदर्शन के लिए।

Citation - An intense charismatic performance of an underdog challenging an entire corrupt system.

गंगुबाई काठियावाड़ी

सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री (साझा)

Gangubai Kathiawadi
Best Actress

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Hindi | **157 Min** | **Director:** Sanjay Leela Bhansali | **Production Company:** Bhansali Productions Pvt Ltd DOP: Sudeep Chatterjee | **Music:** Sanchit Balhara & Ankit Balhara | **Editor:** Sanjay Leela Bhansali | **Screenplay:** Sanjay Leela Bhansali & Utkarshini Vashishtha | **Dialogue:** Utkarshini Vashishtha & Prakash Kapadia | **Sound Design:** Sanal George | **Cast:** Alia Bhatt, Ajay Devgn, Seema Pahwa, Indira Tiwari, Jim Sarbh, Shantanu Maheshwari

आलिया भट्ट, एक ऐसी अभिनेत्री को अपने हर काम के साथ उत्कृष्टता के सोपान पर चढ़ती नजर आती हैं। उनके निभाए कई किरदारों में जो गहराई और गंभीरता नजर आती है, वह उनकी बहुमुखी प्रतिभा और अभिनय की बारीकी को दिखाता है। इनकी पुरस्कार विजेता प्रदर्शनों में 'हाईवे', 'उड़ता पंजाब', 'राजी', 'डियर जिंदगी', 'गली बॉय' और 'गंगूबाई काठियावाड़ी' शामिल हैं। एक निर्माता के रूप में, इनकी पहली फ़िल्म, 'डार्लिंग्स', दुनिया भर में नेटफ्लिक्स पर दूसरी सबसे ज्यादा देखी जाने वाली गैर–अंग्रेजी फ़िल्म है। इनकी आलोचनात्मक प्रशंसा और बॉक्स ऑफिस प्यार के बीच का अनूठा संतुलन काबिल ए तारीफ है।

Alia Bhatt, an iconic actor has pursued excellence in everything she has pursued. She has brought depth and gravitas to a host of characters that demonstrated her versatility and panache. Her award-winning performances include 'Highway', 'Udta Punjab', 'Raazi', 'Dear Zindagi', 'Gully Boy' and 'Gangubai Kathiawadi'. As a producer, her first film, 'Darlings', became the second most watched non-English content on Netflix worldwide. She has managed a rare balance between critical acclaim and box office love.

प्रशस्ति – देह व्यापार में फंसी एक मासूम लड़की का बहुमुखी प्रदर्शन जो आगे चलकर महिलाओं की आवाज बनती है।

Citation - A versatile performance of an innocent girl trapped in the flesh trade who rises up to become the voice of the women.

मिमी
सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री (साझा)
Mimi | Best Actress

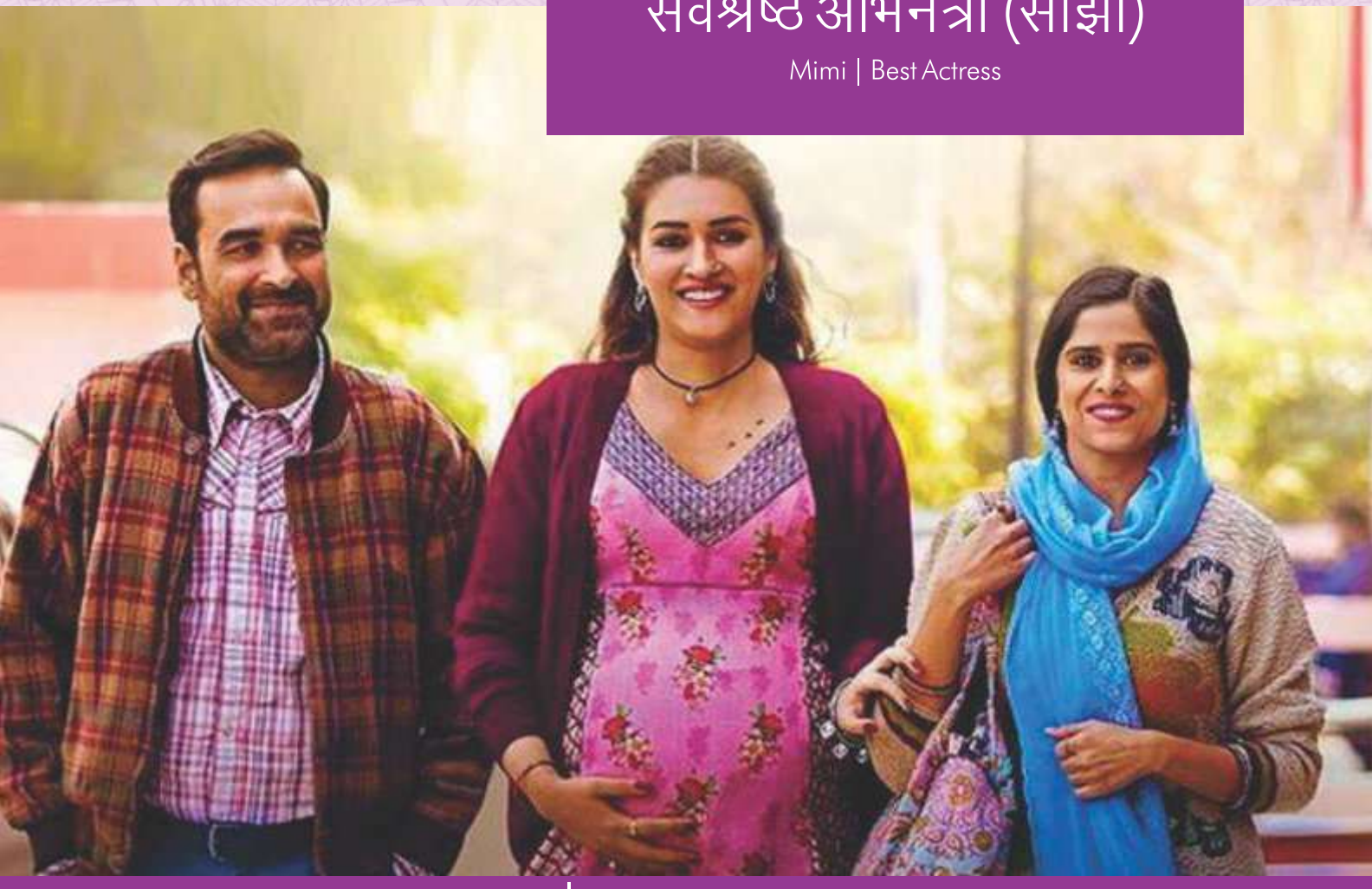

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Hindi | **133 Min** | **Director:** Laxman Utekar | **Production Company:** Maddock Films Pvt Ltd | **DOP:** Akash Agrawal Music: A R Rahman | **Editor:** Manish Pradhan | **Screenplay:** Laxman Utekar & Rohan Shankar | **Dialogue:** Rohan Shankar | **Production Design:** Subrata Chakraborty & Amit Ray | **Sound Design:** Baylon Fonseca | **Costume Designer:** Sheetal Sharma | **Cast:** Kriti Sanon, Pankaj Tripathi, Sai Tamhankar

एक महत्वाकांक्षी इंजीनियरिंग छात्रा से एक प्रशंसित अभिनेत्री और निर्माता तक **कृति सैनन** की यात्रा उनके अटूट दृढ़ संकल्प और असाधारण प्रतिभा का प्रमाण है। अपनी पहली फिल्म 'हीरोपंती' से लेकर, उन्होंने 'बरेली की बर्फी', 'लुका छुपी', 'भेड़िया' जैसी फिल्मों में अभिनय कौशल प्रदर्शित किया है और विशेष रूप से 'मिमी' में मुख्य भूमिका निभाई है, जिसके लिए उन्हें प्रशंसा और पुरस्कार मिले हैं। जिसमें प्रतिष्ठित राष्ट्रीय पुरस्कार भी शामिल है, जिसने एक कुशल कलाकार के रूप में उनके कद को मजबूत किया।

Kriti Sanon's odyssey from an aspiring engineering student to a lauded actress and producer stands as a testament to her unwavering determination and exceptional talent. From her debut film 'Heropanti,' she has displayed acting acumen in films like 'Bareilly Ki Barfi', 'Luka Chuppi', 'Bhediya', and notably with the lead role in 'Mimi', which has garnered her with accolades and awards, including the esteemed National Award, solidifying her stature as an adept artist.

प्रशस्ति – सामाजिक प्रतिक्रिया और आंतरिक संघर्षों से जूझती एक सरोगेट मां की कहानी का संवेदनशील प्रदर्शन।

Citation - A sensitive performance of the story of a surrogate mother, facing social backlash and personal internal conflicts.

मिमी
सर्वश्रेष्ठ सह अभिनेता
Mimi | Best Supporting Actor

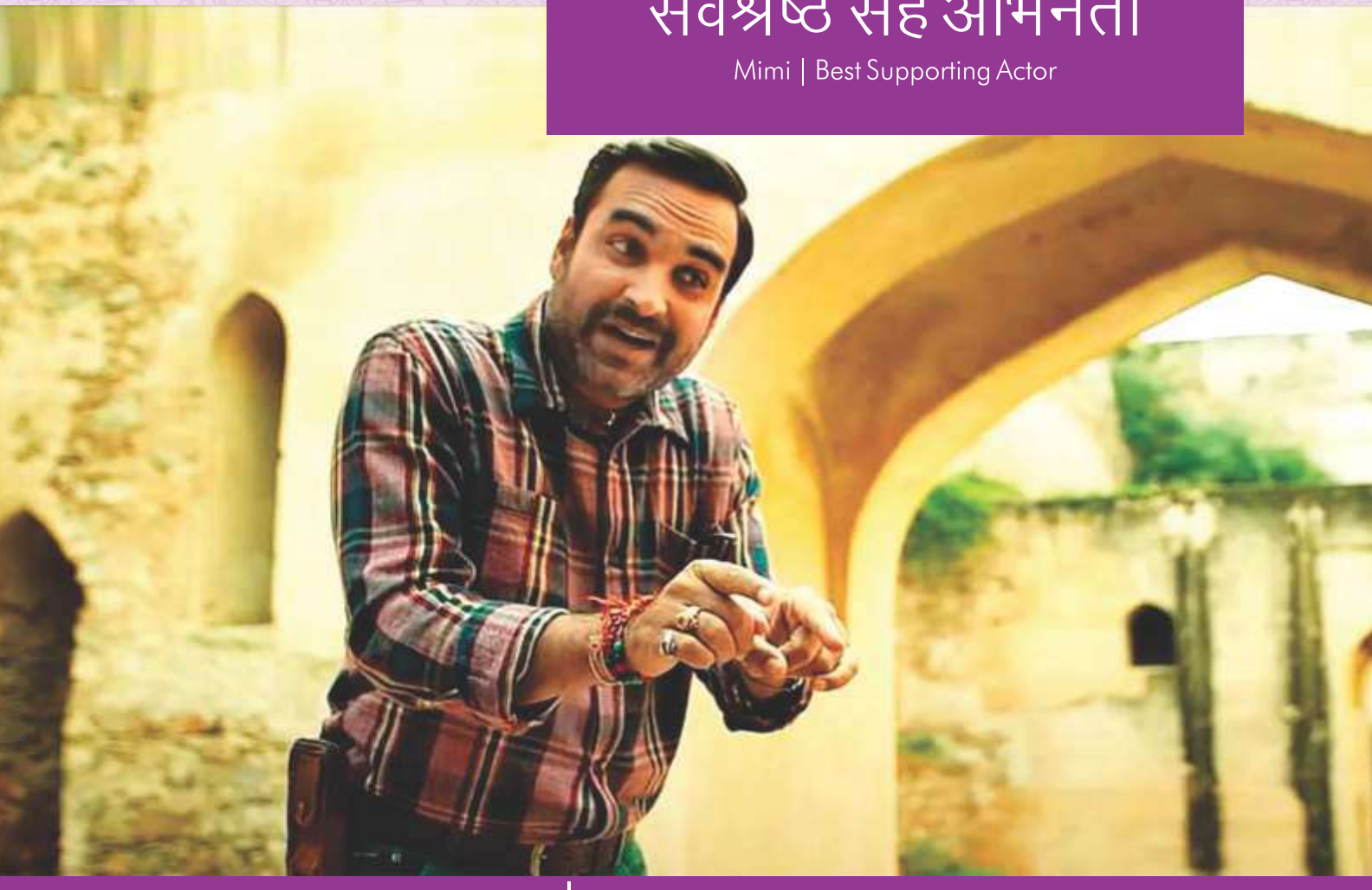

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Hindi | **133 Min** | **Director:** Laxman Utekar | **Production Company:** Maddock Films Pvt Ltd | **DOP:** Akash Agrawal Music: A R Rahman | **Editor:** Manish Pradhan | **Screenplay:** Laxman Utekar & Rohan Shankar | **Dialogue:** Rohan Shankar | **Production Design:** Subrata Chakraborty & Amit Ray | **Sound Design:** Baylon Fonseca **Costume Designer:** Sheetal Sharma | **Cast:** Kriti Sanon, Pankaj Tripathi, Sai Tamhankar

पंकज त्रिपाठी एक प्रशंसित और पुरस्कार विजेता अभिनेता हैं जो अपनी बहुमुखी और उल्लेखनीय प्रतिभा के लिए जाने जाते हैं। इन्होंने 'गैंग्स ऑफ वासेपुर', 'फुकरे', 'न्यूटन' और 'स्त्री' जैसी कई फ़िल्मों में गंभीर और नाटकीय से लेकर हास्य तक विभिन्न प्रकार के किरदारों को संजीदगी से निभा कर अपनी क्षमता का प्रदर्शन किया है और पहचान हासिल की है । इन्हें 65वें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कारों में 'न्यूटन' में अपने प्रदर्शन के लिए विशेष उल्लेख प्राप्त हो चुका है।

Pankaj Tripathi is an acclaimed and award winning actor known for his versatility and remarkable talent. He has gained immense recognition for his ability to portray a wide range of characters, from intense and dramatic to comedic and endearing in several critically acclaimed films like 'Gangs of Wasseypur', 'Fukrey', 'Newton' and 'Stree', amongst others. A recipient of many accolades, he earned a special mention for his performance in 'Newton' at the 65th National Film Awards.

प्रशस्ति – एक छोटे शहर के तेजतर्रार किरदार का इंसानी जुड़ाव, संबंधो, हमदर्दी और गरिमा की तलाश यात्रा।

Citation - A small town street smart character's journey in search of human bonding, empathy and dignity.

दि कश्मीर फाइल्स
सर्वश्रेष्ठ सह अभिनेत्री

The Kashmir Files
Best Supporting Actress

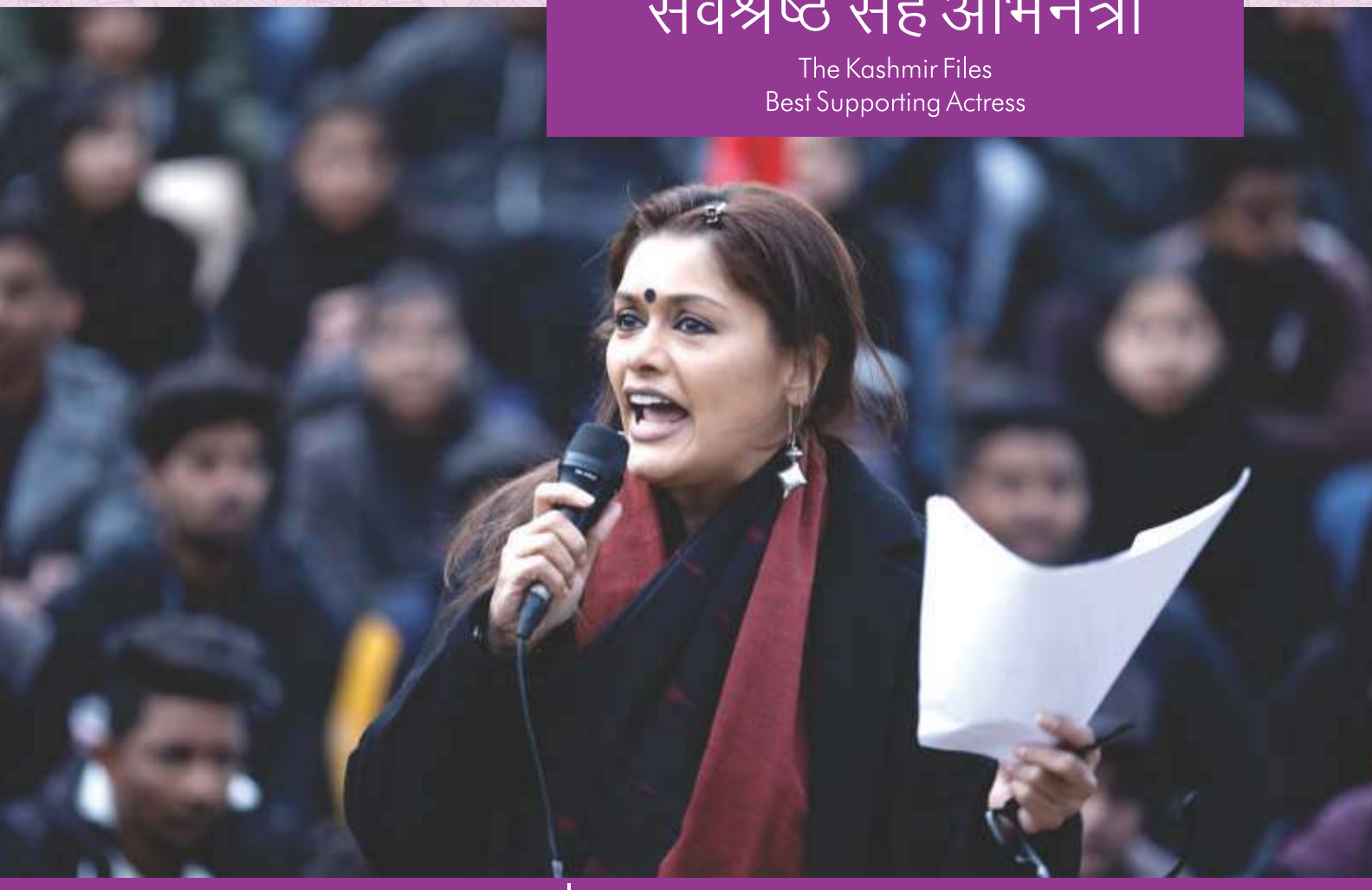

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Hindi | **170 Min** | **Director:** Vivek Ranjan Agnihotri | **Production Company:** Zee Entertainment Enterprises Limited, Iambuddha Production, Abhishek Agarwal Arts | **DOP:** Udhay Singh Mohite | **Music:** Rohit Sharma | **Editor:** Shankh Rajadhyaksha (Mayureshkar Marudkar) | **Screenplay:** Vivek Ranjan Agnihotri | **Cast:** Anupam Kher, Pallavi Joshi, Darshan Kumar, Chinmay Mandlekar, Bhasha Sumbli, Prithviraj Sarnaik

पल्लवी जोशी एक प्रसिद्ध राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता टेलीविजन और फ़िल्म अभिनेत्री हैं। इन्होंने 50 से अधिक फ़िल्मों और 100 से अधिक टेलीविजन धारावाहिकों में अभिनय किया है। इन्हें 'मृगनयनी', 'डिस्कवरी ऑफ इंडिया', 'तलाश', 'बुनियाद', 'अल्पविराम' और 'अंताक्षरी' जैसे लोकप्रिय धारावाहिकों में उनके शानदार अभिनय के लिए जाना जाता है। इन्हें 'सूरज का सातवां घोड़ा', 'मेकिंग ऑफ द महात्मा', द ताशकंद फाइल्स' और 'द कश्मीर फाइल्स' जैसी फ़िल्मों में अपनी भूमिकाओं के लिए आलोचनात्मक प्रशंसा और सराहना मिली।

Pallavi Joshi is a renowned national award winning television and film actor. She has acted in more than 50 films and over 100 television serials. She has been recognised for her stellar performances in popular serials like 'Mrignayani, 'Discovery of India', 'Talash', 'Buniyad', 'Alpaviraam' and 'Antakshari'. She gained critical acclaim and accolades for her roles in films like 'Suraj ka Satwaan Ghoda', 'Making of The Mahatma', The Tashkent Files' and 'The Kashmir Files'.

प्रशस्ति – एक महिला का सशक्त प्रदर्शन जो दृढ़ता से अपनी मान्यताओं का बचाव करती है और उसके पक्ष में खड़ी होती है।
Citation - A powerful performance of a woman who strongly defends and takes a stand for her beliefs.

लास्ट फिल्म शो (छेल्लो शो)
सर्वश्रेष्ठ बाल कलाकार

Last Film Show (Chhello Show)
Best Child Artist

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Gujarati | **112 Min** | **Director:** Pan Nalin | **Production Company:** Jugaad Motion Pictures | **DOP:** Swapnil Sonawane | **Music:** Cyril Morin | **Editor:** Pavan Bhat & Shreyas Beltangdy | **Screenplay:** Pan Nalin | **Sound Design:** Gilles Benardeau & Mikael Barre | **Costume Designer:** Sia Seth | **Cast:** Bhavin Rabari, Richa Meena, Bhavesh Shrimati, Dipen Raval, Rahul Koli, Vikas Bata, Vijay Mer, Kishan Parmar, Shoban Malwa

नांगेश भाविन आलाभाई, उर्फ भाविन रबारी, 9 वर्ष के एक बाल अभिनेता हैं, जो रबारी आदिवासी समुदाय से हैं और गुजरात के वसई के एक दूरदराज के गांव में रहते हैं। वह अपने गांव के स्कूल में पढ़ते हैं और चाय की दुकान पर चाय बेचने में अपने दादा की मदद भी करते हैं। वह शायद ही कभी फ़िल्में देखने जाते हैं क्योंकि सिनेमा हॉल उनके गांव से बहुत दूर हैं।

Nangesh Bhavin Aalabhai, aka Bhavin Rabari, aged 9 is a child actor who belongs to the Rabari tribal community and lives in a remote village of Vasai in Gujarat. He studies at his village school and also helps out his grandfather to sell tea at his tea-stall. Proud of his Rabari and Kathiawadi heritage, he rarely goes to see movies as cinema halls are very far from his village.

प्रशस्ति – एक छोटे से शहर के लड़के का सिनेमा के प्रति लगाव और अपने ख्वाबों को साकार करने के लिए उसके दुसाहसिक प्रयास।
Citation - A small town boy's fascination for cinema and his adventurous attempts to realise his dreams.

आर आर आर

सर्वश्रेष्ठ पार्श्व गायक

RRR

Best Male Playback Singer

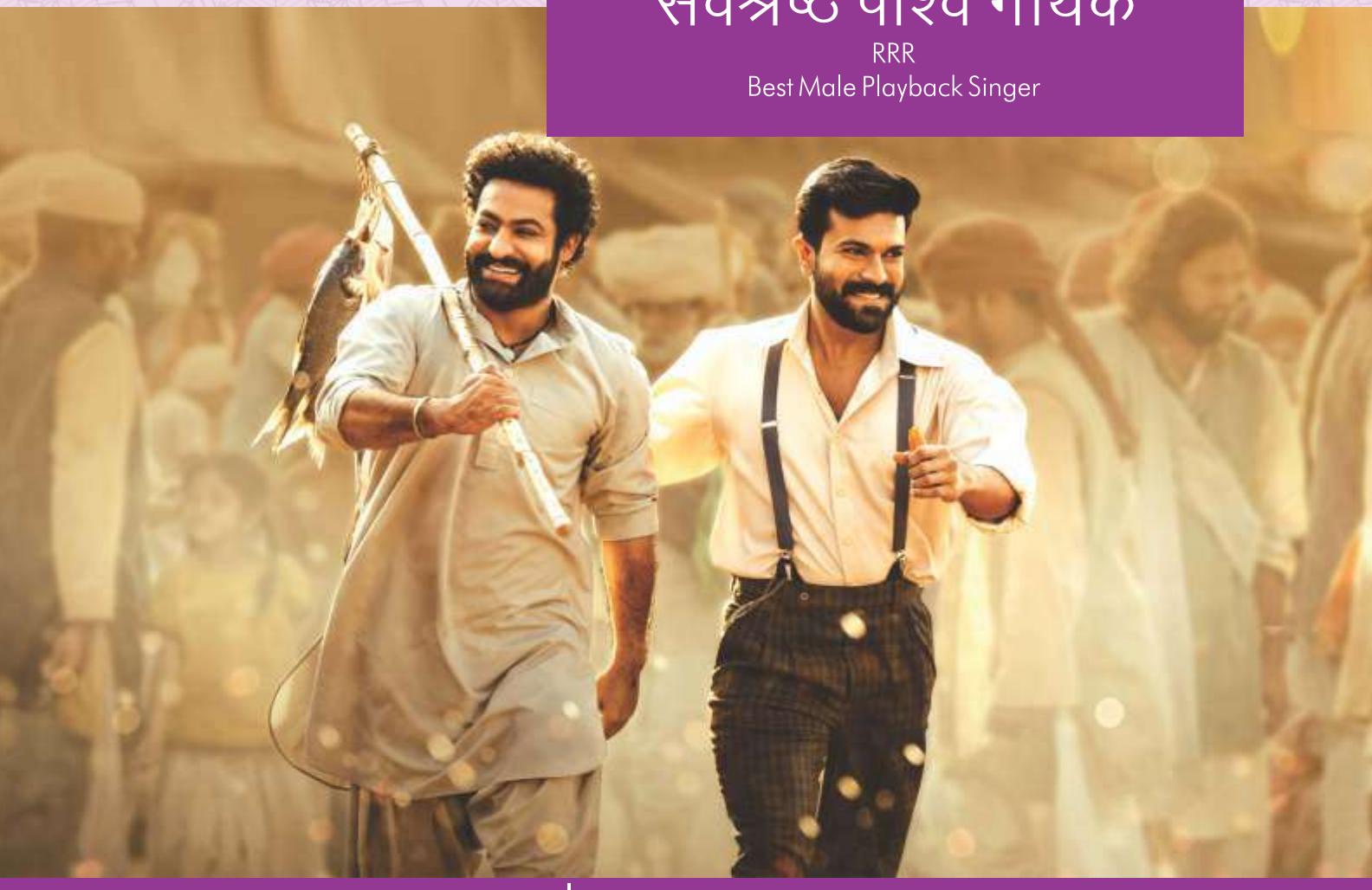

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Telugu | **186.54 Min** | **Director:** Srisaila Sri Rajamouli | **Production Company:** DVV Entertainments LLP | **DOP:** KK Senthil Kumar | **Music:** M. M. Keeravaani | **Editor:** A Sreekar Prasad | **Screenplay:** SS Rajamouli | **Sound Design:** Raghunath Kemisetty | **Costume Designer:** Rama Rajamouli | **Cast:** Ramcharan, Jr NTR, Alia Bhatt, Ajay Devgn, Shriya Saran, Twinkle Sharma, Samuthirakani

कला भैरवा तेलुगु फ़िल्म उद्योग के एक प्रसिद्ध और पुरस्कार विजेता संगीत निर्देशक और पार्श्व गायक हैं। 'मथु वधालारा', 'कलर फोटा' और 'कार्तिकेय –2' जैसी फ़िल्मों के लिए उनके गाने और मूल बैकग्राउंड स्कोर लोगों की जबान पर चढ़ गए थे। पार्शव गायक के रूप में उनके लोकप्रिय गीतों में 'धंदालय्या', 'थोलिप्रेमा', 'पेनिविटी', 'समारा शंखम', 'स्पिरिट ऑफ जर्सी', 'येतु पोन', 'येडेथु मैलेले', 'थारागाथी गाधी', 'अरेरे आकाशम' शामिल हैं। इन सब के अलावा 'कोमुराम भीमुडो' और सबसे चर्चित और प्रशंसित 'नाटु नाटु'।

Kaala Bhairava is a renowned and award winning music director and playback singer in the Telugu film industry. His songs and original background scores for films like 'Mathu Vadhalara', 'Colour Photo' and 'Karthikeya-2' were trending hits. Popular songs by him as a playback singer include 'Dhandaalayya', 'Tholiprema', 'Peniviti', 'Samara Shankham', 'Spirit of Jersey', 'Yetu Pone', 'Yedetthu Mallele', 'Tharagathi gadhi', 'ArereAakasham' 'Komuram Bheemudo' and the most acclaimed 'Naatu Naatu', amongst others.

प्रशस्ति – स्वतंत्रता की भावना से ओतप्रोत एक भावपूर्ण गीत की प्रस्तुति।

Citation - A soulful rendition of a song about the spirit of freedom.

इरविन निज़ल (शैडो आफ दि नाइट)
सर्वश्रेष्ठ पार्श्व गायिका

Iravin Nizhal (Shadow of the Night)
Best Female Playback Singer

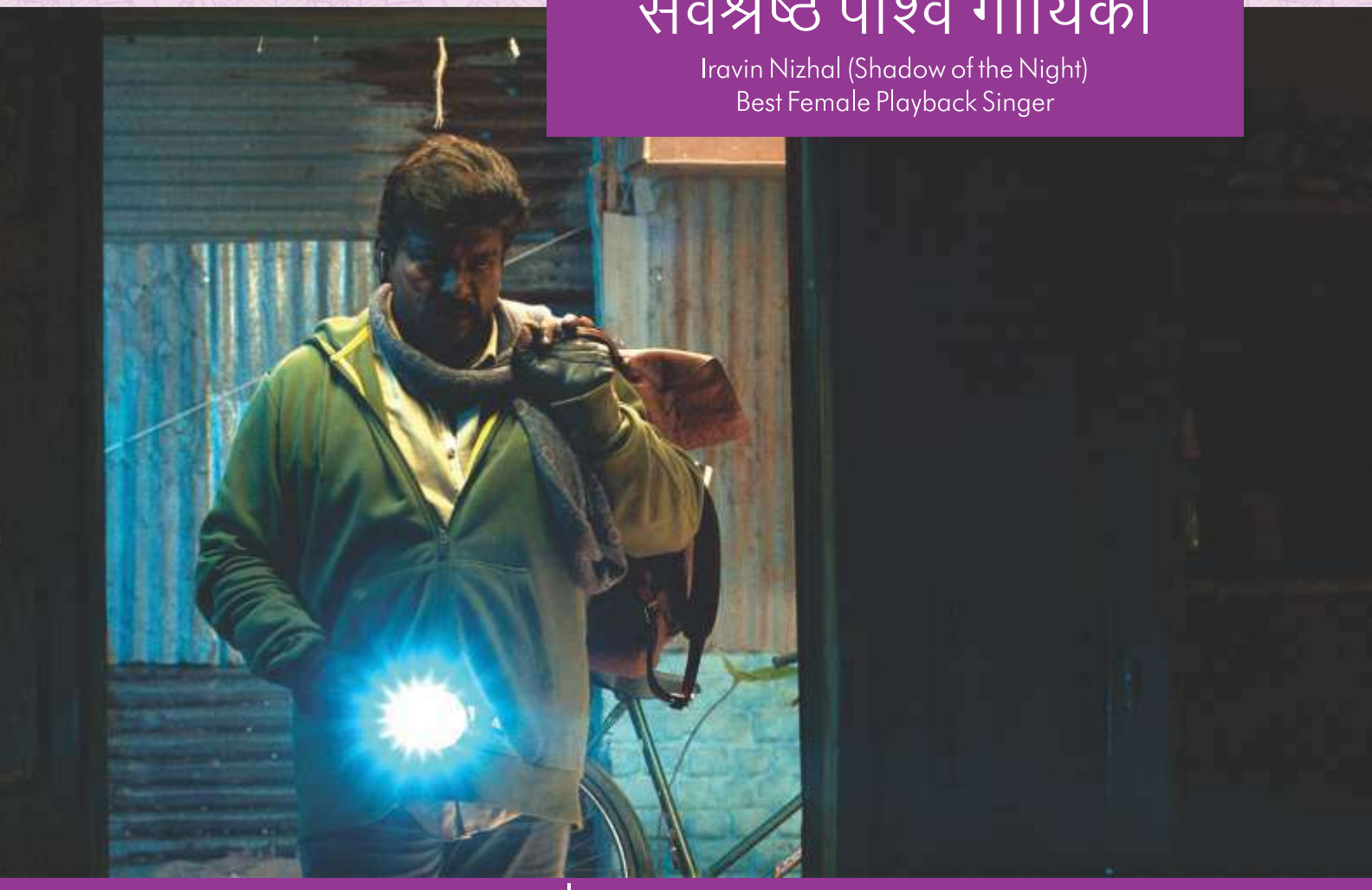

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Tamil | **100 Min** | **Director:** Radhakrishnan Parthiban | **Production Company:** Akira Productions Pvt Ltd **DOP:** Arthur A Wilson | **Music:** A R Rahman | **Screenplay:** Radhakrishnan Parthiban | **Dialogue:** Radhakrishnan Parthiban | **Production Design:** R K Vijai Murugan | **Sound Design:** Kunal Ranjan | **Cast:** Radhakrishnan Parthiban, Brigida Saga, Robo Shankar, Varalaxmi Sarathkumar, Baby Prathiksha Shankar

श्रेया घोषाल एक प्रसिद्ध पुरस्कार विजेता पार्श्व गायिका हैं जो अपनी भावपूर्ण आवाज और अद्वितीय प्रस्तुतियों के लिए जानी जाती हैं। कई भाषाओं और क्षेत्रों के कई साउंडट्रैक में इनकी सुरीली आवाज इन्हें भारतीय फ़िल्म जगत की सबसे बहुमुखी गायिका होने का गौरव प्रदान करती है। राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कई प्रतिष्ठित प्रशंसाओं और पुरस्कारों की प्राप्तकर्ता श्रेया ने 20 भाषाओं में 3000 से अधिक गाने रिकॉर्ड किए हैं, और प्रतिष्ठित संगीतकारों के साथ मिलकर 300 से अधिक फ़िल्मों के लिए गाया है।

Shreya Ghosal is a renowned award winning playback singer known for her soulful voice and inimitable renditions. Her melodious voice is a distinct feature in many soundtracks, across many languages and regions, giving her the distinction of being the most versatile singer of all times. A recipient of several prestigious accolades and awards nationally and internationally, she has recorded over 3000 songs in 20 languages, and sung for over 300 films collaborating with iconic music composers.

प्रशस्ति – प्यार और चाहत के जादू के बारे में एक मधुर अभिव्यक्ति।

Citation - A melodious expression about the magic of love and longing.

सरदार उधम

सर्वश्रेष्ठ छायांकन

Sardar Udham
Best Cinematography

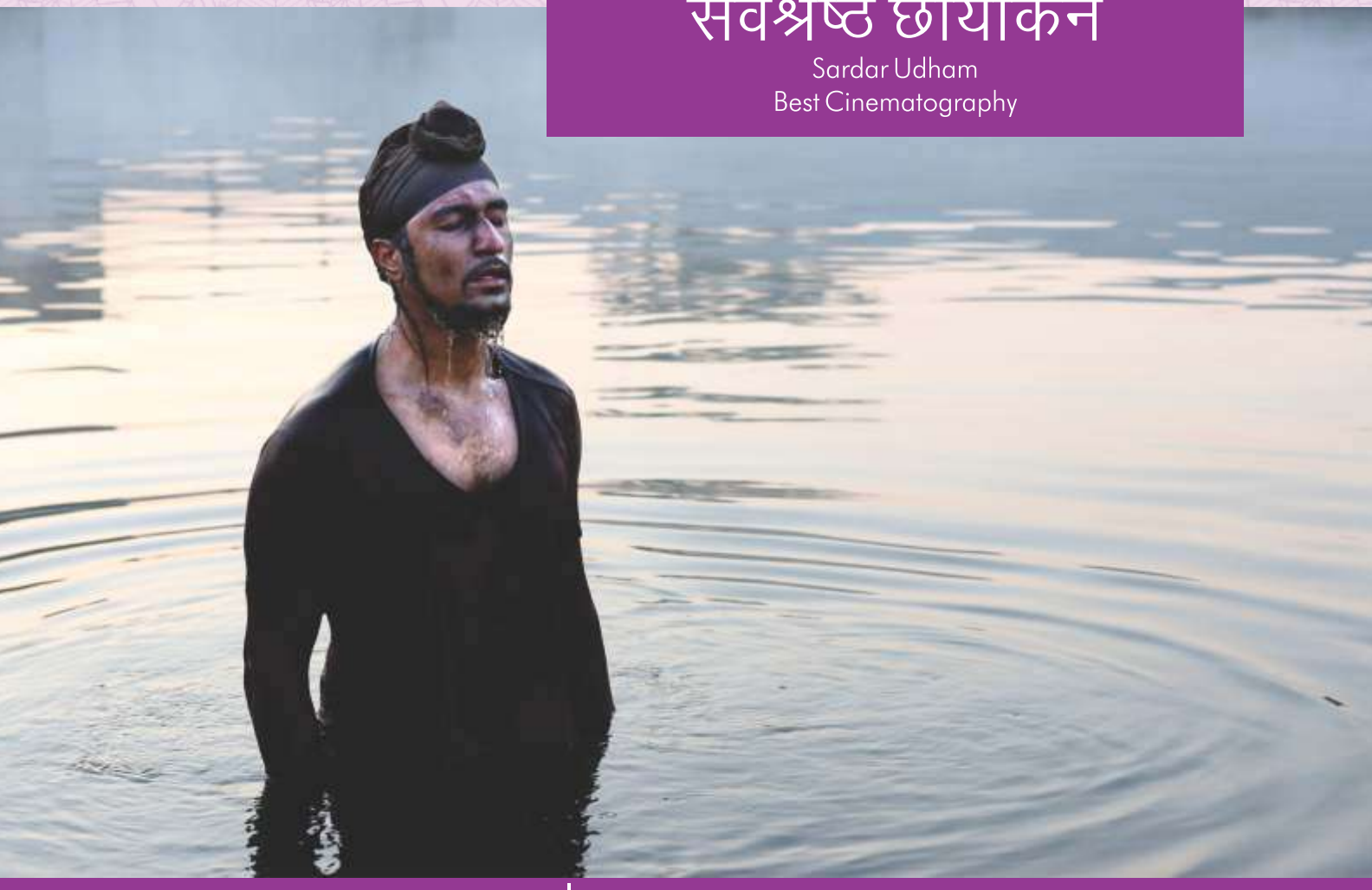

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Hindi | **164 Min** | **Director:** Shoojit Sircar | **Production Company:** Kino Works LLP & Rising Sun Films Pvt. Ltd. | **DOP:** Avik Mukhopadhayay | **Music:** Shantanu Moitra | **Editor:** Chandrashekhar Prajapati | **Screenplay:** Suvendu Bhattacharjee & Ritesh Shah | **Sound Design:** Dipankar Jojo Chaki & Nihar Ranjan Samal | **Costume Designer:** Veera Kapur Ee | **Cast:** Vicky Kaushal, Shaun Scott, Stephen Hogan, Amol Parashar, Kirsty Averton

भारतीय फिल्म और टेलीविजन संस्थान (एफटीआईआई) के पूर्व छात्र **अविक मुखोपाध्याय** एक राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता छायाकार हैं।इन्होंने मृणाल सेन, अपर्णा सेन, रितुपर्णा घोष, शाद अली, शोभित सरकार, सुजॉय घोष, अनिरुद्ध रॉय चौधरी, मधुजा मुखर्जी, शूजीत सरकार जैसे प्रसिद्ध निर्देशकों के साथ काम किया है। इन्हें फ़िल्म 'पातालघर' (2003), 'भालो थेको' (2004), 'अंतहीन' (2009) और 'सरदार उधम' (2021) के लिए चार बार सर्वश्रेष्ठ छायाकार के लिए राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार प्राप्त हो चुका है ।

Avik Mukhopadhayay is a national award winning cinematographer. A Film and Television Institute of India (FTII) alumni, he has collaborated with eminent directors like Mrinal Sen, Aparna Sen, Rituparna Ghosh, Shaad Ali, Shobhit Sarkar, Sujay Ghosh, Anirudha Roy Chowdhury, Madhuja Mukherjee, Shoojit Sircar, amongst others. He is a recipient of the National Film Award for Best Cinematography four times, notably for the films 'Patalghar' (2003), 'Bhalo Theko' (2004), 'Antaheen' (2009) and 'Sardar Udham' (2021).

प्रशस्ति – अतंर्राष्ट्रीय स्तर पर एक एतिहासिक घटनाक्रम पर शानदार दृश्य प्रस्तुति, जहां लाइट और छाया के जरिये पर्दे पर जादू उकेरा गया।

Citation - A spectacular visual presentation of a historical epic drama on an international scale, creating magic with light and shadows.

नायाट्टु
सर्वश्रेष्ठ पटकथा (मौलिक)
Nayattu
Best Screenplay Writer (Original)

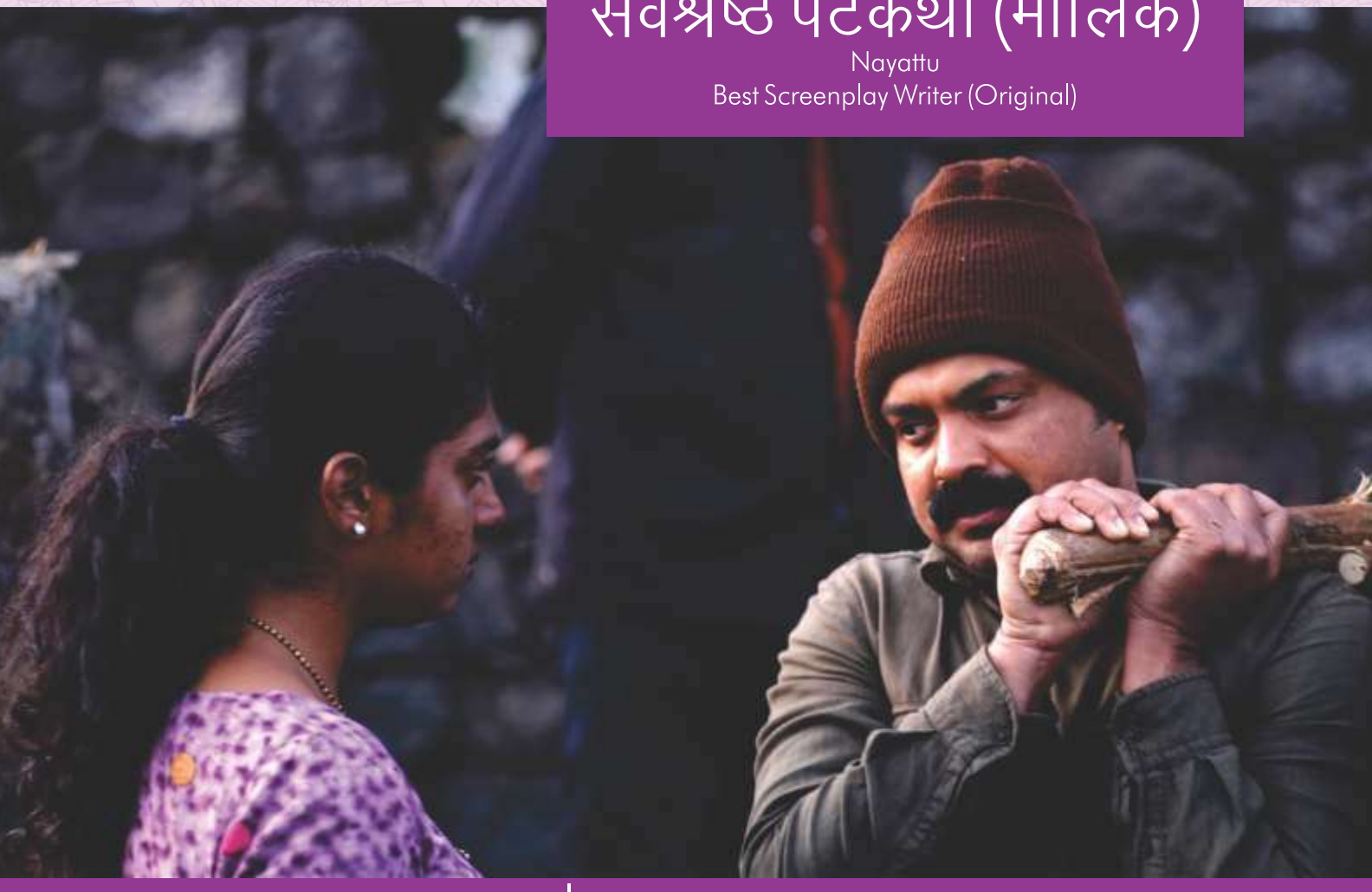

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Malayalam | **123 Min** | **Director:** Martin Prakkat | **Production Company:** Gold Coin Motion Picture Company | **DOP:** Shyju Khalid | **Music:** Vishnu Vijay | **Editor:** Mahesh Narayanan & Rajesh Rajendran | **Screenplay:** Shahi Kabir | **Dialogue:** Shahi Kabir | **Production Design:** Dileep Nath | **Sound Design:** Ajayan Adat | **Cast:** Joju George, Kunchacko Boban, Nimisha Sajayan, Yama Gilgamesh, Anil Nedumangad, Jaffer Idukki

शाही कबीर मलयालम फ़िल्म उद्योग में एक पुरस्कार विजेता भारतीय फ़िल्म निर्देशक और पटकथा लेखक हैं। पटकथा लेखक के रूप में इनके उत्कृष्ट योगदान में 'जोसेफ' (2018) और 'नायट्टू' (2021) जैसी फिल्में शामिल हैं, दोनों को इनकी असाधारण कहानी के लिए आलोचकों की प्रशंसा मिली। 'नायट्टू' के लिए इन्होंने 69वें राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार में सर्वश्रेष्ठ पटकथा का पुरस्कार जीता। इनके निर्देशन की पहली फ़िल्म, 'एला वीजा पूनचिरा' ने उन्हें निर्देशक की पहली सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म के लिए 53वां केरल राज्य फ़िल्म पुरस्कार दिलाया।

Shahi Kabir is an award winning Indian film director and scriptwriter in the Malayalam film industry. His outstanding contributions as a scriptwriter include films like 'Joseph' (2018) and 'Nayattu' (2021), both of which received critical acclaim for their exceptional storytelling. For 'Nayattu', he won the Best Screenplay Award at the 69th National Film Awards. His directorial debut, 'Ela Veezha Poonchira,' earned him the 53rd Kerala State Film Award for Best Debut Director.

प्रशस्ति – पटकथा किरदारो की भूमिकाओं के हेरफेर के चौंका देने वाले तानों बानों से बुनी हुई है, जहां शिकारी खुद शिकार बन जाता है।
Citation - The script weaves a web of a surprising tale of reversal of roles, where the hunters become the hunted.

गंगुबाई काठियावाड़ी
सर्वश्रेष्ठ पटकथा लेखन
(रूपांतरित)
Gangubai Kathiawadi
Best Screenplay Writer (Adapted)

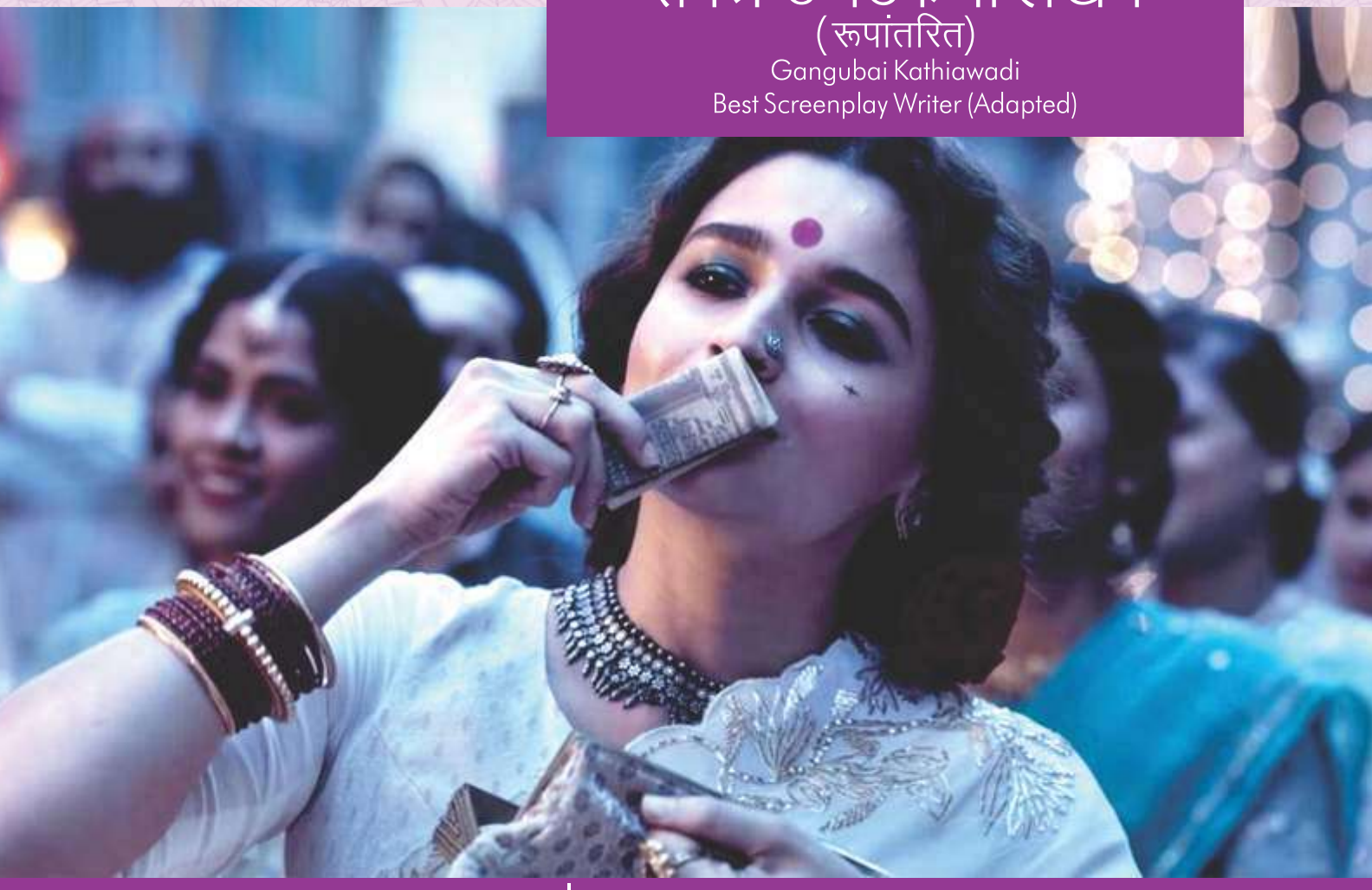

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Hindi | **157 Min** | **Director:** Sanjay Leela Bhansali | **Production Company:** Bhansali Productions Pvt Ltd
DOP: Sudeep Chatterjee | **Music:** Sanchit Balhara & Ankit Balhara | **Editor:** Sanjay Leela Bhansali
Screenplay: Sanjay Leela Bhansali & Utkarshini Vashishtha | **Dialogue:** Utkarshini Vashishtha & Prakash Kapadia |
Cast: Alia Bhatt, Ajay Devgn, Seema Pahwa, Indira Tiwari, Jim Sarbh, Shantanu Maheshwari

संजय लीला भंसाली एक विख्यात फ़िल्मकार, पटकथा लेखक, संगीतकार, संपादक और निर्माता हैं। उनकी फ़िल्में एक पैंटिंग की तरह होती हैं। भारतीय सिनेमा में उनके योगदान के लिए उन्हें पांच बार राष्ट्रीय पुरस्कार और पद्म श्री (2015) सहित कई प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। **Sanjay Leela Bhansali** is a renowned Indian filmmaker, screenwriter, music composer, editor and producer. He has been conferred with numerous awards including, the prestigious National Award five times and the Padma Shri (2015).

उत्कर्षिणी वशिष्ठ भारत और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर फ़िल्मों और टेलीविजन के लिए एक भारतीय पटकथा लेखक हैं। बायोपिक्स और ऐतिहासिक कहानियों जैसी वास्तविक जीवन की कहानियों में उन्हें विशेष रुचि है। इन्होंने 'सरबजीत', 'रामलीला' और अब 'गंगूबाई काठियावाड़ी' जैसी फिल्मों में काम किया है। **Utkarshini Vashishtha** is an Indian screenwriter for films and television in India and internationally. Real life stories like biopics and historicals are special to her. She has worked on films like 'Sarabjit', 'Ramleela' and now 'Gangubai Kathiawadi'.

प्रशस्ति – छोटे शहर की एक मासूम लड़की जो माफिया बनती है, और आगे चलकर दबी कुचली महिलाओं की आवाज बनती है, उसके वास्तविक जीवन पर आधारित विचारोत्तेजक रूपांतरण।

Citation - An evocative book adaptation based on a real life character's journey from a small town innocent girl into a mafia queen.

गंगुबाई काठियावाड़ी

सर्वश्रेष्ठ पटकथा (संवाद)

Gangubai Kathiawadi
Best Screenplay (Dialogue)

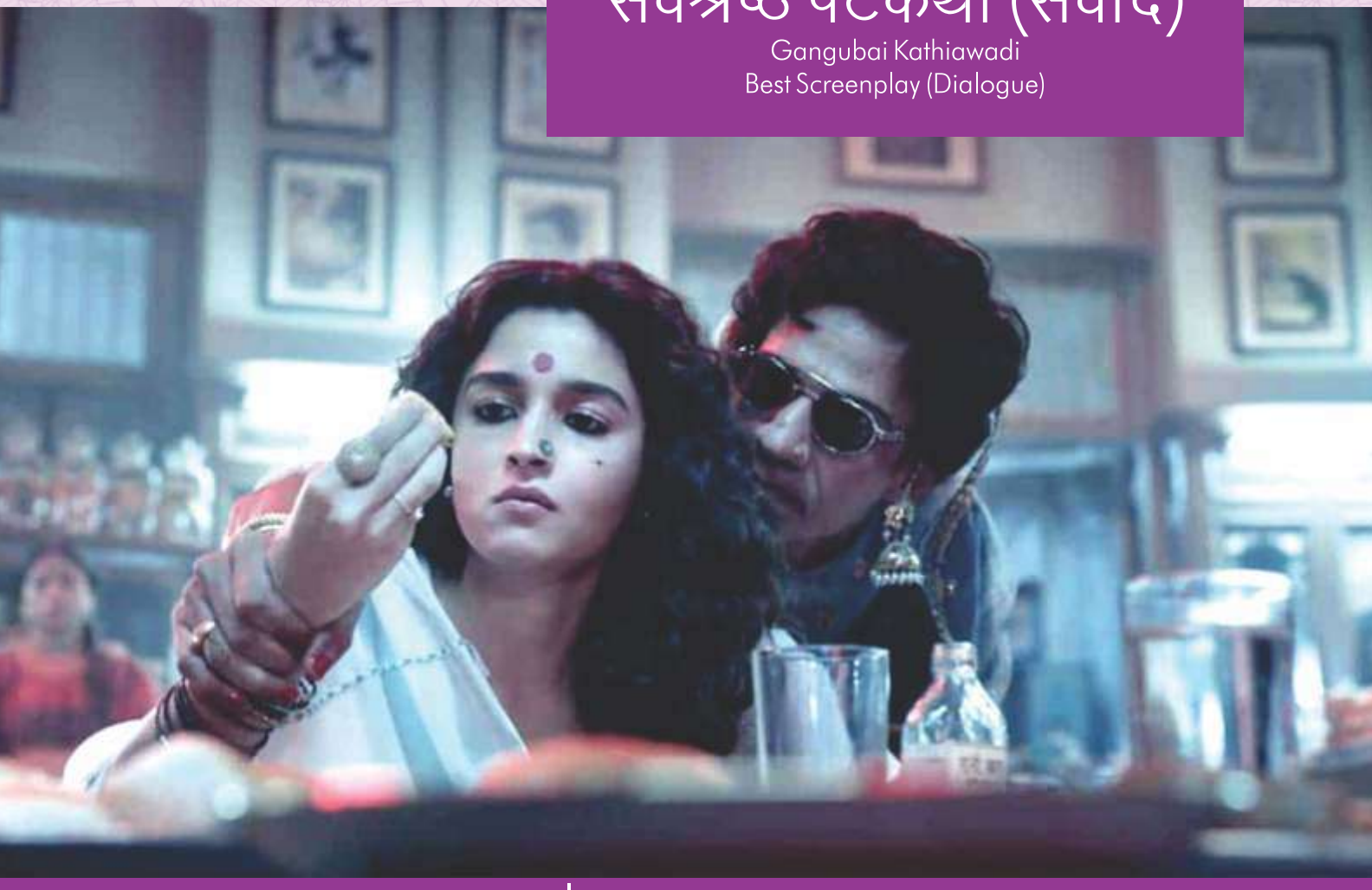

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Hindi | **157 Min** | **Director:** Sanjay Leela Bhansali | **Production Company:** Bhansali Productions Pvt Ltd **DOP:** Sudeep Chatterjee | **Music:** Sanchit Balhara & Ankit Balhara | **Editor:** Sanjay Leela Bhansali | **Screenplay:** Sanjay Leela Bhansali & Utkarshini Vashishtha | **Dialogue:** Utkarshini Vashishtha & Prakash Kapadia | **Cast:** Alia Bhatt, Ajay Devgn, Seema Pahwa, Indira Tiwari, Jim Sarbh, Shantanu Maheshwari

उत्कर्षिणी वशिष्ठ भारत और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर फ़िल्मों और टेलीविजन के लिए एक भारतीय पटकथा लेखक हैं। बायोपिक्स और ऐतिहासिक कहानियों जैसी वास्तविक जीवन की कहानियों में उन्हें विशेष रुचि है। इन्होंने 'सरबजीत', 'रामलीला' और अब 'गंगूबाई काठियावाड़ी' जैसी फ़िल्मों में काम किया है।

Utkarshini Vashishtha is an Indian screenwriter for films and television in India and internationally. Real life stories like biopics and historicals are special to her. She has worked on films like 'Sarabjit', 'Ramleela' and now 'Gangubai Kathiawadi'.

प्रकाश कापड़िया फ़िल्मों और रंगमंच के एक पुरस्कार विजेता पटकथा लेखक हैं। इन्होंने 'देवदास' (2002), 'ब्लैक' (2005), 'बाजीराव मस्तानी' (2015) और 'गंगूबाई काठियावाड़ी' (2022) जैसी समीक्षकों द्वारा प्रशंसित फिल्मों के लिए लिखा है, जिसके लिए इन्होंने कई पुरस्कार जीते हैं।

Prakash Kapadia is an award-winning script writer for films and theatre. He has written for critically acclaimed films like 'Devdas' (2002), 'Black' (2005), 'Bajirao Mastani' (2015) and 'Gangubai Kathiawadi' (2022), amongst others, for which he has won several awards.

प्रशस्ति – फ़िल्म के सशक्त और प्रभावशाली संवाद माहौल, परिवेश और काल का निर्माण करते हैं, पात्रों को जीवंत बनाते हैं।

Citation - Its powerful and incisive dialogues create the ambience, the milieu and the period, giving life to colourful characters.

चाविट्टु
सर्वश्रेष्ठ प्रोडक्शन ध्वनि आलेखक
(लोकेशन | सिंक साउंड)

Chavittu | Best Production Sound Recordist
(Location | Sync Sound)

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Malayalam | **85 Min** | **Director:** Shinos Rahman & Sajas Rahman | **Production Company:** Sharafudheen and Friends | **DOP:** Mukesh Muraleedharan | **Music:** Ajeesh Anto | **Editor:** Shinos Rahman & Sajas Rahman | **Screenplay:** Shinos Rahman & Sajas Rahman | **On Location:** Arun Asok & Sonu K. P. | **Production Design:** Sreejith Odakkali & Abhilash Balan | **Choreographer:** Arunlal | **Sound Design:** Sreejith Sreenivasan | **Cast:** Arunlal

अरुण असोक केरल स्थित एक पुरस्कार विजेता प्रोडक्शन साउंड मिक्सर, साउंड डिजाइनर और साउंड एडिटर हैं। इन्हें 'थाई मसाज', 'मिसमैच्ड सीजन 2', 'मधनोलसवम', 'एडक्कड़ बटालियन 06', 'वासंती' जैसी फिल्मों के लिए जाना जाता है।

Arun Asok is an award winning production sound mixer, sound designer and sound editor based in Kerala. He is known for films like 'Thai Massage', 'Mismatched Season 2', 'Madhanolsavam', 'Edakkad Battalion 06', 'Vasanthi', amongst others.

सोनू के.पी. एक पुरस्कार विजेता प्रोडक्शन साउंड मिक्सर हैं, जिन्हें फ़िल्म 'चविट्टू' में उनके काम के लिए जाना जाता है। वह कई मलयालम फ़िल्मों जैसे 'कम्मट्टीपादम', 'परवा', 'ईडा' से भी जुड़े हुए हैं।

Sonu K. P. is an award winning production sound mixer, best known for his work in the film 'Chavittu'. He is also associated with several Malayalam films like 'Kammattipadam', 'Parava', 'Eeda', amongst others.

प्रशस्ति – लाइव ध्वनि के जादू को ग्रहण करके कथा की भावना को एक स्तर ऊपर ले जाने के लिए ।

Citation - By capturing the magic of live sound to immensely enhance the spirit of the narrative.

झिल्ली (डिस्कार्ड्स)
सर्वश्रेष्ठ ध्वनि आलेखन (साउंड डिज़ाइनर)
Jhilli (Discards)
Best Audiography (Sound Designer)

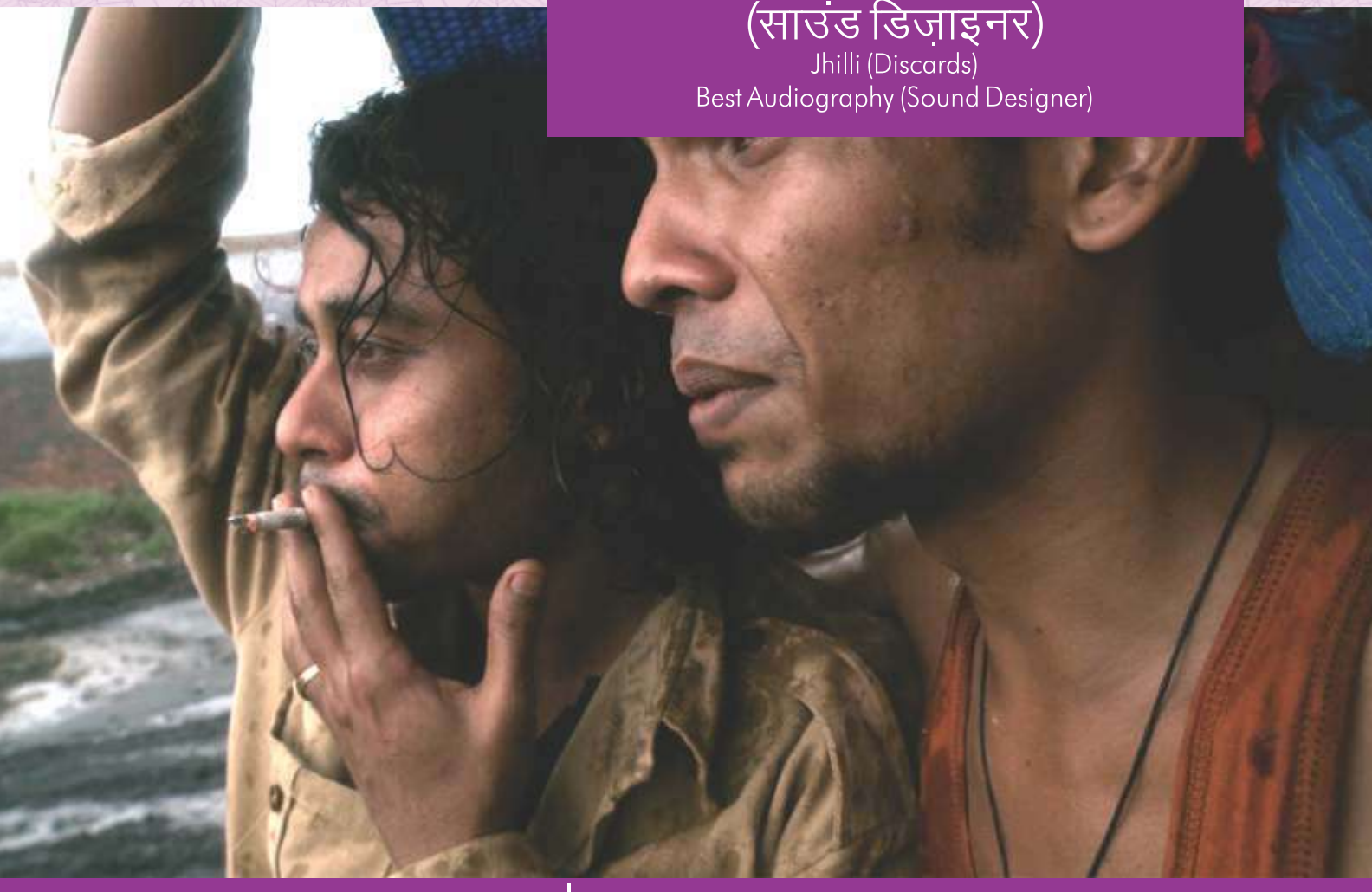

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Bengali | **91 Min** | **Director:** Ishaan Ghose | **Production Company:** Goutam Ghose Associates | **DOP:** Ishaan Ghose | **Music:** Soumajit Ghosh & Rajarshi Das | **Editor:** Ishaan Ghose | **Screenplay:** Ishaan Ghose | **Dialogue:** Ishaan Ghose | **Sound Design:** Aneesh Basu | **Cast:** Aranya Gupta

अनीश बासू फ़िल्मों, लघु फ़िल्मों और वेब श्रृंखला के लिए एक साउंड डिजाइनर हैं। इनकी प्रमुख परियोजनाओं में कौशिक गांगुली की 'चोटोडर चोबी' (2015), श्रीजीत मुखर्जी की 'राजकाहिनी' (2015), सुजॉय घोष की फ़ीचर फ़िल्म 'बदला' (2018) और लघु फ़िल्म 'अहिल्या' (2015) जैसी फ़िल्में शामिल हैं जो यूट्यूब पर वायरल हुई। बंगाली फ़िल्म 'झिल्ली' (2021) में अपने काम के लिए, इन्होंने 69वें राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार में सर्वश्रेष्ठ ध्वन्यांकन का पुरस्कार जीता।

Aneesh Basu is a sound designer based in Kolkata for films, short films and web series. His major projects include films like Koushik Ganguly's 'Chotoder Chobi' (2015), Srijeet Mukherjee's 'Rajkahini' (2015), Sujoy Ghosh's feature film 'Badla' (2018) and the short film 'Ahalya' (2015) which became viral on YouTube. For his work in the Bengali film 'Jhilli' (2021), he won the Best Audiography Award at the 69th National Film Awards.

प्रशस्ति – संगीत और ध्वनि के असर के साथ एक अभिनव ध्वनि परिदृश्य बनाने के लिए जो पूरे विषय के स्तर को उठाने का काम करता है।
Citation - For creating an innovative sound scape with music and sound effects that elevates the overall theme.

सरदार उधम

सर्वश्रेष्ठ ध्वनि आलेखन

(अंतिम मिक्स्ड ट्रैक का पुन: ध्वनि आलेखक)

Sardar Udham | Best Audiography

(Re - Recordist of the Final Mixed Track)

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Hindi | **164 Min** | **Director:** Shoojit Sircar | **Production Company:** Kino Works LLP & Rising Sun Films Pvt. Ltd. **DOP:** Avik Mukhopadhayay | **Music:** Shantanu Moitra | **Editor:** Chandrashekhar Prajapati | **Screenplay:** Suvendu Bhattacharjee & Ritesh Shah | **Sound Design:** Dipankar Jojo Chaki & Nihar Ranjan Samal | **Costume Designer:** Veera Kapur Ee | **Cast:** Vicky Kaushal, Shaun Scott, Stephen Hogan, Amol Parashar, Kirsty Averton

फ़िल्मों में ध्वनि के पेशे में **सिनॉय जोसेफ** एक पुरस्कार विजेता नाम है, जिन्होंनें 20 से ज्यादा भाषाओं के लिए 450 से ज्यादा फ़िल्मों के लिए काम किया है। फ़िल्मों में ध्वनि की अहमियत को बयान करने के मामले में इनकी विशेषज्ञता और समर्पण की बदौलत इन्हें व्यापक स्तर पर पहचान और कई पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं, जिनमें 'सरदार उधम' (2022) के लिए प्रतिष्ठित 69वां राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार, 'गैंग्स ऑफ वासेपुर' (2012) के लिए 60वां राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार शामिल हैं। और 'कार्बन' (2018) के लिए 49वां केरल राज्य फ़िल्म पुरस्कार शामिल है।

Sinoy Joseph is an award winning sound professional, who has worked on more than 450 feature films in a remarkable array of 20 different languages. His dedication and expertise in the world of sound in films has earned him widespread recognition and numerous awards, including the prestigious 69th National Film Award for 'Sardar Udham' (2022), the 60th National Film Award for 'Gangs of Wasseypur' (2012) and the 49th Kerala State Film Award for 'Carbon' (2018).

प्रशस्ति – संगीत का एक ऐसा नाजुक संतुलन जहां प्रत्येक ध्वनि मिलकर एक सुसंगत और प्रभावकारी माहौल बनाती है।

Citation - A delicate balance where every sound element was harmonized to create a coherent and impactful soundscape.

गंगुबाई काठियावाड़ी
सर्वश्रेष्ठ संपादन
Gangubai Kathiawadi
Best Editing

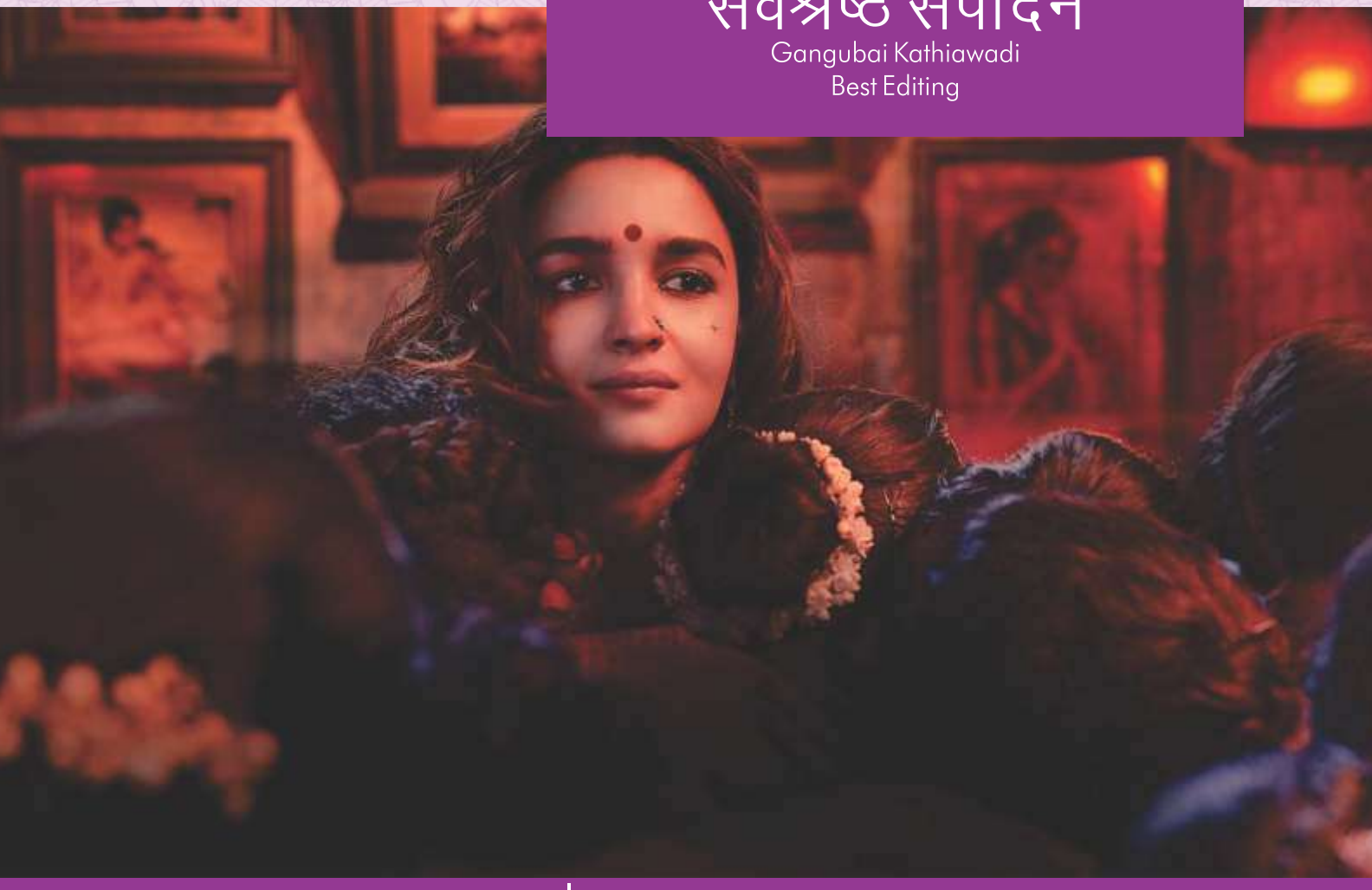

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Hindi | **157 Min** | **Director:** Sanjay Leela Bhansali | **Production Company:** Bhansali Productions Pvt Ltd | **DOP:** Sudeep Chatterjee | **Music:** Sanchit Balhara & Ankit Balhara | **Editor:** Sanjay Leela Bhansali | **Screenplay:** Sanjay Leela Bhansali & Utkarshini Vashishtha | **Dialogue:** Utkarshini Vashishtha & Prakash Kapadia | **Cast:** Alia Bhatt, Ajay Devgn, Seema Pahwa, Indira Tiwari, Jim Sarbh, Shantanu Maheshwari

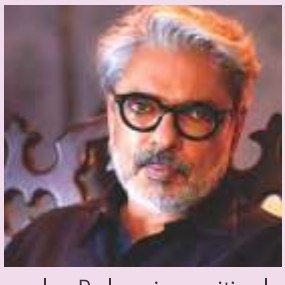

संजय लीला भंसाली विख्यात फ़िल्मकार, पटकथा लेखक, संगीतकार, संपादक और निर्माता हैं। उनकी फ़िल्में एक पैंटिंग की तरह होती हैं जिसमें भारतीय जीवन शैली को एक बड़े कैनवास पर सीपित कर अद्भुत कल्पनाओं के रंग भरे जाते हैं। इनकी फ़िल्मों ने व्यावसायिक सफलता के साथ आलोचनात्मक प्रशंसा को बखूबी संतुलित किया है, इन्हें 'खामोशी', 'देवदास', 'ब्लैक', 'बाजीराव मस्तानी', 'गंगूबाई काठियावाड़ी' जैसी फ़िल्मों के लिए जाना जाता है। भारतीय सिनेमा में उनके योगदान के लिए उन्हें पांच बार राष्ट्रीय पुरस्कार और पद्म श्री (2015) सहित कई प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है।

Sanjay Leela Bhansali is a renowned Indian filmmaker, screenwriter, music composer, editor and producer. His films celebrate the Indian way of life with striking imagery mounted on epic scale. Balancing critical acclaim with commercial success, he is known for films like, 'Khamoshi', 'Devdas', 'Black', 'Bajirao Mastani', 'Gangubai Kathiawadi', amongst others. He has been conferred with numerous prestigious awards, including the National Award five times and the Padma Shri (2015), for his contributions to Indian cinema.

प्रशस्ति – एक कलात्मक और तकनीकी प्रयास जिसने फिल्म की कथा और भावनात्मक गतिशीलता को एक विस्तार दिया, जिसका परिणामस्वरूप एक सम्मोहक और गहन सिनेमाई यात्रा संभव हो सकी।

Citation - An artistic and technical endeavour that intricately shaped the film's narrative and emotional dynamics, resulting in a compelling and immersive cinematic journey.

सरदार उधम

सर्वश्रेष्ठ प्रोडक्शन डिज़ाइन

Sardar Udham
Best Production Design

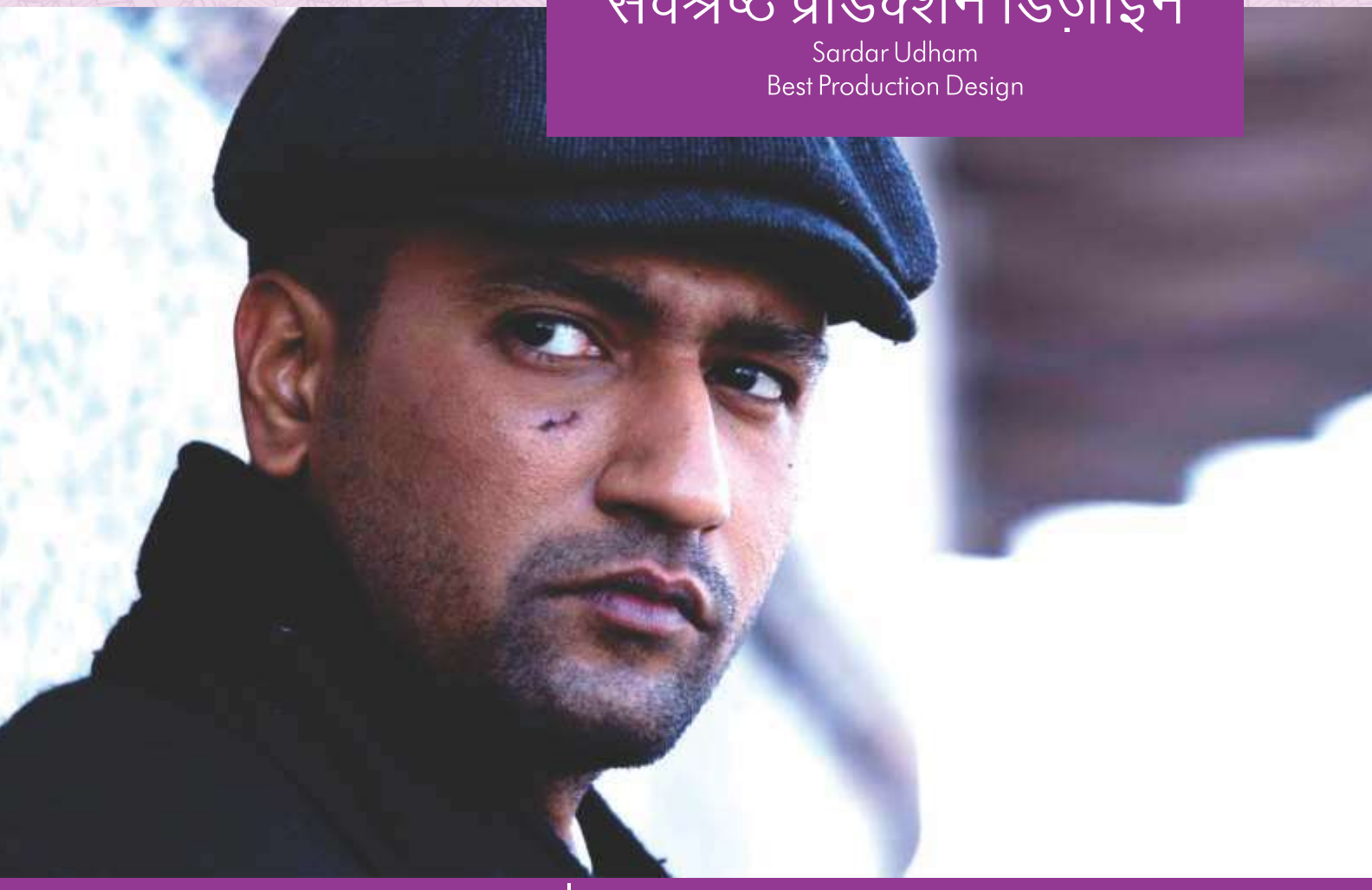

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Hindi | **164 Min** | **Director:** Shoojit Sircar | **Production Company:** Kino Works LLP & Rising Sun Films Pvt. Ltd. | **DOP:** Avik Mukhopadhayay | **Music:** Shantanu Moitra | **Editor:** Chandrashekhar Prajapati | **Screenplay:** Suvendu Bhattacharjee & Ritesh Shah | **Production Design:** Dmitrii Malich & Mansi Dhruva Mehta | **Costume Designer:** Veera Kapur Ee | **Cast:** Vicky Kaushal, Shaun Scott, Stephen Hogan, Amol Parashar, Kirsty Averton

दिमित्री मालीच एक अंतरराष्ट्रीय प्रोडक्शन डिजाइनर और कठपुतली डिजाइनर हैं, इन्होंने 30 से अधिक फ़िल्मों और टेलीविजन श्रृंखलाओं पर काम किया है। फिल्म 'एलेक्जेंड्रा' (2007) के लिए इन्हें रूस के संस्कृति मंत्रालय से सम्मान और मेडल ऑफ ऑनर मिला। **Dimitrii Malich** is an international production designer and a puppet designer who has worked on more than 30 movies and television series. He received a Medal of Honor and Gratitude from the Ministry of Culture of Russia for the film 'Alexandra' (2007).

मानसी ध्रुव मेहता एक पुरस्कार विजेता भारतीय प्रोडक्शन डिजाइनर हैं। इन्हें 'विक्की डोनर', 'पीकू', 'अक्टूबर', 'मोनिका ओह माय डार्लिंग', 'गुलाबो सीताबो', 'गुलमोहर' और 'सरदार उधम' जैसी उल्लेखनीय फिल्मों में इनके काम के लिए सराहना और प्रशंसा मिली है। **Mansi Dhruv Mehta** is an award winning Indian production designer. She has received appreciation and accolades for her work in notable films like 'Vicky Donor', 'Piku', 'October', 'Monica Oh My Darling', 'Gulabo Sitabo', 'Gulmohar' and 'Sardar Udham'.

प्रशस्ति – कई परतों में रची गई प्रक्रिया एतिहासिक संदर्भों और कहानी से लेकर जिंदगी तक भावनात्मक गहराइयों को उभारती है।

Citation - Its multi-layered process brought out the historical context and the emotional depth of the story to life.

सरदार उधम

सर्वश्रेष्ठ वेशभूषाकार

Sardar Udham
Best Costume Designer

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Hindi | **164 Min** | **Director:** Shoojit Sircar | **Production Company:** Kino Works LLP & Rising Sun Films Pvt. Ltd. | **DOP:** Avik Mukhopadhayay | **Music:** Shantanu Moitra | **Editor:** Chandrashekhar Prajapati | **Screenplay:** Suvendu Bhattacharjee & Ritesh Shah | **Production Design:** Dmitrii Malich & Mansi Dhruva Mehta | **Costume Designer:** Veera Kapur Ee | **Cast:** Vicky Kaushal, Shaun Scott, Stephen Hogan, Amol Parashar, Kirsty Averton

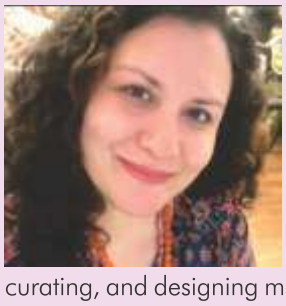

वीरा कपूर ईई फिल्मों, टेलीविजन, ओटीटी श्रृंखला और विज्ञापन–फ़िल्मों के लिए भारत की अग्रणी पोशाक डिजाइनरों में से एक हैं। कई पुरस्कारों और प्रशंसाओं की प्राप्तकर्ता वीरा ने 'सरदार उधम', 'गुलाबो सिताबो', 'भारत', '102 नॉट आउट', 'अक्टूबर' 'ब्लैकमेल', 'पीकू', 'काला' सहित कई लोकप्रिय फ़िल्मों के लिए यादगार वेशभूषा बनाने, और डिजाइन करने में अपनी पहचान बनाई है। इन्होंने उद्योग जगत के अग्रणी दिग्गजों को स्टाइल किया है और उनके खाते में 1000 से अधिक विज्ञापन–फ़िल्में और कई ओटीटी श्रृंखलाएं हैं।

Veera Kapur Ee is one of India's leading costume designers for films, television, OTT series and ad-films. A recipient of many awards and accolades, she has made a mark in creating, curating, and designing memorable costumes for popular films like 'Sardar Udham', 'Gulabo Sitabo', 'Bharat', '102 Not Out', 'October', 'Blackmail', 'Piku', 'Qala', amongst others. She has styled leading industry stalwarts and has over 1000 ad-films and several OTT series to her credit.

प्रशस्ति – किरदारों और उनके ऐतिहासिक संदर्भों के बीच संबंध स्थापित करने और उस दौर के अनुभवों को प्रमाणिकता प्रदान करने के लिए।

Citation - The authenticity contributes to its immersive experience transporting and creating a connection between the characters and their historical contexts.

गंगुबाई काठियावाड़ी

सर्वश्रेष्ठ मेकअप कलाकार

Gangubai Kathiawadi
Best Make-up Artist

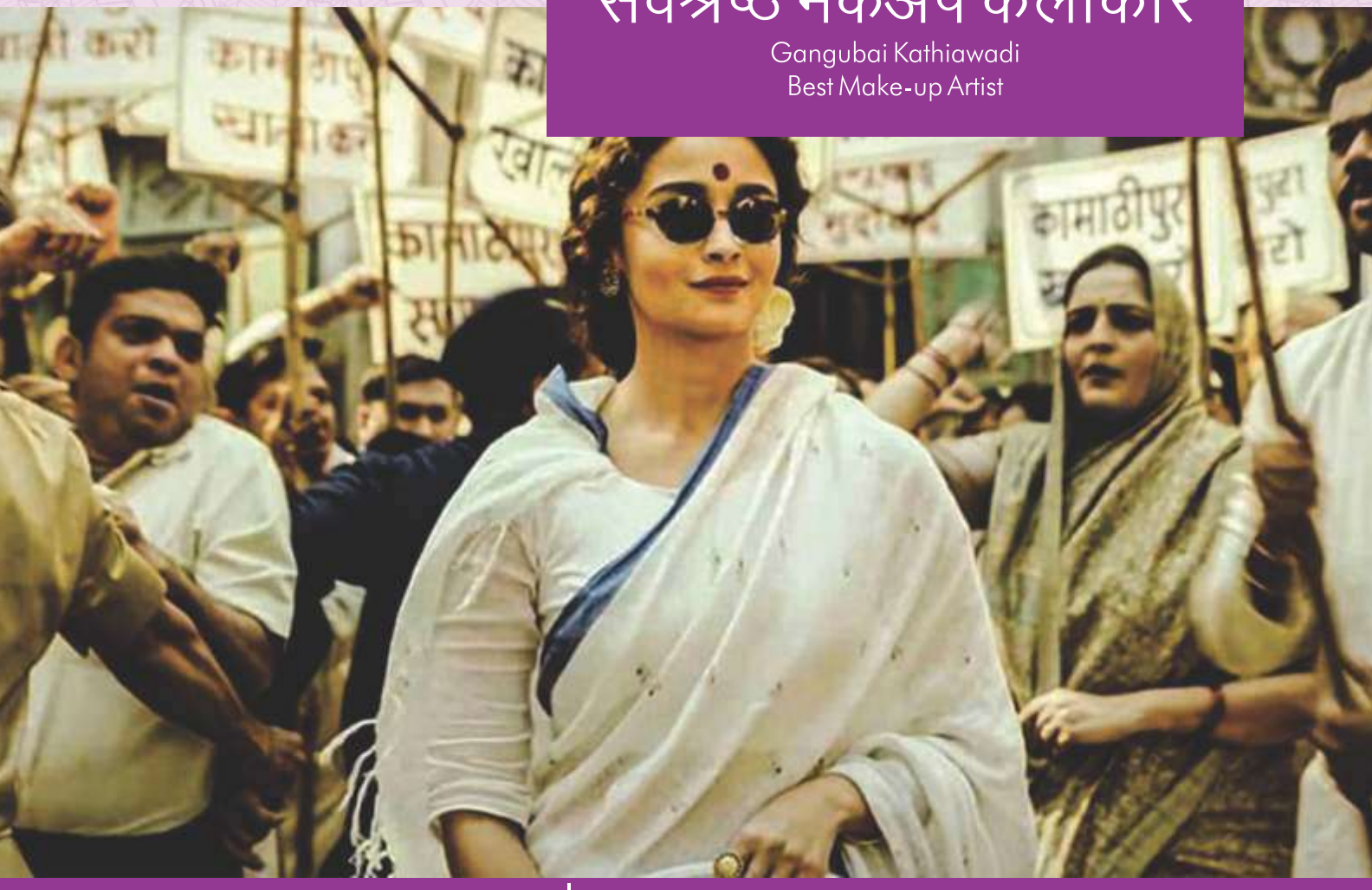

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Hindi | **157 Min** | **Director:** Sanjay Leela Bhansali | **Production Company:** Bhansali Productions Pvt Ltd | **DOP:** Sudeep Chatterjee | **Music:** Sanchit Balhara & Ankit Balhara | **Editor:** Sanjay Leela Bhansali | **Screenplay:** Sanjay Leela Bhansali & Utkarshini Vashishtha | **Dialogue:** Utkarshini Vashishtha & Prakash Kapadia | **Make-up Artist:** Preetisheel Singh D'souza | **Cast:** Alia Bhatt, Ajay Devgn, Seema Pahwa, Indira Tiwari, Jim Sarbh, Shantanu Maheshwari

प्रीतिशील सिंग डिसूज़ा भारतीय फ़िल्म उद्योग में चरित्र रचना और रूपसज्जा कलात्मकता के क्षेत्र की एक प्रसिद्ध प्रतिभा हैं। इन्होंने 60 से अधिक फ़िल्मों और आधा दर्जन वेब श्रृंखलाओं में काम किया है, जहां इनकी रूपसज्जा कलात्मकता के परिवर्तनकारी कौशल ने विभिन्न पात्रों में जान फूंक दी है। इनके रूपसज्जा कलात्मक कौशल ने अमिताभ बच्चन, शाहरुख खान, ऋषि कपूर, अक्षय कुमार, रणवीर सिंह सहित बॉलीवुड के सबसे प्रतिष्ठित सितारों को फ़िल्म के किरदार में गढ़ा है।

Preetisheel Singh D'Souza is a renowned talent in the realm of character design and makeup artistry in the Indian film industry. She has worked on more than 60 films and half a dozen web series where her makeup artistry's transformative skills have breathed life into diverse characters. Her makeup artistic prowess has graced the faces of Bollywood's most iconic stars, including Amitabh Bachchan, Shahrukh Khan, Rishi Kapoor, Akshay Kumar, Ranveer Singh, amongst others.

प्रशस्ति – कलात्मकता, शोध और कहानी कहने का तरीका मिलकर फ़िल्म के चरित्र की गहराई, ऐतिहासिक संदर्भ और समग्र सिनेमाई प्रभाव में योगदान देते हैं।

Citation - A blend of artistry, research and storytelling that contributes to the film's character depth, historical context and overall cinematic impact.

पुष्पा (दि राइस पार्ट 1)
सर्वश्रेष्ठ संगीत निर्देशन (गीत)

Pushpa (The Rise Part 1)
Best Music Direction (Songs)

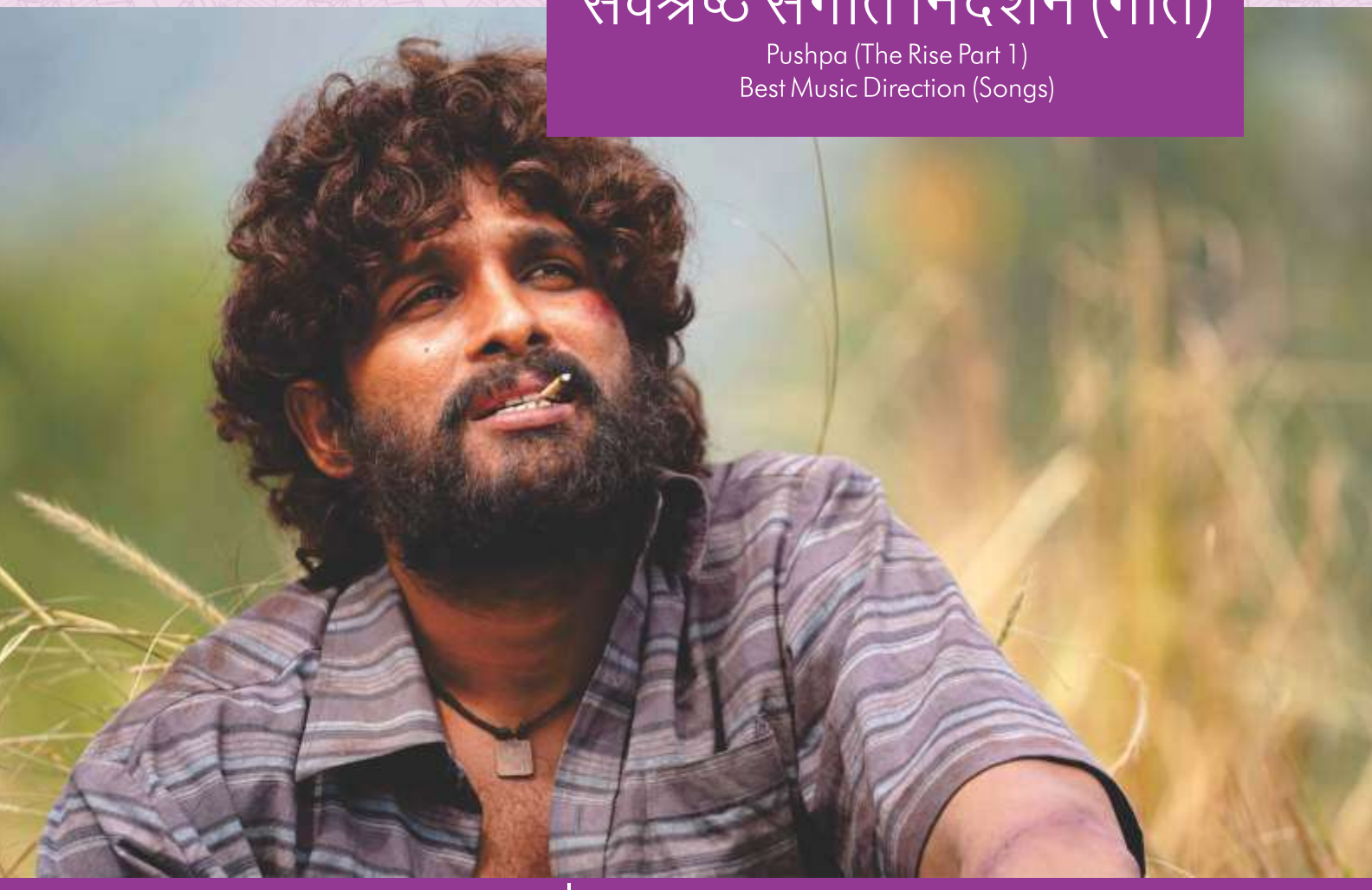

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Telugu | 179.51 Min | Director: Bandreddi Sukumar | **Production Company:** Mythri Movie Makers | **DOP:** Kuba Miroslaw Brozek | **Music:** Devi Sri Prasad | **Editor:** Karthika Srinivas and Antony L Ruben | **Screenplay:** B Sukumar **Dialogue:** B Sukumar & Srikanth Vissa | **Cast:** Allu Arjun, Rashmika Mandanna, Jagadeesh Prathap Bandari, Fahadh Fazil, Ajay Ghosh, Sunil, Dhananjay, Anasuya Bharadwaj, Kalpalatha, Dhruvan

रॉकस्टार डीएसपी के नाम से चर्चित **देवी श्री प्रसाद** एक पुरस्कार विजेता संगीतकार, गायक और गीतकार है। मुख्य रूप से तेलुगु और तमिल सिनेमा में अपने ब्लॉकबस्टर संगीत के लिए पहचाने जाने वाले डीएसपी ने 100 से अधिक फ़िल्मों में काम किया है। पारंपरिक और समकालीन संगीत के विशिष्ट मिश्रण ने उन्हें एक अद्वितीय कलात्मक छाप वाले संगीत निर्देशक के रूप में प्रशंसा दिलाई है। वह कई प्रतिष्ठित पुरस्कारों के प्राप्तकर्ता हैं, जिनमें एक राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार, एक नंदी पुरस्कार, दस फ़िल्मफेयर पुरस्कार सहित और कई अन्य पुरस्कार शामिल हैं।

Devi Sri Prasad, renowned as Rockstar DSP is an award winning Indian music composer, singer and lyricist. Known for his blockbuster music predominantly for Telugu and Tamil cinema, he has worked in over 100 films. His distinctive fusion of traditional and contemporary musical elements has earned him acclaim as a music director with a unique artistic imprint. He is the recipient of several prestigious awards, including a National Film Award, a Nandi Award, ten Filmfare Awards, and several others.

प्रशस्ति – गीत रचनाएँ जहां अपनी एक अमिट छाप छोड़ती हैं वहीं कहानी का एक अभिन्न अंग बन कर उससे असर को बढ़ाती हैं ।।

Citation - The song compositions become an integral part of its storytelling enhancing impact, while leaving a lasting impression.

आर आर आर

सर्वश्रेष्ठ संगीत निर्देशन
(बैकग्राउंड स्कोर)

RRR | Best Music Direction (Background Score)

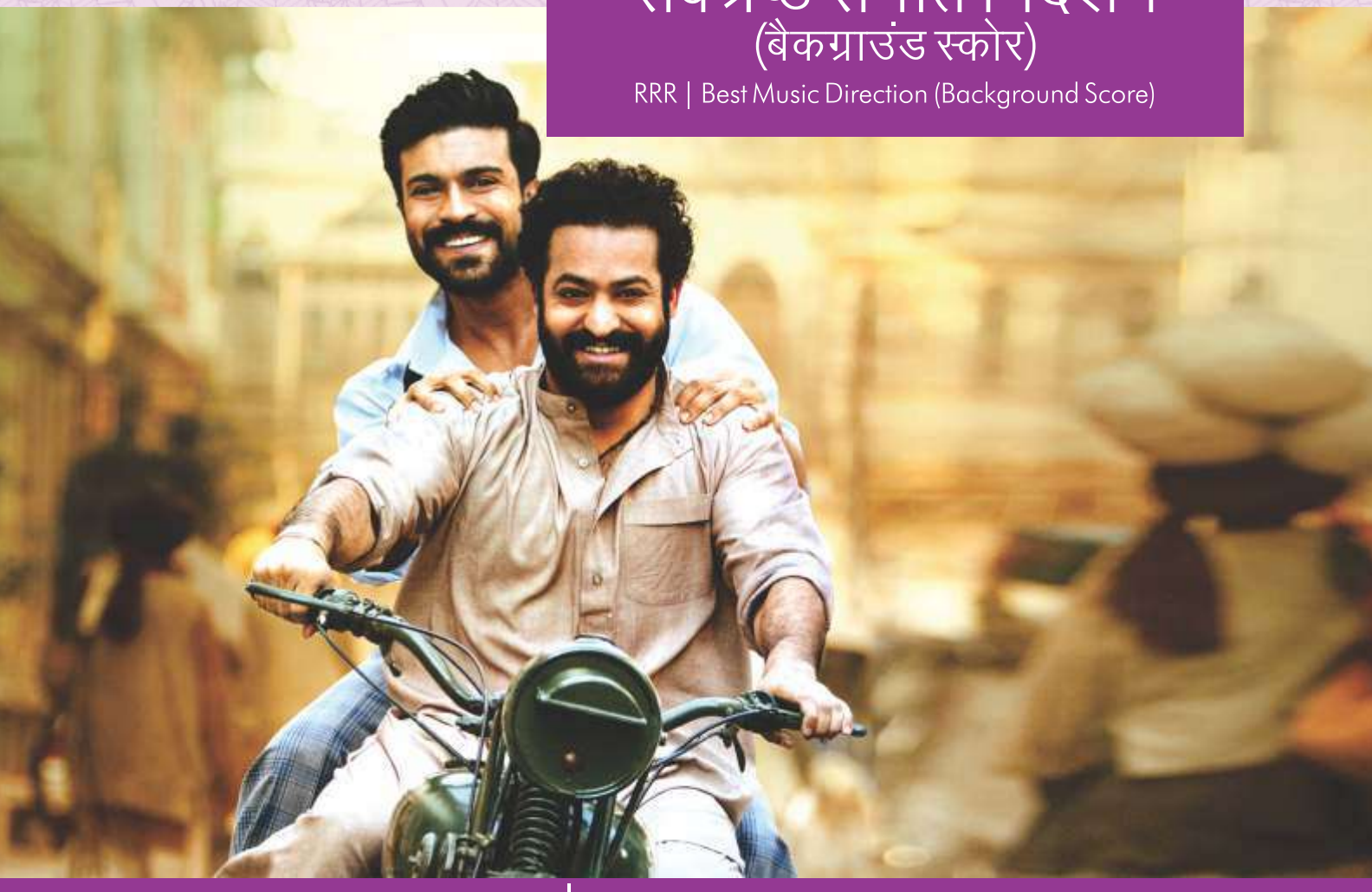

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Telugu | **187 Min** | **Director:** S S Rajamouli | **Production Company:** DVV Entertainments LLP | **DOP:** KK Senthil Kumar | **Music:** M. M. Keeravaani | **Editor:** A Sreekar Prasad | **Screenplay:** SS Rajamouli | **Sound Design:** Raghunath Kemisetty | **Costume Designer:** Rama Rajamouli | **Cast:** Ramcharan, Jr NTR, Alia Bhatt, Ajay Devgn, Shriya Saran, Twinkle Sharma, Samuthirakani

एम एम कीरावाणी दुनियाभर में विख्यात पुरस्कार विजेता संगीतकार, रिकॉर्ड प्रोड्यूसर, गायक और गीतकार हैं। इन्होंनें विभिन्न भाषाओं की 250 फिल्मों के लिए 1600 से ज्यादा गाना तैयार कियए हैं, और कई प्रतिष्ठित पुरस्कारों से नवाजे जा चुके हैं, जिसमें, दो राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार, एक अकादमी अवार्ड, एक गोल्डन ग्लोब, 11 नंदी पुरस्कार और 8 बार फिल्म फेयर पुरस्कार शामिल हैं। भारतीय सिनेमा में इनके योगदान को देखते हुए इन्हें पदम श्री (2023) से भी सम्मानित किया जा चुका है।

M M Keeravaani is a globally renowned award winning Indian music composer, record producer, singer and lyricist. He has worked on more than 250 movies, recorded 1600 plus songs in multiple languages and is a recipient of several prestigious accolades and awards, including two National Film Awards, an Academy Award, a Golden Globe Award, eleven Nandi Awards and eight Filmfare Awards. He was conferred with a Padma Shri (2023) for his contributions towards Indian cinema.

प्रशस्ति – संगीत रचना समग्र रूप से सिनेमाई अनुभव पैदा करती है और फिल्म की दृश्य कथा के स्तर को उठाती है।

Citation - The music composition enhances the film's visual narrative creating a holistic cinematic experience.

कोंडा पोलम
सर्वश्रेष्ठ गीत
Konda Polam | Best Lyrics

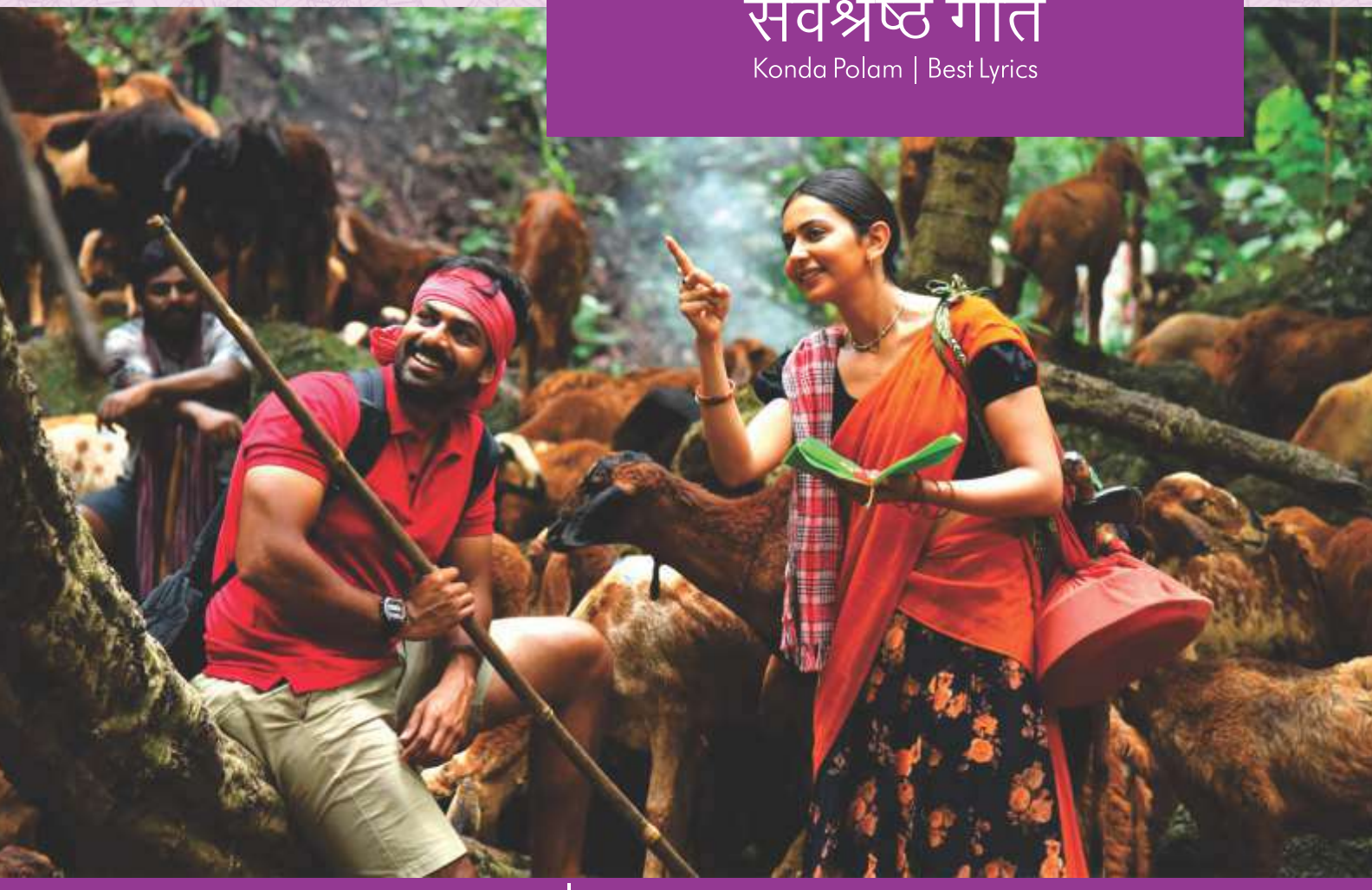

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Telugu | 142.29 Min | Director: Radha Krishna Jagarlamudi | **DOP:** Gnanashekhar V.S. | **Music:** M. M. Keeravaani | **Editor:** Shravan Katikaneni | **Screenplay:** Radha Krishna Jagarlamudi | **Dialogue:** Radha Krishna Jagarlamudi | **Production Design:** Rajukmar Gibson | **Lyrics:** Chandrabose | **Costume Designer:** Aiswarya Y | **Cast:** Panja Vaisshnav Tej, Rakul Preet Singh

कानुकुंतला सुभाष चंद्रबोस तेलुगु फिल्म जगत के एक पुरस्कार विजेता गीतकार और पार्श्व गायक हैं। इन्होंनें 860 से ज्यादा फ़िल्मों के लिए 3600 से ज्यादा गीत लिखे हैं। आर आर आर (2022) के गाने 'नाटू नाटू' के लिए अकादमी पुरस्कार (ऑस्कर 2023) और गोल्डन ग्लोब अवॉर्ड और फ़िल्म कोंडा पोलम (2021) के 'धम धम धम' गाने के लिए राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार (2021) सहित इन्हें कई प्रतिष्ठित पुरस्कारों से नवाज़ा जा चुका है।

Kanukuntla Subhash Chandrabose is an award winning Indian lyricist and playback singer in the Telugu film industry. He has penned memorable lyrics for more than 3600 songs in over 860 films. A recipient of several prestigious accolades, including an Academy Award (Oscar 2023) and a Golden Globe Award for the song 'Naatu Naatu' from RRR (2022), and a National Film Award (2021) for the song 'Dham Dham Dham' from the film Konda Polam (2021), amongst other awards.

प्रशस्ति – विस्मयकारी गीत जो मानव के प्रकृति के साथ संबंधो को सुंदरता से वर्णित करते हैं ।

Citation - Its awe-inspiring lyrics beautifully describe human relationship with mother nature.

आर आर आर
सर्वश्रेष्ठ स्पेशल इफेक्ट

RRR
Best Special Effects

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Telugu | **187 Min** | **Director:** S S Rajamouli | **Production Company:** DVV Entertainments LLP | **DOP:** KK Senthil Kumar | **Music:** M. M. Keeravaani | **Editor:** A Sreekar Prasad | **Screenplay:** SS Rajamouli | **Sound Design:** Raghunath Kemisetty | **Costume Designer:** Rama Rajamouli | **Cast:** Ramcharan, Jr NTR, Alia Bhatt, Ajay Devgn, Shriya Saran, Twinkle Sharma, Samuthirakani

श्रीनिवास मोहन एक विजुअल इफेक्ट् सुपरवाइजर हैं जिन्हें इस क्षेत्र का 25 साल का अनुभव है। वह अकादमी के सदस्य हैं और उन्हें उनके काम के लिए कई पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं, जिसमें सर्वश्रेष्ठ स्पेशल इफेक्ट के लिए पाँच "राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार" शामिल हैं। उन्होंने कई चर्चित फ़िल्मों पर काम किया है, जिनमें "आर आर आर", "2.0", "बाहुबली द बिगिनिंग" और "एंधीरन द रोबोट" शामिल हैं।

Srinivas Mohan is an Indian visual effects supervisor with 25 years of experience. He is a member of The Academy and has received several awards for his work, including five "National Film Awards" for Best Special Effects. He has worked on a number of notable films, including "RRR", "2.0", "Baahubali The Beginning" and "Endhiran The Robot".

प्रशस्ति – उन्नत वीएफएक्स तकनीकों को शामिल करने के लिए जो फ़िल्म के एक्शन और कथित काल के दृश्य को जीवंत बनाते हैं।
Citation - Incorporated with advanced VFX techniques that brought out its action and period elements to life.

आर आर आर
सर्वश्रेष्ठ नृत्यकला

RRR
Best Choreography

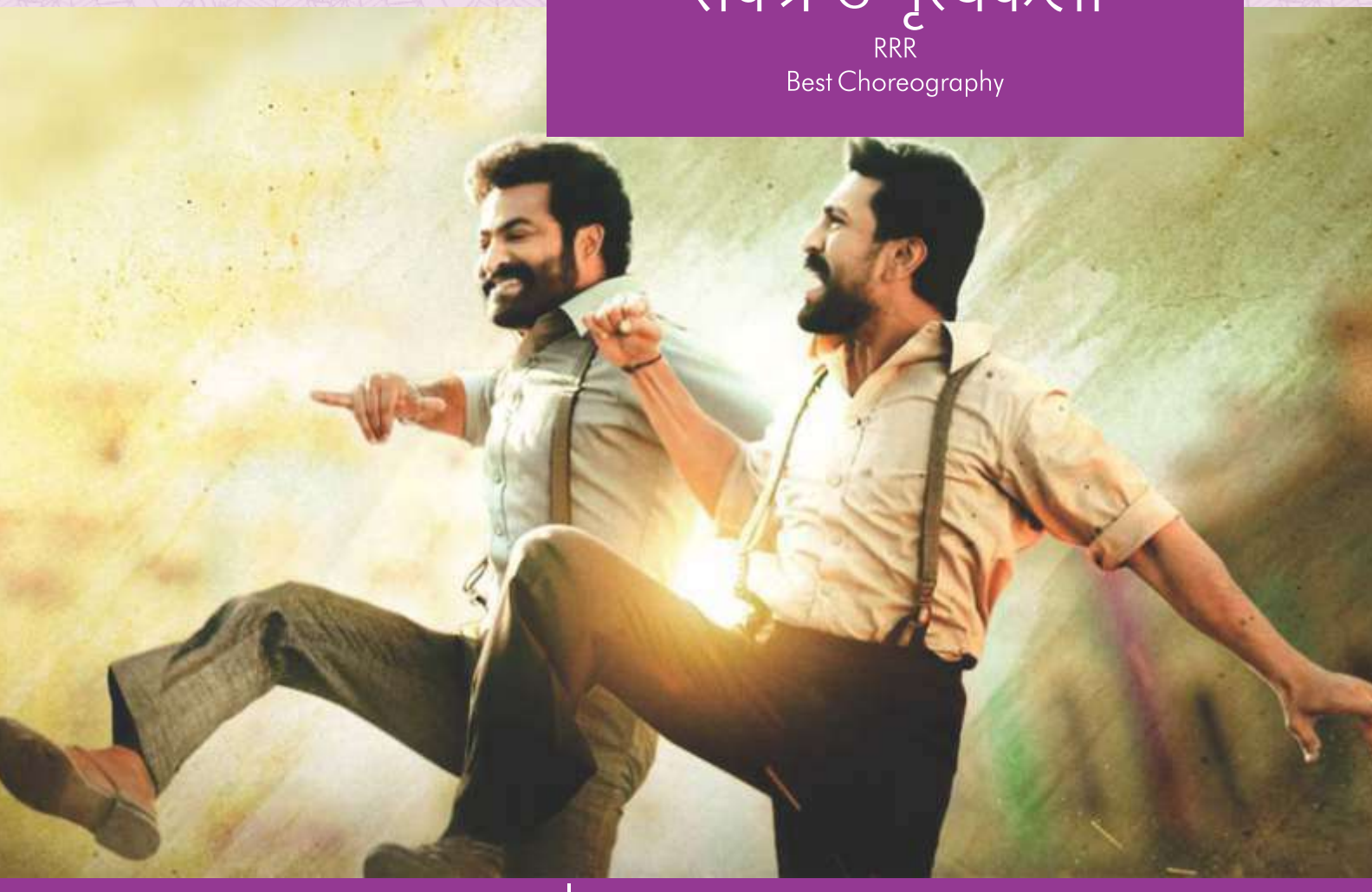

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Telugu | 187 Min | Director: S S Rajamouli | **Production Company:** DVV Entertainments LLP **DOP:** KK Senthil Kumar | **Music:** M. M. Keeravaani | **Editor:** A Sreekar Prasad | **Screenplay:** SS Rajamouli | **Sound Design:** Raghunath Kemisetty | **Choreography:** Prem Rakshith | **Cast:** Ramcharan, Jr NTR, Alia Bhatt, Ajay Devgn, Shriya Saran, Twinkle Sharma, Samuthirakani

प्रेम रक्षित कई सम्मान हासिल कर चुके भारतीय नृत्य निर्देशक हैं जो मूलरूप से तेलुगू फ़िल्म उद्योग के लिए काम करते हैं। 1994में बतौर डांसर शुरुआत करने के बाद उनकी जुनून और लगन ने 2002 में उन्हें नृत्य–निर्देशक के मुकाम तक पहुँचाया। 70 से ज़्यादा फ़िल्मों में नृत्य निर्देशन कर चुके रक्षित की रची कई स्टेप्स लोकप्रिय हैं और उन्होंने एक राष्ट्रीय फ़िल्म अवॉर्ड, तीन नंदी पुरस्कार और चार फ़िल्मफेयर अवार्ड जीते हैं।

Prem Rakshith is an award winning Indian choreographer, predominantly working in the Telugu film industry. Starting off as a dancer himself in 1994, his passion and dedication transitioned him into a choreographer in 2002. He has choreographed for 70 plus films, giving several popular hook steps, and is a recipient of several accolades and awards, including a National Film Award, three Nandi Awards and four Filmfare Awards.

प्रशस्ति – उत्कृष्ट नृत्य संयोजन जो फ़िल्म की लय, गति, शैली और भावनात्मक अभिव्यक्ति को बनाए रखते हुए एक मनोरम प्रस्तुति देते हैं जो फ़िल्म के साथ जोड़े रखती है।

Citation - The excellent choreography maIntained the film's rhythm, tempo, style and emotional expression to create a cohesive and captivating performance.

आरआरआर
सर्वश्रेष्ठ एक्शन निर्देशन

RRR | Best Action Direction
(Stunt Choreography)

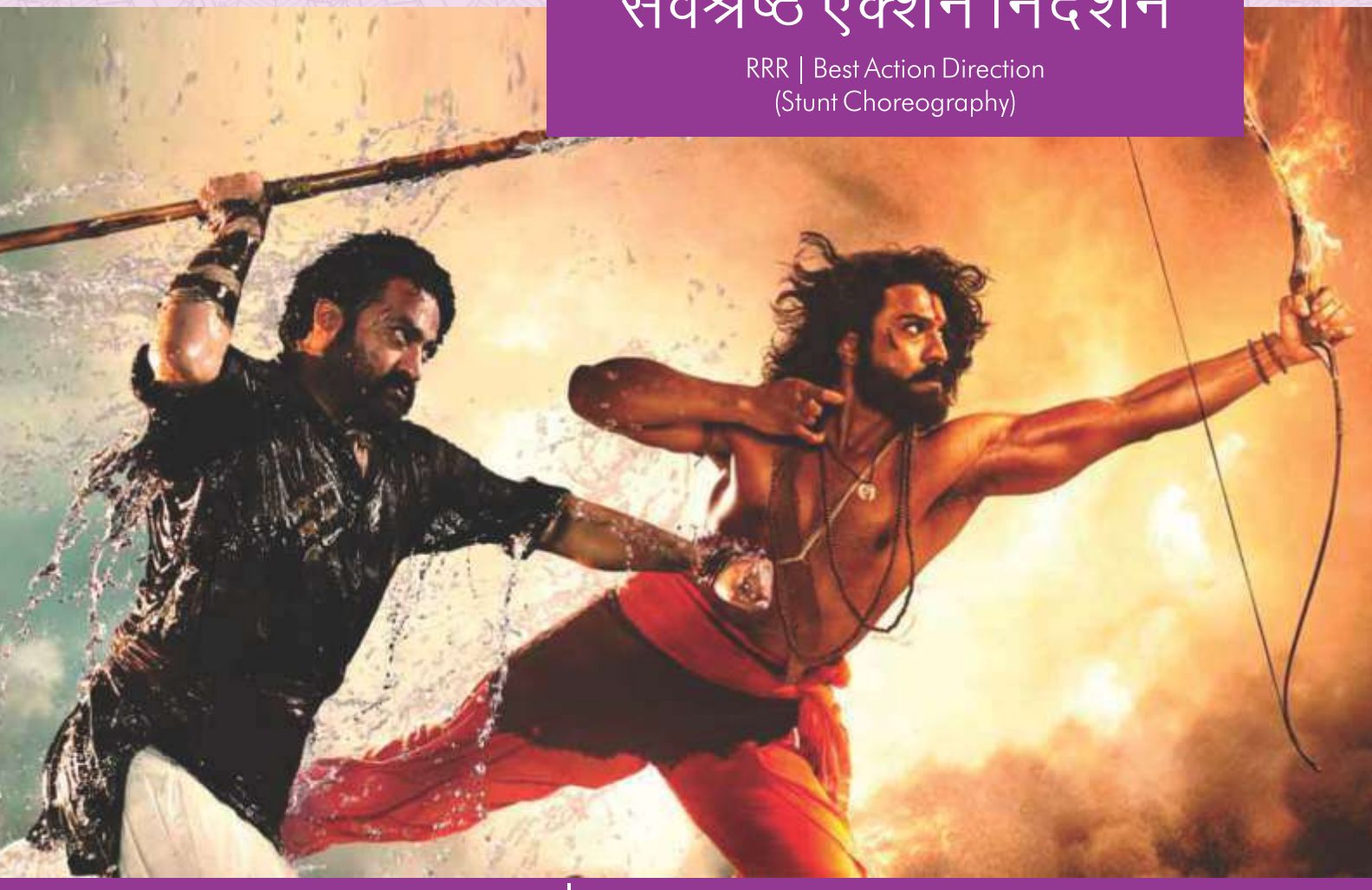

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Telugu | **187 Min** | **Director:** S S Rajamouli | **Production Company:** DVV Entertainments LLP | **DOP:** KK Senthil Kumar | **Music:** M. M. Keeravaani | **Editor:** A Sreekar Prasad | **Screenplay:** SS Rajamouli | **Stunt Choreographer:** King Solomon | **Sound Design:** Raghunath Kemisetty | **Costume Designer:** Rama Rajamouli | **Cast:** Ramcharan, Jr NTR, Alia Bhatt, Ajay Devgn, Shriya Saran, Twinkle Sharma, Samuthirakani

किंग सोलोमोन, तेलुगू फ़िल्मों के जाने–माने एक्शन निर्देशक हैं. 'ईगा', 'बाहुबली: द बिगनिंग', 'बाहुबली 2: द कन्क्लूजन' और 'आरआरआर' जैसी फ़िल्मों के एक्शन स्टंट और सीक्वेंस इन्हीं की देन ह।. एक्शन दृश्य फ़िल्माने में स्टंट डायरेक्टर्स का अहम रोल होता है। ऐसे में इन लोकप्रिय फ़िल्मों में सोलोमन का हुनर भारतीय फ़िल्म उद्योग में उनके अहम योगदान को दिखाता है।

King Solomon is a renowned action director in the Telugu film industry. He is the person behind the exhilarating action sequences and stunts seen in notable films like 'Eega,' 'Baahubali: The Beginning,' 'Baahubali 2: The Conclusion,' and 'RRR'. As stunt directors play a pivotal role in choreographing action sequences in films, his expertise in these acclaimed movies highlights his significant contributions to the Indian film industry.

प्रशस्ति – शानदार तरीके से कोरियोग्राफ किए गए स्टंट और एक्शन दृश्य फ़िल्म के समग्र सिनेमाई अनुभव को ऊंचाइयों पर ले जाते हैं।

Citation - The intense and well choreographed stunt/action scenes enhanced the film's overall cinematic experience.

अनुर (आइज़ ऑन दि सनशाइन)

विशेष उल्लेख

Anur (Eyes on the Sunshine) | Special Mention

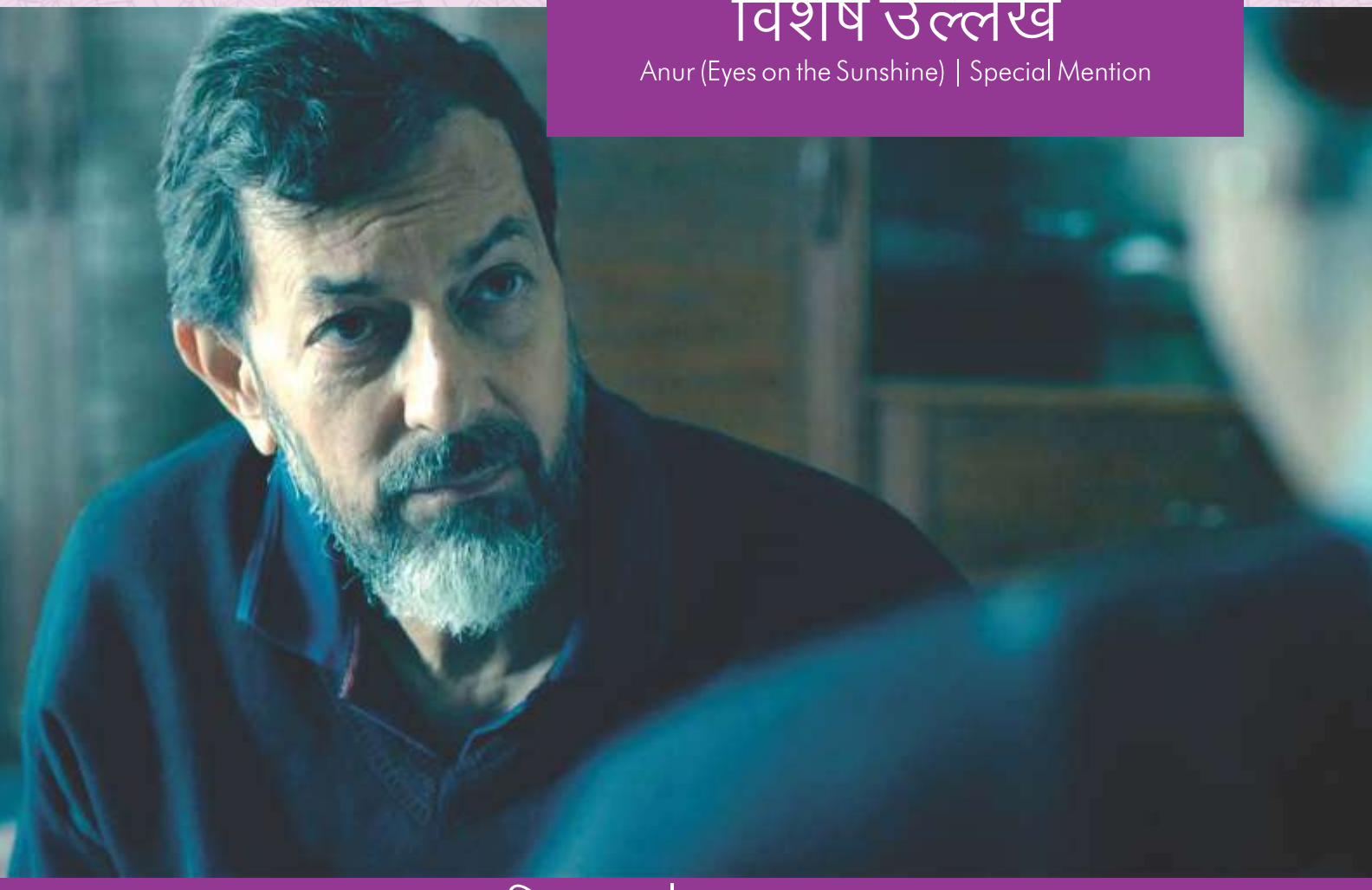

प्रशस्ति पत्र | CERTIFICATE

Assamese | **162 Min** | **Director:** Monjul Baruah | **Producer:** Dr. Gopendra Mohan Das | **DOP:** Sumon Dowerah | **Music:** Tarali Sarma | **Editor:** Twenchang | **Screenplay:** Monjul Baruah | **Story:** Anuradha Sharma Pujaree | **Sound Design:** Amrit Pritam Dutta | **Costume Designer:** Garima Saikia Garg | **Cast:** Dr. Jahanara Begum, Rajat Kapoor, Boloram Das, Rajashree Sarmah, Bidya Bharati, Udayan Duara, Aakhya J Kashyap

डॉ. जहाँआरा बेगम मुख्यरूप से एक डॉक्टर और असम की चर्चित रंगमंच और फिल्म अभिनेत्री हैं। इन्होंनें करीब 60 नाटकों में अभिनय किया और सराही गई हैं। इन्होंने जेबी प्रोडक्शंस नाम से अपनी खुद की थिएटर प्रोडक्शन कंपनी शुरू की और पांच असमिया फ़िल्मों में अभिनय किया जिसमें य 'गुन गुन गाने', 'कैक्टस', 'सीमा – द स्टोरी अनटोल्ड', 'कानिन' और अब 'अनुर: आइज़ ऑन द सनशाइन' जिससे इन्हें पहचान और सराहना मिली ।

Dr. Jahanara Begum is a prominent medical practitioner and a renowned theatre and film actor in Assam. She has done more than 60 plays and has received several accolades. She started her own theatre production company called JB Productions and has acted in five Assamese films; 'Guun Guun Gaane Gaane', 'Cactus', 'Seema – The Story Untold', 'Kanin' and now 'Anur: Eyes on the Sunshine' that have garnered recognition and appreciation.

प्रशस्ति – एक ऐसी विधवा के भावनात्मक चरित्र का सहज प्रदर्शन, जो एक ऐसे घर में अकेली रहती है जहां उसके दिवंगत पति की यादें हैं।

Citation - A subtle performance in an emotional character of a widow, living alone in a house that holds memories of her late husband.

होम
विशेष उल्लेख
Home | Special Mention

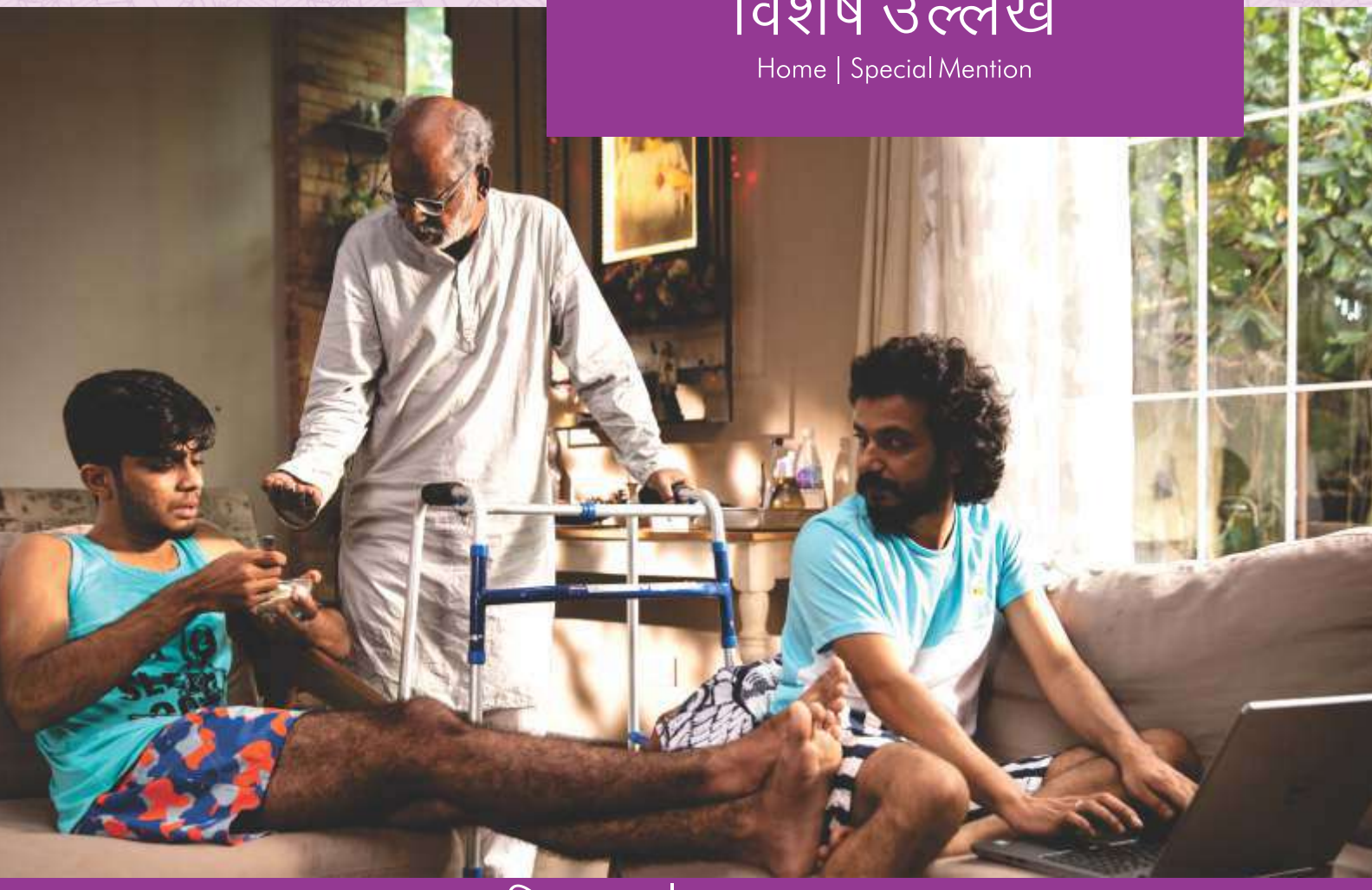

प्रशस्ति पत्र | CERTIFICATE

Malayalam | **161** | **Director:** Rojin Thomas | **Production Company:** Friday Film House Pvt Ltd | **DOP:** Neil D Cunha | **Music:** Rahul Subramanian | **Editor:** Prejish Prakash | **Screenplay:** Rojin Thomas | **Sound Design:** Dhanush Nayanar | **Costume Designer:** Akshaya Premnath | **Cast:** Sreenath Bhasi, Indrans, Manju Pillai

इन्द्रेन्स मलयालम फ़िल्म जगत के चर्चित और पुरस्कार विजेता अभिनेता और पूर्व कॉस्टयूम डिजाइनर हैं। इन्होंनें अपनी शुरुआत सहायक हास्य अभिनेता के तौर पर की और धीरे धीरे इनके गंभीर किरदारों ने लोगों के दिलों में ऐसी जगह बनाई कि यह केरल के सबसे चर्चित कलाकारों में शुमार हो गए। इन्होंने 'थ्री मेन आर्मी', 'मनाथे कोट्टारम', 'किलुकिल पंबरम', 'आद्यथे कनमनी', 'अनियान बावा चेतन बावा', 'पंजाबी हाउस', 'आलोरुक्कम', 'वेयिलमरंगा' और 'होम' में यादगार अभिनय के साथ 750 से अधिक फ़िल्मों में अभिनय किया है।

Indrans is a renowned and award winning Indian actor and former costume designer in the Malayalam film industry. He started as a supporting comedian and graduated to serious lead roles that made him one of the most popular actors in Kerala. He has acted in more than 750 films with memorable performances in, 'Three Men Army', 'Manathe Kottaram', 'Kilukil Pambaram', 'Aadyathe Kanmani', 'Aniyan Bava Chetan Bava', 'Punjabi House', 'Aalorukkam', 'Veyilmaranga' and 'Home'.

प्रशस्ति – स्मार्ट फोन के माध्यम से अपने बेटों के साथ सार्थक संबंध स्थापित करने की कोशिश कर रहे एक मध्यम आयु वर्ग के व्यक्ति का सहज और मासूम प्रदर्शन ।

Citation - A natural and innocent performance of a middle aged man trying to establish a meaningful connection with his sons through a smart phone.

झिल्ली (डिस्काईस)
विशेष उल्लेख
Jhilli (Discards) | Special Mention

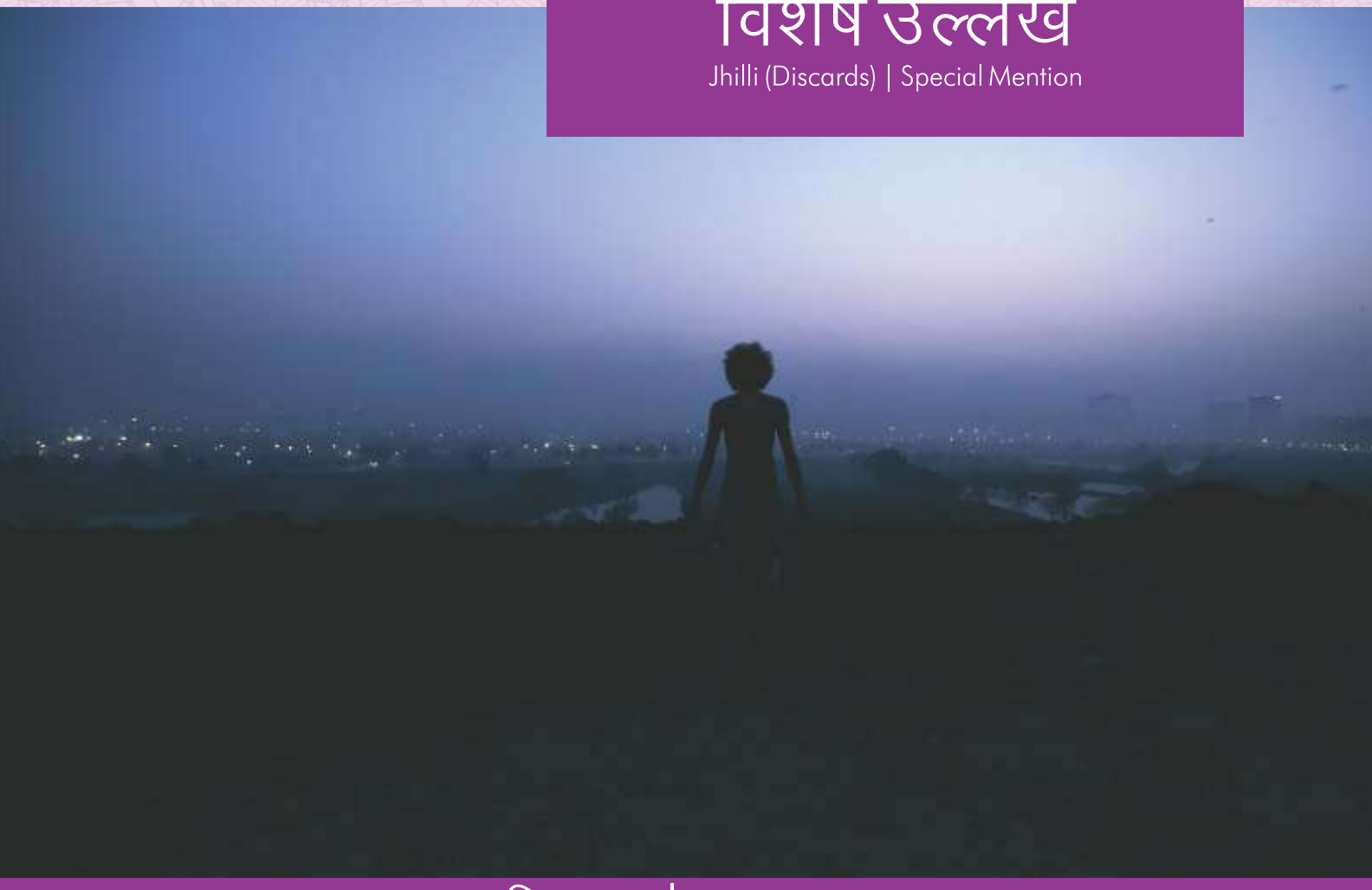

प्रशस्ति पत्र | CERTIFICATE

Bengali | **91 Min** | **Director:** Ishaan Ghose | **Production Company:** Goutam Ghose Associates | **DOP:** Ishaan Ghose | **Music:** Soumajit Ghosh & Rajarshi Das | **Editor:** Ishaan Ghose | **Screenplay:** Ishaan Ghose | **Dialogue:** Ishaan Ghose | **Cast:** Aranya Gupta, Bitan Biswas

अरण्य गुप्ता कोलकाता के अभिनेता और विजुअल आर्टिस्ट हैं। यह वर्तमान में विश्व भारती विश्वविद्यालय, शांतिनिकेतन से कला इतिहास में स्नातोकोत्तर कर रहे हैं। **Aranya Gupta** is an actor and a visual artist from Kolkata. He is currently pursuing his Masters in Art History from Visva Bharati University, Shantiniketan.

बिटान बिस्वास एक रंगमंच और फ़िल्म अभिनेता है, जो मुख्यतौर पर बंगाली सिनेमा के लिए काम करते हैं। मंच पर इनके अभिनय को देख कर इन्हें फ़िल्म में काम करने का मौका मिला और उनकी पहली फ़िल्म थी, 'द्वितियो रिपु' (2015)। इन्होंने प्रशंसित फ़िल्म 'झिल्ली' (2021) में अपने प्रदर्शन के लिए सराहना और पहचान हासिल की। **Bitan Biswas** is an Indian theatre and film actor, primarily working in Bengali cinema. He got noticed for his acting on stage and soon made a transition into films debuting with, 'Dwitiyo Ripu' (2015). He garnered appreciation and recognition for his performance in the acclaimed film 'Jhilli' (2021).

प्रशस्ति – अपनी जिंदगी को बेहतर बनाने और मुश्किलों से निपटने वाले एक तेजतर्रार शख़्स की भूमिका को बेहद देसी और प्रभावशाली ढंग से निभाने के लिए।
Citation - A rustic and powerful performance in the role of a street smart person making the best of life in his world.

कडैसी विवसायी (दि लास्ट फार्मर)
विशेष उल्लेख

Kadaisi Vivasayi (The Last Farmer)
Special Mention

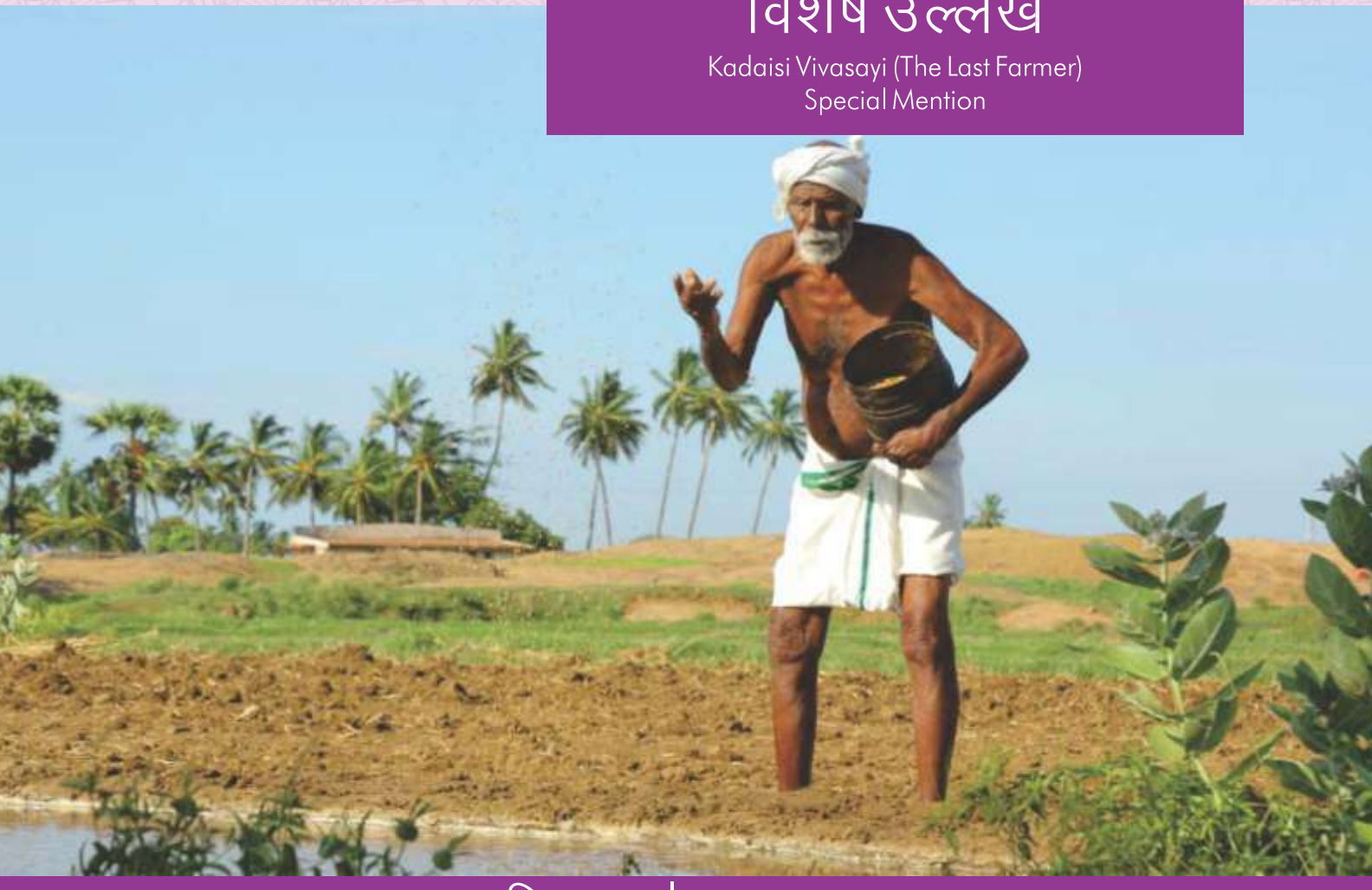

प्रशस्ति पत्र | CERTIFICATE

Tamil | **145 Min** | **Director:** M Manikandan | **Production Company:** Tribal Arts | **DOP:** M Manikandan **Music:** Santosh Narayanan & Richard Harwey | **Editor:** B Ajith Kumar | **Screenplay:** M Manikandan | **Sound Design:** Ajayan Adat & S Radhakrishnan | **Costume Designer:** M Manikandan | **Cast:** Nallandi, Vijay Sethupathi, Raichal Rebbaca

स्व. श्री नल्लांदी एक किसान और अभिनेता थे। तमिल फ़िल्म 'कडैसी विवसायी' (द लास्ट फार्मर, 2021) में एक किसान मयंदी की भूमिका में उनके प्रदर्शन को सराहना, पहचान और व्यापक आलोचनात्मक प्रशंसा मिली। उनके इस किरदार को निभाने के लिए 69वें राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार में विशेष उल्लेख मिला।

Late Shri Nallandi was an Indian farmer and actor. His performance portraying the role of Maayandi, a farmer in the Tamil film 'Kadaisi Vivasayi' (The Last Farmer, 2021), garnered appreciation, recognition and widespread critical acclaim. The stellar portrayal of this character by him received a Special Mention at the 69th National Film Awards.

प्रशस्ति – एक दूरदराज के गांव में एक अस्सी वर्षीय किसान का शानदार प्रदर्शन जो अपने पैतृक खेत की देखभाल करते हुए एक संतुष्ट जीवन जीता है।

Citation - A brilliant performance of an octogenarian farmer in a remote village who leads a content life tending to his ancestral farmland.

कथासार | Synopsis

गोदावरी (दि होली रिवर) (Godavari (The Holy River))

गोदावरी भारतीय परिवार व्यवस्था में पीढ़ीगत गुस्से और परंपरा की अवधारणा की बात करती है। पीढ़ियों से निशी और उनका परिवार पुराने शहर में अपनी संपत्ति से किराया वसूलते रहे हैं। निशि बगैर इच्छा के इस परंपरा जारी रखे हुए है और अपने जीवन से निराश है, किराया इकट्ठा करना और अपने छोटे से अपार्टमेंट में वीडियो गेम खेलना, इस निरर्थक काम से उसे नफरत है, अपने माता–पिता, पत्नी और बेटी से दूर पारिवारिक हवेली में रहता है। निशी के परिवार पर क्या बीतती है जब उसे दो मौतों का सामना करना पड़ता है एक अपेक्षित और दूसरी अप्रत्याशित, यही है गोदावरी का सार।

Godavari speaks of generational angst and the concept of tradition in the Indian family system. For generations Nishi and his family have been rent collectors from the property they own in the old town. Nishi continues the tradition unwillingly and is frustrated with his life, hating his insignificance as he collects rents and plays video games in his small apartment, living away from his parents, wife and daughter in the family mansion. What happens to Nishi's family when it is confronted with two deaths; one expected and another unexpected forms the crux of Godavari.

पुष्पा (दि राइस पार्ट 1) (Pushpa (The Rise Part 1))

पुष्पा राज, एक नाजायज बच्चा है, जिसे बचपन से परिवार का नाम नहीं होने का अपमान झेलना पड़ा है। अपने इरादों पर अडिग, वह केवल आंध्र प्रदेश में उगने वाली दुर्लभ लकड़ी लाल चंदन की तस्करी करने वाले गिरोह में शामिल हो जाता है और जल्द ही गिरोह का सरगना बन जाता है। वहीं उसकी प्रेमिका के साथ उसकी सगाई टूट जाती है, क्योंकि उसका कोई पारिवारिक नाम नहीं है। फिर भी हिम्मत नहीं हारता है, पुष्पा अपना काम करता रहता है,लेकिन फिर उसका सामना होता है एक क्रूर पुलिस अधिकारी भंवर सिंह शेखावत से, जो उसे उसके वंश के लिए अपमानित करता है। पुष्पा भंवर को एक खुली चुनौती के साथ जवाब देता है, जो इस एक्शन–ड्रामा फ़िल्म के भाग 2 के लिए मार्ग प्रशस्त करता है।

Pushpa Raj, a bastard child, since childhood faces humiliation for not having a family name. Undeterred, he joins a gang smuggling red sanders, a rare wood growing only in Andhra Pradesh and soon rises up the ranks to become their leader. Yet his engagement with his girlfriend is called off, as he does not have a family name. Not losing courage, Pushpa continues to work till a ruthless police officer Bhanwar Singh Shekhawat humiliates him for his lineage. Pushpa retorts with an open challenge to Bhanwar, which paves the way for Part 2 of this action-drama film.

गंगूबाई काठियावाड़ी (Gangubai Kathiawadi)

फ़िल्म गंगुबाई काठियावाड़ी, एस. हुसैन जैदी और जेन बोर्जेस की किताब 'माफिया क्वीन्स ऑफ मुंबई' पर आधारित है। फ़िल्म की कहानी छोटे से शहर की गंगा के इर्द गिर्द घूमती है जो अभिनेत्री बनने के लिए घर से भाग कर मुंबई पहुंचती है। लेकिन उसका प्रेमी उसे धोखा देता और वेश्यालय में बेच देता है, जहां उसके पास जीने के लिए समझौता करने के अलावा कोई चारा नहीं बचता है । गंगा केवल खुद को बचाती नहीं है, बल्कि वेश्याओं के साथ हो रहे अन्याय के खिलाफ लड़ाई लड़ती और उनके अधिकारों की आवाज बनती है।

The film Gangubai Kathiawadi is based on the book 'Mafia Queens of Mumbai' written by S. Hussain Zaidi and Jane Borges. The narrative walks through the life of a young Ganga, who runs away from her small town of Kathiawad to pursue dreams of becoming a movie star. But her lover betrays her and sells her off to a brothel where she is left with no choice but to survive in these dire circumstances. Ganga not only survives, but also rises up to fight against the injustices imposed on prostitutes, becoming their voice for their rights.

मिमी (Mimi)

मिमी, छोटे शहर की एक लड़की है, जो अभिनेत्री बनने के अपने ख्वाब को पूरा करने के लिए मुंबई जाना चाहती है, जिसके लिए उसे पैसे की जरूरत है। भानु, एक टैक्सी ड्राइवर है, जो उसे एक अमेरिकी दंपति से मिलवाता है जो किसी लड़की की तलाश में है जो उनके बच्चे को सरोगेट कर सके। मिमी 20 लाख रु के बदले में इसके लिए राजी हो जाती है। लेकिन सब कुछ योजना के मुताबिक नहीं चलता है और बीच गर्भावस्था में पता चलता है कि बच्चा डाउन सिंड्रोम के साथ पैदा होगा। अमेरिकी दंपति मिमी को गर्भपात करवाने के बोल कर और उसे अकेला छोड़ कर चले जाते हैं। मिमी को अब एक ऐसा फैसला लेना है जो उसकी जिंदगी को पूरी तरह से बदल देगा।

Mimi, an aspiring actress from a small town, needs money to go to Mumbai to fulfil her dreams. Bhanu, a taxi driver, introduces her to an American couple looking for a surrogate to bear their child. Mimi agrees to become one in exchange for INR 20 lakhs. But things don't go as planned as in the midst of her pregnancy the doctor informs that the child could be born with down syndrome. The American couple asks her to abort the child and abandons her. Mami now has to make decisions that will change the course of her life.

दि कश्मीर फाइल्स (The Kashmir Files)

कृष्णा पंडित एक युवा रिफ्यूजी कश्मीरी पंडित है, जो अपने दादा पुष्करनाथ पंडित के साथ रहता है। पुष्करनाथ 1990 में हुए कश्मीरी पंडितों के नरसंहार का गवाह है। पुष्करनाथ कश्मीर से बच निकलते हैं और ताउम्र अनुच्छेद 370 के रद्द किए जाने को लेकर संघर्ष करते हैं। इन बातों से अंजान कृष्णा यह जानता है कि उसके माता–पिता की मौत कश्मीर में एक दुर्घटना में हुई थी। एएनयू के छात्र के रूप में अपनी प्रोफेसर राधिका मेनन से प्रभावित होकर, वह नरसंहार का खंडन करता है और आजाद कश्मीर की लड़ाई लड़ता है। उसे सच्चाई का पता तब चलता है जब उसके दादा जी की मौत हो जाती है। यह फ़िल्म नरसंहार से पीड़ित पहली पीढ़ी के वीडियो साक्षात्कार से प्रेरित है।

Krishna Pandit is a young Kashmiri Pandit refugee living with his grandfather Pushkarnath Pandit who witnessed the 1990 genocide of Kashmiri Pandits. Pushkarnath had to flee from Kashmir and fought for the revocation of Article 370 all his life. Unaware, Krishna believes his parents died in an accident in Kashmir. As a student of ANU, under the influence of his mentor Professor Radhika Menon, he refutes the genocide and fights for Azad Kashmir, discovering the truth only after his grandfather's death. The film is inspired by video interviews of first generation victims of the genocide.

कथासार | Synopsis

लास्ट फिल्म शो (छेल्लो शो) (Last Film Show (Chhello Show))

9 साल का समय, अपने परिवार के साथ भारत के दूरदराज के गांव में रहता है, वह पहली बार जब फ़िल्म देखता है और पूरी तरह से उसी में खो जाता है। अपने पिता की इच्छा के खिलाफ, वह रोज सिनेमाघर जाकर फ़िल्म देखने लगता है, बल्कि प्रोजेक्टर चलाने वाले से भी दोस्ती गांठ लेता है, जो उसे मुफ्त में फ़िल्म दिखाने लगता है। वह जल्दी इस नतीजे पर पहुंचता है कि कहानियां रोशनी बनती हैं, रोशनी फ़िल्म बनाती है, और फ़िल्म बेहतर सपने। समय और उसके दोस्त 35 एमएम फ़िल्म के प्रोजेक्शन को हासिल करने के लिए रोशनी को पकड़ने के लिए धरती आकाश एक कर देते हैं, लेकिन जल्दी ही उन्हें ऐसा विकल्प चुनने को मजबूर होना पड़ता है जिससे सब का दिल टूट जाता है ।

Samay, a 9-year-old boy living with his family in a remote village in India discovers films for the first time and is absolutely mesmerized. Against his father's wishes, he returns to the cinema hall day after day to watch more films, and even befriends the projectionist, who lets him watch movies for free. He quickly figures out that stories become light, light becomes films, and films become dreams. Samay and his friends move heaven and earth to catch and project light to achieve a 35mm film projection but soon are forced to make heartbreaking choices.

आर आर आर (RRR)

1920 के दशक में ब्रिटिश राज के दौरान, एक अत्याचारी प्रशासक स्कॉट बक्सटन और उसकी पत्नी कैथरीन गोंड जनजाति की एक प्रतिभाशाली कलाकार युवा लड़की मल्ली को जबरदस्ती अपने साथ ले जाते हैं। इससे क्रोधित होकर, जनजाति के संरक्षक कोमाराम भीम छिपते छिपाते ,उसे बचाने के लिए दिल्ली पहुंचता हैं। कैथरीन इससे निपटने के लिए भारतीय इंपीरियल पुलिस के एक महत्वाकांक्षी अधिकारी ए. रामा राजू की सहायता लेती है। और इस तरह एक एक्शन से भरपूर ऐतिहासिक–काल्पनिक ड्रामा शुरू होता है जहां अंत में दोनों अंग्रेजों से लड़ने के लिए एक साथ आते हैं।

Set in the 1920s during the British Raj, a tyrannical administrator Scott Buxton and his wife Catherine forcefully abduct Malli, a young girl with artistic talents from the Gond tribe. Enraged, the tribe's guardian Komaram Bheem embarks to Delhi to rescue her under a guise. Catherine enlists the assistance of A. Rama Raju, an ambitious officer in the Indian Imperial Police to tackle it. And thus starts an action-packed historical-fiction drama where finally they both come together to fight the British.

इरविन निज़ल (Iravin Nizhal)

एक अमीर फ़िल्म फाइनेंसर नंदू मीडिया और पुलिस से फरार है, क्योंकि वह एक आत्महत्या के सिलसिले में वांछित है जिसके लिए वह जिम्मेदार हो सकता है। अफवाहों में फंसकर, उसकी पत्नी और बच्चे उसे छोड़ देते हैं और उसके साथ रहने की कोई इच्छा नहीं होती। वह सब से दूर जाने की कोशिश करते हुए एक पुरानी जीर्ण–शीर्ण इमारत में जाता है, जिसे अदालत ने सील कर दिया है, जो उसे उसके अतीत में ले जाती है। जैसे ही वह अपने फोन पर एक वॉयस नोट रिकॉर्ड करना शुरू करता है, तो उसके अतीत की यादें ताजा हो जाती है जिसका उसके वर्तमान के साथ नाता है ।

Nandhu, a wealthy film financier is absconding from the media and the police, as he is wanted in connection with a suicide he may be responsible for. Falling to rumours, his wife and child leave him and he finds no will to stick around. While trying to get away from everything and everyone, he goes to an old dilapidated building, sealed by the court that is of some consequence to his past. As he starts recording a voice note on his phone, it takes him into a flashback about his past and its relationship with his present.

सरदार उधम (Sardar Udham)

जब जनरल डायर ने 13 अप्रैल 1919 को ब्रिटिश राज के खिलाफ जलियांवाला बाग में एक शांतिपूर्ण सभा में 20,000 निहत्थे लोगों पर 1650 राउंड गोलियां चलाकर खून खराबा कर दिया, तो इस घटना से 20 वर्षीय युवा उधम को गहरा आघात लगता और वह बदला लेने का संकल्प लेता है। फ़िल्म उधम सिंह की कहानी बताती है, जिन्होंने 21 साल बाद मार्च 1940 में लंदन में माइकल ओ डायर को गोली मारकर जलियांवाला बाग नरसंहार का बदला लिया था। अपने मकसद के साथ अकेले ही जूझते हुए, उन्होंने खुशी–खुशी अपने प्राणों की आहुति दे दी।

A young 20-year-old Udham was deeply scarred and resolved revenge when General Dyer created a blood bath on 13th April 1919 by opening 1650 rounds of fire on 20,000 unarmed people at a peaceful assembly at Jallianwala Bagh against the British Raj. The film narrates the story of Udham Singh who avenged the Jallianwala Bagh massacre 21 years later by shooting Michael O'Dwyer in London, in March 1940. With a single minded pursuit, he gladly sacrificed his life.

नायट्टु (Nayattu)

तीन पुलिस अधिकारी बेईमान कानून निर्माताओं के मोहरे बन जाते हैं जब उन्हें राजनीतिक चुनावों के बीच एक घटना में फंसाया जाता है और गिरफ्तारी से बचने के लिए उन्हें भागना पड़ता है। यह राजनीतिक–संघर्ष –थ्रिलर फ़िल्म अहंकार के साथ–साथ पुलिस अधिकारियों की मानवता और बेबसी को भी सामने लाती है।

Three police officers become pawns for unscrupulous lawmakers when they are framed in an incident amid political elections and must flee to evade arrest. This political-survival-thriller film brings out shades of arrogance yet the humaneness and helplessness of police officers.

चविट्टू (Chavittu)

यह फ़िल्म, एक वृत्तचित्र और नाटकीयता के बीच, प्रतिभाशाली और मेहनती थिएटर कलाकारों की दुनिया की खोज करती है और इसे एक संभ्रांत समाज के पाखंड के साथ जोड़ती है। इसमें एक रंगमंच समूह को अपने नाटक का अभ्यास करते हुए दिखाया गया है। अपने प्रदर्शन के दिन, वे सुबह जल्दी कार्यक्रम स्थल पर पहुँचते हैं और शाम से पहले अपने अंतिम सुधार और मंच सेटिंग पूरी कर लेते हैं। लेकिन रेजिडेंस एसोसिएशन के लंबे थकाऊ वार्षिक दिवस समारोह के बाद ही, समूह को वास्तव में प्रदर्शन करने और अपना कार्य शुरू करने का मौका मिलता है।

कथासार | Synopsis

The film, between a documentary and dramatisation, explores the world of talented and hardworking theatre artists while juxtaposing it with the hypocrisy of an elite society. It shows a theatre group rehearsing their play. On the day of their performance, they reach the venue early in the morning and finish their final corrections and stage settings before evening. But only after a long tedious annual day celebration of the residence association, does the group actually get a chance to perform and begin their act.

झिल्ली (डिस्कार्ड्स) (Jhilli (Discards))

बोकुल, मजदूर परिवार की चौथी पीढ़ी से है जो कोलकाता के सबसे बड़े डंप यार्ड के बीच में एक हड्डी का चूरा बनाने वाली फैक्ट्री में काम करता है। उसे अपने माहौल से जितना मिलता है वह उसका ज्यादा से ज्यादा लाभ उठाता है और अपने जीवन को बोहतर बनाने की कोशिश में लगा रहता है। वह इस बात से अंजान है कि बाहर की दुनिया तेजी से बदल रही है और एक नए आर्थिक उछाल के लिए जगह बन रही है, जहां उसकी पूरी दुनिया एक मनोरंजक पार्क के लिए बेची जा रही है, जहां उसके दोस्त उसे कूड़े के ढेर में छोड़ रहे हैं।

Bokul, a fourth generation manual labourer works in a bone-crushing factory in the middle of Kolkata's largest dump yard. He makes the most that his environment offers, trying to make the best of his life. He is unaware that the world outside is changing fast and making space for a new economic boom where his entire world is being traded for a recreational park, where his friends are leaving him behind in the debris of discards.

कोंडा पोलम (Konda Polam)

सन्नापुरेड्डी वेंकट रामी रेड्डी की पुरस्कार विजेता पुस्तक 'कोंडा पोलम' पर आधारित फिल्म की कहानी एक बेरोजगार इंजीनियरिंग स्नातक रवींद्र यादव की है, जो आधुनिक वक्त के चरवाहों के एक समूह में शामिल हो कर एक सफर पर निकल पड़ता है, जिसमें हजारों भेड़ों को खतरनाक जंगल के रास्ते ग्रीष्मकालीन चरागाहों के लिए नल्लामाला पहाड़ी पर स्थित जंगलों के हैरान कर देने वाली एक जगह ले जाया जाता है, इस सफर में प्रकृति और संस्कृति, जानवरों और मनुष्यों, असुरक्षा और हिंसा का एक दूसरे से गहरा संबंध है। यह सफर उसकी खुद की खोज का सफर है जिसके जरिए रविन्द्र जिंदगी का वह जरूरी सबक सीखता है जो उसे प्यार और रोमांच की ओर ले जाते हैं ।

The film is based on the award- winning book, 'Konda Polam' by Sannapureddy Venkata Rami Reddy. It follows the story of Ravindra Yadav, a jobless engineering graduate who joins a group of modern-day shepherds as they lead thousands of sheep up into the stunning landscapes of Nallamala mountainous forests for green summer pastures through dangerous wilderness, in which nature and culture, animals and humans, vulnerability and violence are intimately meshed. Along the way, through his epic journey of self-discovery, Ravindra learns valuable life lessons that lead to love and adventure in his life.

अनुर (आइज़ ऑन दि सनशाइन) (Anur (Eyes on the Sunshine))

अपने दिवंगत पति की यादों को समटे हुए, अपने घर में अकेली रह रही एक विधवा, एक दिन अपने घर के आंगन में एक अंजान शख्स को धूप में बैठा हुआ पाती है। पहले पहल तो वह उस घुसपैठिए से घबरा जाती है, लेकिन बाद में उसके दमघोंटू अकेलेपन में वह शख्स एक ताजगी लेकर आता है। लेकिन कहानी बताती है कि, वह शख्स कितना भी पढ़ा लिखा और जागरुक क्यों ना हो, क्या अपने अकेलेपन से जूझती एक विधवा औरत के लिए, जो एक मां और दादी भी है, उस तक पहुंचना आसान होगा ?

One morning a widow, who lives alone in the house that holds memories of her late husband, finds a gentleman sunning himself on her lawn. Initially fearful of the trespasser, it becomes a welcome intrusion in her claustrophobic loneliness. But however high the education, integrity and social status of the man be, it explores if a woman who is a widow, a mother and a grandmother is allowed to reach out for him to break free from her suffocating lonely widowhood?

होम (Home)

ओलिवर ट्विस्ट एक अधेड़ उम्र का शख्स है जिसकी नई तकनीक से दोस्ती नहीं है, वह एक स्मार्टफोन के माध्यम से अपने दो बेटों के साथ एक सार्थक संबंध स्थापित करने की कड़ी कोशिश करता है। हालाँकि, जब वह बुरी तरह विफल हो जाता है, तो वह उनके साथ जुड़ने के लिए अन्य तरीकों की तलाश करने लगता है।

Oliver Twist is a technologically-challenged middle-aged man who tries hard to establish a meaningful connection with his two sons through a smartphone. However, when that fails miserably, he desperately looks for other ways to bond with them

कडैसी विवसयी (दि लास्ट फार्मर) (Kadaisi Vivasayi (The Last Farmer))

80 साल का मायान्दी, तमिलनाडु के दूरदराज में बसे गांव का किसान है, जो अपने पैतृक खेती, पशुओं और मुर्गी पालन से के साथ संतुष्ट जीवन जी रहा है । उस सूखाग्रस्त गांव में जहां हर कोई खेती छोड़ चुका है, कुछ रियल एस्टेट वाले उसकी जमीन हड़पना चाहते हैं लेकिन वह उसे विचलित नहीं कर पाते हैं। एक दिन उसे अपनी जमीन पर तीन मरे हुए मोर मिलते हैं, वह उनका अंतिम संस्कार करने का फैसला करता है। लेकिन एक पुलिसवाला उस पर राष्ट्रीय पक्षी को दफ्नाने का आरोप लगाता है, और उसे अदालत में पेश करता है। हालांकि न्यायधीश को उसकी बेगुनाही पर यकीन है लेकिन फिर भी वह उसे सजा देने के लिए मजबूर है।

Maayandi, an octogenarian farmer in a remote village in Tamil Nadu, leads a content life tending to his ancestral farmland, cattle, and poultry. In his drought-ridden village where everyone else has given up farming, he is undaunted by real-estate developers trying to usurp his land. One day he finds three dead peacocks on his property and decides to bury them. A policeman soon charges him for the offence of burying the national bird, and produces him before court. Though convinced of his innocence, the magistrate is duty-bound to sentence him to prison time.

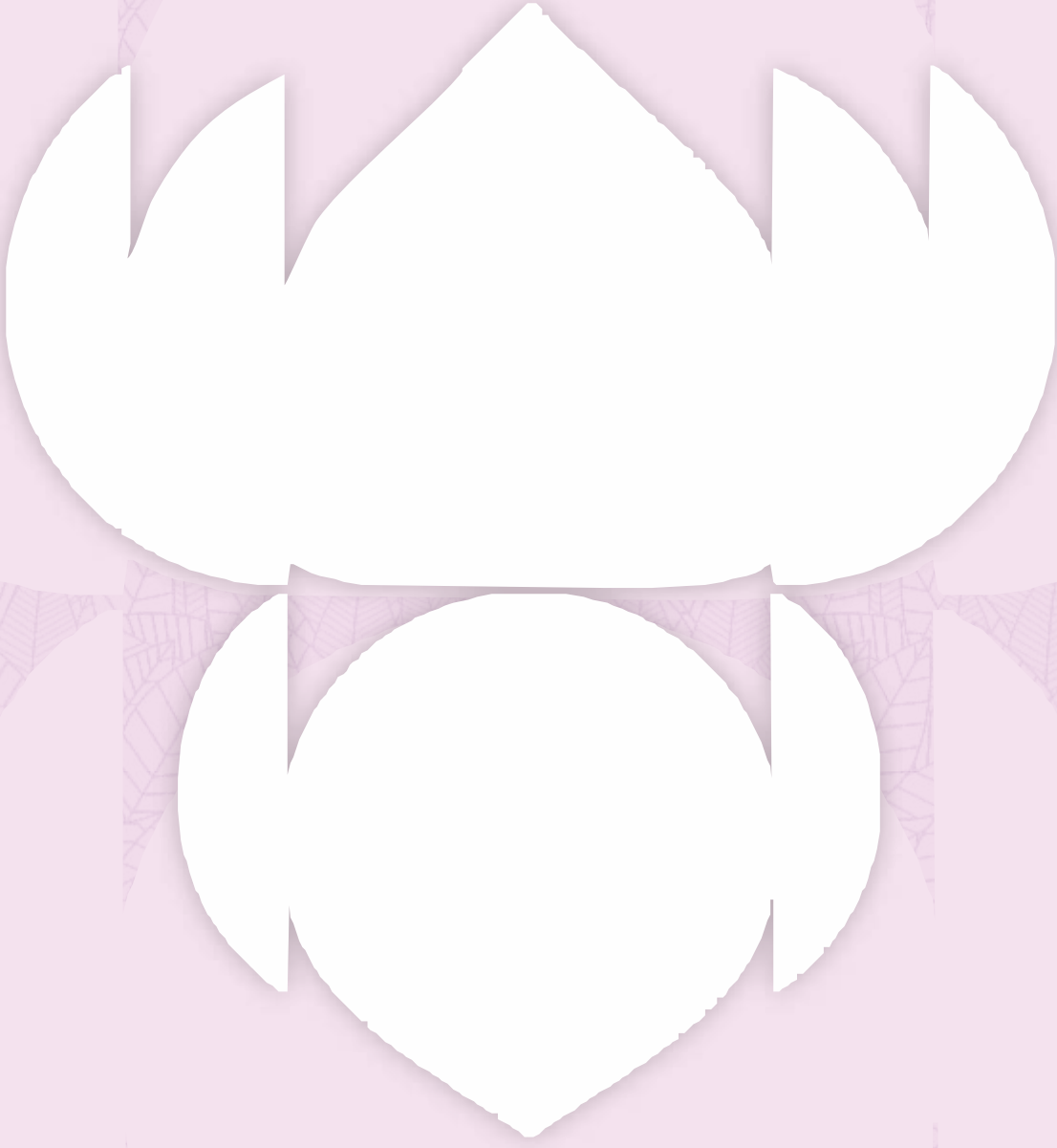

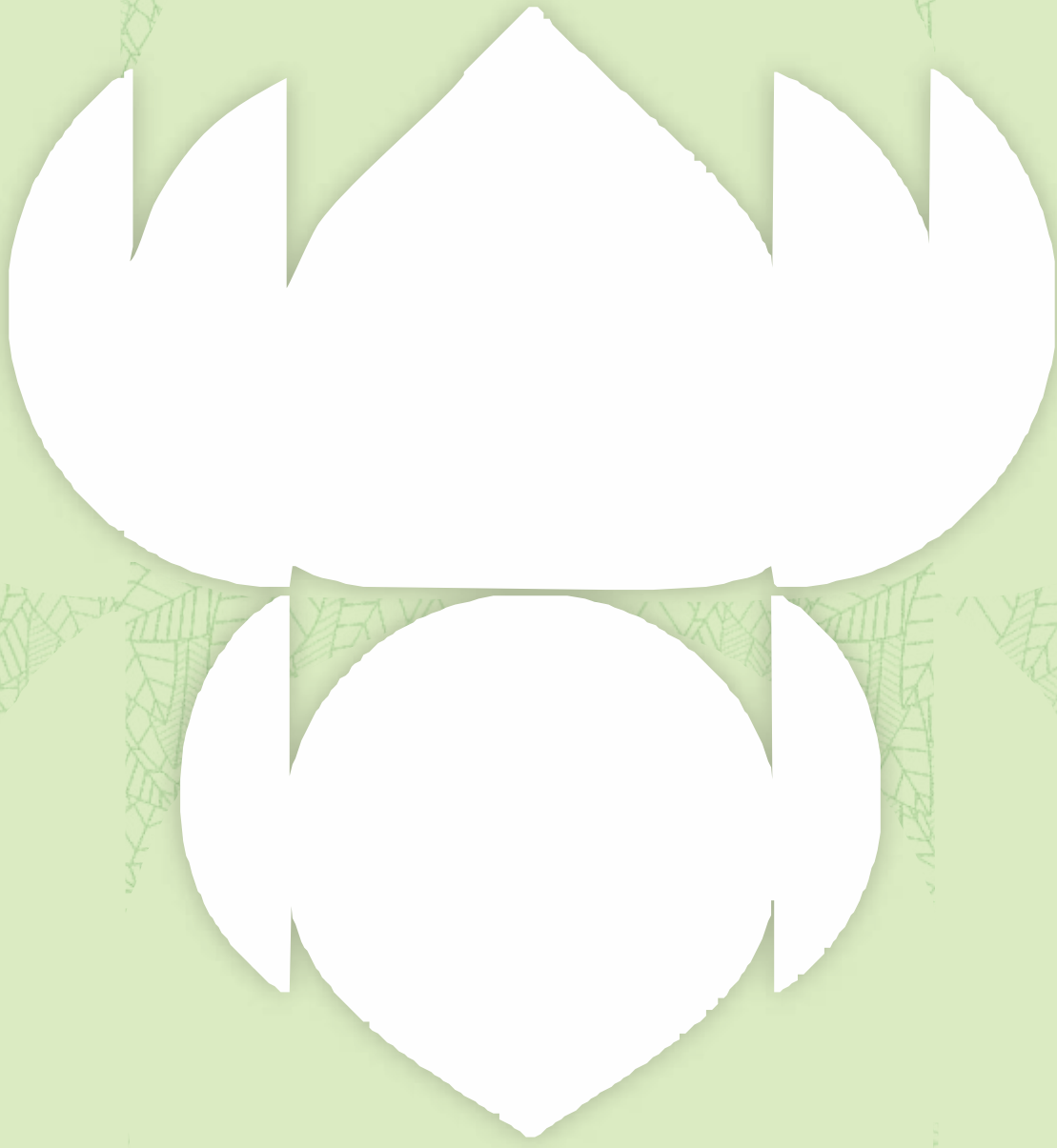

राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार 2021
NATIONAL FILM AWARDS 2021

35 मि.मि. या बड़े गेज या डिजिटल प्रारूप में बनी किन्तु फ़िल्म प्रारूप अथवा वीडियो/डिज़िटल प्रारूप में जारी किसी भी भारतीय भाषा में बनी और केन्द्रीय फ़िल्म प्रमाणन बोर्ड द्वारा वृत्त–चित्र/न्यूजरील/ गैर–कथाचित्र/लघु कल्पित के रूप में प्रमाणीकृत फ़िल्म ग़ैर फ़ीचर फ़िल्म वर्ग के लिए पात्र है।

Films made in any Indian language, shot on 35 mm or in a wider gauge or digital format but released on either film format or Video/Digital format and certified by the Central Board of Film Certification as a Documentary/Newsreel/ Non-Fiction/Short Fiction are eligible for non-feature film section.

गैर–फ़ीचर फ़िल्में | एक नज़र में

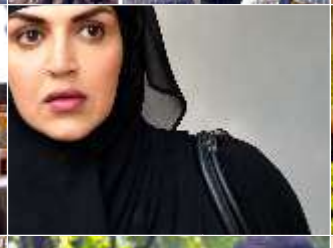

- **एक था गाँव (गढ़वाली एवं हिन्दी)**
  सर्वश्रेष्ठ गैर–फ़ीचर फ़िल्म
  सर्वश्रेष्ठ संगीत आलेखन
  Ek Tha Gaon (Garhwali & Hindi)
  Best Non-Feature Film
  Best Audiography

- **पांचिका (गुजराती)**
  निर्देशक की पहली सर्वश्रेष्ठ गैर फ़ीचर फ़िल्म
  Paanchika (Gujarati)
  Best Debut Non-Feature Film of a Director

- **फायर ऑन एज (तिवा)**
  सर्वश्रेष्ठ मानवशास्त्रीय फ़िल्म
  Fire on Edge (Tiwa)
  Best Anthropological

- **रुखु मातिर दुखु मांझी (बांग्ला)**
  सर्वश्रेष्ठ जीवनी फ़िल्म
  Rukhu Matir Dukhu Majhi (Bengali)
  Best Biographical Film

- **बियॉन्ड ब्लास्ट (मणिपुरी)**
  सर्वश्रेष्ठ जीवनी फ़िल्म
  Beyond Blast (Manipuri)
  Best Biographical Film

- **टी.एन. कृष्णन स्ट्रिंग्स बो टू डिवाइन (अंग्रेजी)**
  सर्वश्रेष्ठ कला एवं सांस्कृतिक फ़िल्म
  T. N. Krishnan: Strings Bow to Divine (English)
  Best Arts and Cultural Film

- **एथोस ऑफ डार्कनेस (अंग्रेजी)**
  सर्वश्रेष्ठ वैज्ञानिक एवं तकनीकी फ़िल्म
  Ethos of Darkness (English)
  Best Science & Technology Film

- **एंडेन्जर्ड हेरिटेज 'वर्ली आर्ट'**
  सर्वश्रेष्ठ प्रोत्साहन देने वाली फ़िल्म
  Endangered Heritage 'Warli Art' (English)
  Best Promotional Film

- **मुन्नम वलावु (मलयालम)**
  सर्वश्रेष्ठ पर्यावरण फ़िल्म
  Munnam Valavu (Malayalam)
  Best Environment Film Including Agriculture

- **मिठू दी (अंग्रेजी)**
  सामाजिक मुद्दों पर सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म
  Mithu Di (English)
  Best Film on Social Issues

- **थ्री टू वन (मराठी – हिंदी)**
  सामाजिक मुद्दों पर सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म
  Three Two One (Marathi & Hindi)
  Best Film on Social Issues

- **सिरपिगलिन सिरपंगल (तमिल)**
  सर्वश्रेष्ठ शैक्षिक फ़िल्म
  Sirpigalin Sirpangal (Tamil)
  Best Educational Film

- **लुकिंग फॉर चलान (अंग्रेजी)**
  सर्वश्रेष्ठ खोजी फ़िल्म
  Looking for Challan (English)
  Best Investigative Film

- **कंदित्तुंडु (मलयालम)**
  सर्वश्रेष्ठ एनीमेशन फ़िल्म
  Kandittundu (Malayalam)
  Best Animation Film

- **रेखा (मराठी)**
  निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार
  Rekha (Marathi)
  Special Jury Award

NON - FEATURE FILMS | AT A GLANCE

- **दाल भात (गुजराती)**
  सर्वश्रेष्ठ लघु कल्पित फ़िल्म
  Dal Bhat (Gujarati)
  Best Short Fiction Film

- **चंद सांसे (हिंदी)**
  पारिवारिक मूल्यों पर सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म
  Chand Saanse (Hindi)
  Best Film on Family Values

- **स्माइल प्लीज (हिंदी)**
  सर्वश्रेष्ठ निर्देशन
  Smile Please (Hindi)
  Best Direction

- **पाताल–टी (भोटिया)**
  सर्वश्रेष्ठ छायांकन
  Pataal-Tee(Bhotiya)
  Best Cinematography

- **मीन राग (राजस्थानी)**
  सर्वश्रेष्ठ प्रोडक्शन साउंड रिकॉर्डिस्ट (लोकेशन/सिंक साउंड)
  Meen Rang (Rajasthani)
  Best Production Sound Recordist (Location/Sync Sound)

- **इफ मेमोरी सर्व्स मी राइट (अंग्रेजी)**
  सर्वश्रेष्ठ संपादन
  If Memory Serves Me Right (English)
  Best Editing

- **सकुलेंट (हिंदी – मराठी)**
  सर्वश्रेष्ठ संगीत निर्देशन
  Succulent (Hindi & Marathi)
  Best Music Direction

- **हाती बंधु (अंग्रेजी)**
  सर्वश्रेष्ठ प्रकथन/वॉइस ओवर
  Hatibondhu (English)
  Best Narration/Voice Over

- **बाले बंगारा (कन्नड़)**
  विशेष उल्लेख
  Baale Bangara (Kannada)
  Special Mention

- **करुवरई (तमिल)**
  विशेष उल्लेख
  Karuvarai (Tamil)
  Special Mention

- **दी हीलिंग टच (उड़िया)**
  विशेष उल्लेख
  The Healing Touch (Odia)
  Special Mention

- **एक दुआ (हिंदी)**
  विशेष उल्लेख
  Ek Duaa (Hindi)
  Special Mention

एक था गांव

सर्वश्रेष्ठ गैर फ़ीचर फ़िल्म

Ek Tha Gaon
Best Non-Feature Film

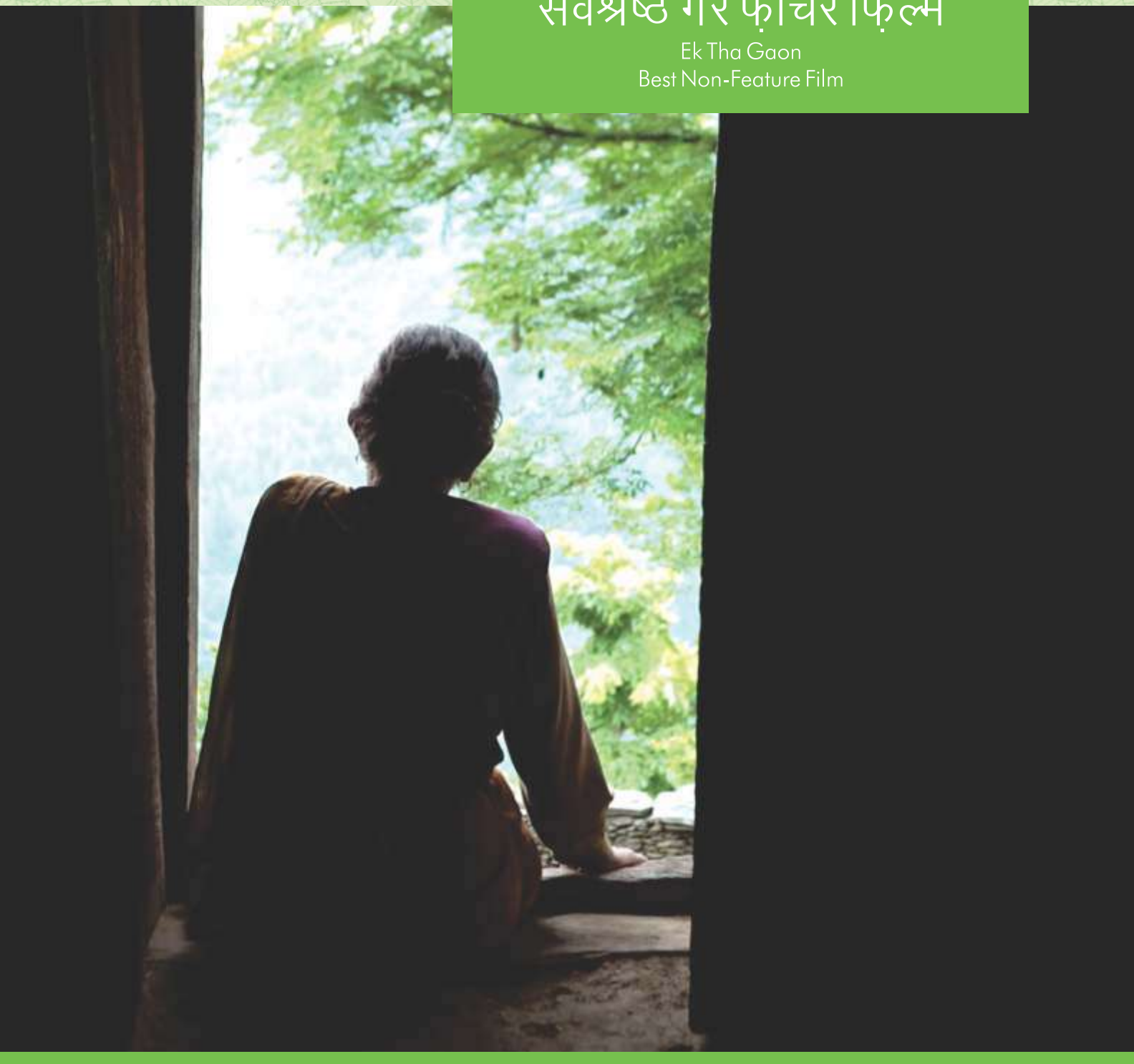

स्वर्ण कमल | SWARNA KAMAL ₹ 1,50,000/-

Garhwali & Hindi | **60 Min** | **Director & Producer:** Srishti Lakhera | **DOP:** Amith Surendran & Kai Tillman **Music:** Jerad Sagar | **Editor:** Bhamati Sivapalan | **Re-Recordist (Final mixed track):** Krishnanunni N R

कथासार - हिमालय की तलहटी में सेमला,जिसे भूतों का गांव भी कहते हैं। 80 साल की लीला और 19 साल की गोलू, यहां पर बचे सात लोगों में से दो हैं। सालों से जलवायु परिवर्तन और घटती संभावनाओं की वजह से, जो 50 परिवार कभी वहां रहते थे, वे भी शहर में पलायन कर गए हैं। अपने गाँव की तरह, लीला बूढ़ी होने के बावजूद उसने गाँव छोड़ने से इनकार कर दिया। गोलू भागने को बेताब है लेकिन उसके पास भागने का कोई साधन नहीं है। दो महिलाएं इस फैसले को लेकर उहापोह में हैं कि एक एकांत गांव में रहना जारी रखें या उस शहरी जीवन का रुख करें जो उनसे पूरी तरह अलग है।

Synopsis - In the Himalayan foothills, Leela, an 80-year-old woman and Golu, a 19-year-old girl are two of the seven remaining inhabitants of Semla, a ghost village. With years of climate change and dwindling prospects, the 50 families that once lived there abandoned it to migrate to the city. Like her village, Leela is old, resilient and forgotten but refuses to leave despite struggles with an ageing body. Golu is desperate to escape but doesn't have the means to. The two women struggle with a choice, to leave for an alienating city life or continue living in a lonely village.

परिचय | PROFILE

सृष्टि लखेड़ा (Srishti Lakhera)

सृष्टि लखेड़ा एक पुरस्कार विजेता वृत्तचित्र फिल्म निर्माता और एक मीडिया प्रशिक्षक हैं। इन्होंने अंतरराष्ट्रीय संगठनों, सरकारी निकायों, टेलीविजन के लिए फिल्मों का निर्माण किया है और हाशिए पर रहने वाले समुदायों के लिए फिल्म निर्माण कार्यशालाएं आयोजित करने के लिए कई जमीनी स्तर के संगठनों से जुड़ी हुई हैं। इनका पहला फीचर वृत्तिचित्र 'एक था गांव' (वंस अपॉन ए विलेज) ने सर्वश्रेष्ठ गैर–फीचर फिल्म के लिए प्रतिष्ठित राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार जीता और मामी फिल्म फेस्टिवल की इंडिया गोल्ड श्रेणी में जगह बनाई।

Srishti Lakhera is an award winning documentary filmmaker and a media trainer. She has produced films for international organizations, government bodies, television and has been associated with several grassroots organisations to conduct filmmaking workshops for marginalised communities. Her debut feature documentary 'Ek Tha Gaon' (Once Upon a Village) won the prestigious National Film Award for Best Non-Feature Film and made it to the India Gold Category of the MAMI Film Festival.

प्रशस्ति – यह फिल्म एक बुजुर्ग होते ग्रामीण के मन में जलवायु परिवर्तन को लेकर वैश्विक चिंताओं, शहरी प्रवास और अकेलेपन से मची हलचल का संवदेनशील चित्रण है।

Citation - The film is a tender portrayal of an ageing villager resonating deeply with global concerns of climate change, urban migration and loneliness.

पांचिका

निर्देशक की पहली सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म

Paanchika
Best Debut of A Director

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 75,000/-

Gujarati | 14 Min | Director: Ankit Kothari | **Producer:** Shreya Kapadia | **DOP:** Kuldeep Mamania | **Editor:** Manan Bhatt & Ankit Kothari | **On Location Sound:** Urmil Pandya | **Re-Recordist (Final mixed track):** Pritam Das | **Production Design:** Shreya Kapadia

कथासार - सात साल की मिरी अपने पिता को दोपहर को खाना देने के लिए नमक के पहाड़ों से भरे रेगिस्तान के सफर पर जाती है। सुबा, एक जात बाहर शख्स है जो एक दूरी से उसके पीछे चलती है। क्योंकि वह दोनों साथ नहीं रह सकते। उनकी दोस्ती के सामने उनकी जाति का बंधन सबसे बड़ी चुनौती है। यहां तक कि आज भी, सामाजिक मानदंड समाज की अंत:क्रिया को निर्देशित करते हैं। और पांचिका एक मार्मिक कहानी है जो बताती है कि किस तरह मिरी और सुबा समाज की जटिलताओं से पार पाते हैं।

Synopsis - Seven-year-old Miri embarks on a journey across a desert of White Salt Pyramids to deliver lunch to her father. Suba, an outcast follows her from a distance because they are not supposed to be together. Their friendship is challenged by the rigid bounds of their caste. Even today, societal norms dictate social interactions, and *Paanchika* presents a poignant tale of how Miri and Suba navigate through the complexities of society one pebble at a time.

परिचय | PROFILE

अंकित कोठारी (Ankit Kothari)

अंकित कोठारी फ़िल्म निर्माता और विज्ञापन निर्माता हैं। इन्होंने ओगिल्वी और कॉन्ट्रैक्ट जैसी विज्ञापन एजेंसियों में काम किया है और 'ओए लकी लकी ओए' (2007), 'लव सेक्स और धोखा' (2009), 'शंघाई' (2011) और 'तुम्बाड' (2018) जैसी फ़ीचर फ़िल्मों के सहायक निर्देशक और स्क्रिप्ट सुपरवाइजर थे। इनकी स्क्रिप्ट 'दास्तान–ए–आवारगी' को एनएफडीसी स्क्रीनराइटर्स लैब, साराजेवो फ़िल्म फेस्टिवल और द फ़िल्म बाजार के लिए चुना गया था। 'पांचिका' उनकी पहली फ़िल्म है।

Ankit Kothari is a filmmaker and an advertising professional. He has worked in advertising agencies like Ogilvy and Contract and was the assistant director and script supervisor for feature films like 'Oye Lucky Lucky Oye' (2007), 'Love Sex Aur Dhokha' (2009), 'Shanghai' (2011) and 'Tumbbad' (2018). His script 'Dastaan-E-Awaargi' was selected for the NFDC Screenwriters Lab, the Sarajevo Film Festival and The Film Bazaar. 'Paanchika' is his debut film.

श्रेया कपाड़िया (Shreya Kapadia)

श्रेया कपाड़िया, ज्वेलरी डिज़ाइनर के साथ–साथ फ़िल्मों के लिए सेट डिज़ाइन भी करती हैं। बड़ौदा के महाराजा सयाजीराव यूनिवर्सिटी से बैचलर ऑफ फाइन आर्ट करने के बाद वह मुंबई में फ़ीचर फ़िल्मों में सेट डिज़ाइन के काम में जुट गईं। बतौर निर्माता पांचिका उनकी पहली फ़िल्म है।

Shreya Kapadia is a jewellery designer and a set designer for films. After completing her Bachelor of Fine Arts from the Maharaja Sayajirao University of Baroda, she moved to Mumbai to assist in set designs for feature films. Paanchika is her first film as a producer.

प्रशस्ति – जाति भेद की कठोर बाधाओं के बावजूद दो मासूम लड़कियों के दोस्ती की चाहत को तलाशती है यह फ़िल्म।

Citation - It explores the innate urge of two innocent girls to remain friends despite harsh societal barriers of caste-based discrimination.

फायर ऑन एज

सर्वश्रेष्ठ मानवशास्त्रीय फ़िल्म

Fire on Edge
Best Anthropological

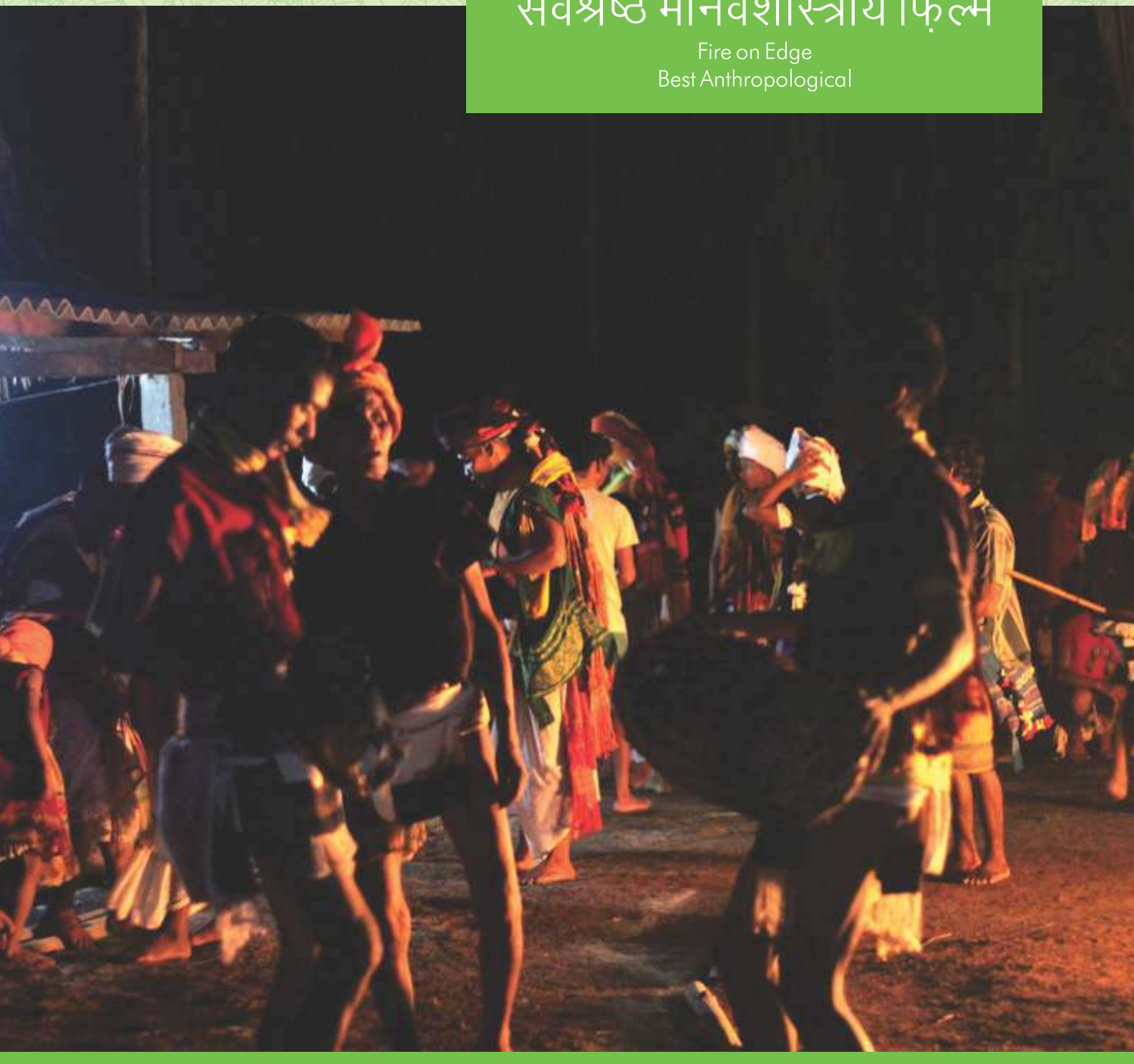

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Tiwa | 38 Min | Director, Producer & Editor: Pranab Jyoti Deka, Sujit Debbarma | **DOP:** Sujit Debbarma **Music:** One Horned picture & Borok Motion Picture | **On Location Sound:** Pranab Jyoti Deka | **Re-Recordist (Final mixed track):** Bikash Jyoti Kalita

कथासार - असम के एक जातीय समूह तिवा की रोजमर्रा की जिंदगी और संस्कृति, प्रकृति के साथ उनके जुड़ाव पर एक गहन अवलोकन। इन्हें असमिया औपनिवेशिक साहित्य में लालुंग के रूप में भी जाना जाता है, एक स्वदेशी जनजाति जो असम में कार्बी आंगलोंग के पश्चिमी क्षेत्रों में निवास करती है, ऐसा इलाका जिसका 40: हिस्सा जंगलों से ढंका हुआ है। उनका मुख्य व्यवसाय चावल की खेती करना है। वे 'झूम' खेती भी करते हैं। तिवा लोग स्थानीय चावल की बियर पीने का आनंद लेते हैं जो उनके अनुष्ठानों का एक हिस्सा भी है। मानवशास्त्रीय फिल्म बताती है कि प्रकृति की रक्षा करना तिवा लोगों के चरित्र में बसा हुआ है।

Synopsis - An intimate observation on the everyday life and culture of Tiwa, an ethnic group of Assam and their connect with nature. Also known as Lalung in Assamese colonial literature, the indigenous tribe inhabits the western areas of Karbi Anglong in Assam, 40% of which is covered in forests. Their main occupation is farming with rice as the major crop. They also practise slash-and-burn agriculture or 'Jhum' cultivation. The Tiwas enjoy drinking local rice beer which is also a part of their rituals. The anthropological film explores the Tiwa's inherent character to protect nature.

परिचय | PROFILE

प्रणब ज्योति डेका (Pranab Jyoti Deka) Director & Producer

प्रणब ज्योति डेका पुरस्कार विजेता वृत्तचित्र फ़िल्म निर्माता और वीडियो संपादक हैं। इन्होंने संस्कृति, विरासत और सामाजिक मुद्दों पर 'रिवर लाइफ', 'द गोल्डन एरा ऑफ इंडियन सिनेमा', 'द लैंड ऑफ मायोंग', 'फायर ऑन एज', 'ब्लड ऑन द वॉल' और 'आशा' जैसे कई वृत्तचित्र बनाए हैं। यह खेल वृत्तचित्र 'द चौलेंजर' के वीडियो संपादक थे और राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता फ़िल्म 'माज राती केतकी' के सहायक निर्देशक थे।

Pranab Jyoti Deka is an award winning documentary filmmaker and a video editor. He has made several documentaries on culture, heritage and social issues like 'River Life', 'The Golden Era of Indian Cinema', 'The Land of Mayong', 'Fire On Edge', 'Blood On The Wall', and 'Aasha'. He was the video editor for the sports documentary 'The Challenger' and was the assistant director for the National Award winning film 'Maj Raati Ketki'.

सुजीत देबबर्मा (Sujit Debbarma) Director & Producer

सुजीत देबबर्मा पुरस्कार विजेता स्वतंत्र फ़िल्म निर्माता, छायाकार और संपादक हैं। अंग्रेजी, असमिया, बंगाली और कोकबोरोक जैसी कई भाषाओं की फ़िल्मों में काम किया है। यह फ़िल्म 'वॉटर ब्यूरियल' के छायाकार हैं। जिसे 67वें राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कारों में पर्यावरण संवर्धन/संरक्षण पर सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म का पुरस्कार दिया गया था। इनकी अन्य पुरस्कार विजेता फ़िल्में 'द कॉन्सक्वेंस', 'मैन एंड द वाइल्ड', 'फायर ऑन एज', 'ना', 'वी कैन से' और 'द लैंड ऑफ मायोंग' हैं।

Sujit Debbarma is an award winning independent filmmaker, cinematographer and editor for films in multiple languages like Hindi, English, Assamese, Bengali and Kokborok. He was the cinematographer for the film 'Water Burial' which was awarded the Best Film on Environment Conservation/ Preservation at the 67th National Film Awards. His other award winning films are 'The Consequence', 'Man and the Wild', 'Fire on Edge', 'NO', 'We Can Say' and 'The Land of Mayong'.

प्रशस्ति – असम के एक जातीय समूह, तिवा के रोजमर्रा के जीवन और संस्कृति और प्रकृति के साथ उनके जुड़ाव पर एक गहन अवलोकन।

Citation - An intimate observation on the everyday life and culture of Tiwa, an ethnic group of Assam, and their connect with nature.

बियॉन्ड ब्लास्ट
सर्वश्रेष्ठ जीवनी फ़िल्म

Beyond Blast | Best Biographical Film

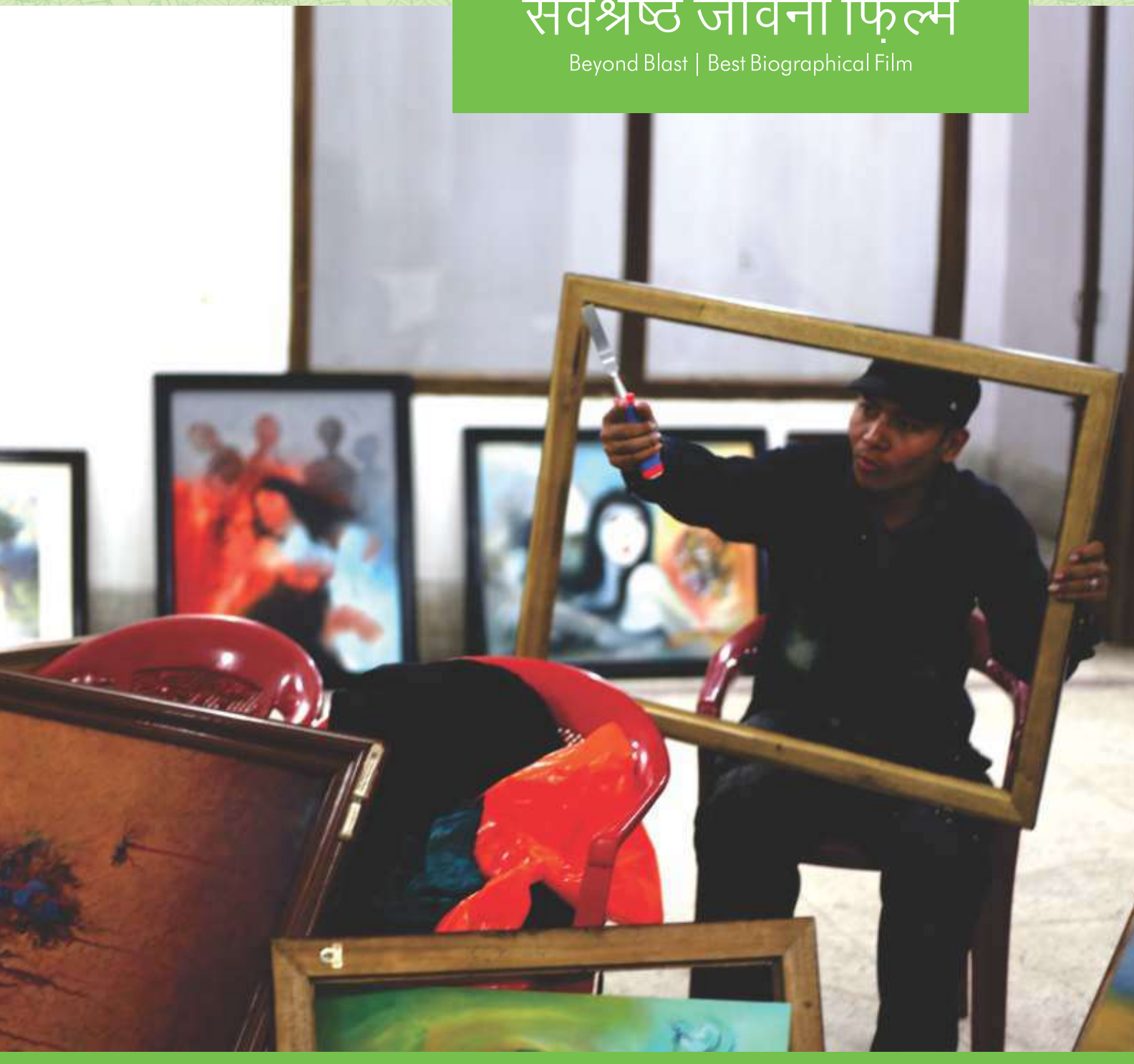

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Manipuri | **52 Min** | **Director:** Saikhom Ratan | **Producer:** Luwang Apokpa Mamikol | **DOP & Editor:** Saikhom Ratan | **On Location Sound:** Laishram Devakumar Meitei | **Re-Recordist (Final mixed track):** Akee Sorokhaibam | **Production Design:** Thokchom Noutunmanjuri & Saikhom Ratan

कथासार - सशस्त्र संघर्ष का शिकार हुए एक ऐसे कलाकार के जीवन की कहानी जो शांति की तलाश में है। 16 दिसंबर 2007 को पौरबी में एक शक्तिशाली आईईडी विस्फोट में घायल हुए 30 लोगों में मैकेल, जो एक उभरता हुआ कलाकार है, वह भी शामिल था, इस घटना में मणिपुर के ग्रामीण इलाकों में सात लोगों की जान चली गई थी। अपने कष्टों पर काबू पाते हुए, मैकेल का इरादा अपनी पेंटिंग्स के माध्यम से लोगों में मौजूद डर को दूर करने का है। मैकेल का प्रेरक जीवन दिव्यांग लोगों को ताकत देता है। विभिन्न राज्य और राष्ट्रीय पुरस्कारों के विजेता मैकेल शांति का संदेश फैलाने के लिए लगातार चित्रकारी करते हैं।

Synopsis - It portrays the life of an artist who is a victim of armed conflict and is in quest for peace. Maikel, a budding artist is among the 30 injured on 16 December 2007 by a powerful IED blast at Pourabi that claims seven lives in a countryside in Manipur. Overcoming his sufferings, Maikel intends to wipe away the fear psychosis that has gripped people through his paintings. Maikel's inspiring life gives strength to people with disabilities. A winner of various state and national awards, he paints consistently to spread the message of peace.

परिचय | PROFILE

साइखोम रतन (Saikhom Ratan)

साइखोम रतन मणिपुर के पुरस्कार विजेता वृत्तचित्र फ़िल्म निर्माता और वीडियो पत्रकार हैं। इनकी लघु फ़िल्म 'माई कजिन्स विलेज' ने 7वें मणिपुर राज्य फ़िल्म महोत्सव में निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार, सर्वश्रेष्ठ संपादन पुरस्कार और सर्वश्रेष्ठ संगीत पुरस्कार सहित कई पुरस्कार जीते। इनके वृत्तचित्र 'बियॉन्ड ब्लास्ट' ने कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार जीते, जिसमें प्रतिष्ठित 69वें राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार और 14वें मणिपुर राज्य फ़िल्म पुरस्कार (2022) भी शामिल है।

Saikhom Ratan is an award winning documentary filmmaker and a video journalist in Manipur. His short film 'My Cousin's Village' won several accolades, including the Special Jury Award, Best Editing Award and Best Music Award at the 7th Manipur State Film Festival. His documentary 'Beyond Blast' went on to win many national and international awards, including an award at the prestigious 69th National Film Awards and at the 14th Manipur State Film Awards (2022).

लुवांग अपोकपा मामिकोल (एलएएम) (Luwang Apokpa Mamikol)

लुवांग अपोकपा मामिकोल (एलएएम) इम्फाल, मणिपुर में स्थित एक पुरस्कार विजेता प्रोडक्शन हाउस है, जिसकी स्थापना कोन्जेंगबाम शुशीला लीमा ने की थी। एलएएम ने कई फ़ीचर और गैर–फ़ीचर फ़िल्मों का निर्माण किया है। इसके 'ईगी कोना' ने 67वें राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार में सर्वश्रेष्ठ मणिपुरी फ़ीचर फ़िल्म का पुरस्कार जीता और 'बियॉन्ड ब्लास्ट' (2021) ने 14वें मणिपुर राज्य फ़िल्म पुरस्कार (2022) में सामाजिक मुद्दों पर सर्वश्रेष्ठ वृत्तचित्र फ़िल्म और 69वें राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार में सर्वश्रेष्ठ जीवनी फ़िल्म का पुरस्कार जीता।

Luwang Apokpa Mamikol (LAM) is an award winning production house based in Imphal, Manipur founded by Konjengbam Shushila Leima. LAM has produced several feature and non-feature films. Its 'Eigi Kona' won the Best Manipuri Feature Film at the 67th National Film Awards and 'Beyond Blast' (2021) won the Best Documentary Film in Social Issues at the 14th Manipur State Film Awards (2022) and the Best Biographical Film at the 69th National Film Awards.

प्रशस्ति – जीवन में आ रहे झंझावातों के बावजूद अपनी अभिव्यक्ति का मकसद तलाशते कलाकार का साहसिक चित्रण।

Citation - A valiant portrait of an artist finding one's own purpose of expression despite facing life altering adversaries.

रुखु मातिर दुखु मांझी
सर्वश्रेष्ठ जीवनी फ़िल्म

Rukhu Matir Dukhu Majhi
Best Biographical Film

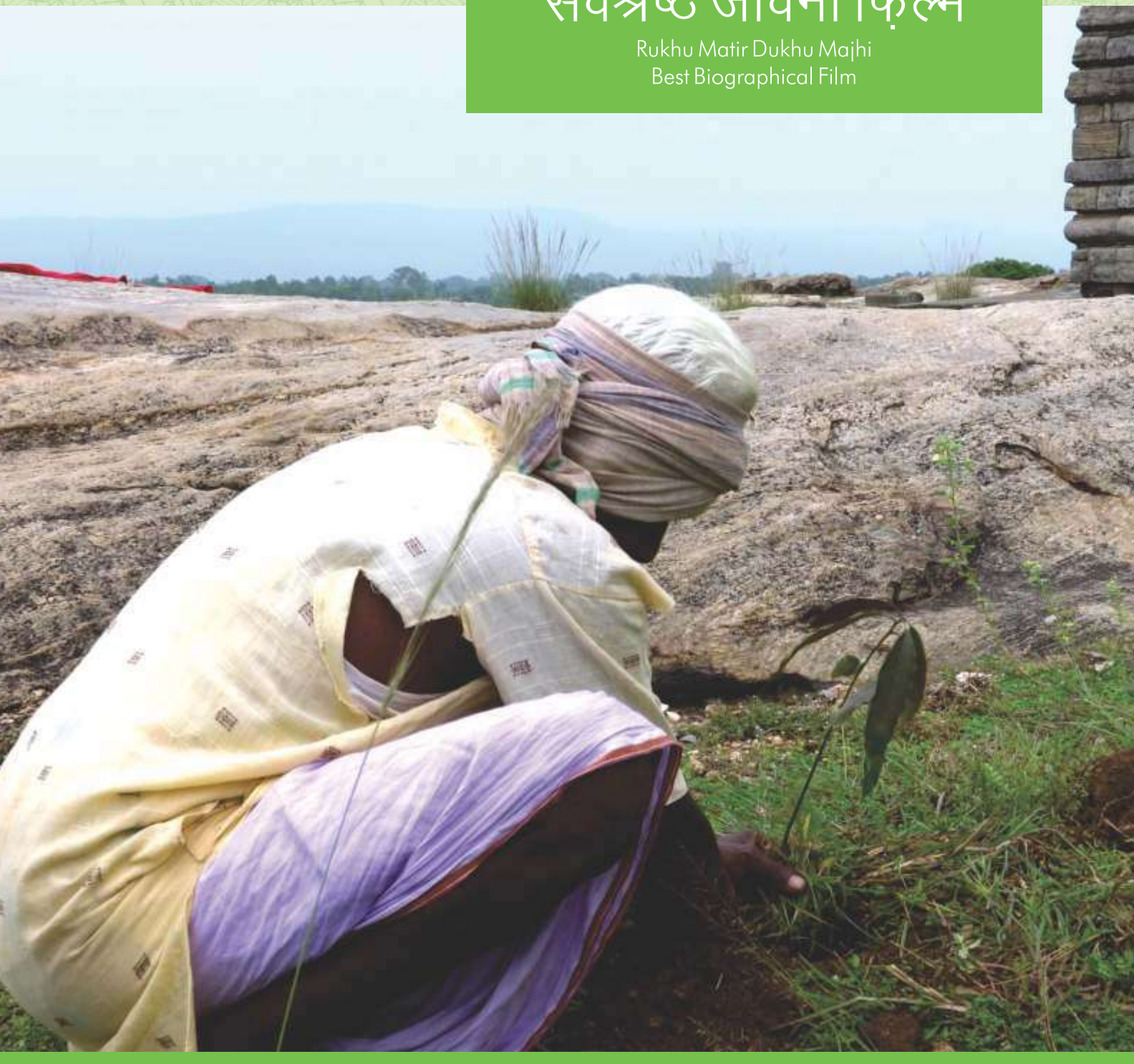

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Bengali | **29 Min** | **Director & Producer:** Somnath Mondal | **DOP:** Rabindranath Das | **Editor:** Debashis Guha
On Location Sound: Somnath Mondal | **Re-Recordist (Final mixed track):** Abdul Rajjak

कथासार - रुखु मतिर दुखु मांझी (दुखु मांझी–सन ऑफ दि बैरन लैंड) एक अकेले शख्स का कठोर संघर्ष और धरती माता को बचाने को उसका अनूठा तरीका बयान करती फिल्म में, दुखु मांझी एक गरीब,बूढ़ा, अनपढ़ व्यक्ति है जो पश्चिम बंगाल के पुरुलिया जिले में रहता है, जहां गर्मियों में तापमान 50 डिग्री तक पहुंच जाता है। अपने पिता और वृक्षारोपण की आवश्यकता पर एक सरकारी अभियान से प्रेरित होकर, क्योंकि पेड़ बारिश लाते हैं, ऑक्सीजन देते हैं और छाया प्रदान करते हैं, वह रोजाना खुद को पानी के डिब्बे, बोरे, फावड़े, जली हुई लकड़ी और एक पौधे के साइकल पर रखकर तैयार करता है और पेड़ लगाने निकल पड़ता है, इसी तरह उसने, सड़कों के किनारे, स्कूल परिसर, मंदिर, श्मशान घाट और जहां भी वह कर सकता है, उनका पोषण और पूजा करने में सालों बिता दिए हैं।

Synopsis - The relentless struggle of a solitary man and his unique way to save mother earth. Dukhu Majhi is a poor, old, illiterate man in Purulia district in West Bengal where the temperature has risen to 50 degrees celsius in the summers. Inspired by his father and a government campaign on the need of plantation as trees invite rain, supply oxygen and provide shade, he arms himself daily with canisters of water, sacks, shovels, burnt wood and saplings on a cycle and spends years planting trees at roadsides, school premises, temples, crematoriums and wherever he can, nurturing and worshipping them.

परिचय | PROFILE

सोमनाथ मंडल (Somnath Mondal)

सोमनाथ मंडल कोलकाता में एचएमवी स्टूडियो के पूर्व मुख्य रिकॉर्डिस्ट थे और पहले मुंबई में सनी सुपर साउंड्स के साथ थे। उन्होंने कई रेडियो और टेलीविजन स्पॉट भी बनाए हैं। 'रुखु मतिर दुखु माझी' (सन ऑफ दि बैरन लैंड) इनका पहला वृत्तचित्र है। 'मदन वेरी – ए डाइंग म्यूजिकल इंस्ट्रूमेंट' के लिए इनकी स्क्रिप्ट ने चलचित्रम राष्ट्रीय फ़िल्म महोत्सव (2020) में सर्वश्रेष्ठ पटकथा का पुरस्कार जीता।

Somnath Mondal specialises in sound. He was the former chief recordist at HMV Studios in Kolkata and was with Sunny Super Sounds in Mumbai earlier. He has also made many radio and television spots. 'Rukhu Matir Dukhu Majhi' (Son of the Barren Land) is his debut documentary film. His script for 'Madan Veri – A Dying Musical Instrument' won the Best Screenplay Award at the Chalachitram National Film Festival (2020).

प्रशस्ति – बढ़ते तापमान के खिलाफ धरती की सुरक्षा के प्रति दृढ़ निश्चय और संकल्प दर्शाता एक यथार्थवादी चित्रण।

Citation - An unsentimental depiction of a committed man, resolute in his endeavour to safeguard Mother Earth against surging temperatures.

टी एन कृष्णन स्ट्रिंग्स बो टू डिवाइन

सर्वश्रेष्ठ कला एवं सांस्कृतिक फ़िल्म

T.N. Krishnan Strings Bow to Divine
Best Arts & Cultural Film

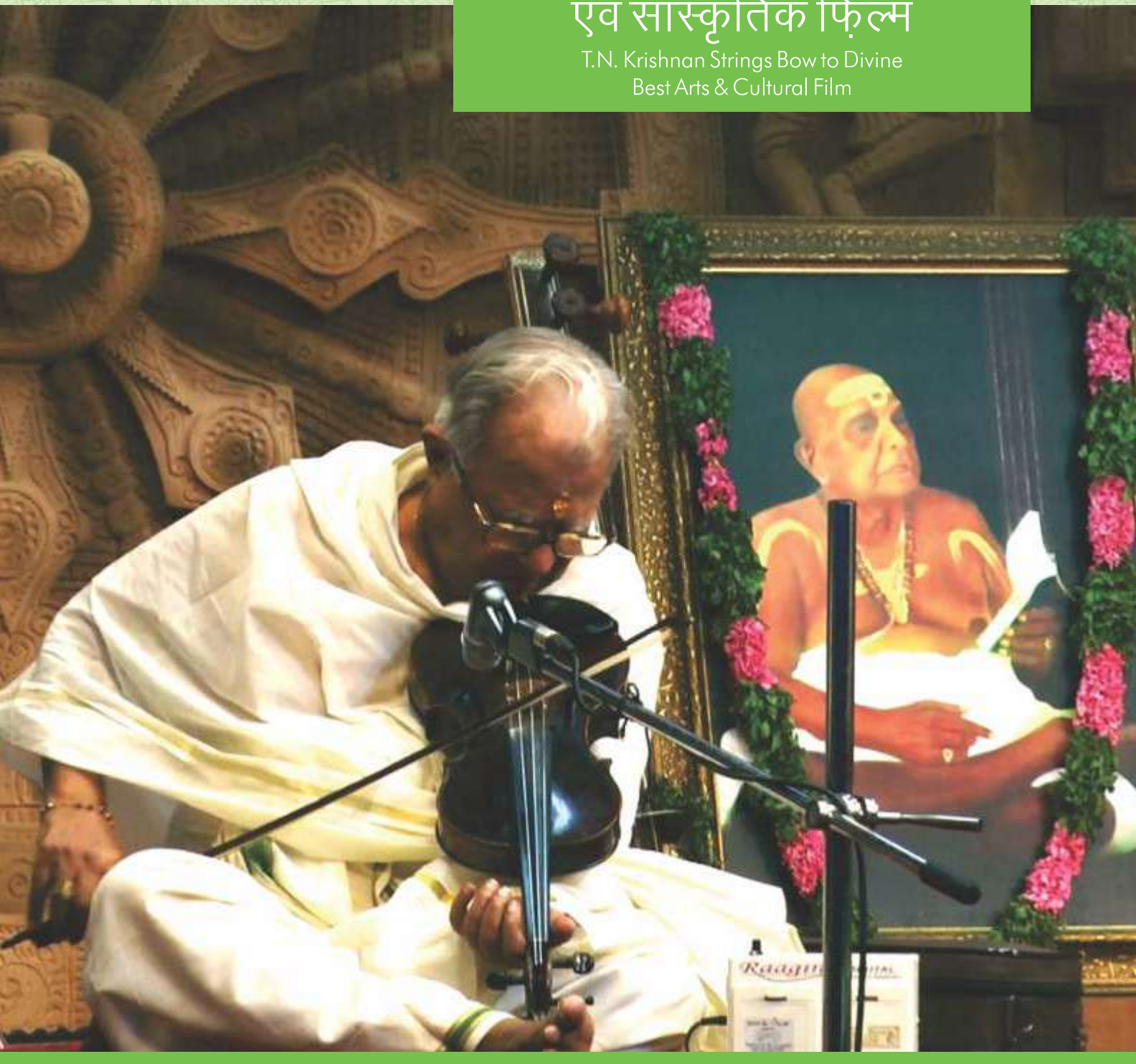

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

English | 63 Min | Director: V. Packirisamy | **Production Company:** National Film Development Corporation Limited
DOP: V. Sukumaram & Pradeep B. Rao | **Editor:** Shanmuganathan | **Re-Recordist (Final mixed track):** Kamlesh Dwivedi

कथासार - वायलिन के महानतम प्रतिनिधि, उस्ताद टी.एन. कृष्णन पर एक जीवनी फ़िल्म। यह फिल्म, कृष्णन के 80 से अधिक वर्षों के जीवन में शानदार प्रदर्शन के माध्यम से कर्नाटक संगीत परिदृश्य और भारतीय संगीत उद्योग में उनकी भूमिका और जबरदस्त योगदान को दर्शाती है।

Synopsis - A biographical film on the greatest exponent of the Violin, Maestro T.N. Krishnan through his illustrious performing life of 80 plus years. The film enumerates his role and tremendous contribution to the Carnatic Music landscape and to the Indian Music industry.

परिचय | PROFILE

वी. पक्किरिसामी (V. Packirisamy)

वी. पक्किरिसामी पुरस्कार विजेता फ़िल्म निर्माता हैं, जिनके नाम 70 से अधिक वृत्तचित्र और लघु फ़िल्में हैं। तीन बार राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता रह चुके पक्किरिसामी की कुछ उल्लेखनीय फ़िल्में हैं 'द लॉस्ट चाइल्डहुड', 'भिवंडी ट्रेजेडी', 'तीजन बाई', 'सियाचिन ग्लेशियर', 'डॉ. राममनोहर लोहिया', और 'भवाई फेडिंग मेमोरीज', आदि। फ़िल्म्स डिवीजन, मुंबई के पूर्व निदेशक और एमआईएफएफ के समन्वयक के रूप में, उन्होंने भारत में वृत्तचित्र फ़िल्म आंदोलन के प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

V. Packirisamy is an award winning filmmaker with more than 70 documentaries and short films to his credit. A three times National Award winner, some of his notable films are 'The Lost Childhood', 'Bhiwandi Tragedy', 'Teejan Bai', 'Siachen Glacier', 'Dr. Rammanohar Lohia', and 'Bhavai Fading Memories', amongst others. A former director at Films Division, Mumbai and as coordinator of MIFF, he contributed significantly in the spread of the documentary film movement in India.

एनएफडीसी (NFDC)

राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम लिमिटेड की स्थापना 1975 में भारत सरकार द्वारा की गई थी। इसका उद्देश्य भारतीय सिनेमा की घरेलू और वैश्विक सराहना, उत्कृष्टता को बढ़ावा देना और फ़िल्मों को समर्थन और प्रोत्साहित करके भारत की संस्कृति की विविधता को बढ़ावा देना है। इन्होंने 21 भारतीय भाषाओं में 300 से अधिक फ़िल्मों का निर्माण किया है, अकादमी पुरस्कार (गांधी), राष्ट्रीय और राज्य पुरस्कार सहित कई अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार जीत चुके हैं।

The **National Film Development Corporation Limited** was set up by the Government of India in 1975. Its vision is to create domestic and global appreciation and celebration of Indian cinema, foster excellence and promote the diversity of India's culture by supporting and encouraging films in various Indian languages. It has produced over 300 films in 21 Indian languages, which have won several International accolades including the Academy Awards (Gandhi), National and State Awards.

प्रशस्ति – विलक्षण वायलिन वादक का सफर, जो 80 से अधिक वर्षों के जीवन में उनके शानदार प्रदर्शन के माध्यम से कर्नाटक संगीत परिदृश्य में उनके योगदान को बयान करता है।

Citation - The prodigious Violin Maestro's career arc, enumerating his contributions to the Carnatic music landscape through his illustrious performing life of 80 plus years.

एथोस ऑफ डार्कनेस

सर्वश्रेष्ठ विज्ञान एवं तकनीक फ़िल्म

Ethos of Darkness
Best Science & Technology Film

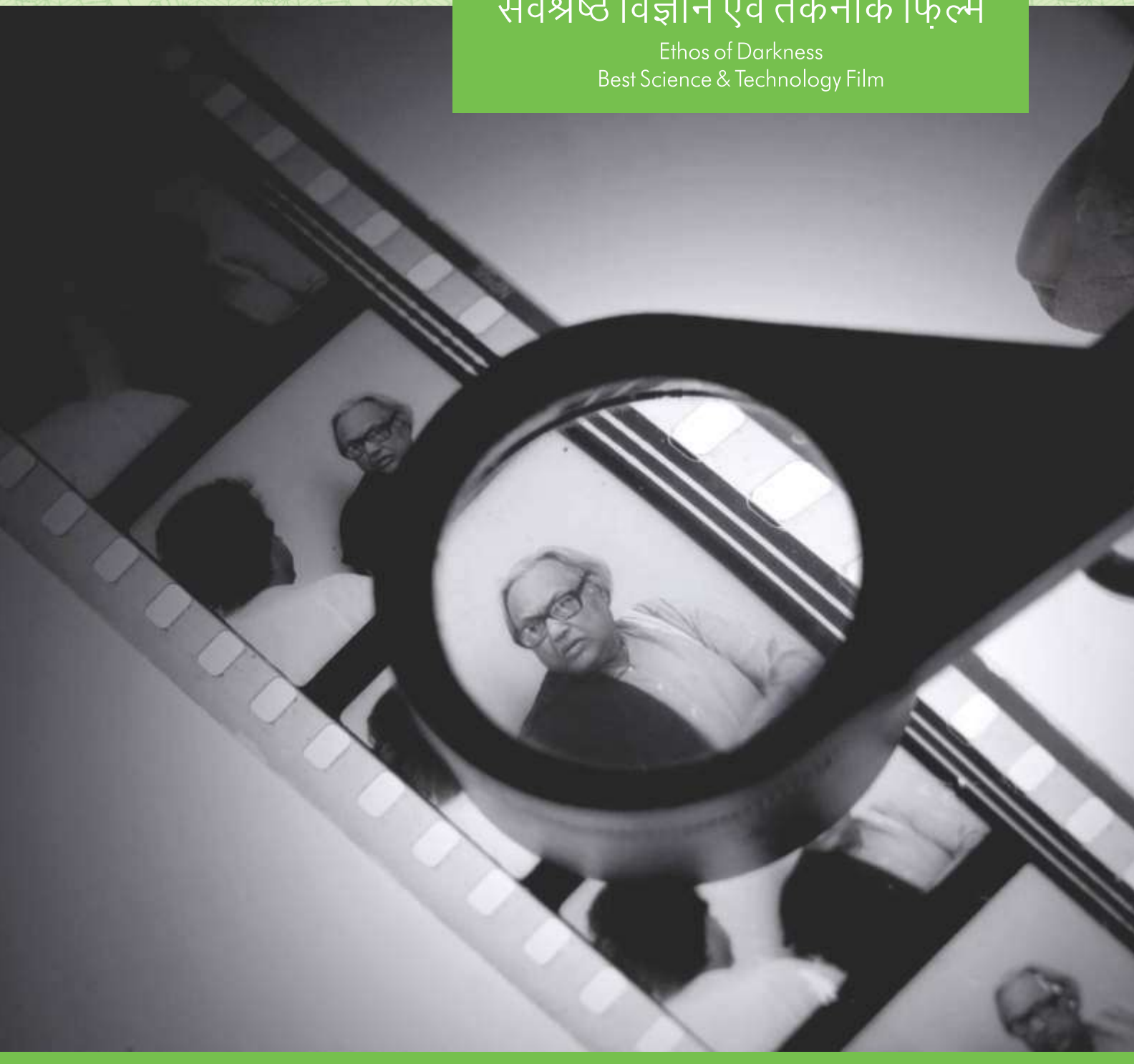

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

English, Partly Hindi and Bengali | 59 Min | Director: Avijit Banerjee | **Production Company:** Sri Ganesh Productions | **DOP:** Somnath Halder | **Music:** Late Indrajit Adgiri | **Editor:** Abhijit Ghosh | **Narration:** Avijit Banerjee & Partha Mukherjee | **On Location Sound:** Abhijit Ghosh | **Re-Recordist (Final mixed track):** Bishwadeb Banerjee | **Production Design:** Nirmal Ghosh

कथासार - हमने सिनेमा के दृश्यों की प्रतिभा पर तो खूब ध्यान दिया है, यहां तक कि निर्देशक और अभिनेताओं की महारथ को बयान करने में कई पन्ने भर डाले, लेकिन कभी उनके बारे में सोचने या लिखने की तकलीफ तक नहीं की , जिनके बगैर सिनेमा की एक फ्रेम का भी प्रोजेक्शन संभव नहीं होता। यह फ़िल्म पुरानी हो चुकी फ़िल्म प्रसंस्करण तकनीकों का दस्तावेजीकरण करती है, जो कई तकनीशियनों के कलात्मक योगदान पर रोशनी डालती है, जिन्होंने ताजी हवा से वंचित, अंधेरी प्रयोगशालाओं में कड़ी मेहनत की, नेगेटिव तैयार किये हैं, रीलों को काटा है और खुद गुमनाम रहकर अपनी फ़िल्मों को साकार किया और नाम दिया।

Synopsis - We've noticed the brilliance of cinema scenes, even used reams of pages to write about the mastery of actors and directors, but never spent even a line talking about those, without whom no frame would have been visually through for projection. The film documents obsolete film processing techniques, bringing to light the artful contributions of numerous technicians who've toiled hard in dark laboratories, bereft of fresh air, developing negatives, cutting reels and setting proper exposure in anonymity for us to enjoy films.

परिचय | PROFILE

अबिजित बनर्जी (Avijit Banerjee)

अविजित बनर्जी पश्चिम बंगाल के फ़िल्मकार और निर्माता हैं। यह विगत 35 सालों से विज्ञापन जगत के साथ जुड़े हुए हैं और बतौर निर्माता इन्होंनें विभिन्न टीवी चैनलों जैसे दूरदर्शन, ईटीवी और जी बांग्ला के लिए काम किया है। इनकी फ़िल्म, संशय 37वे भारतीय अंतर्राष्ट्रीय फ़िल्म समारोह (2006) का हिस्सा थी।

Avijit Banerjee is a filmmaker and a film producer based in West Bengal. He has been associated with the advertising industry for 35 years and has worked as a producer in various television channels like Doordarshan, ETV and Zee Bangla. His film 'Sanshay' was part of the 37th International Film Festival of India (2006).

श्री गणेश प्रोडक्शन्स (Sri Ganesh Productions)

श्री गणेश प्रोडक्शंस (कोलकाता) अविजीत बनर्जी द्वारा शुरू की गई एक विज्ञापन, टेलीविजन और फ़िल्म निर्माण कंपनी है। इसका पहली फ़ीचर फ़िल्म 'सॉन्गशॉय' थी, जिसे 37वें भारतीय अंतर्राष्ट्रीय फ़िल्म महोत्सव के लिए चुना गया था। इसके संस्थापक अबिजीत की दूसरी फर्म, अदजीत एडवरटाइजिंग एजेंसी ने अबिजीत के निर्देशन में विभिन्न क्षेत्रीय चौनलों के लिए कई धारावाहिक और अन्य कार्यक्रम तैयार किए हैं। इन्होंने सत्यजीत रे की लघु कहानी 'मास्टर अंशुमन' (2023) पर आधारित एक फ़िल्म का सह–निर्माण भी किया।

Sri Ganesh Productions (Kolkata) is an advertising, television and film production company started by Avijit Banerjee. Its first venture was the feature film 'Songshoy' which was selected for the 37th International Film Festival of India. Its founder Avijit's other firm, Adjeet Advertising Agency has produced several serials and other programmes for various regional channels under Avijit's direction. He also co-produced a film based on Satyajit Ray's short story titled 'Master Anshuman' (2023).

प्रशस्ति – यह अप्रचलित फिल्म प्रसंस्करण तकनीकों का दस्तावेजीकरण करता है, जो कई तकनीशियनों के कलात्मक योगदान पर रोशनी डालती है, जिन्होंने गुमनामी में अंधेरी प्रयोगशालाओं में कड़ी मेहनत की।

Citation - It documents obsolete film processing techniques, bringing to light the artful contributions of numerous technicians who toiled hard in dark laboratories in anonymity.

एंडेन्जर्ड हेरिटेज वर्ली आर्ट
सर्वश्रेष्ठ प्रचार फ़िल्म

Endangered Heritage 'Warli Art'
Best Promotional Film

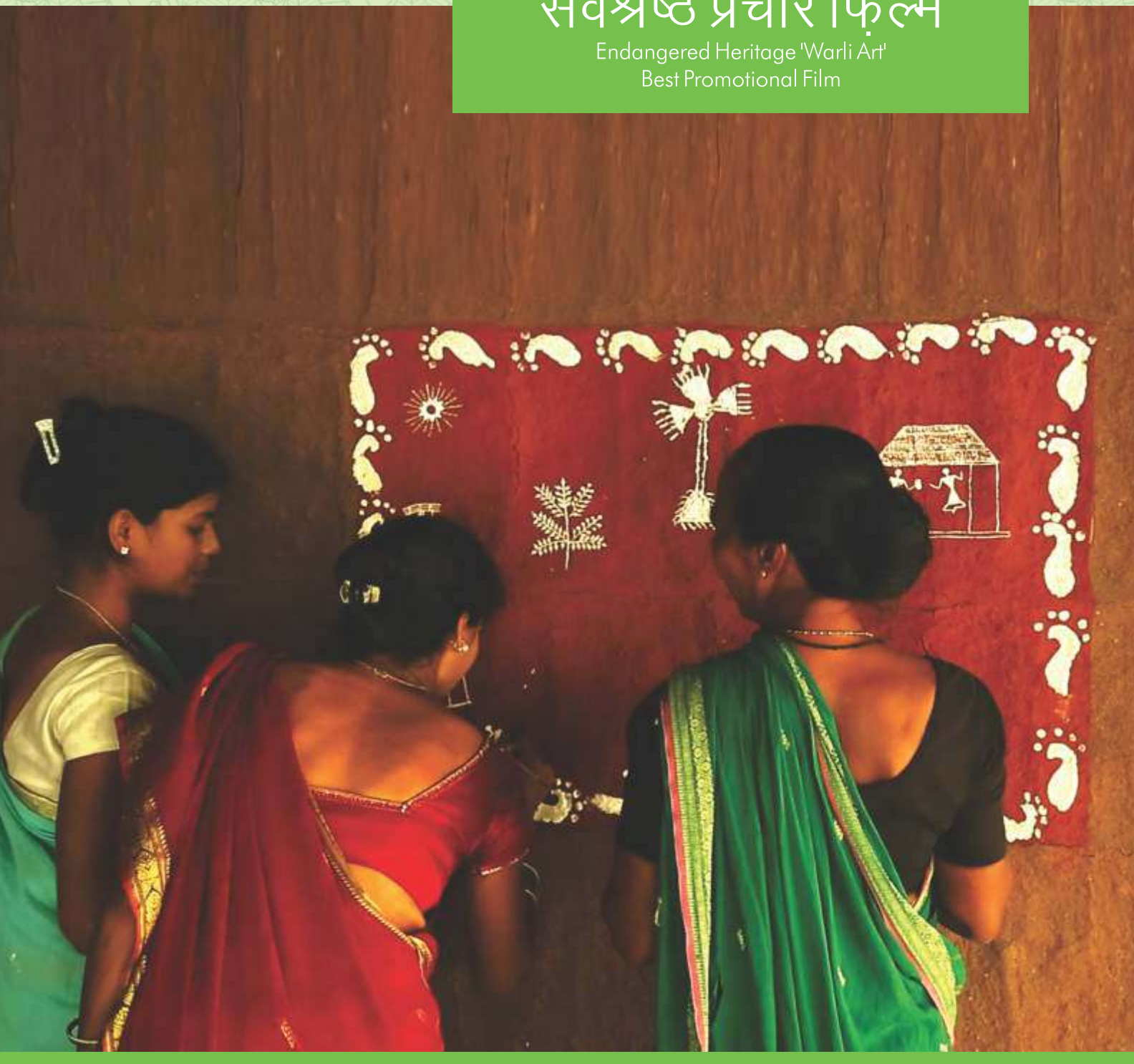

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

English | **34 Min** | **Director:** Hemant Verma | **Production Company:** Baba Cinemas | **DOP:** Mahaveer Singh | **Music:** Warali Traditional | **Editor:** Hemant Verma | **Narration:** Vinod Sharma | **On Location Sound:** Rajesh

कथासार - यह फ़िल्म वर्ली जनजाति की पारिस्थितिक रूप से सुदृढ़ और सार्थक जीवनशैली की एक झलक दिखलाती है। यह जनजाति दुनिया भर में अपनी पेंटिंग्स के लिए लिए चर्चित हैं। महाराष्ट्र के दहानू और दमन और नगर हवेली के सिलवासा में फ़िल्माई गई इस फ़िल्म का मकसद उनके ज्ञान को रिकॉर्ड कर संरक्षित करना और इसके जरिए कुछ सीखना है। फ़िल्म उनके जीवन, जीवनशैली, उनके धर्म, रीति–रिवाज, आजीविका, परिवार, रिश्ते और मृत्यु का अनुसरण करती हैय जहां सब कुछ स्थिरता के सच्चे सिद्धांतों पर आधारित है, जिससे व्यक्ति को उनकी कला के अलावा भी बहुत कुछ सीखने को मिलता है।

Synopsis - The film is a glimpse of the ecologically sound and meaningful lifestyle of the Warli Tribe, known for their paintings across the world. Shot in Dahanu in Maharashtra and Silvassa in Daman and Nagar Haveli, it intends to record their knowledge and through the film preserve it and learn from it. The film follows their life, lifestyle, their religion, rituals, livelihood, family, relationships and death; where everything is based on the true principles of sustainability, giving one a lot to learn from them apart from their art.

परिचय | PROFILE

हेमंत वर्मा (Hemant Verma)

हेमंत वर्मा एक पत्रकार और विज्ञापन, टेलीविजन और वृत्तचित्र फ़िल्मकार और निर्माता हैं। इन्होंने हिंदुस्तान टाइम्स, पंजाब केसरी, सामना, समाचार जगत, वीर–अर्जुन जैसे कई प्रकाशनों के साथ काम किया है। वह 'श्री दादू अमर लीला', 'जय बाला जी', 'देवों में देव शनि देव' और 'सरताज–ए–अग्रम' जैसी टेली–फ़िल्मों और 'सूरज की कचेहरी में', 'बस आब और नहीं', 'सवेरा', 'बेटी' और कॉरपोरेट्स और कई व्यक्तित्वों के वृत्तचित्र के लिए लेखन – निर्देशन किया है।

Hemant Verma is a journalist and an advertising, television and documentary filmmaker and producer. He has worked with publications like the Hindustan Times, Punjab Kesari, Samna, Samachar Jagat, Veer-Arjun, amongst others. He was the writer-director for tele-films like 'Shri Dadu Amar Leela', 'Jai Bala Ji', 'Devon Mein Dev Shani Dev' and 'Sartaj-E-Agram', and for documentaries like 'Suraj Ki Kachehri Mein', 'Bas Aab Aur Nahin', 'Savera', 'Beti' and several others on corporates and personalities.

बाबा सिनेमा (BABA CINEMAS)

बाबा सिनेमाज वृत्तिचित्र, कॉर्पोरेट और फ़ीचर फ़िल्में बनाने वाला एक प्रोडक्शन हाउस है। इनके कुछ उल्लेखनीय वृत्तिचित्र जैसे 'तुर्रा और कलगी', 'नटकला', 'गरासिया', 'स्यालदे बिकाहुती मेला' के साथ–साथ 'हुजूर महाराज ताराचंदजी' (राधा स्वामी), 'संत दादू दयाल जी', 'बाबाश्री गगनगिरी' और 'संत शिरोमणि नामदेव जी महाराज' जैसी जीवनी फिल्में शामिल हैं। 'ब्लैक कॉफी' उनकी पहली हिंदी फ़ीचर फ़िल्म है जो रिलीज के लिए तैयार है।

Baba Cinemas is a production house making documentaries, corporate and feature films. Some of their notable documentary films are 'Turra Aur Kalagi', 'Natkala', 'Garasia', 'Syalde Bikahuti Mela' along with biographical films like 'Hujoor Maharaj Tarachandji' (Radha Swami), 'Sant Dadu Dayal Ji', 'Baba Shri Gagangiri' and 'Sant Shiromani Namdev Ji Maharaj'. 'Black Coffee' is their first Hindi feature film ready for release.

प्रशस्ति – महाराष्ट्र की वरली जनजाति की स्वदेशी कला का एक संक्षिप्त सुदृढीकरण, जहां कहानी को अनूठे स्थानिक दृष्टिकोण के माध्यम से प्रदर्शित किया गया है।

Citation - A succinct reinforcement of the art of the indigenous Warli tribe of Maharashtra, showcased through their unique spatial prism of storytelling.

मुन्नम वलवु
सर्वश्रेष्ठ पर्यावरण फ़िल्म

Munnam Valavu
Best Environment Film Including Agriculture

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Malayalam | 100 Min | Director: R S Pradeep | **Production Company:** Sree Gokulam Movies | **DOP:** Rejiprasaad **Music:** Pandit Ramesh Narayan | **Editor:** T Aneesh Kumar | **Narration:** Prof. Aliyar Kunju | **Re-Recordist (Final mixed track):** T Krishnanunni | **Production Design:** A G Jaishu

कथासार - पिछले कुछ सालों से, हरा–भरा राज्य केरल बाढ़ और अन्य प्राकृतिक आपदाओं का गवाह बन रहा है, जिसकी वजह से बेपनाह तबाही हुई है। बांधों का निर्माण, अंधाधुंध वनों की कटाई, अत्यधिक निर्माण और प्राकृतिक संसाधनों के अनियंत्रित दोहन ने, विशेष रूप से पर्यावरण की दृष्टि से नाजुक पश्चिमी घाट में, इस दुखद स्थिति को जन्म दिया है। यह वृत्तचित्र दर्शकों को राज्य में प्राकृतिक आपदाओं से बार–बार जूझने की यात्रा पर ले जाती है, जिसमें चश्मदीद गवाहों और विशेषज्ञों के साक्षात्कार शामिल हैं, जो सभी लोगों को झकझोर कर जगाना चाहते हैं।

Synopsis - Over the past few years, the verdant state of Kerala has been witnessing a spate of floods and other natural disasters that have left unprecedented destruction in its wake. Indiscriminate damming, deforestation, inordinate construction, and unchecked exploitation of natural resources, particularly across the environmentally fragile Western Ghats has led to this sorry state of affairs. The documentary takes the viewer on a journey through the state's repeated tryst with natural disasters, with eyewitness accounts and interviews with experts intending to serve as a wake-up call to everyone concerned.

परिचय | PROFILE

आर एस प्रदीप (R S Pradeep)

आर.एस. प्रदीप एक पुरस्कार विजेता फ़िल्मकार, निर्देशक और पटकथा लेखक हैं जिन्होंनें मलयालम और अंग्रेजी में वृत्तचित्रों, लघु फ़िल्मों, विज्ञापन फ़िल्मों और टेलीविजन श्रृंखला पर काम किया है । उनके वृत्तचित्र 'मुन्नम वलवु' (द थर्ड कर्व) ने राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार, केरल राज्य पुरस्कार (2021) जीता और भारत और विदेशों में 12 अंतर्राष्ट्रीय फ़िल्म समारोहों में चुनी गई। 'वेनल पेयथा चट्टू माझा' (2020) ने सर्वश्रेष्ठ जीवनी वृत्तचित्र के लिए केरल राज्य फ़िल्म पुरस्कार जीता।

R. S. Pradeep is an award winning filmmaker; director and scriptwriter for documentaries, short films, ads films and television series in Malayalam and English. His documentaries like 'Munnam Valavu' (The Third Curve) won the National Film Award, the Kerala State Award (2021) and was selected across 12 International film festivals in India and abroad. 'Venal Peytha Chattu Mazha' (2020) went on to win the Kerala State Film Award for Best Biographical Documentary.

श्री गोकुलम मूवीज (Sree Gokulam Movies)

श्री गोकुलम मूवीज मलयालम फ़िल्म उद्योग में प्रसिद्ध भारतीय फ़िल्म निर्माता श्री गोकुलम गोपालन द्वारा स्थापित एक प्रमुख फ़िल्म प्रोडक्शन हाउस है। यह 'पाथोनपाथम नूट्टंडु' (2022), 'कायमकुलम कोचुन्नी' (2018), 'केरल वर्मा पजहस्सी राजा' (2009) और 'थूंगावनम' (2015) जैसी ऐतिहासिक फ़िल्मों के निर्माण के लिए जाना जाता है। यह केरल और तमिलनाडु में फ़िल्में वितरित करता हैय 'पप्पन' (2022), 'पोन्नियिन सेलवन: I और II' (2022 और 2023), 'जेलर' (2023) और शाहरुख खान स्टारर 'जवान' (2023) जैसी सुपरहिट फ़िल्में इसकी सूची में शामिल है।

Sree Gokulam Movies is a leading film production house established by Shree Gokulam Gopalan, renowned Indian film producer in the Malayalam film industry. It is best known for producing historical movies like 'Pathonpatham Noottandu' (2022), 'Kayamkulam Kochunni' (2018), 'Kerala Varma Pazhassi Raja' (2009) and 'Thoongavanam' (2015). It distributes films in Kerala and Tamil Nadu; superhits like 'Pappan' (2022), 'Ponniyin Selvan: I & II' (2022 & 2023), 'Jailer' (2023) and the Shahrukh Khan starrer 'Jawan' (2023).

प्रशस्ति – प्राकृतिक आपदाओं की पुनरावर्ती के साथ केरल के संघर्ष का एक प्रेरक विवरण, जो पर्यावरणविदों के माध्यम से हमरे समाज के आत्मघाती मार्ग के बारे में सचेत करता है।

Citation - A persuasive account of Kerala's struggles with recurring natural disasters narrated through environmentalists alerting about our society's self-destructive path.

मिठु दी

सामाजिक मुद्दों पर सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म

Mithu Di

Best Film on Social Issues

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

English | **25 Min** | **Director & Producer:** Asim Kumar Sinha | **DOP:** Abhinav Gupta | **Editor:** Abhinav Gupta | **Re-Recordist (Final mixed track):** Pradeep Suvigya

कथासार – यह फ़िल्म पद्म श्री पुरस्कार से सम्मानित भारतीय शिक्षाविद् और सामाजिक कार्यकर्ता डॉ. मिठू अलूर के उल्लेखनीय जीवन का वर्णन करती है, जिन्होंने दिव्यांग बच्चों के अधिकारों की वकालत के लिए अपना जीवन लगा दिया। जब उनकी बेटी मालिनी को सेरेब्रल पाल्सी की वजह से नियमित स्कूल में प्रवेश नहीं दिया गया, तो इसने उन्हें 1972 में स्पास्टिक्स सोसाइटी ऑफ इंडिया की सह–स्थापना करने के लिए प्रेरित किया, जो बाद में एडीएपीटी बनी । यह फ़िल्म एक चिंतित मां से लेकर एक प्रखर वकील तक की उनकी यात्रा है, जो एक व्यक्ति की शक्ति का प्रमाण है, जो बदलाव लाने और दूसरों को अधिक समावेशी और न्यायसंगत समाज निर्माण के लिए प्रेरित करती है।

Synopsis - The film chronicles the remarkable life of Padma Shri Awardee Dr.Mithu Alur, an Indian educationist and social activist who dedicated her life advocating for the rights of children with disabilities. When her daughter Malini was denied admission to a regular school because of her cerebral palsy, it motivated her to co-found the Spastics Society of India in 1972, which later became ADAPT. The film is her journey from a concerned mother to a fierce advocate, testament to the power of one individual to effect change and inspire others for a more inclusive and equitable society.

परिचय | PROFILE

असीम कुमार सिन्हा (Asim Kumar Sinha)

असीम कुमार सिन्हा फ़िल्म और टेलीविजन उद्योग में समीक्षकों द्वारा प्रशंसित राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संपादक हैं। इन्होंने एक दर्जन से अधिक क्षेत्रों और भाषाओं में 100 से अधिक फ़ीचर फ़िल्मों, कई टेलीविजन धारावाहिकों, कॉर्पोरेट फ़िल्मों और विज्ञापनों का संपादन किया है। इनके कुछ प्रमुख कार्यों में 'मम्मो', 'सरदारी बेगम', 'जुबैदा', 'नेताजी – द फॉरगॉटन हीरो', 'दरमियां', 'हासिल' जैसी फ़िल्में शामिल हैं। इन्होंने पाकिस्तान से ऑस्कर प्रविष्टि वाली पाकिस्तानी फिल्म 'सावन' का संपादन किया और 'संविधान', 'चंद्रकांता', 'करमचंद' और 'डरना मना है' जैसे कई लोकप्रिय टेलीविजन धारावाहिकों का संपादन किया है। इन्होंने एफटीआईआई, पुणे में गवर्निंग काउंसिल और अकादमिक काउंसिल के सदस्य के रूप में कार्य किया और कई फ़िल्म समारोहों के निर्णायक मंडल में रहे हैं।।

Asim Kumar Sinha is a critically acclaimed national and international editor in the film and television industry. He has edited more than 100 feature films across a dozen plus regions and languages, numerous television serials, corporate films and commercials. Some of his prominent works include films like 'Mammo', 'Sardari Begum', 'Zubeida', 'Netaji - The Forgotten Hero', 'Darmiyaan', 'Haasil', amongst others. He edited the Pakistani film 'Saawan', an Oscar entry from Pakistan and has edited many popular television serials like 'Samvidhaan', 'Chandrakanta', 'Karamchand' and 'Darna Mana Hai'. He served as a member of the Governing Council and the Academic Council at FTII, Pune and has been on the jury of several film festivals.

प्रशस्ति – एक शिक्षाविद्, सामाजिक कार्यकर्ता और एक मां के बारे में जो बेजुबानों को आवाज देने के लिए पूर्वाग्रह और भेदभाव को निडरता से संबोधित करती हैं।

Citation - About an educationist, social activist and a mother who dauntingly addresses prejudice and discrimination to give voice to the voiceless.

थ्री टूवन
सामाजिक मुद्दों पर सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म

Three Two One
Best Film on Social Issues

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Marathi & Hindi | **25 Min** | **Director:** Himanshu Prajapati | **Production Company:** FTII | **DOP:** Ashwin Ameri
Re-Recordist (Final mixed track): Ashok TP

कथासार - एक शहरी पुलिस स्टेशन में छोटी छोटी घटनाओं से जाहिर होता है कि उप–निरीक्षक (एसआई) पीयूष और सहायक उप–निरीक्षक (एएसआई) रतिका के बीच संबंध हैं। हालाँकि, दोनों में अंतरंगता है लेकिनय रतिका अभी किसी रिश्ते के बंधन में बंधने के लिए तैयार नहीं है। वहीं एक और एसआई विश्वनाथ भी मन ही मन रतिका को चाहता है लेकिन वह अपने दिल की बात बयान नहीं कर पाता है।

Synopsis - Snippets of events in an urban police station unfold the relationship between Sub-Inspector (SI) Piyush and Assistant Sub-Inspector (ASI) Ratika. Though, they share an intimacy; Ratika is not yet ready to be in a relationship. Another SI, Vishwanath also has a sense of affection towards her, but he cannot express his feelings to her.

परिचय | PROFILE

हिमांशु प्रजापति (Himanshu Prajapati)

हिमांशु प्रजापति फिल्मकार निर्देशक और पटकथा लेखक हैं। इन्होंने भारतीय फ़िल्म एवं टेलीविजन संस्थान, पुणे में पटकथा लेखन और फ़िल्म निर्देशन का अध्ययन किया। उनका काम जटिल मानवीय स्थितियों को एक सहजपन के साथ देखने का प्रयास करता है जो विषयों की गंभीरता को बरकरार रखते हुए उसे आसान बना देता है।

Himanshu Prajapati is a young filmmaker; director and a scriptwriter. He studied screenplay writing and film direction at the Film and Television Institute of India, Pune. His work attempts to look at complex human conditions with a playful lightness that does not take away the heaviness of the subjects.

एफटीआईआई (FTII)

भारतीय फ़िल्म और टेलीविजन संस्थान, पुणे, की स्थापना 1960 में भारत सरकार के सूचना और प्रसारण मंत्रालय के तहत की गई थी। पहले इसका नाम 'फ़िल्म इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया' था, जो 1971 में, यह 'फ़िल्म एंड टेलीविजन इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया' (एफटीआईआई) बन गया और जल्द ही यहां दूरदर्शन के लिए सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू किया गया। बाद में टेलीविजन प्रशिक्षण विंग 1974 में दिल्ली से पुणे में स्थानांतरित हो गया। इसके बाद, संस्थान सूचना और प्रसारण मंत्रालय और एक गवर्निंग काउंसिल और उसके नियुक्त निदेशक द्वारा संचालित एक स्वायत्त सोसायटी द्वारा पूरी तरह से सहायता प्राप्त हो गया।

The Film & Television Institute of India, Pune, India was established in 1960 under the Ministry of Information and Broadcasting, Government of India and was formerly known as the 'Film Institute of India'. In 1971, it became the 'Film and Television Institute of India' (FTII) and soon started in-service training programmes for Doordarshan. The Television Training Wing shifted to Pune from Delhi in 1974. Thereafter, the institute became fully aided by the Ministry of Information and Broadcasting and an Autonomous Society run by a Governing Council and its appointed Director.

प्रशस्ति – पुलिस कर्मियों के निजी जीवन को बताती, एक जटिल कहानी, जो हर दिन शारीरिक हिंसा से जूझते हैं, जबकि उनका अपना जीवन भावनात्मक समाधान चाहता है।

Citation - A complex tale about the personal lives of police personnel, dealing with physical violence everyday, while their own lives demand emotional resolutions.

सिरपिगलिन सिरपंगल

सर्वश्रेष्ठ शैक्षणिक फ़िल्म

Sirpigalin Sirpangal | Best Educational Film

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Tamil | **65 Min** | **Director:** B Lenin | **Production Company:** K K V Media Venture | **DOP:** Lakshmana Prabhu | **Music:** Vincent Thambi | **Editor:** B. Lenin | **On Location Sound:** Mohammad Mubarak

कथासार - वृत्तचित्र उन सेवानिवृत्त शिक्षकों के बारे में है जिन्होंने अपना जीवन तमिलनाडु के ग्रामीण इलाकों में शुरू किया। हालाँकि उन्हें खुद भी शिक्षा हासिल करने के लिए बहुत सारी बाधाओं का सामना करना पड़ा क्योंकि शिक्षा के लिए वहां सुविधाएं नहीं थी, खासकर पढ़ने जाने के लिए आने जाना एक प्रमुख बाधा थी, लेकिन उनका एकमात्र उद्देश्य था, शिक्षा प्राप्त करना। चूँकि उनकी इच्छा थी कि आसपास के सभी लोग भी शिक्षित हों, इसलिए कई लोग विभिन्न स्कूलों में शिक्षक बन गए। कुछ उसी स्कूल में जहां उन्होंने पढ़ाई की थी। वृत्तचित्र सेवानिवृत्त शिक्षकों का साक्षात्कार लेता है और छात्रों के सामान्य जीवन को असाधारण उपलब्धियों में बदलने के लिए उनकी प्रतिबद्धता के जीवन को दिखाता है।

Synopsis - The documentary is about retired teachers who started their lives in the rural areas of Tamil Nadu. Though they did not have many facilities for education themselves and faced many obstacles, transportation being a major one, their only aim was to get an education. As they wished that everyone around also gets educated, many became teachers in different schools. Some in the very same school where they studied. The documentary interviews retired teachers and follows their life of commitment to change the ordinary life of students into extraordinary achievements.

परिचय | PROFILE

बी. लेनिन (B. Lenin)

बी. लेनिन कई बार राष्ट्रीय और राज्य पुरस्कार विजेता रह चुके फ़िल्म निर्माता और मुख्य रूप से तमिल, मलयालम और हिंदी फ़िल्मों के संपादक हैं। इन्हें 'नॉक–आउट' (1992), 'काधलान' (1994) और 'कुत्रावली और ओदाहा' (1995) के लिए सर्वश्रेष्ठ संपादन का राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार, और 'उरुकु नूरुपर' (2001) के लिए इन्हें तमिल में सर्वश्रेष्ठ निर्देशन और सर्वश्रेष्ठ फ़ीचर फ़िल्म के लिए राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार प्राप्त हुआ। इन्होंने कई प्रतिष्ठित फ़िल्म पुरस्कारों और फ़िल्म समारोहों के लिए जूरी की अध्यक्षता की है ।

B. Lenin is a multiple-times national and state award winning filmmaker and editor mainly with Tamil, Malayalam and Hindi films. He won the National Film Award for Best Editing for 'Knock-Out' (1992), 'Kadhalan' (1994) and 'Kutravali and Oodaha' (1995), and for 'Ooruku Nooruper' (2001) he won the National Film Award for Best Direction and Best Feature Film in Tamil. He has chaired and served on the jury for several prestigious film awards and film festivals.

केकेवी मीडिया वेंचर्स (KKV Media Venture)

1962 में स्थापित केकेवी समूह में कपड़ा निर्यातक एससीएम गारमेंट्स एंड स्पिनर्स, टीमेज प्रीकास्टिंग और केकेवी एग्रो पॉवर्स लिमिटेड सहित विभिन्न कंपनियां शामिल हैं, साथ ही इसकी नई शाखा **केकेवी मीडिया वेंचर्स** भी है, जिसे 2020 में स्थापित किया गया था। केकेवी समूह समाज का आभार व्यक्त करने और कर्ज चुकाने के लिए विभिन्न क्षेत्रों में ज्ञान, नवाचार और विकास को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध है।

KKV Group established in 1962, consists of various companies, including textiles exporter SCM Garments & Spinners, Teemage Precasting and KKV Agro Powers Limited, along with its new arm **KKV Media Ventures** which was established in 2020. The KKV Group is committed to promoting knowledge, innovation, and growth in various sectors as a way to repay society.

प्रशस्ति – जिन्होंनें अनगिनित जीवनों को रोशन किया, ऐसे सेवानिवृत्त शिक्षकों को सम्मानित करते हुए, यह फ़िल्म शिक्षा के वास्तविक उद्देश्य पर प्रकाश डालती है।

Citation - Honouring retired educators, the film delves into the true purpose of education as believed by teachers who illuminated countless lives.

लुकिंग फॉर चलान
सर्वश्रेष्ठ खोजी फ़िल्म
Looking For Challan | Best Investigative Film

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

English | **57 Min** | **Director:** Bappa Ray | **Production Company:** Indira Gandhi National Centre For Arts | **DOP:** Vishakh Ambujendran | **Editor:** Ritika Poddar

कथासार – फ़िल्मकार 1984 में पहली बार चोलानायक्कन समुदाय से मिला था, उसके 35 साल बाद वह फिर उस जगह पर है और चलान को ढूंढ रहा है, जिससे वह निलाम्बुर के जंगलों में पहले भी मिल चुका है । चोलानायक्कन नाम का मतलब है, चोला यानि घना जंगला और नायक्कन मतलब राजा । वे केरल के नीलांबुर वन की विशाल नदियों के किनारे गुफाओं में रहते थे। 200 से कम की आबादी वाला यह समुदाय कई शताब्दियों तक तक अज्ञात रहा, फिर 1973 में, जब प्रसिद्ध मानवविज्ञानी डॉ. पीआरजी माथुर द्वारा उनका अध्ययन किया जा रहा था, तब उनकी जानकारी सामने आई । यह फ़िल्म, फ़िल्मकार की वापसी की यात्रा है।

Synopsis - The filmmaker first visited the Cholanaikkan community in 1984 and finds himself there again 35 years later in search of Challan, whom he had met earlier in the Nilambur forest. The 'Cholanaikkan' derive their name from the words 'Chola' meaning deep forests, and 'Naikkan' meaning king. They lived in caves along the mighty rivers of the Nilambur Forest in Kerala. With a population of less than 200, the community had remained unknown for several centuries until 1973, when they were being studied by renowned anthropologist Dr PRG Mathur. The film is a journey of the filmmaker's return.

परिचय | PROFILE

बप्पा रे (Bappa Ray)

बप्पा रे पुरस्कार विजेता मानवविज्ञान फ़िल्म निर्माता हैं, जो पिछले तीन दशकों से ग्रामीण और आदिवासी समुदायों के बीच काम कर रहे हैं, और उनकी जीवनशैली और आजीविका का दस्तावेजीकरण कर रहे हैं। जीवन अध्ययन के अलावा, फ़िल्म निर्माण का उपयोग इन्होंनें , शिक्षा और साक्षरता के माध्यम से आदिवासी समुदायों को सशक्त बनाने के लिए एक उपकरण के रूप में किया है। मानवविज्ञानके क्षेत्र में कई राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त कर चुके बप्पा, सत्यजीत रे फ़िल्म और टेलीविजन संस्थान, कोलकाता में गवर्निंग काउंसिल में भी कार्य कर चुके हैं।

Bappa Ray is an award winning anthropological/ ethnographic filmmaker who has been working amongst rural and tribal communities, documenting their lifestyles and livelihoods for the last three decades. Apart from life studies, filmmaking has been used as a tool to empower tribal communities through education and literacy. He has received several National Awards in the field of Visual Anthropology/ Ethnography and served on the Governing Council at the Satyajit Ray Film and Television Institute, Kolkata.

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र (आईजीएनसीए)

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र
INDIRA GANDHI NATIONAL CENTRE FOR THE ARTS

(The Indira Gandhi National Centre for the Arts (IGNCA))

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र (आईजीएनसीए) की कल्पना एक ऐसे केंद्र के रूप में की गई है जिसमें सभी कलाओं के अध्ययन और अनुभव को शामिल किया गया है – प्रत्येक रूप अपनी पूर्णता लिए हुए, फिर भी परस्पर निर्भरता के एक आयाम के भीतर, प्रकृति से अंतर्संबंधित, सामाजिक संरचना और ब्रह्मांड विज्ञान से जुड़ा हुआ है। अनुसंधान, प्रकाशन, प्रशिक्षण, रचनात्मक गतिविधियों और प्रदर्शन के विविध कार्यक्रमों के माध्यम से, आईजीएनसीए कला को प्राकृतिक और मानवीय संदर्भ में रखना चाहता है।

The Indira Gandhi National Centre for the Arts (IGNCA) is visualised as a centre encompassing the study and experience of all the arts – each form with its own integrity, yet within a dimension of mutual interdependence, interrelated with nature, social structure, and cosmology. Through diverse programmes of research, publication, training, creative activities, and performance, IGNCA seeks to place the arts within the context of the natural and human environment.

प्रशस्ति – केरल के स्वदेशी चोलोनेक्कन समुदाया के एक आदमी की खोज की कहानी, जिस पर फिल्मकार ने तीन दशक पहले फिल्म बनाई थी ।

Citation - A reflexive account of a filmmaker's search for a man from the indigenous Cholanaikkan community of Kerala he had filmed three decades ago.

कंदित्तुंडु
सर्वश्रेष्ठ एनिमेशन फ़िल्म
Kandittundu | Best Animation Film

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Malayalam | **12 Min** | **Director:** Adithi Krishnadas | **Production Company:** Studio Eeksaurus Productions Pvt Ltd | **Music:** Nandhu Kartha | **Editor:** Adithi Krishnadas | **Narration:** Mr. P.N.K. Panicker, Suresh Eriyat, Sabaridas T.K. | **Re-Recordist (Final mixed track):** Resul Pookutty

कथासार - हमेशा उत्साहित रहने वाले पी.एन.के पानसीकर को चौंकाने की मानो आदत सी थी। वो दर्शक को चांदनी रात की सैर करवाते हुए उसमें किसी आलौकिक शक्ति से एक मजेदार मुलाकात का तड़का लगा देते थे।

Synopsis - The ever-vibrant P.N.K Panciker has several shockers up his sleeve. He takes the viewer along a moonlit stroll and paints a quirky picture of the supernatural encounters he has had.

परिचय | PROFILE

अदिति कृष्णदास (Adithi Krishnadas)

अदिति कृष्णदास नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ डिजाइन, अहमदाबाद से स्नातक हैं। वह वर्तमान में स्टूडियो ईक्सॉरस, मुंबई में 2डी एनिमेटर और प्री–प्रोडक्शन कलाकार के रूप में काम करती हैं। 'कंदित्तुंडु', एक 2डी एनिमेटेड लघु फ़िल्म है जो पी.एन.के पैनिसर के अलौकिक अनुभवों को दर्शाती है, यह इनकी पहली फ़िल्म है।

Adithi Krishnadas is a graduate of the National Institute of Design, Ahmedabad. She currently works as a 2D animator and pre-production artist at Studio Eeksaurus, Mumbai. 'Kandittund', a 2D animated short film that depicts the supernatural experiences of P.N.K Panicer is her first film.

स्टूडियो ईक्सॉरस प्रोडक्शंस प्राइवेट लिमिटेड

(Studio Eeksaurus Productions Pvt Ltd)

स्टूडियो ईक्सॉरस प्रोडक्शंस प्राइवेट लिमिटेड मुंबई, भारत में स्थित एक प्रमुख विज्ञापन फ़िल्म निर्माण कंपनी है, जिसका इन–हाउस एनीमेशन स्टूडियो है। स्टूडियो की स्थापना सुरेश एरियाट ने की जो इसके क्रियेटिव डायरेक्टर हैं । ईक्सॉरस ने विज्ञापन फ़िल्मों, ब्रांडेड सामग्री, लघु फ़िल्मों, संगीत वीडियो, वेबिसोड और वेब शॉर्ट्स में अपनी पहचान बनाई है।

Studio Eeksaurus Productions Pvt Ltd is a premier ad film production company based in Mumbai, India with an in-house animation studio. Founded by Suresh Eriyat who serves as the studio's creative director, Eeksaurus has made a mark in advertising films, branded content, short films, music videos, webisodes and web shorts.

प्रशस्ति – ग्रामीण परिदृश्य में शहरी किंवदंतियों के इर्द–गिर्द घूमती मनमौजी कहानियों का एक संग्रह, जो मौखिक लोककथाओं को फिर से कहने की भारतीय परंपराओं की याद दिलाता है।

Citation - A collection of whimsical tales around urban legends in rural landscapes, reminding of Indian traditions of oral folklore retellings.

दाल भात

सर्वश्रेष्ठ लघु कल्पित फ़िल्म

Dal Bhat

Best Short Fiction Film

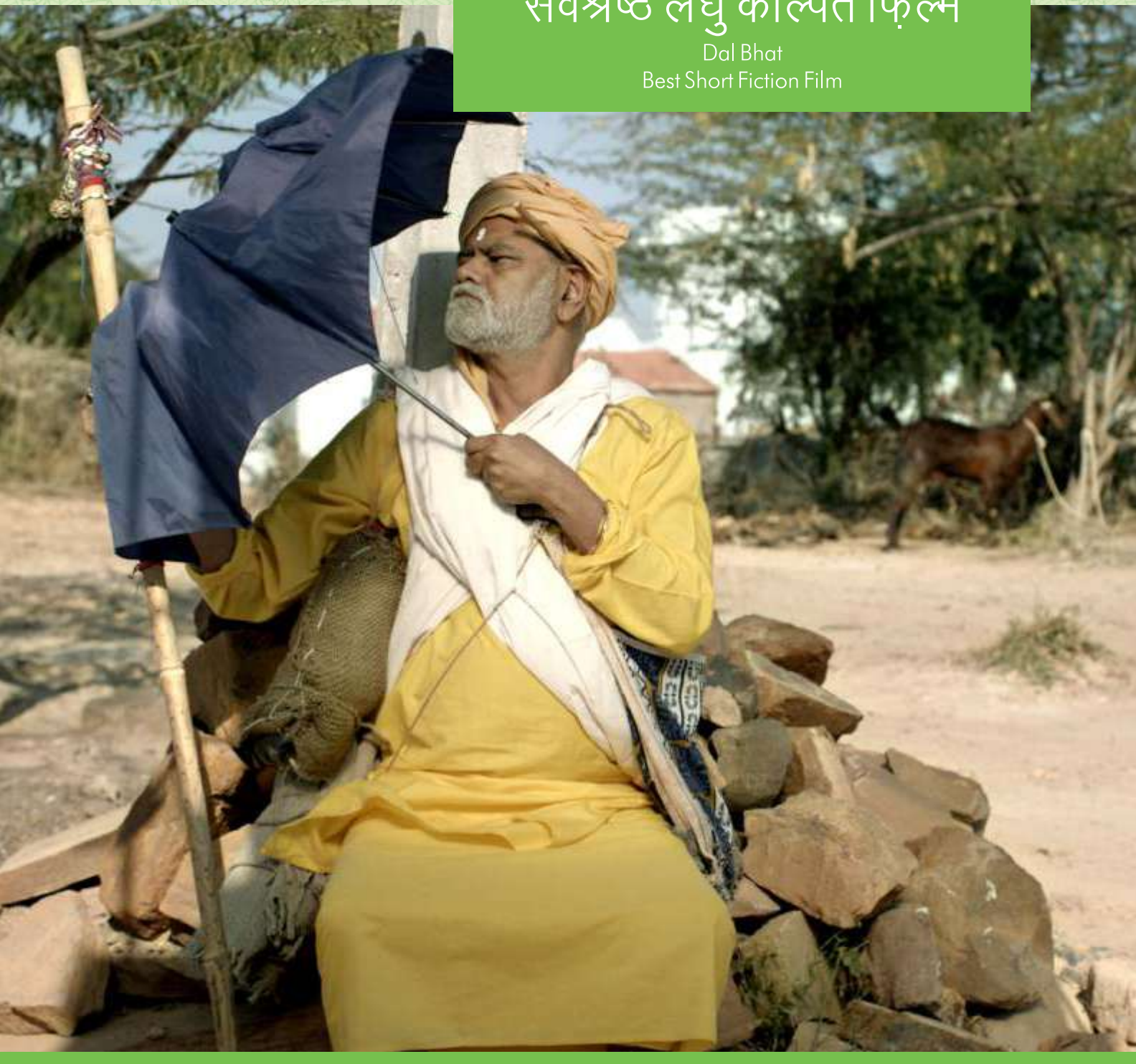

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Gujarati | **33 Min** | **Director & Producer:** Nemil Shah | **DOP:** Dhaval Samant | **Music:** Ojas Bhatt | **Editor:** Rishiraj Bhattacharyya | **On Location Sound:** Keyur Marolia | **Re-Recordist (Final mixed track):** Sarath Mohan | **Production Design:** Ishita Doshi

कथासार - गुजरात के कच्छ का एक छोटा सा रेगिस्तानी गांव, जहां कई सालों के सूखे के बाद आखिरकार बारिश होती और एक नए तालाब का जन्म होता है । दस साल की मुक्ति इसे लेकर बहुत रोमांचित है और उस तालाब में एक बार तैरना चाहती है। हालांकि, अन्य बच्चों की विपरीत उसे तैरने की इजाजत नहीं है। वह इस बात से बहुत हताश है, लेकिन फिर भी उसकी तैरने की इच्छा खत्म नहीं हुई है, यह साधारण सी इच्छा मुक्ति को उसकी लैंगिकता की खोज की चौंकाने वाली यात्रा पर ले जाती है, जो उसे खुद से, उसके इर्दगिर्द मौजूद लांछनों से और सबसे महत्वपूर्ण उसकी तैरने की मासूम इच्छा पर सवाले उठाने के लिए प्रेरित करती है। क्या वह अब भी तैर सकेगी ?

Synopsis - In a small desert village of Kutch in Gujarat, rain finally arrives after years of drought and gives birth to a new lake. Ten year old Mukti is fascinated and now wishes to swim in this lake once. However, unlike the other kids, he is restricted to go for a swim. Disappointed, but still motivated to swim, this seemingly simple wish takes Mukti on a startling journey of discovery about his sexuality, which causes him to question himself, the stigma around it, and importantly his innocent wish to swim. Will he still be able to swim?

परिचय | PROFILE

नेमिल शाह (निर्माता एवं निर्देशक): Nemil Shah (Director and Producer)

23 वर्षीय **नेमिल शाह** मुंबई के एक स्वतंत्र फ़िल्म निर्माता हैं। संजय मिश्रा अभिनीत इनकी पहली लघु फ़िल्म 'दाल भात' ने ऋत्विक घटक गोल्डन अवार्ड सहित विभिन्न पुरस्कार जीते और ऑस्कर के लिए आधिकारिक प्रविष्टि भी थी। 2022 में, पाल्म डी'ओर विजेता फ़िल्म निर्माता एपिचाटपोंग वीरासेठाकुल की पेरू के अमेजॅन रेनफॉरेस्ट प्रयोगशाला में भाग लेने वाले एकमात्र भारतीय फ़िल्म निर्माता थे, जहां उन्होंने उनके मार्गदर्शन में अपनी दूसरी लघु फ़िल्म बनाई थी।

Nemil Shah is a young, 23 year-old independent filmmaker based in Mumbai. His debut short film 'Dal Bhat', starring Sanjay Mishra won various accolades including the Ritwik Ghatak Golden Award and was also an official entry to the Oscars. In 2022, he was the only Indian filmmaker to participate in the Palme d'Or winning filmmaker, Apichatpong Weerasethakul's lab in the Amazon Rainforest, Peru, where he made his second short film under his mentorship.

प्रशस्ति – एक बारीक चित्रण, जिसमें मौजूद लिंग श्रेणियों से बाहर होने की दुविधा और बचपन की मासूमियत जहां भाईचारा सामाजिक लांछनों पर जीत हासिल करता है, प्रदर्शित होती है।

Citation - The subtle portrayal of the dilemma of being outside pre-existing gender categories, and the innocence of childhood where fraternity wins over social stigma.

चंद सांसे
पारिवारिक मूल्यों पर सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म

Chand Saanse | Best Film on Family Values

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Hindi | **20 Min** | **Director:** Pratima Joshi | **Producer:** Chandrakant Kulkarni | **DOP:** Milind Jog | **Music:** Mangesh Dhakde | **Editor:** Jayant Jathar | **On Location Sound:** Sagar Raut | **Re-Recordist (Final mixed track):** Pranav Badve | **Production Design:** Pooja Patil, Sumit Waykos

कथासार - नयन अस्पताल के प्रतीक्षाकक्ष में है, जहां पर उसके ससुर जी भर्ती हैं। वह वहां पर दूसरों की तकलीफ देखती है और उसे लगता है जैसे वह मौत का इंतजार करने वाला कमरा है। उसकी मुलाकात शबाना से होती है, जिसके शब्द उसके दिल में घर कर जाते हैं, कि 'हम में से हर एक बाहर यह सोचते हुए इंतजार कर रहा है कि अगला कौन होगा ?' वह एक बुजुर्ग से मिलती है, जिसने अभी अपनी पत्नी को खोया है लेकिन वह इस बात से अंजान है। इन सब बातों से नयन के जहन में सवाल उठता है कि, 'जीवन और मौत के बीच क्या अंतर है ?' इसके बारे में जान लेना या इसको लेकर अन्जान बने रहना ?

Synopsis - Nayan in the waiting room of a hospital where her father-in-law is admitted. She sees the suffering of other people and it looks like it is meant to be a room waiting for death. She meets Shabana whose words stay with her, "Each one of us is waiting outside thinking who would be next?" She meets an old man who has just lost his wife but is unaware of it. This makes Nayan question, "What is the difference between life and death? Knowing about it or being unaware about it?"

परिचय | PROFILE

प्रतिम जोशी (Pratima Joshi)

प्रतिमा जोशी, मराठी फ़िल्मों, नाटकों और टेलिविजन श्रंखलाओं की पुरस्कार विजेता, रंगमंच और फिल्म अभिनेत्री, निर्देशक और वेशभूषा डिजाइनर हैं। उनकी पहली मराठी फ़ीचर फ़िल्म 'आम्ही दोघी' (2018) को कई फ़िल्म समारोहों के लिए चुना गया था। मराठी नाटकों के लिए इन्हें कई पुरस्कार मिले हैं, जिनमें सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री के लिए राज्य पुरस्कार के साथ–साथ वेशभूषा डिजाइनिंग के लिए चार राज्य पुरस्कार शामिल हैं।

Pratima Joshi is an award winning theatre and film actor, director and costume designer for Marathi films, plays and television series. Her debut Marathi feature film 'Aamhi Doghi' (2018) was selected for several film festivals. For Marathi plays, she has many accolades, including the State Award for Best Actress along with four State Awards for costume designing.

चंद्रकांत कुलकर्णी (Chandrakant Kulkarni)

चंद्रकांत कुलकर्णी एक पुरस्कार विजेता निर्देशक हैं, जिन्हें सिनेमा और रंगमंच की दुनिया में उनके उल्लेखनीय योगदान और विशिष्ट शैली के लिए राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर जाना जाता है। इन्होंनें पिछले तीन दशकों में 85 नाटक और 12 फ़िल्मों सहित कई अन्य फ़िल्मों के लिए निर्देशन किया। मराठी थिएटर में उनका योगदान 'त्रिनट्टीधारा' (त्रयी) के रूप में एक मील का पत्थर है और इनकी फ़ीचर फिल्म 'आजचा दिवस माझा' (2013) सर्वश्रेष्ठ मराठी फ़ीचर फ़िल्म (2014) का राष्ट्रीय पुरस्कार जीत चुकी है।

Chandrakant Kulkarni is an award winning director, acclaimed nationally and internationally for his signature style and significant contributions to theatre and cinema. He has directed over 85 plays in the last three decades and 12 feature films, amongst many others. His contribution to Marathi theatre is a landmark in the form of 'Trinattydhara' (Trilogy) and the feature film 'Aajcha Divas Majha' (2013) won the National Award for the Best Marathi Feature Film (2014).

प्रशस्ति – जीवन और मृत्यु के बीच अंतर और मानवीय धारणाओं से प्रेरित पारिवारिक बंधनों के भीतर भावनाओं की गहराई को यह फ़िल्म चित्रित करती है।

Citation - The film etches the distinction between life and death, and the profundity of emotions within familial bonds driven by human perceptions.

रेखा
विशेष निर्णायक मंडल सम्मान

Rekha
Special Jury Award

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 1,00,000/-

Marathi | 38 Min | Director: Shekhar Bapu Rankhambe | **Production Company:** Ravi Jadhav Films | **DOP:** Pratap Joshi | **Music:** Mandar Kamalapurkar & Nikita Kulkarni | **Editor:** Vaibhav Jadhav | **On Location Sound:** Akshay Londhe | **Re-Recordist (Final mixed track):** Mandar Kamalapurkar & Sachidanand Tikam | **Production Design:** Meghana Jadhav

शेखर बापु रणखांबे एक भारतीय फ़िल्म निर्माता हैं। इनके कुछ उल्लेखनीय कामों में हिंदी वेबसीरीज, 'चिड़िया उड़', एक मराठी फीचर फ़िल्म 'कुनासती कुनितारी' और एक लघु फिल्म 'पैम्फलेट' (2018) है, जिसे विभिन्न फिल्म समारोहों में 30 से अधिक पुरस्कार सहित भारत के अंतर्राष्ट्रीय फ़िल्म महोत्सव (2018) के भारतीय पैनोरमा अनुभाग में विश्व प्रीमियर और केरल लघु फ़िल्म और वृत्तचित्र महोत्सव (2019) में भी काफी सराहा गया ।

Shekhar Bapu Rankhambe is an Indian filmmaker. Some of his notable works are 'Chidiya Udd' a web series in Hindi, 'Kunasati Kunitari' a Marathi feature film and 'Pamphlet' (2018) a short film that won many accolades, including the world premiere at the International Film Festival of India (2018) in the Indian Panorama section, at the Kerala Short Film and Documentary Festival (2019) and 30 plus awards at various other film festivals. .

प्रशस्ति – सड़क पर रहने वाली एक महिला का सम्मान के साथ जीवन जीने की भरसक कोशिश का संवेदनशील चित्रण, जबकि उसके पति की गिरती मानवता उसकी मुक्ती को लगातार चुनौती देती है।

Citation - The delicate portrayal of a street dweller making persistent efforts to live with dignity while her husband's eroded humanity constantly challenges her liberation.

स्माइल प्लीज़
सर्वश्रेष्ठ निर्देशन

Smile Please | Best Direction

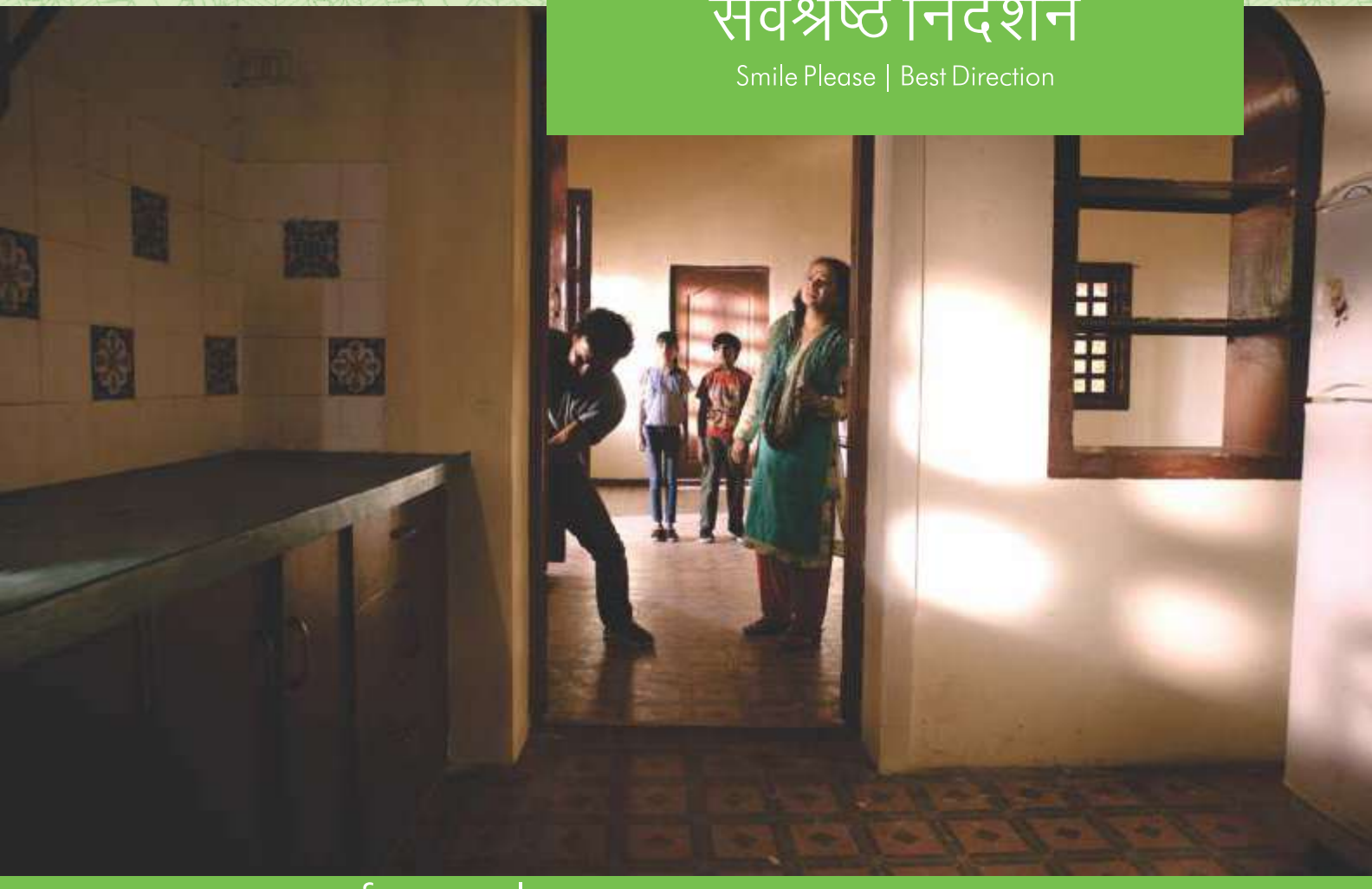

स्वर्ण कमल | SWARNA KAMAL ₹ 1,50,000/-

Hindi | **22.03 Min** | **Director:** Bakul Matiyani | **Producer:** Neha Parti Matiyani | **DOP:** Neha Parti Matiyani **Music:** Aniket Kar & Adil Rasheed | **Editor:** Bakul Matiyani | **On Location Sound:** Sohel Sanwari | **Production Design:** Sapna Chandra

बकुल मटियानी फ़िल्म संपादक हैं। इन्होंने, फ़िल्म एंड टेलीविजन इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया, पुणे से 2004 में डायरेक्शन का कोर्स और 2007 में फ़िल्म एडिटिंग का कोर्स पूरा किया। संपादन, निर्माण और लेखन में अनुभव प्राप्त करने के बाद, बतौर निर्देशक, लघु फिल्म 'स्माइल प्लीज' इनकी पहली फ़िल्म है।

Bakul Matiyani is an editor in the Indian film industry. He completed a course in Direction in 2004 and another in Film Editing in 2007 from the Film and Television Institute of India, Pune. Having gained experience in editing, producing and writing, the short film 'Smile Please' is his debut as a director.

प्रशस्ति – उम्मीदों के साथ कही गई एक लड़के की कहानी, जो मोयबियस सिंड्रोम नाम की एक शारीरिक अवस्था से गुजर रहा है, जिसमें उसके चेहरे के हाव–भाव कमजोर पड़ते जा रहे हैं।

Citation - An optimistically narrated story of the physically debilitating Moebius Syndrome, a condition that impairs the facial movements of a boy.

पाताल–टी
सर्वश्रेष्ठ छायांकन

Pataal-Tee
Best Cinematography

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Bhotiya | **25 Min** | **Director & Producer:** Mukund Narayan & Santosh Singh | **DOP:** Satish Kumar | **Editor:** Pooja Pillai | **On Location Sound:** Arjun Rawat | **Re-Recordist (Final mixed track):** Resul Pookutty, Amrit Pritam Dutta, Arunav Dutta | **Production Design:** Mukund Narayan & Santosh Singh

सतीश कुमार (बिट्टू रावत) भारत के सबसे होनहार सिनेमैटोग्राफरों में से हैं। उनके करियर में महत्वपूर्ण मोड़ था, 'पाताल–टी' (2022),जिसके लिए उन्होंनें फोटोग्राफी के निर्देशक के तौर पर काम किया। फ़िल्म की सिनेमाई प्रतिभा ने उनकी अपार प्रतिभा और अद्वितीय नजरिये को प्रदर्शित किया, जिससे उन्हें मॉस्को फ़िल्म फेस्टिवल, बुसान इंटरनेशनल शॉर्ट फ़िल्म फेस्टिवल और 53वें भारत के अंतर्राष्ट्रीय फ़िल्म फेस्टिवल सहित प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय फ़िल्म समारोहों में आलोचकों की प्रशंसा और पहचान मिली।

Satish Kumar (Bittu Rawat) is amongst India's most promising cinematographers. The turning point in his career came when he was entrusted as Director of Photography for 'Pataal-Tee' (2022). The film's cinematic brilliance showcased his immense talent and unique vision, earning him critical acclaim and recognition by prestigious international film festivals, including the Moscow Film Festival, Busan International Short Film Festival and at the 53rd International Film Festival of India.

प्रशस्ति – उच्च हिमालयी परिदृश्य में शांति को कैद करने वाली गतिशील छवियों का एक मनोरम संग्रह, जो कहानी में आध्यात्मिक वादियों की ताजगी को उजागर करता है ।

Citation - A captivating collection of moving images capturing the stillness in the high Himalayan landscape, evoking the metaphysical realm in the storyline.

एक था गांव

सर्वश्रेष्ठ संगीत आलेखन

(फाइनल मिक्स ट्रेक का पुनर्लेखन)

Ek Tha Gaon | Best Audiography

(Re-recordist of the final mixed track)

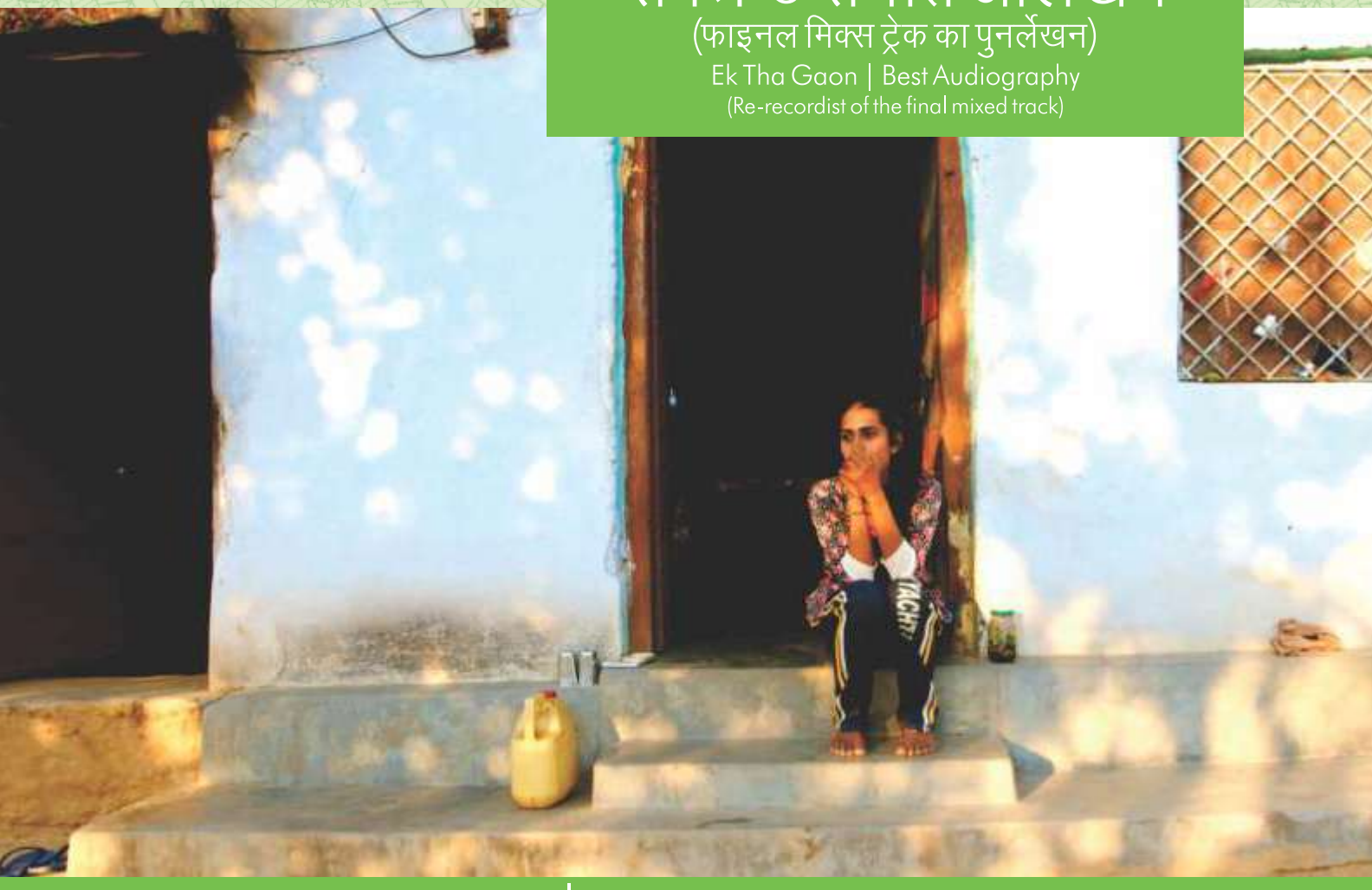

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Garhwali & Hindi | **60 Min** | **Director & Producer:** Srishti Lakhera | **DOP:** Amith Surendran & Kai Tillman **Music:** Jerad Sagar | **Editor:** Bhamati Sivapalan | **On Location Sound:** Srishti Lakhera | **Re-Recordist (Final mixed track):** Krishnanunni N R

कृष्णनुन्नी एन. आर. फ़िल्मों की ध्वनि के विशेषज्ञ हैं। एक साउंड रिकॉर्डिस्ट से लेकर साउंड एडिटर, एक साउंड डिजाइनर और मिक्सर का काम, इन्होंने हिंदी, भारतीय क्षेत्रीय भाषा और अंतर्राष्ट्रीय सिनेमा में 350 से अधिक फ़िल्मों की ध्वनि पर काम किया है। संस्थानों में विजिटिंग फैकल्टी के रूप में, वह 'पोस्ट–प्रोडक्शन साउंड ऑफ मूवीज़' और 'एडवांस्ड मिक्सिंग टेक्निक्स' जैसे विषय पढ़ाते हैं।

Krishnanunni N. R. is an expert on sound for films. From being a sound recordist to a sound editor, to a sound designer and mixer, he has worked on the sound of more than 350 movies across Hindi, Indian regional and international cinema. As a visiting faculty with institutes, he teaches subjects like 'Post-Production Sound of Movies' and 'Advanced Mixing Techniques'.

प्रशस्ति – एक प्रभावशाली साउंड मिक्स जिसमें लोकेशन की ध्वनि और संगीत का मेल है, जो कथा में पात्रों की उस आंतरिकता को कैद करता जैसा भावनात्मक रूप से वह अनुभव करते हैं।

Citation - An evocative sound-mix combining location sound and music capturing the interiority of the characters in the narrative that they experience emotionally.

मीन राग
सर्वश्रेष्ठ प्रोडक्शन ध्वनि लेखन
(लोकेशन–सिंक साउंड)
Meen Raag | Best Production Sound Recordist
(Location / Sync Sound)

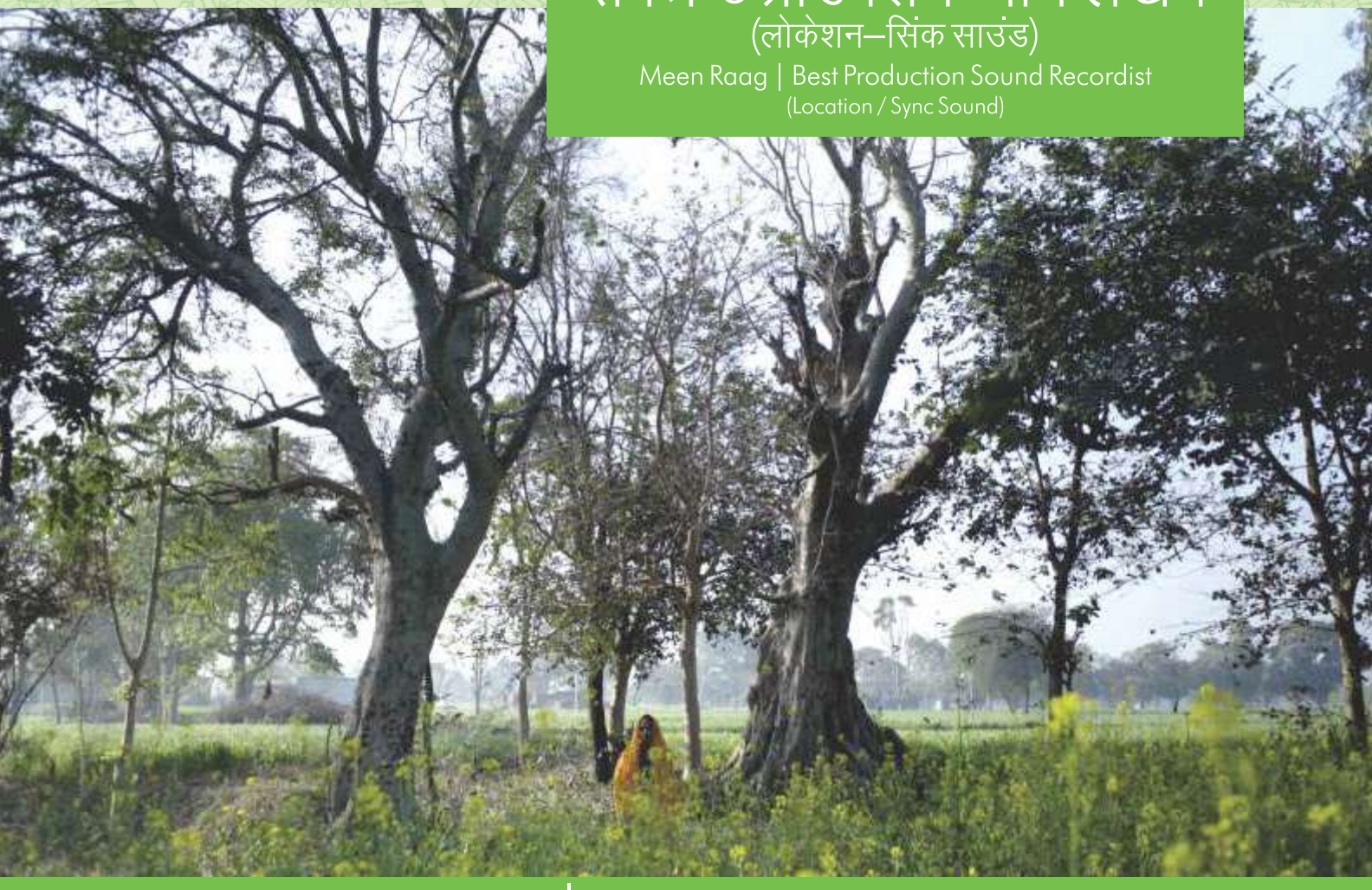

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Rajasthani | 30 Min | Director, Producer, Editor, On Location Sound: Suruchi Sharma | **DOP:** Ashok Meena
Re-Recordist (Final mixed track): Swaroop Nath Bhatra

सुरुचि शर्मा एक स्वतंत्र फ़िल्मकार हैं, राजस्थान की सांस्कृतिक विविधता का दस्तावेजीकरण जिनकी लोक फ़िल्म श्रंखला का हिस्सा रहा है। इनके अन्य कामों में संगीत वीडियो, गैर–काल्पनिक श्रंखला, और काल्पनिक फ़िल्म शामिल हैं। नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ डिजाइन, अहमदाबाद से फ़िल्म स्नातक और यूनेस्को– साहापीडिया रिसर्च फैलो (2019) रह चुकी सुरुचि ने, एपिक चैनल, टीवीएफ, नेशनल ज्योग्राफिक चैनल और अमेजन प्राइम के साथ काम किया है। इनके कार्य को कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय महोत्सवों में दिखाया और पुरस्कार से नवाज़ा जा चुका है।

Suruchi Sharma is an independent filmmaker documenting the cultural diversity of Rajasthan as part of her folk film series. Her other work includes music videos, non-fiction series and fiction films. A film graduate from National Institute of Design, Ahmedabad and a UNESCO- Sahapedia Research Fellow (2019), she has also worked for broadcasters like The Epic Channel, TVF, National Geographic Channel and Amazon Prime. Her work has been viewed and awarded at various national and international festivals.

प्रशस्ति – मुश्किल जगहों पर सतत साउंड रिकॉर्डिंग एक नजरिया पेश करती है, जिससे फिल्म के कथानक में स्थानीय भाव को महसूस करने में मदद मिलती है।

Citation - Sustained sound recording in difficult locations creating aural perspectives that dynamizes the spatial design of the film's narrative construction.

इफ मेमोरी सर्व्स मी राइट
सर्वश्रेष्ठ संपादन
If Memory Serves Me Right
Best Editing

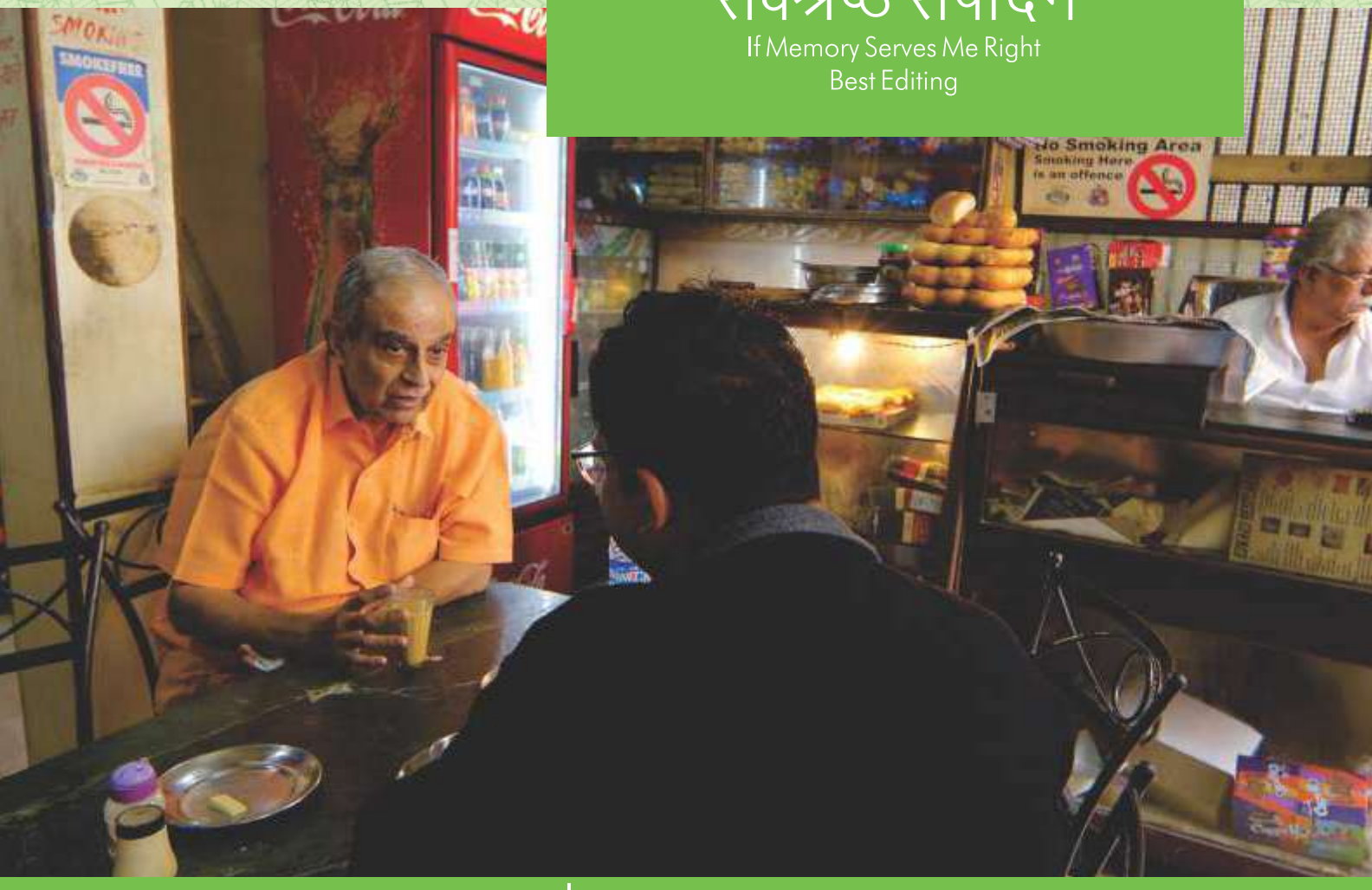

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

English | **44 Min** | **Director, Producer & DOP:** Rafeeq Ellias | **Music:** Anindya Chakraborti | **Editor:** Abhro Banerjee | **On Location Sound:** Saptarshi Sarkar | **Re-Recordist (Final mixed track):** Tapan Bhattacharya

अभ्रो बनर्जी ने मुख्य रूप से एक संपादक के रूप में और अक्सर ध्वनि डिजाइनर, वीएफएक्स और मोशन ग्राफिक्स विजुअलाइजर के रूप में वृत्तचित्रों, फिक्शन, प्रयोगात्मक फ़िल्मों और विभिन्न लघु–रूप संपादन जैसे टीवीसी, ट्रेलरों, प्रचार फ़िल्मों और स्वतंत्र वीडियो कला कार्यों पर बड़े पैमाने पर काम किया है। संपादक के रूप में इनकी उल्लेखनीय फ़िल्मों में, 'जोराम' (2023), 'कुंडे' (2023), 'रनर्स' (2023), 'माणिक बाबर मेघ' (2021), 'गे इंडिया मैट्रिमोनी' (2020), 'नो फादर्स इन कश्मीर' (2018), 'बिरहा' (2018), 'उंगली' (2014), सहित कई अन्य फ़िल्में शामिल हैं।

Abhro Banerjee has worked extensively on documentaries, fiction, experimental films and various short-form editing practices like TVCs, trailers, promotional films and independent video art works primarily as an editor and often as the sound designer, VFX and motion graphics visualiser. His notable films as editor are 'Joram' (2023), 'Kunde' (2023), 'Runners' (2023), 'Manik Babur Megh' (2021), 'Gay India Matrimony' (2020), 'No Fathers in Kashmir' (2018), 'Birha' (2018), 'Ungli' (2014), amongst several others.

प्रशस्ति – फ़िल्म में चरित्र द्वारा धुंधलाती यादों के अरेखीय लम्हों को पकड़ कर उनसे एक खंडित लौकिक ब्रह्मांड की स्थापना करने के लिए।

Citation - Establishing a fractured temporal universe that captures the nonlinearity of fading memories narrated by the character in the film.

सकुलेंट

सर्वश्रेष्ठ संगीत निर्देशन

Succulent

Best Music Direction

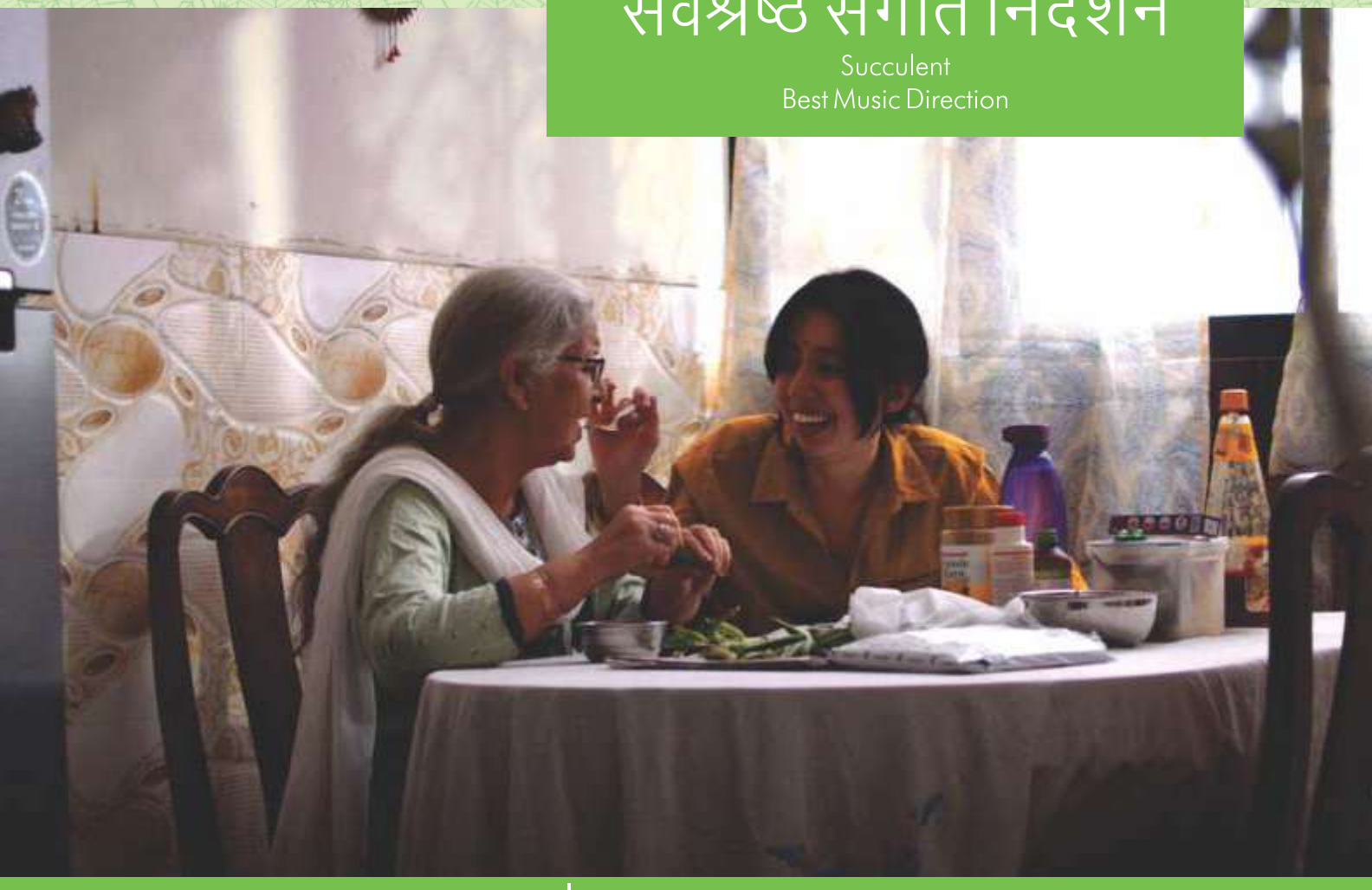

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Hindi, English, Marathi | 30 Min | Director & Producer: Amrita Bagchi | **DOP:** Anand Bansal | **Music:** Ishaan Divecha | **Editor:** Faraz Ali | **On Location Sound:** Sunil Kumar | **Re-Recordist (Final mixed track):** Abhijit Chetia & Rahul Rabha | **Production Design:** Simran Juneja

इशान दिवेचा मुंबई के एक संगीतकार और निर्माता हैं। यह स्वतंत्र रूप से फ़ीचर, वेब श्रृंखला, वृत्तचित्र और लघु फ़िल्म जैसे प्रारूपों लिए काम करते हैं, वहीं अक्सर सह–संगीतकार मल्लार सेन के साथ काम करते हैं। इनके कुछ उल्लेखनीय कार्यों में 'उड़ता पंजाब', 'न्यूटन', 'पाताल लोक' 'घोल' और 'शेरनी', जैसी कई फ़िल्मों के लिए संगीत शामिल है। इन्होंने फ़िल्म '405' के लिए संगीत दिया, जिसे क्लेरमोंट–फेरैंड इंटरनेशनल शॉर्ट फ़िल्म फेस्टिवल (2020) और MUBI पर प्रदर्शित किया गया।

Ishaan Divecha is a music composer and producer based in Mumbai. He works independently for various mediums like features, web series, documentaries and short film formats, while often collaborating with co-composer Mallar Sen. Some of his notable works include music for films like 'Udta Punjab', 'Newton', 'Paatal Lok', 'Ghoul' and 'Sherni', amongst others. He scored music for the film '405', screened at the Clermont-Ferrand International Short Film Festival (2020) and featured on MUBI.

प्रशस्ति – फ़िल्म का पार्श्व संगीत उस अत्यंत निराशावादी दुनिया की अर्थहीनता को साफ तौर पर दिखाता है, जिसे भावनात्मक जुड़ाव की तलाश करते किरदारों ने आत्मसात कर लिया है।

Citation - The background music score accentuates the absurdity of a dystopic world that the characters inhabit, while seeking emotional connections.

हातीबोंधु
सर्वश्रेष्ठ प्रकथन | वॉइस ओवर

Hatibondhu
Best Narration | Voice Over

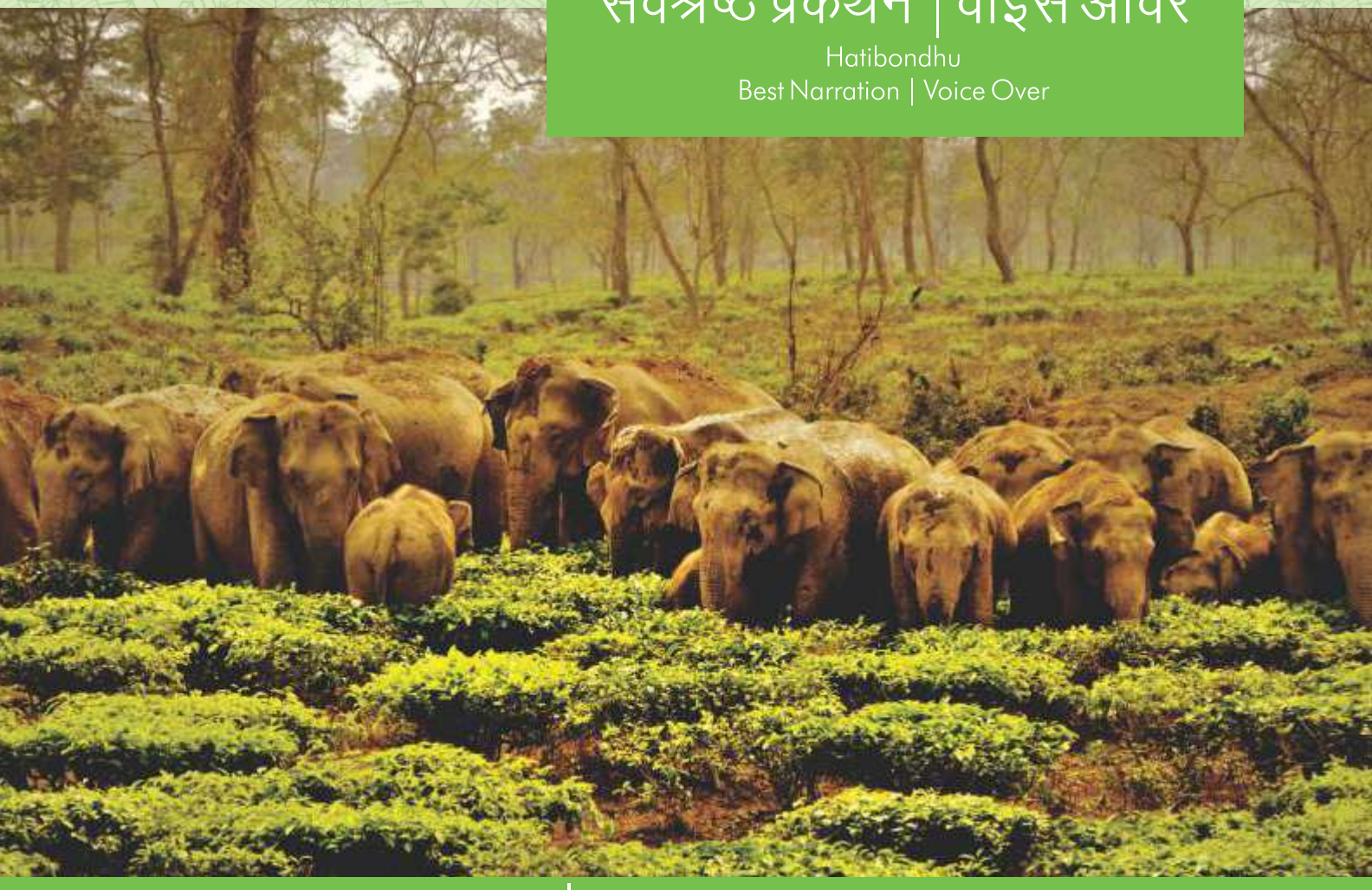

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

English Partly Assamese | **54 Min** | **Director:** Kripal Kalita | **Producer:** Sabita Devi | **Production Company:** Kristi Pathar | **DOP:** Binod Dulu Bora, Ramen Rabha | **Music:** Kripal Kalita, Rajib Kashyap | **Editor:** Kripal Kalita | **Narration:** Kulada Kumar Bhattacharjee | **Re-Recordist (Final mixed track):** Amrit Pritam

कुलाद कुमार भट्टाचारजी के विख्यात और पुरस्कार विजेता रंगकर्मी हैं। रंगमंच को अपना जीवन समर्पित कर, इन्होंनें ताउम्र कला के विस्तार पर काम किया। दिल्ली थिएटर से जुड़े रहे कुलादा, ने न्यू लंदन, ब्रिटिश ड्रामा लीग और नॉर्डड्यूशर रुंडफंक, जर्मनी में भी प्रशिक्षण प्राप्त किया। एक अभिनेता, निर्देशक, निर्माता, वॉइस ओवर कलाकार, रेडियो नाटक निर्माता और मोबाइल रंगमंच निर्देशक के तौर पर वृत्तचित्र, टेली–फ़िल्म्स और टेली–सीरीज जैसे विभिन्न प्रारूपों के लिए काम किया, और बीबीसी लंदन (1960) में बंगाली प्रोग्रामर भी रहे।

Kulada Kumar Bhattacharjee is a renowned and award winning theatre personality. Dedicating his life to theatre, he has been relentlessly promoting the art. Involved with Delhi theatre, he also trained at New London, British Drama League and Norddeutscher Rundfunk, Germany. Engaged with varied formats like documentaries, tele-films and tele-series as an actor, director, producer, voice over artist, radio drama producer and mobile theatre director, he was the Bengali Programmer at BBC London (1960).

प्रशस्ति – हाथियों की बड़े पैमाने पर हो रही हत्या की गंभीरता को समझाते हुए, वॉयसओवर इस मानव निर्मित तबाही को समाप्त करने की तत्काल समाप्त करने की वकालत करता है।

Citation - Communicating the gravity of the largescale massacre of elephants, the voiceover narration advocates urgency to end this man-made catastrophe.

बाले बंगारा
विशेष उल्लेख
Baale Bangara | Special Mention

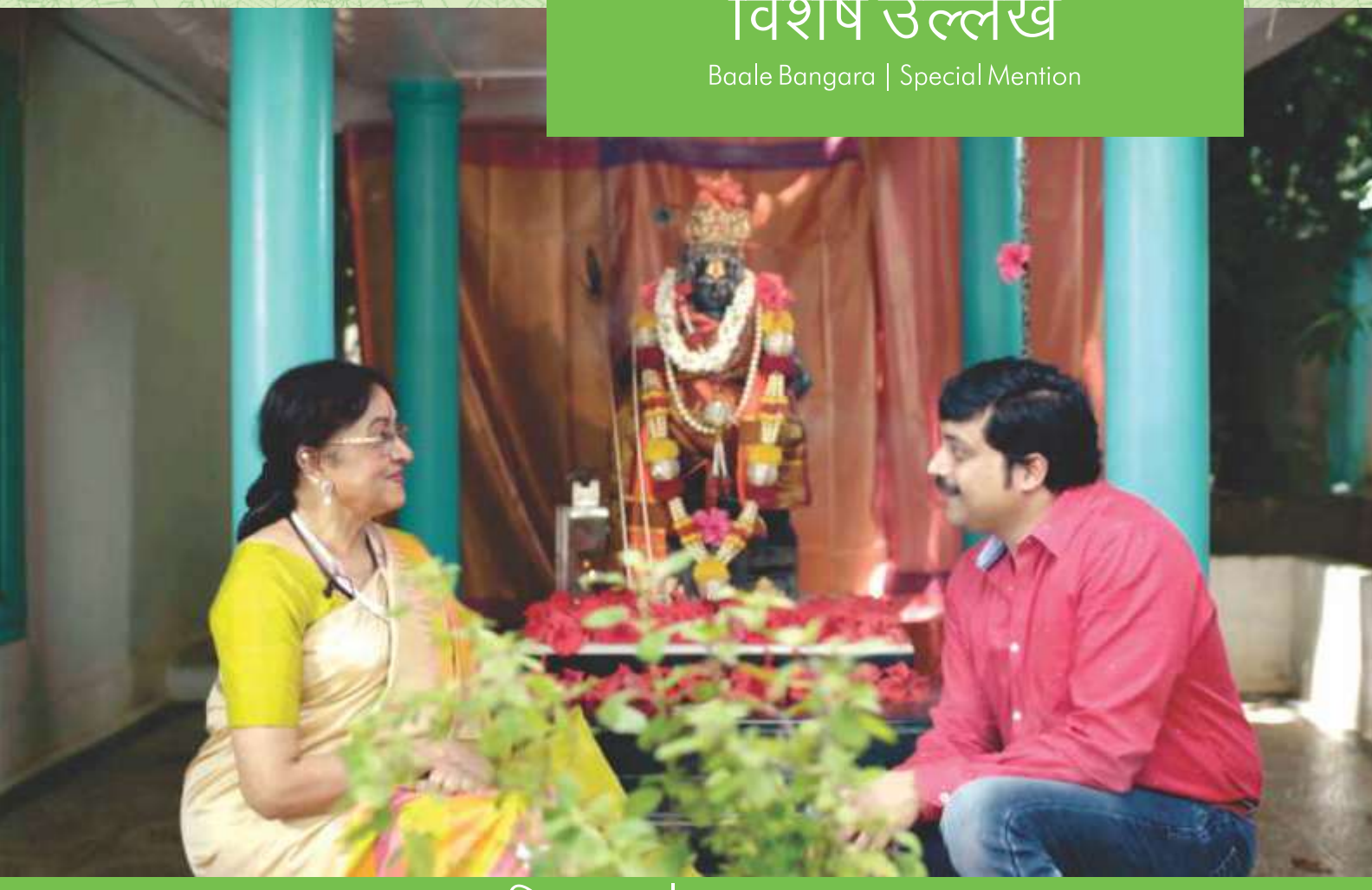

प्रशस्ति पत्र | CERTIFICATE

Kannada | **142 Min** | **Director:** Aniruddha Jatkar | **Producer:** Keerthi S Kumar | **DOP:** Vinod | **Music:** Gurukiran | **Editor:** Umesh | **Narration:** Aniruddha Jatkar | **Re-Recordist (Final mixed track):** Balaji Digi Sound

अनिरुद्ध जतकर पुरस्कार विजेता अभिनेता, गायक, लेखक, निर्देशक, सामाजिक कार्यकर्ता और व्यवसायी हैं, जिन्हें कन्नड़ सिनेमा में उनके काम के लिए जाना जाता है, इसके साथ ही इनके काम में मराठी और तमिल सिनेमा भी शामिल है। इन्होंनें 'राजा सिम्हा' (2018), 'कालाबेरके' और 'मराली मनागे' (2017), 'शबरी माले यात्रा' (2015), 'इज्जोदु' और 'कुनिदु कुनिदु बा रे' (2010) जैसी फिल्मों सहित, 'नाली (2007), 'गुड लक' (2006), 'पांचाली' (2003), 'चिट्टे' (2001), कई फ़िल्मों में मुख्य भूमिका निभाई है।

Aniruddha Jatkar is an award winning actor, singer, writer, director, social activist, and businessman. Known for his work in Kannada cinema, his career also includes Marathi and Tamil films. He has played the lead role in films like, 'Raja Simha' (2018), 'Kalaberake' and 'Marali Manage' (2017), 'Shabari Male Yatre' (2015), 'Ijjodu' and 'Kunidu Kunidu Ba Re' (2010), 'Nali (2007), 'Good Luck' (2006), 'Panchali' (2003), 'Chitte' (2001), amongst others.

प्रशस्ति – पिछले पांच दशकों में प्रसिद्ध कन्नड़ अभिनेता भारती विष्णुवर्धन का ऑन–स्क्रीन और ऑफ–स्क्रीन व्यक्तित्व और विरासत।

Citation - The on-screen and off-screen persona and legacy of the legendary Kannada actor, Bharathi Vishnuvardhana across five decades.

एक दुआ
विशेष उल्लेख
Ek Dua | Special Mention

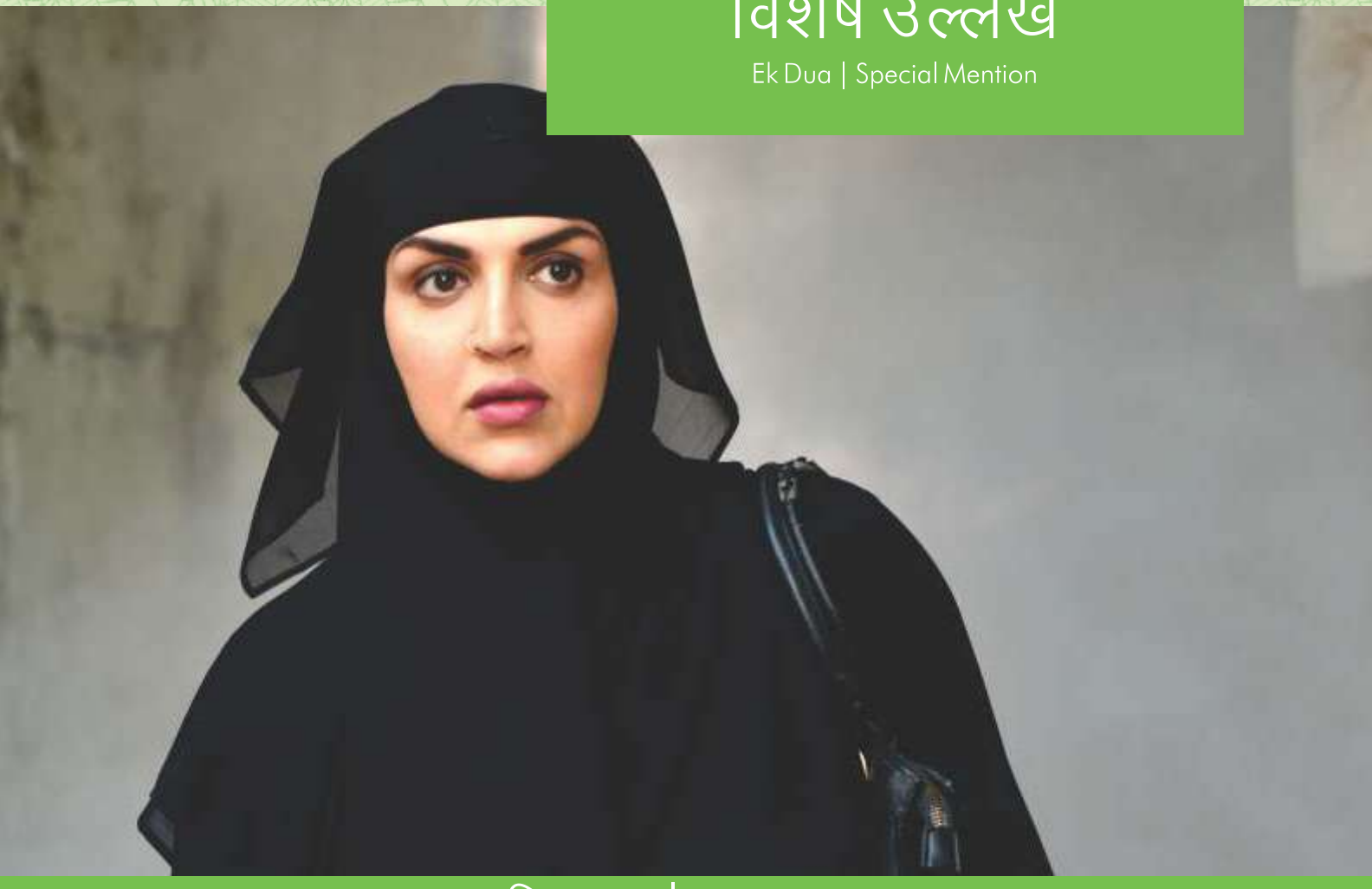

प्रशस्ति पत्र | CERTIFICATE

Hindi | **45 Min** | **Director & Producer:** Ram Kamal Mukherjee | **DOP:** Modhura Palit | **Music:** Shhailendra K Kumar & Dhrubo Paul | **Editor:** Bodhaditya Bandopadhyay | **Narration:** Abhishek Bachchan | **Production Design:** Aritra Das | **Choreographer:** Shonet Anthony Barretto

राम कमल मुखर्जी पुरस्कार विजेता फ़िल्मकार, फ़िल्म पत्रकार और एक लेखक हैं। स्टारडस्ट पत्रिका के पूर्व प्रमुख संपादक रामकमल, अभिनेता संजय दत्त, मिथुन चक्रबर्ती और हेमा मालिनी के आधिकारिक जीवनी लेखक हैं। इन्होंनें फ़िल्म 'केकवॉक' (2018) के साथ एक निर्देशक के रूप में शुरुआत की और 'सीजन्स ग्रीटिंग्स' (2019), 'रिक्शावाला' (2020), और लघु फिल्में 'ब्रोकन फ्रेम', 'शुभो बिजया' और 'एक दुआ' (2021) बनाईं। वह कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कारों के जीत चुके हैं।

Ram Kamal Mukherjee is an award winning filmmaker, film journalist and an author. The former Editor-in-Chief of Stardust film magazine, he is the official biographer of actors Hema Malini, Mithun Chakraborty and Sanjay Dutt. He debuted as a director with the film 'Cakewalk' (2018) and went on to make 'Season's Greetings' (2019), 'Rickshawala' (2020), and short films 'Broken Frame', 'Shubho Bijaya' and 'Ek Dua' (2021). He is the recipient of several national and international awards.

प्रशस्ति – लैंगिक समानता की पुरजोर वकालत करने वाली यह फिल्म, चिकित्सीय गर्भपात से गुजरने के लिए मजबूर एक मां के विषाद को बयान करती है।

Citation - Seeking a fervent appeal for gender equality, it explores the yearning of a mother forced to undergo medical termination of pregnancy.

करुवरई
विशेष उल्लेख
Karuvarai | Special Mention

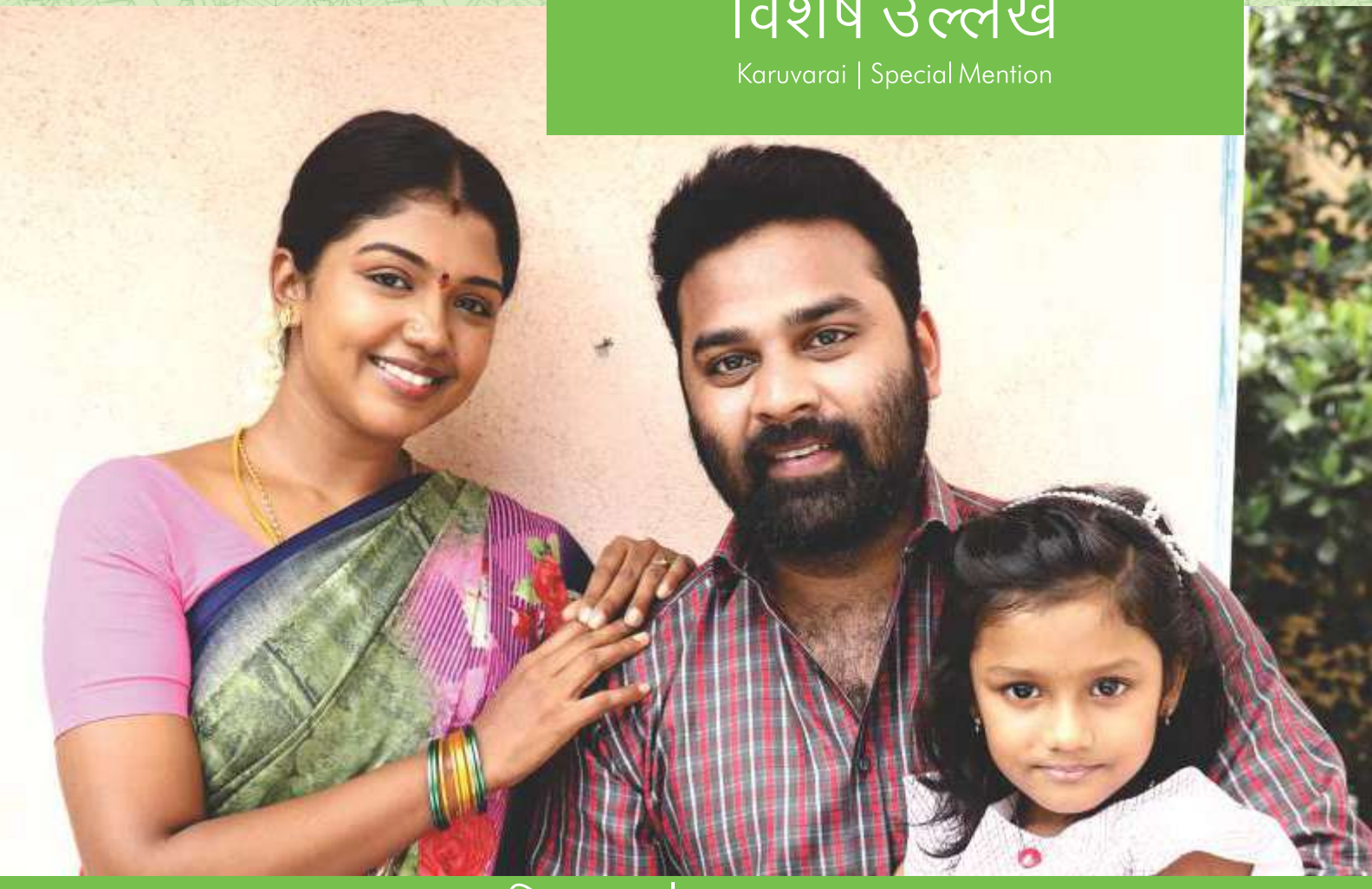

प्रशस्ति पत्र | CERTIFICATE

Tamil | 18 Min | Director & Producer: E V Ganeshbabu | **DOP:** N K Raajarajan | **Music:** Srikanth Deva | **Editor:** Surajkavee | **Re-Recordist (Final mixed track):** Uki.Ayyappan | **Production Design:** R Mano

श्रीकांत देवा भारतीय फ़िल्म उद्योग के पुरस्कार विजेता संगीत निर्देशक, गायक और बहु–यंत्रवादक हैं। वह विशेषतौर पर तमिल फ़िल्मों में अपने काम के लिए जाने जाते हैं। इन्होंने तमिल फिल्म 'डबल्स' (2000) से अपनी शुरुआत की और 100 से अधिक फ़िल्मों के लिए गाने तैयार किए हैं। इन्होंने फ़िल्म 'एम. कुमारन एस/ओ महालक्ष्मी' (2005) के लिए तमिलनाडु राज्य पुरस्कार जीता।

Srikanth Deva is an award winning music director, singer and a multi-instrumentalist in the Indian film industry. He is popularly known for his work in Tamil Films. He made his debut with the Tamil film 'Doubles' (2000) and has composed songs for more than 100 films. He won the Tamil Nadu State Award for the movie 'M.Kumaran S/O Mahalakshmi' (2005).

प्रशस्ति – प्रभावी पार्श्व संगीत स्कोर के जरिये, भावनाओ की उथल पुथल से भरी दुनिया बनाकर, अवांछित गर्भावस्था के संवेदनशील मुद्दे को प्रदर्शित करता है ।

Citation - By creating an emotional universe of turmoil through effective background music score, it showcases the sensitive issue of unwanted pregnancy.

दि हीलिंग टच
विशेष उल्लेख
The Healing Touch | Special Mention

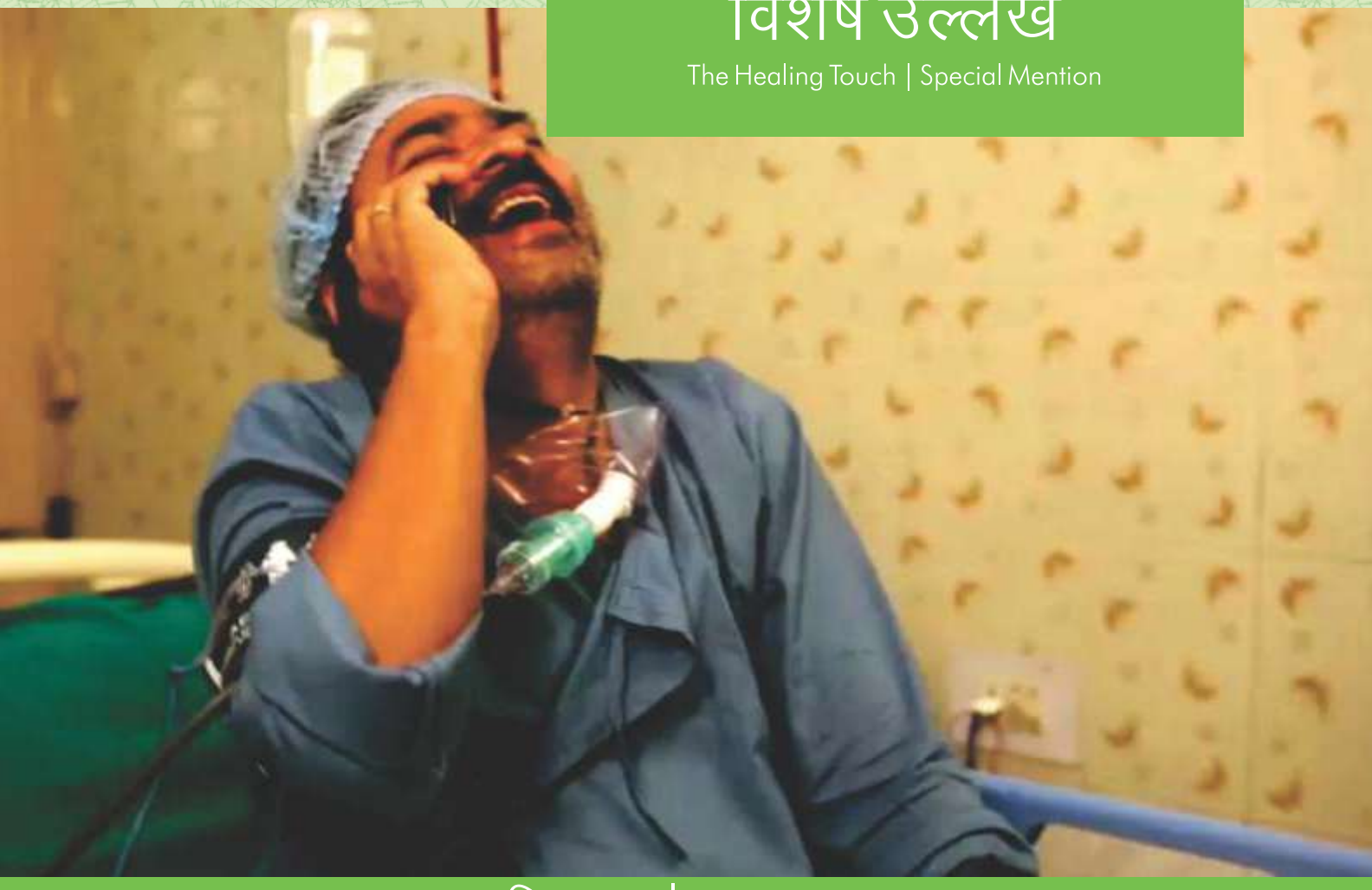

प्रशस्ति पत्र | CERTIFICATE

Odia | **11 Min** | **Director:** Sweta Kumar Dash | **Producer:** Nila Mahapatra | **DOP & Editor:** Kunal Ambikesh Hoto

डॉ. श्वेता कुमार दास एक फ़िल्म निर्माता हैं। वह अपने बैनर 'सोशल इमेज प्रोडक्शंस' के तहत महिला सशक्तिकरण, किसान आत्महत्या, सामाजिक–सांस्कृतिक मुद्दे, जाति व्यवस्था, गिरमिटिया मजदूर, पर्यावरण मुद्दे और आपदा प्रबंधन जैसे सामाजिक मुद्दों पर फ़िल्में बनाना पसंद करते हैं। इन्होंने छह फ़िल्मों का निर्माण किया है और ओडिशा में महंदी नदी पर आधारित इनकी लघु फिल्म 'सानी' के अलावा, लघु फ़िल्म 'मास्क' ने कई अंतरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय पुरस्कार जीते।

Dr. Sweta Kumar Dash is a film producer. He prefers to make films on social issues like women empowerment, farmer suicide, socio-cultural issues, caste system, indentured labour, environmental issues and disaster management under his own banner 'Social Image Productions'. He has produced six films and besides his short film 'Sani' based on the river Mahandi in Odisha, the short film 'Mask' won several international and national awards.

प्रशस्ति – यह मानवीय संबंधों की शक्ति पर प्रकाश डालता है जो रोगियों को कठिन कोविड महामारी के दौरान निराशा से उबरने की ताकत देता है।

Citation - It highlights the power of human connections empowering patients to overcome despair during the dark Covid pandemic phase.

कथासार | Synopsis

रेखा (Rekha)

रेखा, 21 साल की स्वाभिमानी लड़की है जो सड़क के किनारे रहती है। उसकी त्वचा पर फंगल इन्फेक्शन होने के कारण, डॉक्टर उसे अच्छे से नहाने और संक्रमित जगह पर दवाई लगाने की सलाह देता है। लेकिन उसका पति उसे ऐसा करने से रोकता है और उसके साथ बुरा बर्ताव करता है। जब उसके समुदाय की दूसरी महिलाएं उसे बताती है कि उसे क्यों नहीं नहाना चाहिए, तो वह हैरान रह जाती है और दुविधा में पड़ जाती है। फिर वह अपने पति को छोड़ने का फैसला करती है, ताकि वह नहा सके, क्योंकि वह उस संक्रमण से बुरी तरह से पीड़ित है। रेखा की साफ सुथरा रहने की जद्दोजहद को बखूबी प्रस्तुत करती है।

Rekha, a 21-year old girl is a street-dweller with self respect. Suffering from fungal infection on her skin, the doctor suggests that she bathes and applies medicine on the infected area. But her husband stops her from taking a bath and ill-treats her. When the other ladies in her community tell her the reason why they should not take a bath, she is shocked and in a dilemma. She decides to leave her husband so that she can take a bath as she is suffering badly from this infection. The film portrays Rekha's hardships to stay clean.

स्माइल प्लीज (Smile Please)

अली मोएबिस सिंड्रोम नाम की एक स्थिति से पीड़ित है, एक ऐसी स्थिति जो चेहरे को खराब कर देती है, लेकिन उसने इस लाइलाज और उपेक्षित स्थित के साथ जीना सीख लिया है। उसका परिवार छोटे शहर से बड़े शहर में जाने की तैयारी कर रहा है, अपने पुराने घर में आखरी दिन, वह अज्ञात शहर को अपना पाएगा या नहीं इस चिंता में है, साथ ही उसे अपने खास दोस्त राजन को छोड़ कर जाने का दुख भी है। दोनों दोस्त योजना बनाते हैं कि वह किस तरह एक दूसरे के संपर्क में रहेंगे, और जिंदगी में पहली बार, अली को अपने पिता से कुछ पूछना होगा ।

Ali has learnt to live with an undiagnosed and ignored condition called Moebius Syndrome, a condition that impairs his facial movement. As his family prepares to shift from their home in a small town to a big city, on his last day at home, he worries about acceptance in the new unknown city and the sorrow to leave behind his best friend Rajan. The two friends make plans of how they will stay in touch and for the first time in his life, Ali must ask something from his father.

पाताल – टी (Pataal-Tee)

13 साल के फागनु की दुनिया उसके दादा हैं, वह उनके नहीं होने की कल्पना भी नहीं कर सकता है। अपने दादाजी के बीमार पड़ने और मृत्यु शय्या पर जाने के बाद, फगनू पागलों की तरह दादाजी की कहानियों के रहस्यमय पानी पाताल–टी की खोज करने लगता है, जो सभी की प्यास बुझाने में सक्षम है। अपनी दादी की चेतावनियों के बावजूद, फगनू तथाकथित 'पाताल–टी' की तलाश में एक कठिन खोज पर निकल पड़ता है, जो कहानियों के अनुसार पाताल से निकलती है और हिमालयी आत्माएं उसकी रक्षा करती हैं।

Thirteen-year old Fagnu cannot imagine a world without his grandfather and is not ready to let him go. After his grandfather falls ill and is on his death-bed, Fagnu frantically searches for Pataal-Tee, a mystical water from his grandfather's stories, fabled to quench all thirsts. In spite of his grandmother's warnings, Fagnu embarks on an arduous quest in search of the so-called 'Pataal-Tee' which as per stories bubbles up from Pataal (the nether-world) and is closely guarded by Himalayan spirits.

एक था गांव (Ek Tha Gaon)

हिमालय की तलहटी में सेमला,जिसे भूतों का गांव भी कहते हैं,80 साल की लीला और 19 साल की गोलू, यहां पर बचे सात लोगों में से दो हैं। सालों से जलवायु परिवर्तन और घटती संभावनाओं की वजह से, जो 50 परिवार कभी वहां रहते थे, वे भी शहर में पलायन कर गए हैं। अपने गाँव की तरह, लीला बूढ़ी है, लेकिन बूढ़ी होने के बावजूद उसने गाँव छोड़ने से इनकार कर दिया। गोलू भागने को बेताब है लेकिन उसके पास भागने का कोई साधन नहीं है। दो महिलाएं इस फैसले को लेकर उहापोह में हैं कि एक एकांत गांव में रहना जारी रखें या उस शहरी जीवन का रुख करें जो उनसे पूरी तरह अलग हैं ।

In the Himalayan foothills, Leela, an 80-year-old woman and Golu, a 19-year-old girl are two of the seven remaining inhabitants of Semla, a ghost village. With years of climate change and dwindling prospects, the 50 families that once lived there abandoned it to migrate to the city. Like her village, Leela is old, resilient and forgotten but refuses to leave despite struggles with an aging body. Golu is desperate to escape but doesn't have the means to. The two women struggle with a choice, to leave for an alienating city life or continue living in a lonely village.

मीन राग (Meen Raag)

राजस्थान के मीना समुदाय की जीवित संगीत परंपराओं के अनूठे दस्तावेजीकरण के साथ एक संगीतमय वृत्तचित्र। फ़िल्म, रसिया, सुड्डा, ढांचा, पद जैसे संगीत रूपों और कलाकारों की कहानियों के साथ गुंथे हुए महिला लोकगीतों की खोज करती है।

A musical documentary with one of a kind documentation of the living musical traditions of the Meena community of Rajasthan. The film explores musical forms like Rasiya, Sudda, Dhancha, Pad and songs of the womenfolk, intertwined by the stories of the artists.

इफ मेमोरी सर्व्स मी राइट (If Memory Serves Me Right)

राशिद इरानी कभी एक पारंपरिक इरानी रेस्त्रां के मालिक हुआ करते थे, जो शहर के सबसे व्यस्ततम चौराहे की शान था, और अब उतनी ही तेजी से खत्म हो रहा है । अपनी मर्जी से अविवाहित रहने वाले राशिद की जिंदगी फ़िल्मों के साथ गुजरी है, पिछले कई दशकों से उनका दिल 24 फ्रेम प्रति सेकेंड की रफ्तार से धड़कता है, और आज भी वह, सिनेमा और कविताओं पर किताबों के साथ, मर्लिन मुनरो, जेम्स डीन, वर्नर हर्जोग, अब्बास किरोस्तामी और ना जाने सितारों के साथ कई आसमानों को पार करता है और एक अलग दुनिया में जाता है। यह फ़िल्म उनके, उनके कैफे, उनके पड़ोस और विलुप्त होती दुनिया, जिसमें कोविड महामारी ने इजाफा कर दिया, उसके बारे में है।

Rashid Irani once owned a traditional Irani restaurant, the kind that were invariably at the city's busiest crossroads and are fast disappearing now. A dedicated bachelor who lived life vicariously through movies, over the decades, Rashid's heart firmly beats at twenty-four frames per second as he still traverses many worlds, re-living Marilyn Monroe, James Dean, Werner Herzog, Abbas Kiarostami and more; along with books on cinema and poetry. This is a film about him, his cafe, his neighbourhood and a world of erasure, accelerating in the time of the Covid pandemic.

कथासार | Synopsis

सकुलेंट (Succulent)

एम अपने छात्रावास के ठंडे कमरे में उसी तरह हर पौधे का ख्याल रखती है जिस तरह वह एक प्लेसेमेंट एजेंसी के कर्मचारी के तौर पर अपने ग्राहकों का ख्याल रखती है. जैसा कि वह हमने निजी जुड़ावा और उसके ग्राहकों की भावनात्मक जरूरत के बीच जूझती रहती है, फिल्म इसी बात की पड़ताल करती है कि क्या इंसानी प्रेम का भी वस्तुकरण किया जा सकता है ।

M nurtures each of her plants in her cold hostel room just as she nurtures her clients as an employee of a human replacement agency. As she juggles between her personal attachments and the emotional needs of her clients, the film explores the idea whether humun affection can at all be commodified.

हाथी बंधु (फ्रेंड्स ऑफ एलिफेंट्स) (Hatibondhu (Friends Of Elephants))

जंगलों के कम होने की वजह से हाथियों के रहने की जगह भी घटती जा रही है, जिसकी वजह से वह अपनी भूख मिटाने के लिए इंसानों के इलाके में घुसने और उन पर हमला करने को मजबूर हैं। इंसानों और इस विशालकाय जीव के बीच टकराव की वजह से दोनों की जिंदगी को और साथ में फसलों को भी नुकसान पहुंचता है। इस संघर्ष को कम करने के लिए हाथी बंधु नाम का दल कई तरह के समाधान लेकर सामने आता है और हाथियों को पर्याप्त खाना और उचित घर मुहैया करता है। यह वृत्तचित्र उनकी शानदार पहल, और इंसान–हाथियों के संघर्ष को रोकने के लिए अपनी जिंदगी को जोखिम में डालने और धरती के इस प्यारे से जीव को उनके प्राकृतिक माहौल में पहुंचाने की कहानी प्रस्तुत करता है ।

As their natural habitats shrink, elephants are compelled to venture out and attack human surroundings to satisfy their hunger pangs. This inevitable conflict has led to massive destruction of lives - both of humans and the pachyderms, as well as crops. In order to avoid this, the team of 'Hati Bondhu' have come up with several laudable measures to provide elephants with adequate food and suitable habitats. The documentary showcases their credible initiatives, often risking their life to prevent these human-elephant conflicts and give back these majestic creatures their natural environment.

बाले बांगारा (Baale Bangara)

यह फ़िल्म पद्म श्री पुरस्कार विजेता और एक दिग्गज अभिनेत्री डॉ. भारती विष्णुवर्धन के जीवन को दिखलाती है, जिन्होंने कन्नड़, तमिल, तेलुगु, मलयालम, तुलु और हिंदी सहित 150 से अधिक फ़िल्मों में अभिनय किया है। वृत्तचित्र इस महान कलाकार से युवा पीढ़ी को परिचित कराने का एक प्रयास है, जिसके लिए उनके विस्तृत व्यक्तिगत साक्षात्कारों के साथ–साथ उनके सह–कलाकारों, निर्देशकों, निर्माताओं, दोस्तों, परिवार के सदस्यों और अन्य लोगों के साक्षात्कारों के माध्यम से उनके फ़िल्मी और वास्तविक जीवन यात्रा को दिखाया गया है। इसमें कुछ दुर्लभ तस्वीरों और वीडियो के साथ–साथ उनकी चयनित फिल्मों की मुख्य क्लिपिंग हैं जिसके जरिये दर्शक एक अभिनेत्री के रूप में उनकी प्रतिभा को प्रदर्शित करती हैं।

A film on Padma Shri Awardee and a living legend, Dr. Bharathi Vishnuvardhan, who has acted in more than 150 films across Kannada, Tamil, Telugu, Malayalam, Tulu and Hindi. The documentary is an effort to introduce this living legend to the younger generation as it captures her reel as well as real life journey through her detailed personal interviews, along with interviews of her co-stars, directors, producers, friends, family members and other associates. It has key clippings from her selected films that showcase her prowess as an actress, along with some rare photographs and videos.

करुवरई (दि वोंब) (Karuvarai (The Womb))

सच्ची घटनाओं से प्रेरित, लघु फ़िल्म, एक मध्यमवर्गीय परिवार की एक गर्भवती महिला की दुर्दशा बयान करती है, जो अपने परिवार की आर्थिक हालात के चलते दूसरा बच्चा पैदा करने में असमर्थ है। कहानी इस धारणा पर आधारित है कि गर्भपात हत्या के समान होने के बावजूद, उनकी वर्तमान स्थिति उनके पास यह कदम उठाने के अलावा कोई विकल्प नहीं छोड़ती है। हालाँकि, इस विचार पर भी जोर दिया जाता है कि इस दर्द से बचा जा सकता है।

A story inspired by true events, the short film deals with the plight of a pregnant woman in a middle class household, who is unable to have a second child due to a financial setback in her family. The story operates on the notion that despite abortion being tantamount to murder, their present situation leaves them with no choice than to take this step. However, the idea that this pain can be avoided is also emphasized upon.

दि हीलिंग टच (The Healing Touch)

घातक कोविड–19 वायरस से संक्रमित एक पति अस्पताल में अपनी जिंदगी के लिए मौत से जूझ रहा है। ड्यूटी पर मौजूद डॉक्टर आखिरकार हार मान लेता है। मौत की कगार पर होने पर मरीज आखिरी बार अपनी पत्नी से बात करने के लिए मोबाइल फोन मांगता है। डॉक्टर अपना मोबाइल फोन देता है और चुपचाप उनकी बातचीत सुनता है जहां पत्नी लगातार सकारात्मक भावनाओं के माध्यम से अंततः अपने पति को प्रेरित करती है और उसे मौत के मुंह से वापस खींच लाती है।

A husband infected with the deadly Covid-19 virus is battling for his life in a hospital. The doctor on duty finally gives up. Being on the verge of death, the patient asks for a mobile phone to talk to his wife for the last time. The doctor lends his mobile phone and silently observes their conversation where the wife through constant positive vibes, eventually inspires her husband and brings him back to life from the jaws of death.

एक दुआ (Ek Duaa)

मुंबई में फ़िल्माई गई कहानी आबिदा की जिंदगी को दिखाती है, जो दो खूबसूरत बच्चों,दुआ और फैज की मां है। उसका पति सुलेमान, एक टैक्सी ड्राइवर है, जो किसी तरह कर्जदाताओं से पैसा लेकर अपना घर चलाता है । ईद से एक दिन पहले, परिवार जब उत्सव की तैयारी में जुटा रहता है, दोनों बच्चों के बीच कुछ भेदभाव होने लगता है। आबिदा की सास रिहाना और सुलेमान बेटे के प्रति तो अपनापन दिखाते हैं, जबकि छोटी दुआ प्यार के लिए तरसती रहती है। जैसे–जैसे फ़िल्म अंत की ओर बढ़ती है, इस भेदभाव के पीछे की वजह सामने आती है ।

Set in Mumbai, the film shows the life of Abida, a mother of two beautiful kids, Duaa and Faiz. Her husband Sulemaan, a taxi driver somehow manages to run the house by borrowing money from lenders. A day prior to Eid, as the family gears up for the festivities, there seems to be some discrimination between the two kids. Abida's mother-in-law Rihana and Sulemaan show affinity towards the boy child, while little Duaa keeps craving for love. As the film unfolds, it reveals the reason behind this discrimination with an edgy climax.

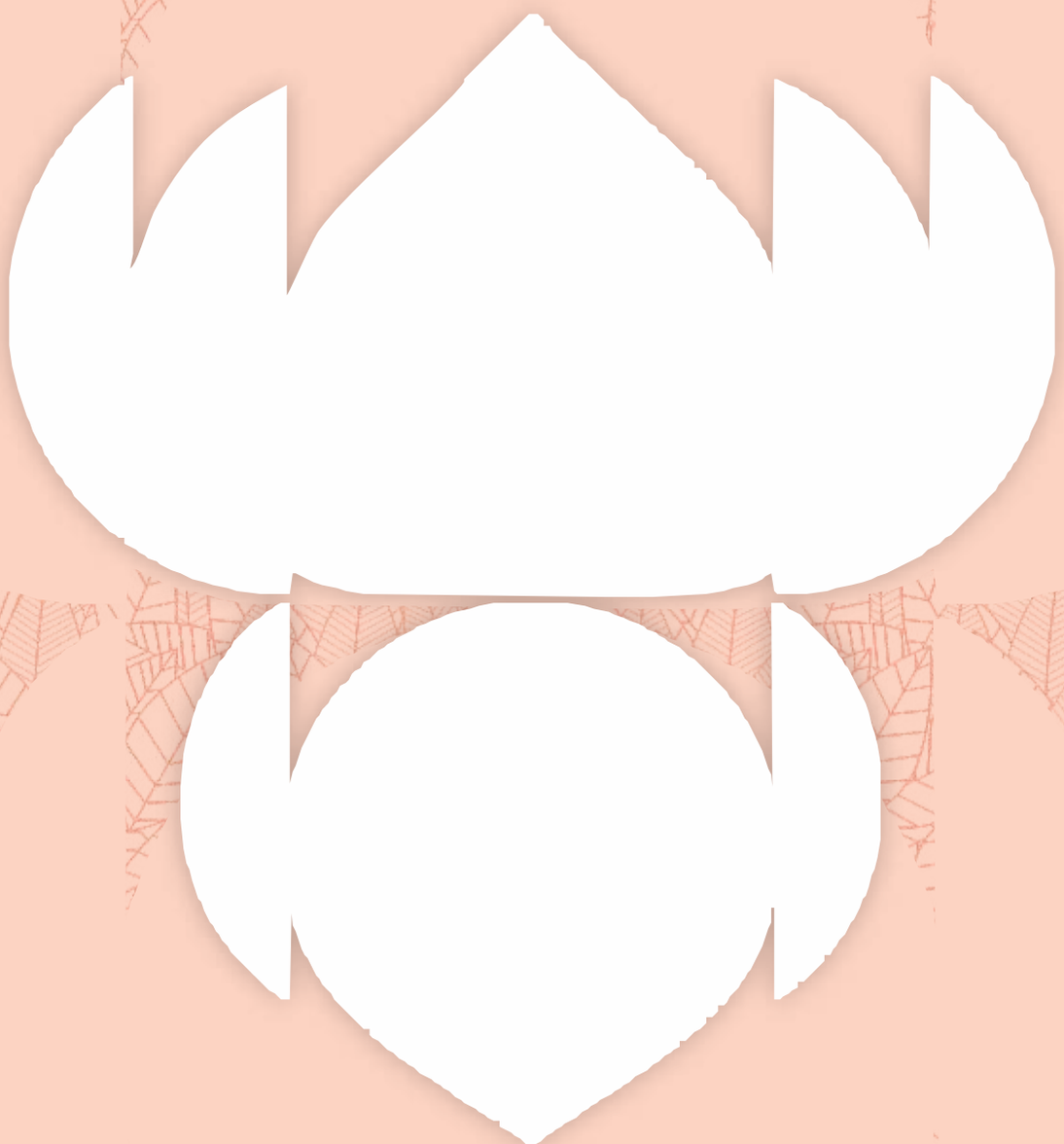

राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार 2021

NATIONAL FILM AWARDS 2021

पुस्तकों, लेखों एवं समीक्षा के माध्यम से सिनेमा का एक कला के रूप में मूल्यांकन करने के लिए यह पुरस्कार प्रदान किया जाता है।

The awards aim at encouraging study and appreciation of cinema as an art form and the dissemination of information and critical appreciation of this art form through the publication of books, articles, reviews, etc.

म्यूज़िक बाय लक्ष्मीकांत प्यारेलाल:
दि इन्क्रेडिबल मेलोडियस जर्नी

सिनेमा पर सर्वश्रेष्ठ पुस्तक

Music By Laxmikant Pyarelal: The Incredibly Melodious Journey
Best Book On Cinema

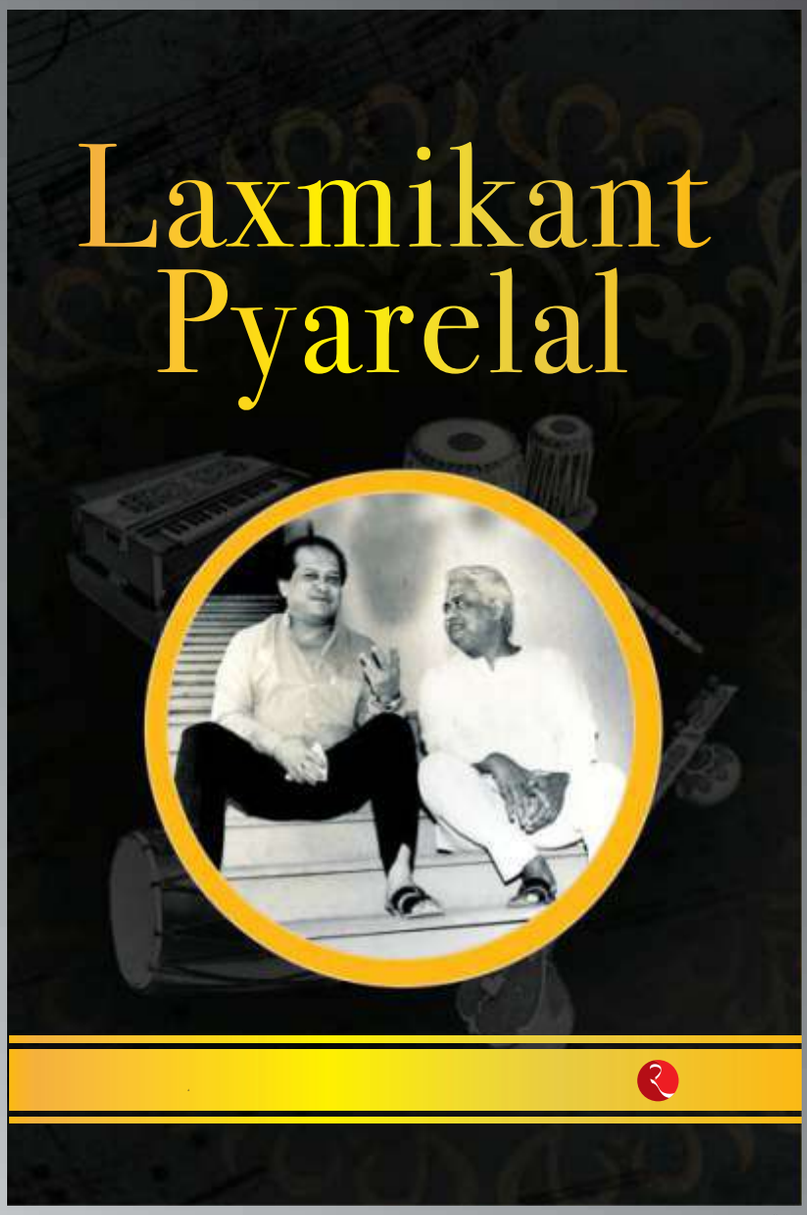

स्वर्ण कमल | SWARNA KAMAL ₹ 75,000/-

पुस्तक परिचय – भारतीय फ़िल्म उद्योग के महान संगीतकार – लक्ष्मीकांत–प्यारेलाल की जोड़ी ने फ़िल्म जगत में अपनी मिसाल कायम की है। यह पुस्तक वास्तव में लक्ष्मीकांत–प्यारेलाल की 'संगीत भरी दुनिया' का सफर है। 750 से अधिक फ़िल्मों के लिए संगीत तैयार करने वाली इस जोड़ी ने 1960 से 1990 के दशक तक संगीत की दुनिया पर राज किया। यह जोड़ी अपनी अतुलनीय रेंज और संगीत की गुणवत्ता, अपनी बेजोड़ लोकप्रियता और काम के पैमाने और उल्लेखनीय गीतकारों, गायकों, फ़िल्म निर्माताओं और अभिनेताओं के साथ अपने घनिष्ठ संबंधों के लिए जानी जाती है, इनका संगीत कई लोगों को फ़िल्मी जगत मे सफलता के सोपान तय करने में मददगार रहा, इनका फ़िल्मी सफर हर लिहाज से लाजवाब है।

About The Book - Legendary music composer - duo Laxmikant-Pyarelal are a saga without parallel in the Indian film industry. Admired by international and as well as Indian classical maestros, this book truly encapsulates the 'Musical Universe' of Laxmikant-Pyarelal. They composed music for over 750 films and ruled the charts from the 1960s to the late 1990s. A duo known for their incomparable range and quality of music, their unmatched popularity and scale of work, their intimate associations with notable lyricists, singers, filmmakers and actors while being instrumental in giving career breakthroughs to many, makes their journey incredible in every aspect.

लेखक परिचय ⁞ About the Author

राजीव विजयकर (Rajiv Vijayakar)

राजीव विजयकर एंटरटेन्मेंट रिपोर्टर हैं और इन्होंनें कई पुस्तकों का लेखन किया है जिसमें, धर्मेन्द्र – नोट जस्ट ए ही–मेन (2008), दि हिस्ट्री ऑफ इंडिया फिल्म म्यूज़िक–ए शोकेस ऑफ दि वेरी बेस्ट इन हिंदी सिनेमा (2010) जो अब यूसीएलए में हर्ब एलपर्ट स्कूल ऑफ म्यूज़िक के पाठ्यक्रम का हिस्सा है, और मैं शायर तो नहीं (2019) शामिल है। यह लंबे वक्त तक प्रतिष्ठित भारतीय और अमेरिकन प्रकाशन जैसे दि स्क्रीन, डेक्कन हेराल्ड, मिड – डे, स्टारडस्ट, पारिख वर्ल्डवाइड मीडिया और इंडिया से जुड़े रहे हैं। इन्हें हिंदी सिनेमा और संगीत के क्षेत्र में अपने योगदान के लिए विश्व हिंदु अकादमी द्वारा हिंदी सेवा सम्मान (2013) से सम्मानित किया गया।

Rajiv Vijayakar is an Entertainment Reporter and has authored several books like, 'Dharmendra: Not Just a He-Man' (2018), 'The History of Indian Film Music: A Showcase of the Very Best in Hindi Cinema' (2010) - which is now part of the teaching course at Herb Alpert School of Music, UCLA and 'Main Shayar Toh Nahin' (2019). He has had long associations with prestigious Indian and American publications like the Screen, Deccan Herald, Mid-Day, Stardust, Parikh Worldwide Media, and India-West. He was awarded the Hindi Seva Samman (2013) by the Vishwa Hindu Academy for his contribution to Hindi cinema and music.

प्रकाशक परिचय ⁞ About the Publisher

रूपा पब्लिकेशंस इंडिया प्रा. लि (Rupa Publications India Pvt Ltd)

रुपा पब्लिकेशंस, की स्थापना 80 साल पहले 1936 में हुई। भारत में यह नाम परिचय का मोहताज नही है। जिसने देश की कुछ सबसे होनहार लेखन प्रतिभाओं को प्रकाशित किया है। इतने सालों में, इसने कई प्रशंसित और पुरस्कार विजेता उपन्यासकारों और गैर–काल्पनिक लेखकों की रचनाएँ प्रकाशित की हैं, जिनमें प्रसिद्ध राजनेता, अर्थशास्त्री, खिलाड़ी, पत्रकार, अभिनेता, उद्यमी और उद्योगपति शामिल हैं।

Rupa Publications, an Indian publising company founded more than 87 years ago in 1936 is a household name in India, having published some of the most promising writing talent in the country. Over the years, it has published works of numerous acclaimed and award-winning novelists and non-fiction writers, including well-known politicians, economists, sportspeople, journalists, actors, entrepreneurs and industrialists.

प्रशस्ति – यह पुस्तक दिग्गज संगीतकार जोड़ी लक्ष्मीकांत–प्यारेलाल के कालजयी संगीत को लेकर संवेदनशील समझ के साथ व्यापक अध्ययन भी है.

Citation - The book is a comprehensive study on the legendary music composer duo, Laxmikant-Pyarelal with a sensitive understanding of their timeless music.

डॉ. एम. पुरुषोत्तमा चार्युलू

सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म समीक्षक

Dr. M. Purushothama Charyulu
Best Film Critic

स्वर्ण कमल | SWARNA KAMAL ₹ 75,000/-

डॉ. एम. पुरुषोत्तमा चार्युलू एक चर्चित रंगमंच कलाकार, कवि, गायक और तेलुगु भाषा के एक वरिष्ठ कला समीक्षक हैं। भक्ति संगीत और दक्षिण भारतीय सिनेमा के बीच संबंध पर इनके गहन लेखन एक लेखक और शोध विद्वान के तौर पर इनके दशकों के अनुभव के दर्शाता है। यह श्री अन्नमाचार्य संकीर्तन प्रचार समिति के संस्थापक अध्यक्ष, श्री घंटाशाला सांस्कृतिक संघ के संस्थापक अध्यक्ष थे और इन्होंनें 1989 से श्री नादब्रह्म संगीत महाविद्यालय के प्राचार्य के रूप में कार्य किया। कला की दुनिया में इनके योगदान के लिए इन्हें कई प्रशंसाएं और पुरस्कार मिले हैं।

Dr. M. Purushothama Charyulu is a well-know theatre artist, poet, singer, author and a veteran critic of the arts in Telugu language. His in-depth writings on the connection between devotional music and South Indian cinema is a reflection of his decades of experience as an author and a research scholar. He was the Founder President of Sree Annamacharya Sankeerthana Prachara Samithi, the Founder President of Sree Ghantasala Cultural Association and served as the Principal of Sree Nadabrahma Music College from 1989 onwards. He has recieved many accolades and awards for his contribution to the world of arts.

प्रशस्ति – दक्षिण भारतीय सिनेमा और भक्ति संगीत के बीच संबंध पर लेखन के लिए सर्वश्रेष्ठ समीक्षक का सम्मान दिया जाता है।

Citation - The Best Critic Award is for his in-depth writings on the connection between devotional music and South Indian Cinema.

सुब्रमण्य बाडूर
विशेष उल्लेख
Subramanya Badoor | Special Mention - Critic

प्रशस्ति पत्र | CERTIFICATE

सुब्रमण्य बाडूर एक सुविख्यात कन्नड़ फ़िल्म पत्रकार हैं. इन्होंनें फ़िल्म पत्रिका और दैनिक जैसे प्रजावाणी और संयुक्त कर्नाटक के साथ काम किया है। इन्होंनें जनवाहिनी के लिए पत्रिका और फ़िल्म खंड के संपादक के तौर पर, रूपातारा के लिए स्तंभकार के तौर पर और सिनेजोश के लिए कार्यकारी संपादक के तौर पर सेवाएं दी हैं। फ्रीलांस पत्रकार के तौर पर यह आंदोलन दिनापत्रिके और कई प्रकाशनों के साथ नियमित रूप से जुड़े हुए हैं। यह कर्नाटक चलनचित्रा पत्रकार परिषद के अध्यक्ष हैं, इन्होंने कर्नाटक फ़िल्म पत्रकार फोरम के कार्यकारी समिति के सदस्य के रूप में कार्य किया है, चित्रसमूह के ट्रस्टी हैं और बैंगलोर अंतर्राष्ट्रीय फ़िल्म महोत्सव से जुड़े थे।

Subramanya Badoor is a well known Kannada film journalist. He has worked with film magazines and dailies like Prajavani and Samyukhta Karnataka. He was the Magazine & Film Section Editor for Janavahini, a columnist for Roopatara, and the Excecutive Editor for Cinejosh. As a freelance journalist, he regularly contributes to Andolana Dinapatrike and other publications. He is the President of the Karnataka Chalanachitra Patrakartara Parishath, has served as Executive Committee Member of the Karnataka Film Journalists Forum, is a Trustee of Chitrasamooha and was associated with the Bangalore International Film Festival.

प्रशस्ति – आलोचक का विशेष उल्लेख कन्नड़ भाषा में एक स्तंभकार के तौर पर सिनेमा और संबद्ध कलाओं पर उनके विपुल नज़रिये के लिए है।

Citation - The Critic Special Mention is for his numerous perspectives on cinema and allide arts as a columnist in Kannada language.

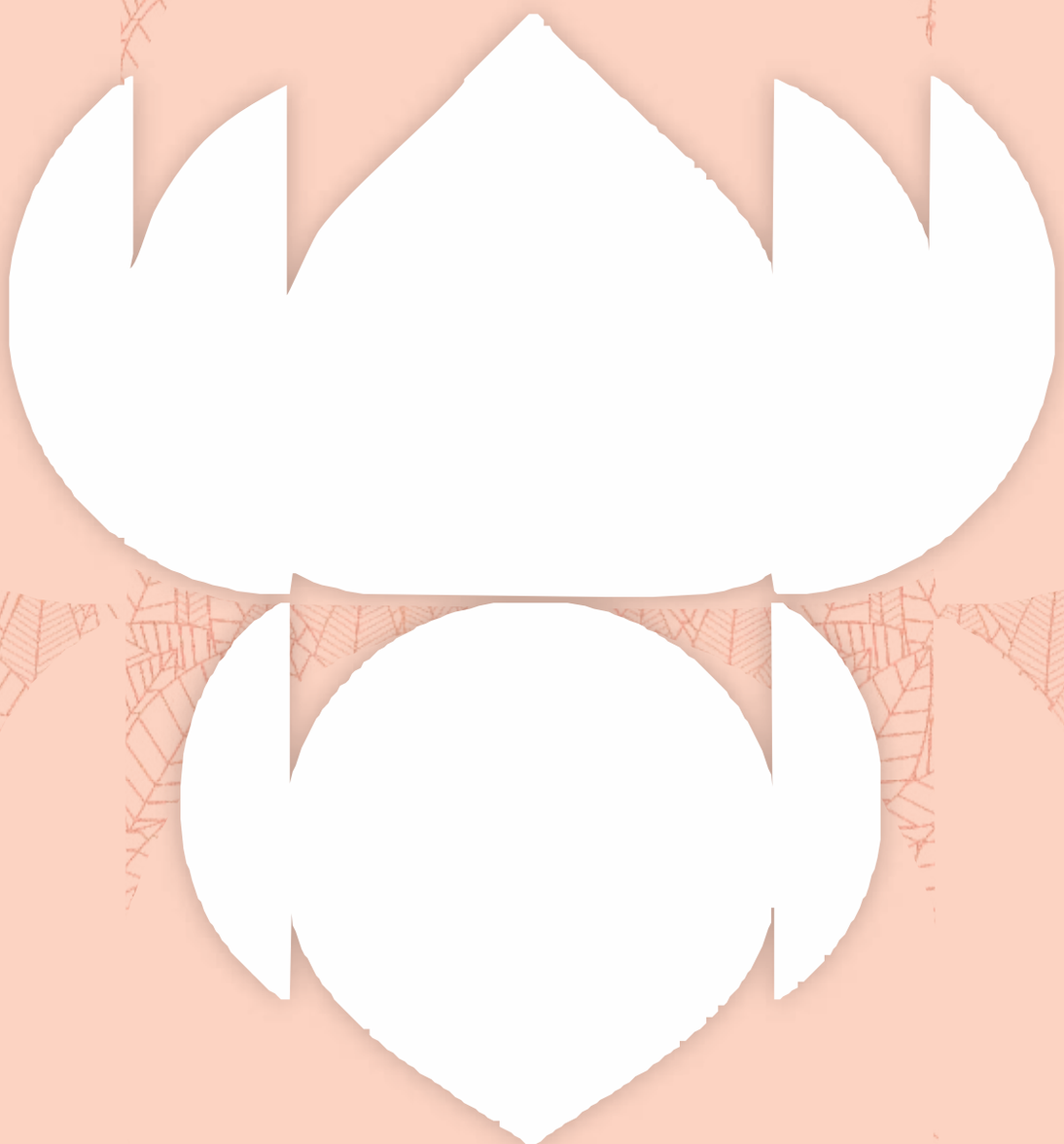

National Film Awards Cell

Indrani Bose, Deputy Director

Tanu Rai, Deputy Director

Rakesh Kumar, Deputy Director (Accounts)

Anil Ambrik

Kaushalya Mehra

Padarabinda Sahoo

Arvind Kumar

PK Chawla

Hemant G. Khardikar

Govinda Sahu

Gautam Singh

Kamlesh Kumar Rawat

Chandi Prasad

Deepu Choudhary

Anup Kumar

Vikram Singh

Projection and Technical Supervision, Siri Fort Auditorium and Mahadev Road Auditorium

S. K. Jain, Asstt. Engineer (Civil)

Mahipal Saini, Asstt. Engineer (Elect.)

Ashok Hitaishi

ACKNOWLEDGEMENTS

फ़िल्म निर्माता / निर्माण समूह , विगत डीएसपीए विजेताओं की फ़िल्म से संबंधित सामग्री, फ़ोटोग्राफ उपलब्ध करवाने के लिए : भारतीय राष्ट्रीय फ़िल्म अभिलेखागार , पुणे (भारत सरकार)

फ़िल्म प्रभाग राष्ट्रीय पुरस्कार और डीएसपीए पुरस्कार विजेताओं की दृश्य – श्रव्य प्रस्तुति के लिए

Film Producers/Production Houses for providing the film-related material
Photographs of Past DSPA Winners:
NFAI-NFDC
FD-NFDC for DSPA and Doordarshan News for National Award Winners Audio Visual presentation

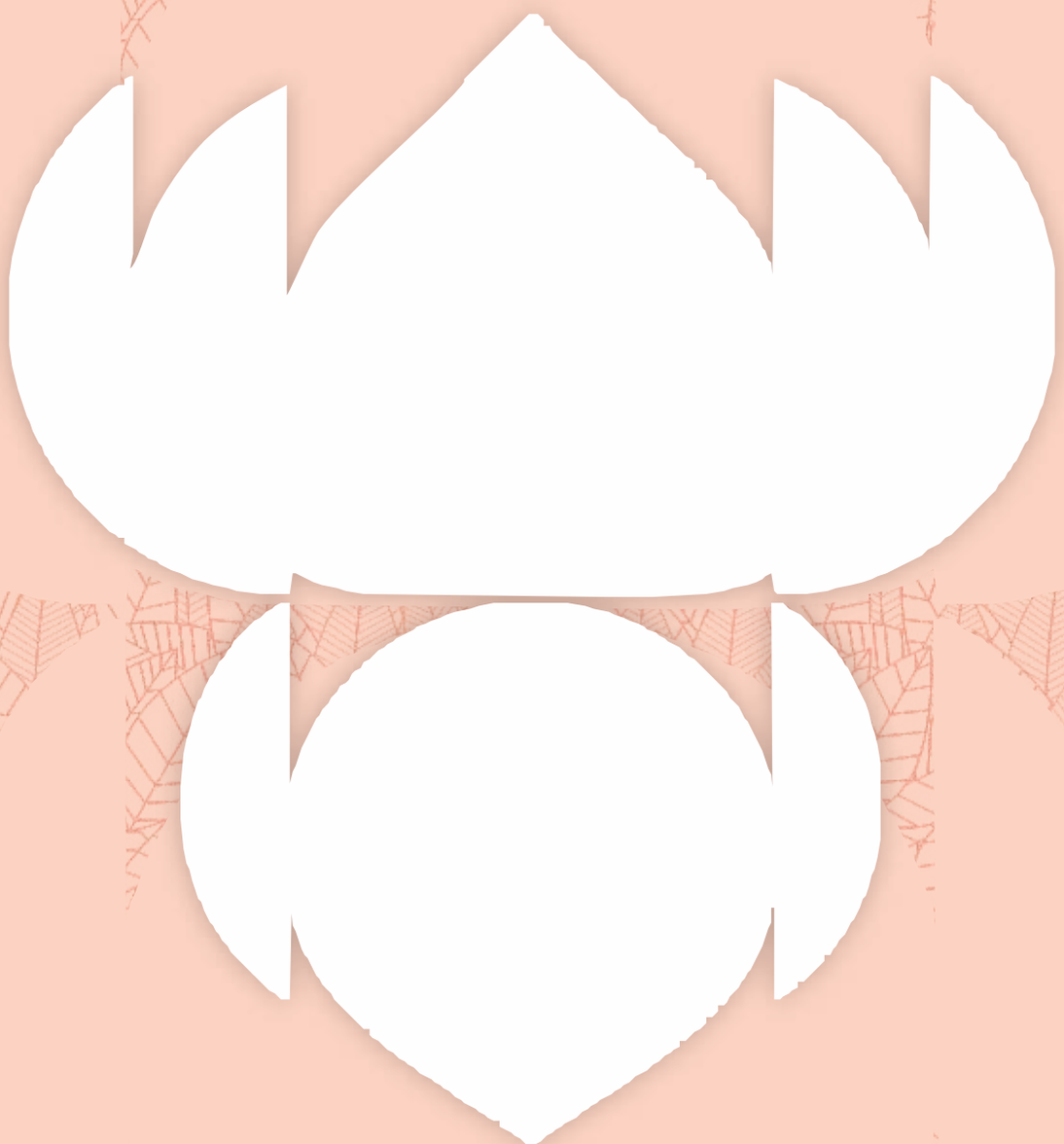

सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार
Ministry of Information and Broadcasting
Government of India

सिरी फोर्ट सभागार परिसर, अगस्त क्रांति मार्ग, नई दिल्ली–110049
Siri Fort Auditorium Complex, August Kranti Marg, New Delhi – 110049.